CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सूचीपत्र

तमसो मा ज्योतिर्गमय
चौखम्बा विद्याभवन

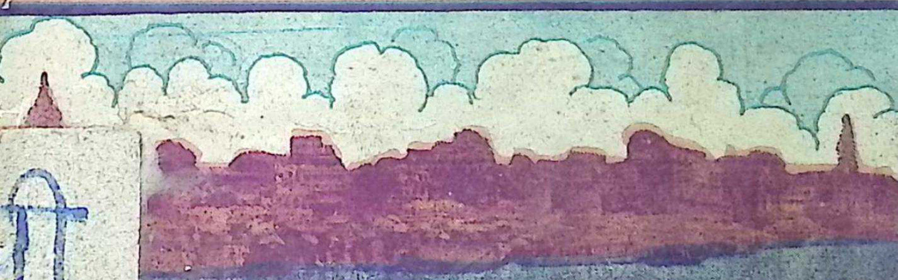

चौखम्बा विद्याभवन
पो.बा.नं. ६९, वाराणसी-२२१००१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

—: आवश्यक सूचना :—

आपकी यह चिरपरिचित प्राचीन संस्था जो पहले चौक, चित्रा सिनेमा के ठीक सामने (बनारस स्टेट बैंक भवन में) स्थित थी, अब वह इसी बक भवन के ठीक पीछे स्थानांतरित हो गई है। इस बैंक भवन के दोनों तरफ से गली में होकर दुकान में जाने का रास्ता है। आप अपने सभी पत्र-व्यवहार में पूरा-पूरा पता लिखने की कृपा करें तथा अपने वाराणसी आगमन पर इसी मार्ग-दर्शन का सहारा लें—

चौखम्बा विद्याभवन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक व विक्रेता)

चौक, (बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे)

पो० बा० नं० ६९

वाराणसी-२२१००१

❀ ❀ ❀

CHOWKHAMBA VIDYABHAWAN

Oriental Publishers & Booksellers

CHOWK (Behind The Benares State Bank Building)

P. Box No. 69

VARANASI-221001

अन्य प्राप्तिस्थान—

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक व पुस्तक-विक्रेता)

के. ३७/११७ गोपालमन्दिर लेन, पो० बाक्स नं० १२९

वाराणसी-२२१००१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

॥ श्रीः ॥

ार: चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी दूरध्वनि : { ६३०७६ दुकान
५५३५७ निवास

CATALOGUE No. 3

संस्कृत
साहित्य और वाङ्मय

(सूचीपत्र संख्या ३)

१९७८

चौखम्बा विद्याभवन

(भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक व विक्रेता)

चौक, (बनारस स्टेट बैंक भवन के पीछे)

पो० बा० नं० ६९

वाराणसी-२२१००१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निवेदन

(१) कृपया अपने प्रत्येक पत्रव्यवहार में **संस्कृत साहित्य और वाङ्मय संख्या ३** का उल्लेख अवश्य करने का कष्ट करें।

(२) इस सूची पत्र में पुस्तकों के वर्तमान प्रचलित मूल्य दिए गये हैं, फिर भी कदाचित् प्रकाशकों द्वारा समय-समय पर पुस्तकों के मूल्य में परिवर्तन होते रहने से आपके आर्डर की पुस्तकें भेजते समय नवीन निर्धारित मूल्य चार्ज किया जायगा।

(३) लेखक महोदय एवं प्रकाशकों से निवेदन है कि वे अपनी नवीन प्रकाशित पुस्तकों की सूचना १-१ प्रति नमूने के साथ हमें अवश्य भेजते रहें। हम अपने आगामी छपने वाले विभिन्न सूचीपत्र में उसका समुचित विज्ञापन कर उनका विशेष प्रचार-प्रसार करते हुए अधिक से अधिक प्रतियों की निकासी की व्यवस्था कर सकेंगे।

हमारे विभिन्न सूचीपत्र

हमारे निम्नलिखित विभिन्न साहित्य के पृथक-२ छपे सूचीपत्र आवश्यकतानुसार अमूल्य मँगवाकर अवलोकन करने की कृपा करें :—

(१) **चौखम्बा साहित्य** (स्वप्रकाशित ग्रन्थों का विवरण)

(२) **संस्कृत साहित्य और वाङ्मय** (देश-विदेश में छपे संस्कृत वाङ्मय के ग्रन्थों का विवरण)

(३) **हिन्दी साहित्य और वाङ्मय** (राष्ट्रभाषा हिन्दी में उच्चकोटि के प्रकाशित ग्रन्थों का विवरण)

(४) **चिकित्सा साहित्य और वाङ्मय** (आयुर्वेदिक, एलोपैथिक, होमियोपैथिक, यूनानी एवं प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के ग्रन्थों का विवरण)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सामान्य संस्कृतसेवी एवं भारतीय विद्याविद्
विद्वानों की सेवा में—

महानुभाव !

'चौखम्बा विद्याभवन' ने अपने प्रकाशनों के द्वारा संस्कृत-साहित्य एवं भारतीय विद्या की जो आजतक अपूर्व सेवा की है, वह सर्वविदित है। इसके अन्तर्गत संस्कृत वाङ्मय की सभी शाखाओं पर आकर-ग्रन्थों के अतिरिक्त उपयोगी एवं लोकप्रिय ग्रन्थों का भी प्रकाशन हुआ है, जिससे देश-विदेश के पण्डितों ने पर्याप्त लाभ उठाकर इस संस्था को गौरवान्वित किया है। हमारा उद्देश्य भारतीय सांस्कृतिक साहित्य की महान् कृतियों का प्रकाशन कर संस्कृत की अमर रचनाओं का रसास्वादन कराना है। हम इस महान् सारस्वत अनुष्ठान में अनवरत संलग्न हैं और इस संस्था की प्रतिष्ठा एवं गौरव के अनुरूप विविध प्रकार के प्रकाशनों के द्वारा देववाणी का भंडार भरने के लिए कृत-संकल्प हैं। हमें विश्वास है कि आप महानुभावों के प्रोत्साहन से हम अपनी पूर्वपरम्परा को सुरक्षित एवं संवर्धित करने में पूर्वापेक्षा अधिक शक्ति से जुटे रहेंगे।

व्यवस्थापक

चौखम्बा विद्याभवन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा विद्याभवन

द्वारा प्रकाशित एवं प्रचारित ग्रन्थों की

विषयानुक्रमणिका

विभिन्न विज्ञापन	(I–XVI)
चौखम्बा विद्याभवन प्रकाशन चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन	१–२०
व्याकरण-ग्रन्थाः	१
न्याय-ग्रन्थाः	११
सांख्य-ग्रन्थाः	१४
मीमांसा-ग्रन्थाः	१४
योग-ग्रन्थाः	१५
योग-ग्रन्थ (भाषा)	१६
वैशेषिक-ग्रन्थाः	१७
दर्शन-ग्रन्थाः	१७
वेदान्त-ग्रन्थाः	१९
वेदान्त-विशिष्टाद्वैत-ग्रन्थाः	२४
वेदान्त-द्वैताद्वैत-ग्रन्थाः	२५
वेदान्त-शुद्धाद्वैत-ग्रन्थाः	२५
वेदान्त-ग्रन्थ (भाषा)	२६
स्वामीमहेशानन्दगिरि-साहित्य	२७
स्वामीअखण्डानन्द-साहित्य	२७
श्रीअरविन्द-साहित्य	२८
श्रीरजनीश-साहित्य	२८
श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द-साहित्य	३०
श्रीमद्भगवद्गीता	३२
उपनिषद्-ग्रन्थाः	३२
वैदिक-ग्रन्थाः	३४
कर्मकाण्ड-ग्रन्थाः	४०
धर्मशास्त्र-ग्रन्थाः	४२
स्तोत्र-व्रत-माहात्म्य-ग्रन्थाः	४५
तन्त्रादि-आगम-ग्रन्थाः	४७
अष्टादश-महापुराण-ग्रन्थाः	५२
उपपुराण-ग्रन्थाः	५६
भारतादि-इतिहास-ग्रन्थाः	५६
ज्यौतिष-ग्रन्थाः	५८
छन्दःशास्त्र-ग्रन्थाः	६३
काव्य-ग्रन्थाः	६४
गद्यकाव्य-ग्रन्थाः	७२
अलङ्कारशास्त्र-ग्रन्थाः	७१
सुभाषित-ग्रन्थाः	८३
चम्पू-ग्रन्थाः	८४
भाणप्रहसन-ग्रन्थाः	८५
नाट्य-नाटक-ग्रन्थाः	८६
कोष-ग्रन्थाः	९३
हिन्दी-कोश-ग्रन्थाः	९५
नीति-अर्थशास्त्र-ग्रन्थाः	९६
संगीत-ग्रन्थाः	९८
बौद्ध-ग्रन्थाः	१०२
जैन-ग्रन्थाः	१०६
समालोचनात्मक-इतिहास-ग्रन्थाः	११२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमारे यहाँ से निम्नलिखित स्वप्रकाशित एवं प्रचारित सभी ग्रन्थमालाओं की पुस्तकें उपलब्ध होंगी—

१. विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला
२. विद्याभवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला
३. चौखम्बा राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला
4. Vidyabhawan Sanskrit Studies.
५. मिथिला ग्रन्थमाला
६. चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला
7. Chaukhamba Surabharati Studies.
८. चौखम्बा राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला
९. चौखम्बा आयुर्विज्ञान ग्रन्थमाला
१०. चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला
११. बनारस संस्कृत ग्रन्थमाला
१२. हरिदास संस्कृत ग्रन्थमाला
१३. विद्याविलास ग्रन्थमाला
१४. चौखम्बा स्तोत्र ग्रन्थमाला
15. Chowkhamba Sanskrit Studies.
१६. कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला
१७. चौखम्बा अमरभारती ग्रन्थमाला
१८ चौखम्बा आयुर्वेद ग्रन्थमाला
19. Chaukhamba Amarabharati Studies.
२०. प्रकीर्ण ग्रन्था
२१. काशी संस्कृत ग्रन्थमाला
२२. विद्याभवन आयुर्वेद ग्रन्थमाला
२३. जयकृष्णदास कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला
२४. श्रीकृष्ण ग्रन्थमाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुराणपर्यालोचनम्

डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)

भारतीय वाङ्मय में पुराण साहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पुराणों के बिना वेदों का उपबृंहण सम्भव नहीं है। परन्तु समस्त पुराणों का अध्ययन सामान्य पाठक के लिए सहज सम्भव नहीं है। अतः संपू० सं० विश्वविद्यालय पुराणेतिहास विभाग के प्राध्यापक तथा अध्यक्ष डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी ने अनेक वर्षों के अध्ययन-अध्यापन एवं निर्वचन से प्राप्त अनुभव के आधार पर उपर्युक्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का लेखन सरलतम संस्कृत भाषा में किया है। प्रस्तुत पुस्तक में पुराणों के लोकोपयोगी विषयों का मनोवैज्ञानिक तर्कसंगत एवं हृदयस्पर्शी विवेचन निबद्ध कर विद्वान् लेखक ने पुराण जगत् को एक नवीन कृति भेंट की है। पुराणों पर की गयी शंकाओं का भी समाधान दिया गया है। विषय प्रतिपादन की श्रेष्ठताके साथ ही इसकी भाषा अत्यन्त सरल एवं सुबोध है। यह ग्रन्थ पुराण साहित्यके अध्येताओं एवं शोधछात्रों के लिए विशेष रूप से संग्रहणीय है।

प्रथम : गवेषणात्मक भाग	३०—००
द्वितीय : समीक्षात्मक भाग	२०—००

भक्तिरत्नावली

डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)

'भक्तिरत्नावली' श्रीमद्भागवत के भक्ति परक श्लोकों का सङ्कलन है। भक्तिमार्गियों के लिए यह ग्रन्थ सर्वाधिक उपादेय एवं महत्त्वपूर्ण है। यह विभिन्न विश्वविद्यालयों में शास्त्री तथा आचार्य कक्षाओं में पाठ्य-ग्रन्थ के रूप में निर्धारित है। अतएव छात्रों की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए विद्वान् प्राध्यापक डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी ने भक्तिरत्नावली की सरलतम संस्कृत-हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की है। पुस्तक के प्रारम्भ में भक्ति विषयक एक विवेचनात्मक बिस्तृत भूमिकी भी दी गयी है। इससे पुस्तक की उपयोगिता निःसन्देह बढ़ गई है। १५—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काव्यालंकारकारिका

(अभिनवं काव्यशास्त्रम्)

रचयिता—सनातन-कवि-रेवाप्रसाद-द्विवेदी

काव्यालंकारकारिका संस्कृत काव्यशास्त्र के इतिहास की एक अत्यन्त मौलिक तथा नवीनतम उपलब्धि है। इसके रचयिता डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी हैं। यह संस्कृत कारिका तथा संस्कृत की ही विस्तृत वृत्ति में निर्मित ऐसी प्रौढ रचना है जो एकपक्षीय सांप्रदायिकता से दूर है तथा जिसमें आस्तिक तथा नास्तिक दोनों ही दर्शनों की विचार पद्धतियों का उचित समन्वय है। इसमें सिद्ध किया गया है कि—'काव्य एकमात्र बौद्ध या ज्ञानात्मक पदार्थ है, उसे शब्द किसी भी स्थिति में नहीं कहा जा सकता, शब्द में किसी भी प्रकार की शक्ति स्वीकार नहीं की जा सकती, काव्य की आत्मा रस नहीं अपितु अलंकार है, रस भी एक अलंकार ही है, मध्यमा, पश्यन्ती तथा परा वाणी नहीं अपितु संवित्-तत्त्व हैं, काव्य का कारण एकमात्र प्रतिभा है जिसे योगदर्शन की प्रतिभा की पृष्ठभूमि पर ही ठीक से समझा जा सकता है, कवि के लिए काव्य का कोई प्रयोजन नहीं भी रहता और यदि रहता भी है जो उसके अनेक उदात्त पक्ष भी संभव हैं।' इन तथा ऐसी अन्य मौलिक स्थापनाओं को ग्रन्थकार ने प्रौढ तर्कों, प्राचीन तथा नवीन युक्तियों द्वारा अत्यन्त गंभीर विचार के साथ प्रौढ संस्कृत में प्राचीन ग्रन्थों के समान प्रस्तुत किया है।

अखिल भारतीय प्राच्यविद्या संमेलन (A. I. O. C.) के कुछ अधिवेशनों तथा काशी की कतिपय विद्वत्सभाओं में उक्त विचारों को प्रस्तुत कर एवं इन पर कुछ लेख प्रकाशित करने के पश्चात् यह ग्रन्थ ग्रन्थकार ने प्रकाशनार्थ तब दिया है जब उक्त विचारों का खण्डन नहीं हो सका।

लेखक ने अंग्रेजी में कारिका का अविकल अनुवाद तथा वृत्ति का सारांश तैयार कर दिया था। उसे भी इस संस्करण में दे दिया गया है। हिन्दी अनुवाद प्रेस में है। वह भी शीघ्र ही प्रस्तुत होगा। आचार्य स्तर के इस प्रौढ ग्रन्थ को विद्वानों ने पिछले १५०० वर्षों की अद्वितीय और क्रान्तिपूर्ण उपलब्धि माना है। ३०—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुलसीदास की दोहावली का विवेचनात्मक अध्ययन

लेखक—डॉ० गौरीशंकर मिश्र

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के प्रकाशन से तुलसी-साहित्य के वर्गीकृत अध्ययन को नयी दिशा मिली है। अब तक गोस्वामी जी के काव्य का मूल्यांकन जिस विधि से हुआ है उसमें 'रामचरितमानस' को केन्द्र मानकर ही विविधपक्षों की समीक्षा की गयी है। कवितावली, गीतावली एवं दोहावली आदि जो उनकी आनुषंगिक कृतियाँ हैं उन पर सुधी समीक्षकों की 'टार्च लाइट' भी नहीं पड़ी है, सांगोपांग विवेचन में भले ही उनकी तमाम कृतियों के संदर्भ जुट गये हों।

डॉ० मिश्र ने 'दोहावली का विवेचनात्मक अध्ययन' प्रस्तुत कर तुलसी-साहित्य के सर्जनात्मक पक्ष का समुचित समीक्षण किया है। मुक्तककाव्य परंपरा के दोहा छंद में दोहावली की विषयवस्तु, भाव-व्यंजना, काव्यतत्त्व आदि का इसमें सम्यक् विवेचन हुआ है। डॉ० विद्यानिवास मिश्र के शब्दों में "दोहा छंद में **हिन्दी काव्य-भाषा सबसे अधिक कसाव और चुस्ती पा सकी है**···। **तुलसीदास का अध्ययन दोहावली के मूल्यांकन के बिना इसलिए अधूरा ही रह जाता है।**"

संस्कृत वाङ्मय में जिस प्रकार महर्षि वेदव्यास की अनेक रचनाओं में श्रीमद्गीता का सर्वोपरिस्थान हैं उसी प्रकार तुलसी की समस्त रचनाओं में दोहावली सर्वथा सर्वोत्कृष्ट हैं। वस्तुतः मध्यकालीन सोलहवीं शताब्दी की यह गीता है। इसके अध्ययन की ओर विद्वानों की दृष्टि न जाने के कारण यह तथ्य अब तक तुलसी साहित्य प्रेमियों से अविदित था।

इस प्रबन्ध द्वारा तुलसीदास की प्रतिभा का ज्योतिमय सारतत्त्व सर्व सुलभ किया गया है। तुलसी साहित्य के अध्ययन में संदर्भ ग्रंथ की दृष्टि से इसकी उपयोगिता सर्वथा अनुपेक्षणीय है। इस सम्बन्ध में आचार्य सीतारामजी चतुर्वेदी का अभिमत उल्लेखनीय है—

"विवेकपूर्ण विवेचन, गम्भीर गहन गवेषणा प्रकृष्ट प्रतिपादन, और नवीनतापूर्ण निरूपण के कारण यह शोधप्रबन्ध तुलसी के काव्य अध्येताओं के लिए निश्चय ही आदर्श पथ-पदर्शक सिद्ध होगा क्योंकि जिस समीक्षण शैली से डॉ० मिश्र ने दोहावली के विषयों का काव्यशास्त्र की दृष्टि से समीक्षण किया है वह स्वयं अपने में अभिनन्दनीय"।

२०—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वतन्त्र कलाशास्त्र

(प्रथम भाग : भारतीय)

डॉ० कान्तिचन्द्र पाण्डेय

व्यापक दृष्टि रखकर कला शब्द पर कितना विशद अध्यय प्रस्तुत किया जा सकता है। यह इस एक ही ग्रन्थ को देखकर समझा जा सकता है। भारतीय मनीषी का प्रौढ़ पाण्डित्य और बहुज्ञत्व इस ग्रन्थ के एक-एक शब्द से परिलक्षित होता है। कला को विचारों की कसौटी में कस देने पर जो ज्ञान की चिनगारियाँ प्रस्फुटित हुई हैं उन्हीं का संकलन ग्रन्थ के रूप में आपके हाथों में है। यह सचमुच अपने विषय का पूरा शास्त्र ही है। एकबार देखने पर अवश्य तुष्टि होगी। ३५–००

स्वतन्त्र कलाशास्त्र

(द्वितीय भाग : पाश्चात्य)

डॉ० कान्तिचन्द्र पाण्डेय

इसमें प्लेटों के पूर्ववर्ती साफिस्ट गार्जिअस (४७० ई० पू०) एवं साक्रेटास् (४६९–३९९ ई० पू०) आदि से लेकर वेनेडिटो क्रोचे (१८६६–१९५२) तक सुप्रसिद्ध पाश्चात्य स्वतन्त्रकला-शास्त्रीय चिन्तकों की विचार-धाराओं का विवरण ऐतिहासिक दृष्टिकोण से दिया गया है। प्रत्येक की दार्शनिक पृष्ठभूमि का उल्लेख कर यह स्पष्ट किया गया है कि वह कला-सिद्धान्त के प्रतिपादन में अपने दार्शनिक मत से कितना प्रभावित था। भारतीय और पाश्चात्य मतों का संतुलन संक्षेपतः किया गया है। ५०–००,

संस्कृत साहित्य कोश

डॉ० राजवंशसहाय 'हीरा'

अपने ढङ्ग का अद्भुत सन्दर्भ ग्रन्थ। इस कोश में प्रथम वार हिन्दी माध्यम से संस्कृत की सभी शाखाओं का अकारादि क्रम से पूर्ण एवं प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत किया गया हैं। लेखक ने ग्रन्थकारों, ग्रन्थों एवं प्रवृत्तियों का शोधपूर्ण विवरण सन्दर्भ-सूची के साथ दिया है तथा सभी शाखाओं के ग्रन्थों के हिन्दी अनुवादों की भी सूचना दी है। इसमें काव्य, नाटक, कथासाहित्य, काव्यशास्त्र, वैदिकवाङ्मय, रामायण, महाभारत, पुराण-उपपुराण, दर्शन, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, ज्योतिष, छन्द, कोश, संगीत, कामशास्त्र आदि का अद्यतन विवेचन अपनी पूर्ण समग्रता में किया गया है। अध्यापकों, उच्चकक्षा के छात्रों तथा शोधार्थियों के लिए एक अपरिहार्य ग्रन्थ। इस कोश पर लेखक को उत्तर प्रदेश प्रशासन की ओर से १९७५ ई० में २५०० रुपये का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। मूल्य ५०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

❀ लोलिम्बराज के समस्त आयुर्वेदीय साहित्य का प्रथम बार प्रकाशन ❀

लोलिम्बराज और उनकी कृतियाँ : एक अध्ययन

लेखक—डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, साहित्याचार्य, आयुर्वेदाचार्य

एम० ए०, पी-एच० डी०, डी-एस० सी० एवाइ०

* आयुर्वेद, साहित्य, वेदान्त, मन्त्रशास्त्र, संगीतशास्त्र आदि के मर्मज्ञ विद्वान् कविराज लोलिम्बराज के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं चतुरस्र प्रतिभा का संगम स्थल प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध है। पूर्ववर्ती ऐतिहासिक भ्रान्तियों का निराकरण, अनुपलब्ध ग्रन्थों की प्राप्ति, खण्डित अंशों की पूर्ति और अज्ञातकुल-परिवार का ज्ञान आदि इस शोध-प्रबन्ध की मौलिकतायें हैं।

* 'वैद्यावतंस' लघुनिघण्टु आपकी सर्वप्रथम रचना है, इसकी आधारशिला वाग्भट संहिता है। इसमें दैनिक चिकित्सा के उपयोगी समस्त द्रव्यों का संग्रह ललित संस्कृत भाषा में किया गया है। भाषा कीदृष्टि से आदि, अन्त के मंगलाचरण और गेहूँ, आम, करेला, नवनीत के वर्णन विशेष उल्लेखनीय हैं।

* 'चमत्कार चिन्तामणि' 'वैद्यजीवन' ये दोनों ग्रन्थ इनके भाषा सौन्दर्य और अनुभूत योगों के आकर हैं, यही कारण है कि प्रत्येक संस्कृतज्ञों को इनके दो चार पद्य और चिकित्सकों को अनेक योग निश्चित ही याद रहते हैं। दूसरी विशेषता यह है कि इन दोनों ग्रन्थों की रचना इन्होंने अपनी पत्नी रत्नकला को सम्बोधित करते हुए की है। साथ ही इनकी स्त्री कितनी विदुषी थी वह भी इनके ग्रन्थों से विदित होता है।

* 'वैद्यककाव्य' इनकी संक्षिप्त रचना है। इसमें इन्होंने बिना किसी शास्त्रीय क्रम के कुछ रोगों की चिकित्सा लिखी है अथवा यों कहिये कि यह इनके अनुभूतनुसखों का मराठी भाषा में लिखित एक संग्रह मात्र है।

* इस अन्वेषण से आयुर्वेदिक साहित्य को बल प्राप्त हुआ है और उसकी अन्धकारपूर्ण एक दिशा प्रकाशित हुई है।

* इनका विकीर्ण एवम् अनुपलब्ध साहित्य ज्ञातास्वाद सुधीवर्ग को एक स्थान पर मिल सके, इस दृष्टि से प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के अन्त में इनका प्रकाशित एवम् अप्रकाशित समस्त साहित्य 'लोलिम्बराज ग्रन्थावली' के रूप में दे दिया गया है, जिससे आयुर्वेदज्ञ एवं साहित्यज्ञ विद्वान् समान रूप से लाभान्वित होंगे। २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कादम्बरी

'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्यासहित

व्याख्याकारः—आचार्य श्रीशेषराजशर्मा 'रेग्मी'

संस्कृत-साहित्यमें पद्यकाव्यकी अपेक्षा गद्यकाव्यकी विप्लता है। इसका कारण उसके वर्णनके निर्वाहमें काठिन्य प्रतीत होता है। क्योंकि पद्यकाव्यमें कुछ न्यूनता प्रतीत होनेपर छन्द आदिकी परतन्त्रताका बहाना किया जा सकता है, परन्तु गद्यकाव्यमें यह बात नहीं है। "ओजः समासभूयस्त्वमेतद्गद्यस्य जीवितम्" इस नियमके अनुसार उसकी रचनामें अत्यन्त निपुणताकी आवश्यकता है। अत एव "गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति" इस उक्तिके अनुसार गद्य कवियोंकी योग्यता जाँचनेकी कसौटी मानी जाती है। गद्यकाव्यके दो भेद हैं कथा और आख्यायिका। संस्कृतमें सुबन्धुकी वासवदत्ता, दण्डीका दशकुमारचरित और बाणभट्टकी कादम्बरी गद्यसाहित्यमें बहुत प्रसिद्ध हैं।

कादम्बरीमें कथानककी दृष्टिसे, अलङ्कारोंकी दृष्टिसे, वर्णनीय विषयोंकी व्यापकतासे, शास्त्रीय-पाण्डित्यसे किसी भी दृष्टिसे निरीक्षण करनेपर भी लोकोत्तरता सर्वजनसम्मत है। इसका स्थान विश्वके गद्यकाव्यमें असाधारण है। क्या भावपक्ष, क्या कलापक्ष, क्या लोकचरित्र, क्या शास्त्रीयतत्त्व, क्या अन्तर्जगत्, क्या बाह्यजगत् कविने अपनी सूक्ष्मदृष्टिसे समस्तविषयोंका आकलन कर अपनी लेखनीसे कादम्बरीको उद्भासित किया है। इसकी भाषा, शैली, वर्णनकी मधुरता और व्यापकताके कारण ही "कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते" यह कहना बहुत समुचित हैं। श्लेष, परिसंख्या, उत्प्रेक्षा और विरोधाभास आदि अनेक अलङ्कार यथास्थान संनिविष्ट होकर इसकी शोभा बढ़ा रहे हैं। इन सब विषयोंकी उपस्थितिसे "बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्" यह बात सबको माननी ही पड़ती है। इसमें राजा शूद्रक, उनकी सभा, चाण्डालकन्या, शुक, विन्ध्याटवी, अगस्त्याश्रम, प्रभात, मृगया, जाबालि, सन्ध्या, रात्रि, उज्जयिनी, राजा तारापीड, उनके पुत्र चन्द्रापीड आदि अनेक वर्णनीय विषय सजीव और अत्यन्त रोचक हैं। महाश्वेताकी पतिपरायणता, कादम्बरी और चन्द्रापीडका प्रणय, शुकनासका उपदेश इत्यादि अगणित प्रसङ्ग सहृदय पाठकोंको नितान्त आनन्दित और आकृष्ट करते हैं। कादम्बरीके उत्तरभागके रचयिता बाणभट्टके पुत्रकी "कादम्बरीरसमरेण समस्त एव, मत्तो न किंचिदपि चेतयते जनोऽयम्।" यह उक्ति बिलकुल सत्य है।

दुःखके साथ कहना पड़ता है इस कथारत्नकी संस्कृत टीका बहुत अल्पसंख्यामें दृष्टिगोचर है, अतएव हमने इसमें छात्रजनोंकी कठिनताको दूर करनेके लिए प्राचीन और नवीन दोनों पद्धतियोंसे उद्भासित चन्द्रकलाटीकासे सुसज्जित कर राष्ट्रभाषा हिन्दीमें सुबोध अनुवादके साथ प्रकाशित किया है। हम आशा करते हैं, टीकाकारके अन्यग्रन्थोंकी चन्द्रकलाके समान कादम्बरीकी अचिरोदिता यह चन्द्रकला भी चन्द्रकलाके समान होकर छात्रोंके प्रयासरूप तापका निवारण करेगी साथ-साथ सहृदय विद्वज्जनोंको आह्लादित करेगी। शीघ्रप्राप्य !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महाकविश्रीहर्षविरचितं

नैषधीयचरितं महाकाव्यम्

'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्

व्याख्याकारः—आचार्य श्रीशेषराजशर्मा 'रेग्मीः'

संस्कृतके सुप्रसिद्ध षट्-काव्य और अन्यान्य महाकाव्योंमें भी नैषधीयचरितमहाकाव्यका स्थान सर्वोपरि है यह बात सर्वजन् सम्मत है। साहित्यशास्त्रके गुण, अलङ्कार, रीति, रस और ध्वनि आदिकी दृष्टिसे इसका स्थान अप्रतिम है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। इस काव्यमें अलङ्कार आदिके प्रदर्शनके प्रसङ्गमें यत्र-तत्र व्याकरण और दर्शन आदि शास्त्रोंके कई विषय अनूठे ढङ्गसे उपस्थित किये गये हैं। अतएव कहा भी गया है—"नैषधं विद्वदौषधम्"। इसीलिए इसे "शास्त्रकाव्य" भी कहते हैं। इस महाकाव्यके उदयके अनन्तर संस्कृतके प्रसिद्ध और प्रौढ महाकाव्य किराताऽर्जुनीय तथा शिशुपालवध हतप्रभ हो गये हैं, अतएव कहा भी गया है—"उदिते नैषधे मानौ क्व माघः क्व च भारविः?" वेदान्तमें खण्डनखण्डखाद्य के समान यह महाकाव्य भी असाधारण प्रौढ शैलीमें रचे जानेके कारण अत्यन्त दुरूह हो गया है। कवि तार्किक श्रीहर्षने स्वयम् इस महाकाव्य को "कविकुलाऽदृष्टाध्वपान्थ "अर्थात् कवियोंसे अदृष्ट मार्गमें निरन्तर चलनेवाला" कहा है। इसी कारण महोपाध्याय मल्लिनाथकी जीवातु और नारायणपण्डितकी प्रकाश व्याख्या और अन्यान्य विद्वानों की अन्यान्य व्याख्याओं की विद्यमानतामें भी यह महाकाव्य इदानीन्तन छात्रोंको अवगाहन करनेमें और परीक्षामें साफल्य प्राप्त करनेमें अत्यन्त कठिन बन गया है।

हमने इसी बातको लक्ष्य करके आधुनिक पद्धतिसे चन्द्रकला व्याख्या, और हिन्दी अनुवादसे अलङ्कृत कर इस महाकाव्यका प्रथम भाग (१–९ सर्ग) प्रकाशित किया है। इसमें मूलपाठ, दण्डान्वय, व्याख्या अनुवाद और टिप्पणी इतने विषयोंका समावेश कर ग्रन्थको अत्यधिक सरल करनेका प्रयास किया है। यहाँपर स्थल-स्थल पर काव्यके मूल पाठके कतिपय पदोंकी आलोचना, तत्तत्पदोंकी व्याकरणाऽनुसार उत्पत्ति, कोशप्रमाण और अन्य व्याख्याओंकी आलोचना भी की गई है। मल्लिनाथजीकी "नाऽमूलं लिख्यते किञ्चिन्नाऽनपेक्षितमुच्यते।" अर्थात् अमूलक और अनपेक्षित कुछ भी नहीं कहा जाता है।" इस उक्तिको ध्यानमें रखकर इस व्याख्याकी अवतारणा की गई है।

हम आशा करते हैं कि उत्तररामचरित, प्रसन्नराघव, मालतीमाधव, रघुवंश (प्रथम सर्ग), मेघदूत हितोपदेश-मित्रलाभः, तर्कसंग्रहः, स्वप्नवासवदत्ता आदि ग्रन्थों पर टीकाकारकी चन्द्रकला व्याख्याकी तरह नैषधीयचरित महाकाव्यमें भी प्रस्तुत चन्द्रकलाका समुचित प्रचार होगा। इसके अनुवादमें भी अनावश्यक विस्तारका परिहार कर प्राञ्जल शैलीका अवलम्बन किया गया है।

प्रथम सर्ग	५–००	१–३ सर्ग	१०–००
१–५ सर्ग	१५–००	१–९ सर्ग	२५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारत में संस्कृत की अनिवार्यता क्यों ?

प्रणेता—डॉ० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री'

निदेशक, अनुसन्धान संस्थान, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

संस्कृत भारत का आत्मा, प्राण, प्रज्ञा, जीवनदर्शन, दृष्टि और कलेवर है। संस्कृत भारतीय संस्कृति का सर्वस्व है। भारतीय संस्कृति और प्राचीन इतिहास का मर्म जानने हेतु संस्कृत पढ़ना प्रत्येक भारतीय का अनिवार्य कर्तव्य है। संस्कृत पढ़े बिना भारतीय नागरिक सच्चा भारतीय कहलाने का अधिकारी नहीं है। जन भाषाओं के संवर्द्धन और स्वरूपरक्षण के लिए, अपने देश की भौगोलिक सीमाओं की वास्तविकता जानने के लिए संस्कृत का पढ़ना अनिवार्य है। विद्वान् रचयिता ने इस पुस्तक में यह बताया है कि संस्कृत में ज्ञान विज्ञान का अथाह भण्डार पड़ा है। विदेशियों के आक्रमण के पूर्व तक संस्कृत जनजीवन से पूर्णतः जुड़ी हुई थी। सम्प्रति इस वैज्ञानिक युग में संस्कृत को जनजीवन से कैसे जोड़ा जाए ? क्या ज्ञान विज्ञान को आधुनिक ज्ञान विज्ञान से जोड़ा जा सकता है ? इत्यादि पहलुओं पर भी इस ग्रन्थ में विचार किया गया है। यह इस विषय का प्रथम ग्रन्थ है। इसकी भाषा तथा शैली आकर्षक हैं। प्रत्येक भारतीय के घर में इसका रहना अनिवार्य है। मूल्य ५—००

अनुवाद चन्द्रिका

डॉ० ब्रह्मानन्दत्रिपाठी एम. ए. पी-एच. डी.

संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में सक्षम, अनुवाद करने की सरलतम विधि से परिपूर्ण, छात्र तथा प्रौढ़ों के लिये समानरूप से उपयोगी, कक्षा ८ से बी० ए० तक के पाठ्यक्रम की दृष्टि से लिखी गयी, अनुवादोपयोगी प्रसिद्ध शब्द एवं धातुरूपों से समृद्ध, व्याकरण के पारिभाषिक शब्दों के विश्लेषण से युक्त, छात्रों से कहाँ-कहाँ त्रुटियाँ होती हैं, उन-उन अंशों को उदाहरण के रूप में देकर उनको सावधान करानेवाली और अथ से इति तक ध्यानपूर्वक पढ़ लेने के पश्चात् अन्य ग्रन्थ की आवश्यकता न पड़ने का विश्वास दिलाने वाली यह पुस्तक परीक्षा की दृष्टि से लिखी गयी है।

आशा एवं विश्वास है कि अनुवाद सीखने के इच्छुक इससे पूर्ण लाभान्वित होंगे। शीघ्रप्राप्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी लघुसिद्धान्तकौमुदी

(व्याख्या भाग)

व्याख्याकारः—श्री महेशसिंह कुशवाहा एम. ए.

(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत, नवीन शिक्षण-पद्धति पर आधारित वैज्ञानिक, विवेचनात्मक सर्वोत्तम संस्करण)

पुस्तक की व्याख्या बहुत ही सुबोध और आधुनिक शैली में प्रस्तुत की गई है। कहीं भी पुरानी पण्डिताऊ शैली का प्रयोग नहीं हुआ है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस व्याख्या में वृत्ति का अर्थ न देकर सूत्र का अर्थ दिया गया है। प्रत्येक सूत्र का विभक्ति-निर्देश कर पहले शब्दार्थ दिया गया है और फिर अनुवृत्ति देकर उसका भावार्थ। अन्त में उपयुक्त उदाहरण देकर उस अर्थ को पुष्ट किया गया है। सूत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों और प्रत्याहारों को भी स्पष्ट और प्रचलित शब्दों में प्रकट किया गया है। अनेकों आलोचनात्मक और विवेचनात्मक टिप्पणियाँ दी गई हैं जो कि सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों को भी स्पष्ट कर देती हैं। व्याख्या सरल होने के साथ ही प्रामाणिक भी हैं, क्योंकि उसका आधार वृत्ति न होकर महाभाष्य, काशिका आदि आर्षग्रन्थ हैं। **व्याख्या भाग—संपूर्ण ३०-००**

हिन्दी लघुसिद्धान्तकौमुदी

(रूपसिद्धि भाग)

लेखक—श्री महेशसिंह कुशवाहा एम. ए.

इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने "लघुसिद्धान्तकौमुदी" में प्रयुक्त रूपों की अकारादिक्रम से साधनिका दी है। छात्रों की बोध कराने के लिये प्रत्येक रूप की सिद्धि में शास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाया गया है। साधनिका में पूर्ण वैज्ञानिक पद्धति अपनाने के कारण दुरूहता कहीं भी नहीं आने पाई है। रूपसिद्धि में सूत्रों का क्रम सोपान की भाँति लक्ष्यसिद्धि तक पहुँचाने में सहायक हो अपनी उपादेयता को सिद्ध करता है। केवल स्थूलरूप में लक्ष्यसिद्धि को इङ्गित करना प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य नहीं है, अपितु रूपों की सिद्धि में अभीष्ट सतर्कता बरती गई है। जिस कारण उत्सर्ग, अपवाद, विप्रतिषेध, अन्तरङ्ग, बहिरङ्ग आदि नियमों का यथास्थान उल्लेख एवं उपयोग कर प्रत्येक शब्द की सिद्धि सूक्ष्मता के साथ की गई है। साधनिका में शास्त्रीय-क्रम का यथोक्त निर्वाह होने के कारण आरम्भ से अन्त तक पाणिनि द्वारा प्रयुक्त प्रक्रिया की यथार्थता का अवबोध सहज ही हो जाता है। किसी भी रूप की सिद्धि में कोई बात छोड़ी नहीं गई है। साधारण से साधारण विषय का भी समावेश निर्दिष्ट स्थान पर ही किया गया है।

छात्रों को व्युत्पन्न बनाने एवं परीक्षा हेतु उचित दिग्दर्शन कराने के लिये यह ग्रन्थ अपूर्व सिद्ध होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है। स्वच्छता और शुद्धता के साथ प्रकाशित यह ग्रन्थ व्याकरण की दुरूहता को दूर करने में सर्वथा सिद्ध होगा। छात्र इसे प्राप्त करने की शीघ्रता करें जिससे अगले संस्करण की प्रतीक्षा न करनी पड़े। २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिशुपालवधम्

सान्वय-'बालबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित

व्याख्याकार—श्री रामजीलाल शर्मा

इस संस्करण में प्रत्येक श्लोक का सन्दर्भ, अन्वय, सरल, संस्कृत व्याख्या समास-व्याकरण, कोश, अलङ्कार, छन्दादि का स्पष्ट विवेचन करते हुए विशद व्याख्या दी गई है। टिप्पणी में—संन्दिग्ध एवं शास्त्रार्थ के स्थलों का विशद-विवेचन, पौराणिक कथाओं का स्पष्ट उल्लेख प्रस्तुत किया गया है।

भूमिका में काव्य के प्रयोजन, कारण एवं भेदों का उल्लेख करते हुए महाकविमाघ के जीवन-चरित तथा काव्य सौष्ठव का तथा शिशुपालवधमहाकाव्य की विशेषताओं का विशद विवेचन किया गया है। आज तक शिशुपालवध पर इतनी विशद एवं स्पष्ट व्याख्या नहीं हुई है। अत: यह संस्करण छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। (परीक्षापयोगी १–४ सर्ग) १०–००

वेणीसंहारनाटकम्

संस्कृत-हिन्दीव्याख्याद्वयोपेतम्

व्याख्याकार—डॉ० ईश्वरप्रसाद चतुर्वेदी

महाकवि श्रीभट्टनारायण द्वारा रचित "वेणीसंहारनाटकम्" संस्कृत साहित्य की वीर-रस प्रधान अनुपम कृति है। यह नाटक प्रायः समस्त भारतीय विश्व-विद्यालयों एवं संस्कृत की विभिन्न परीक्षाओं के स्नातक अथवा स्नातकोत्तर कक्षाओं के पाठ्यक्रम में निर्धारित है। इसके अनेक संस्करण संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी आदि भाषाओं में उपलब्ध हैं, किन्तु अद्यावधि ऐसा कोई संस्करण उपलब्ध नहीं है जो उच्चकक्षाओं के छात्रों की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सके। इसीलिये यह संस्करण विशेषतः विश्वविद्यालयों एवं संस्कृत महाविद्यालयों के छात्रों की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर तैयार किया गया है। इस पुस्तक की भूमिका में विद्वान् लेखक ने नाटककार महाकवि भट्टनारायण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सम्बन्ध में अत्यन्त रोचक एवं शोधपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री प्रस्तुत की है। ग्रन्थ में श्लोक अथवा गद्य भाग के संस्कृत के अन्वय एवं व्याख्या में प्रसंग, व्याकरण, कोश, समास, छन्द, अलंकार एवं रस आदि का समावेश किया गया है। इसकी हिन्दी भाषा में भी व्याख्या प्रस्तुत है। प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख भी संदर्भ में किया गया है। आकर्षक मुद्रण एवं सुन्दर साज-सज्जा से युक्त इस ग्रन्थ को आधुनिकतम सामग्री से युक्त बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है। यह संस्करण छात्रों, शिक्षकों, सामान्य पाठकों एवं पुस्तकालयों के लिये सर्वाधिक उपयोगी है। शीघ्रप्राप्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी कौटिलीय-अर्थशास्त्र

(उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत)

व्याख्याकार—श्रीवाचस्पति शास्त्री गैरोला

प्रस्तुत संस्करण में इस बात पर विशेष ध्यान रखा गया है कि अनुवाद की भाषा सुगम तथा वाक्ययोजना लघु हो। मूल के प्रतिपद का अर्थ इसमें स्पष्टतया देखा जा सकता है। पाण्डित्यपूर्ण विशद भूमिका में वैदिक युग के आदिम साम्यसंघ से लेकर दासराज्यों, गणराज्यों, और उनके बाद अधिष्ठित साम्राज्यों के उदय-अस्त, का ऐतिहासिक दृष्टि से समीक्षण किया गया है तथा अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नई चेतना को जन्म देने वाले और आधुनिक दृष्टि से उस पर नये सिरे से विचार करने वाले कार्ल मार्क्स, एंगल्स और लेनिन जैसे महान् राजनीतिज्ञों एवं धुरन्धर अर्थशास्त्रियों के सिद्धान्तों की भी समीक्षा की गई है। ग्रन्थान्त में लगभग ८०० प्रशासनिक शब्दों के अंगरेजी-हिन्दी पर्यायों का संयोजन भी है—(नवीन संस्करण १६७७)। ५०-००

हिन्दू संस्कार

(सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन)

डॉ० राजबली पाण्डेय

गर्भ में आने के समय से मृत्यु के समय तक और मृत्यूत्तर संस्कारों के माध्यम से उसके परवर्ती लोकोत्तर प्रयाण तक के हिन्दू जीवन को समझाने के लिए यह ग्रन्थ कुन्जी का काम देता है। हिन्दुओं की सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं के विविध अङ्गों के रहस्य इससे स्पष्ट हो जाते हैं। वेदों से प्रारम्भ कर मध्ययुगीन और किन्हीं स्थलों में आधुनिक भारतीय साहित्य के अध्ययन के परिणाम इस ग्रन्थ में समाविष्ट हैं। (परिवर्द्धित परिष्कृत तृतीय संस्करण) ३०-००

बौद्धदर्शन मीमांसा

आचार्य बलदेव उपाध्याय

[(प्रान्तीय १०००) रु० तथा डालमिया २१००) रु० से पुरस्कृत]

इसमें पांच खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में बुद्ध के मूल धर्म का वर्णन, द्वितीय में बौद्ध-धर्म का विकास, तृतीय में वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार तथा माध्यमिक संप्रदायों के गूढ़तथ्यों का सरल विवेचन, चतुर्थ में बौद्ध-न्याय, बौद्ध-योग तथा बौद्ध-तन्त्रों का वर्णन एवं पञ्चम में बौद्धधर्म का विस्तार से उपाख्यान है। (संशोधित एवं परिवर्द्धित तृतीय संस्करण) ३०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भारतीय दर्शन

लेखक—डॉ० उमाशंकरशर्मा 'ऋषि'

एम० ए०, साहित्याचार्य, डी० लिट्०

भारतीय दर्शन पर अनेक ग्रन्थों के होने पर भी इस पुस्तक का अपना महत्त्व है। प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर लिखे हुए होने पर भी इसमें आधुनिक समीक्षा-पद्धति का चमत्कार है। दर्शन के मूल पदार्थों का विवेचन इसमें बहुत ही गंभीरता के साथ किया गया है। वैदिक दर्शन से आरंभ करके आधुनिक काल तक के दार्शनिकों के विचार का गहन मन्थन इसमें हुआ है। पुस्तक पांच खंडों में विभक्त है—वैदिक दर्शन, नास्तिक दर्शन, षड् दर्शन, आगम तंत्र तथा आधुनिक दर्शन। पुस्तक समान रूप से विश्वविद्यालय के छात्रों, शोधकर्त्ताओं तथा सामान्य जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी है। शीघ्रप्राप्य !

मीमांसादर्शन-शाबरभाष्य (तर्कपाद)

हिन्दीव्याख्याकार—डॉ० उमाशंकरशर्मा 'ऋषि'

एम० ए०, साहित्याचार्य, डी० लिट्०

मीमांसादर्शन के तर्कपाद (प्रथमाध्याय के प्रथम पाद) का दार्शनिक क्षेत्र में बहुत सम्मान है क्योंकि वेद के प्रामाण्य के साथ शब्दार्थ का स्वरूप इसमें विवेचित हुआ है। प्रस्तुत संस्करण शाबरभाष्य के प्रत्यक्षर अनुवाद तथा दुरूह स्थलों की हिन्दी व्याख्या से परिपूर्ण है। आरम्भ में प्रायः ८० पृष्ठों की सर्वांगपूर्ण भूमिका में व्याख्याकार ने मीमांसादर्शन के इतिहास, मुख्य विवेच्य विषयों तथा तर्कपाद में आये हुए सिद्धान्तों की सम्यक् विवेचना की है। शीघ्रप्रकाश्य !

प्रौढ़मनोरमा

शब्दरत्न सहित

पं० द्वारकाप्रसाद द्विवेदी कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित।

प्रस्तुत संस्करण में प्राच्य-नव्य-मतों का युक्तियुक्त विवेचन, उपसर्गार्थ विवेचन, स्थल स्थल पर ग्रन्थ-ग्रन्थि विमोचन, उपयुक्त स्थलों पर महापरिष्कारादि से विशिष्ट विद्वन्मनोहारिणी संस्कृत टीका के साथ शब्दरत्न और प्रौढ़मनोरमा के रहस्य को सुगमता से स्पष्ट करने वाली, प्रत्येक पङ्क्ति के भावतात्पर्य को एवं अरुचिग्रस्त पक्षान्तरों को प्रमाणों सहित स्पष्ट करने वाली अपूर्व हिन्दी व्याख्या की योजना की गई है। हिन्दी व्याख्या ग्रन्थ को समझने की चेष्टा रखनेवाले छात्रों के लिये तथा नयी पीढ़ी के अध्यापकों के लिये परमोपयोगी सिद्ध होगी। इसमें ग्रन्थ के रहस्य को पटुता से समझाया गया है। ग्रन्थ की अक्षरशः व्याख्या की की गई है। जहाँ पर मनोरमा शब्दरत्न से गतार्थ है वहाँ पर पार्थक्य नहीं किया गया है। व्याकरणशास्त्र के अध्येता इस संस्करण से अधिकाधिक लाभान्वित होंगे।

प्रथम भाग—पञ्चसन्ध्यन्त शीघ्रप्रकाश्य !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चिकित्सकों का हृदय-हार

"सचित्र"

कैंसर डायग्नोसिस तथा चिकित्सा

(Diagnosis and Treatment of Cancer)

With Photographs and Illustrations

शताधिक चिकित्साग्रन्थ के ख्यातिप्राप्त रचयिता

डाक्टर प्रियकुमार चौबे

आज के युग में कैंसर रोग जिस गति से बढ़ रहा है उससे सभीलोग भलिप्रकार से परिचित हैं, यह रोग मानवजीवन के लिए एक अभिशाप के रूप में प्रकट हुआ है तथा इसका सम्यक् उपचार चिकित्सा-जगत के लिए एक चुनौती है। रोग की गम्भीरता के साथ-साथ इस रोग के सम्वन्ध में पर्याप्त जानकारी की कमी इस रोग को अत्यधिक विकराल बनाए हुए है, जिसके कारण रोगी ऐसी विषम परिस्थिति में चिकित्सक के पास आता है कि स्थिति चिकित्साक्षेत्र की परिधि से काफी दूर निकल जाती है और इसके कारण कभी-कभी रोगी जीवन से निराश होकर आत्महत्या तक कर बैठता है। इसी कमी की पूर्ति के लिए यह ग्रंथ जिज्ञासु पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस ग्रंथ की विशेषता यह है कि इसमें समस्त प्रकार के कैंसर रोग का सभी दृष्टिकोणों से विशद् वर्णन किया गया है, जिससे आसानी से उनका निदान किया जा सके तथा रोगी को इसके सम्बन्ध में सही निर्देशन प्राप्त हो सके। चिकित्सा विषय के अन्तर्गत भी इस ग्रंथ में सभी प्रकार के कैंसर को पृथक्-पृथक् सामूहिक रूप से शल्य चिकित्सा, रेडियोथिरेपी, औषधिचिकित्सा विद्युतचिकित्सा, आयुर्वेदिकचिकित्सा तथा समस्त पेटेण्ट सफल औषधियों के द्वारा उपचार तथा प्रत्येक कैंसर रोग की विशिष्ट चिकित्सा का विशद् वर्णन किया है।

इसके अतिरिक्त स्थान-स्थान पर कैंसर रोग से ग्रस्त रोगियों के सही चित्र दिये गए हैं जिस के द्वारा इस विषय को और अधिक सरल तथा बोधगम्य बनाया गया है। कैंसर रोग की गम्भीरता तथा व्यापकता देखते हुए इस "सचित्र" कैंसर डायग्नोसिस तथा चिकित्सा (Diagnosis and Treatment of Cancer–with Photographs and Illustrations) नामक पुस्तक को प्रत्येक चिकित्सक, चिकित्साशास्त्र के विद्यार्थियों तथा सभी वर्ग के लोगों को एवं इस रोग से ग्रस्त व्यक्तियों को अपने साथ रखना परमावश्यक है, राष्ट्रभाषा हिन्दी में इस भयंकर एवं घातक विषय पर प्रकाशित यह प्रथम तथा एकमात्र ग्रंथ समय समय पर परामर्श के लिए है **"चिकित्सकोपयोगी भूमिका सहित सर्वांगपूर्ण संस्करण"**।

शीघ्रप्राप्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एलोपैथिक की पेटेन्ट औषधियाँ

(Allopathic Patent Medicine)

डॉ० शिवनाथ खन्ना—एम. बी. बी. एस., डी. पी. एच.

रोगपरिचय, रोगनिवारण, क्लिनिकल पैथोलोजी—आदि के यशस्वी लेखक द्वारा लिखित यह पुस्तक चिकित्सकों के लिये विशेष लाभप्रद है। इस उपयोगी पुस्तक में प्रतिष्ठित औषधि निर्माताओं की औषधियों के गुण, घटक, प्रयोग तथा सावधानियों का विस्तारपूर्वक वर्णन है। मुख से देने वाली गोलियाँ, पाउडर, मिक्श्चर, इन्जेक्शन द्वारा दी जाने वाली औषधियाँ तथा शरीर के भिन्न भागों में लगाई जाने वाली औषधियों का अलग अलग अध्याय में वर्णन किया गया है। अन्त में चिकित्सकों की सुविधा के लिये किस रोग तथा लक्षग में किस औषधि से लाभ हो सकता है, पृष्ठ के अनुसार वर्णन किया गया है। २०–००

आयुर्वेदीय रोगों का वर्गीकरण

[Classification of Ayurvedic Diseases]

लेखक—डॉ० रमानाथ द्विवेदी एवं डॉ० गुरदीप सिंह

यह पुस्तक आयुर्वेदीय रोगों के वर्गीकरण के ऊपर लिखित एक अनुपम अभिधान है। आयुर्वेद व्याधियों के भेदोपभेद सम्बन्धी जानकारी के लिये एक पूर्ण ग्रंथ है। इसके द्वारा आधुनिक युग में आयुर्वेदसाहित्य की नितान्त आवश्यकता की पूर्ति हुई है। आयुर्वेद साहित्य में छोटे से लेकर बड़े तक जितने भी रोगों की चर्चा पाई जाती है, उनके भेदोपभेदों के साथ एक स्थल पर संकलन किया गया है। पूरी पुस्तक तीन खण्डों में विभाजित कर प्रस्तुत की गई है। **प्रथम खण्ड** में विशुद्ध आयुर्वेदीय दृष्टिकोण से व्याधिजन्म, उनके सामान्य भेदोपभेद, दूष्यानुसार वर्गीकरण, स्रोतों के अनुसार वर्गीकरण तथा दोषानुसार वर्गीकरण किया मिलता है। **द्वितीय खण्ड** में आयुर्वेदोक्त व्याधियों की संभाव्य आधुनिक संज्ञाओं सहित चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से 'सिस्टम' के अनुसार वर्गीकरण पाया जाता है। इस पुस्तक के **तृतीय खण्ड** में आयुर्वेद में वर्णित रोगों का विश्व-स्वास्थ-संगठन (WHO) के द्वारा निर्धारित १५० रोगों में अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण भी संलग्न है। इस प्रकार यह पुस्तक आयुर्वेद के छात्रों, अध्यापकों, चिकित्सकों एवं अनुसंधान में रत वैज्ञानिकों सभी के लिये नितान्त उपयोगी सिद्ध होती है। यह छोटी सी कृति जहाँ विद्यार्थियों के लिये अल्प समय में रोगों के नामों की जानकारी कराने में सहायक सिद्ध होती है वहीं पर व्यवसाय में लग्न या सरकारी सेवा में रत चिकित्सकों के लिये रोगों के शीघ्रता से संज्ञा निर्धारण में सहायक बनती है। इन उपयोगिताओं के अतिरिक्त इस पुस्तक की एक और भी उपयोगिता है कि इसके आधार पर आयुर्वेद चिकित्सालयों के 'रेकार्ड' के रख-रखाव में सहायता मिलेगी, जिसका उपयोग राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा रोगों के रोकथाम के लिये किया जा सकेगा।

६–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'सचित्र' स्त्री-रोग चिकित्सा

लेखक—डॉ० जहानसिंह चौहान

आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेदरत्न

अद्यावधि हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों में यह पहली पुस्तक है जिसमें स्त्री-रोग विषयक गम्भीर से गम्भीर एवं साधारण से साधारण रोगों का विस्तृत वर्णन दिया गया है। इस पुस्तक के लेखक श्री चौहान जी एक कुशल एवं सिद्धहस्त चिकित्सक एवं लेखक हैं। आपका एलोपैथिक एवं आयुर्वेद चिकित्सा पर समान अधिकार है। आपके पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों को चिकित्सक-वर्ग, छात्र-वर्ग एवं गवेषणात्मक-वर्ग के महान् पुरुषों ने पढ़कर प्रशंसा की है एवं सराहा है।

स्त्री-रोग चिकित्सा के निर्माण में विद्वान् लेखक को घोर परिश्रम करना पड़ा है क्योंकि विद्वान् लेखक को आज तक बाजार में प्राप्त स्त्री-रोग विषयक पुस्तकों को पढ़कर निराशा का सामना करना पड़ा। कुछ विद्वानों के आग्रह पर यह दुरूह कार्य लेखक ने सहर्ष स्वीकार किया और आज तक स्त्री रोग पर छपी पुस्तकों में सब से उत्तम सिद्ध होगी ऐसा अपना अनुभव है, क्योंकि सांगोपांग चिकित्सा एवं शल्य-क्रियावर्णन इस संस्करण की विशेषता है। यह पुस्तक गवेषणात्मकों के लिये, सहायक चिकित्सकों के लिये हृदयहार तथा छात्रों के लिये विशेष परीक्षापयोगी सिद्ध होगी। शीघ्रप्राप्य !

'सचित्र' प्रसूतितंत्र

लेखक—डॉ० शिवनाथ खन्ना एम० बी० बी० एस०, डी० पी० एच०,

विद्वान् लेखक ने इस जटिल विषय को अत्यन्त सरल भाषा में लिखा है जिससे चिकित्सक, चिकित्सा विज्ञान के विद्यार्थी के अतिरिक्त नर्स, मिडवाइफ तथा साधारण जनता भी आसानी से समझ सके। प्रत्येक विषय को चित्रों द्वारा समझाया गया है। इसमें प्रसूति सम्बन्धी विषय प्रधानतः ४ खण्डों में विभाजित किया गया है। यथा—**प्रथम खण्ड**—इसमें गर्भावस्था सम्बन्धी विषय का वर्णन किया गया है। **द्वितीय खण्ड**—इसमें प्रसव (Dilivery) कराने की विधि, प्रसव के समय की कठिनाई तथा उसके उपचार आदि का वर्णन है। **तृतीय खण्ड**—इसमें प्रसूतावस्था (Purperium) के समय की सावधानी, विकार उपद्रव आदि की चिकित्सा का वर्णन है। **चतुर्थ खण्ड**—इसमें पारिभाषिक-शब्द, औषधि आदि की तालिका है। पुस्तक सभी दृष्टि से परम उपयोगी बनाई गई है। शीघ्रप्राप्य !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

॥ श्रीः ॥

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी के प्रकाशन

(भारतवर्ष के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में निर्धारित महत्वपूर्ण एवं छात्रोपयोगी परीक्षापाठ्य एवं परीक्षोपयोगी संस्कृत ग्रन्थों का विवरण)—

विद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला

१ वेदान्तसारः (वेदान्तः)। सदानन्द। 'भाववोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। श्री रामशरण त्रिपाठी शास्त्री ५-००

२ वासवदत्ता (गद्यकाव्यम्)। महाकवि सुवन्धु। 'चपला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। पं० शङ्करदेव शास्त्री ६-००

३-५ संस्कृतालोक (व्याकरणम्)। पं० रालबालक शास्त्री। १-३ किरण ३-००

६ तर्कामृतम् (न्यायः)। श्री जगदीश भट्टाचार्य। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। आचार्य रामचन्द्र मिश्र २-००

७ दशरूपकम् (अलंकारः)। धनञ्जयकृतम्। धनिककृत 'अवलोक' संस्कृत टीका एवं 'चन्द्रकला' हिन्दी टीका सहित। डॉ० भोलाशङ्कर व्यास १६-००

८ शिशुपालवधम् (काव्यम्)। महाकवि माघ। मल्लिनाथकृत 'सर्वङ्कषा' संस्कृत टीका एवं 'मणिप्रभा' हिन्दी व्याख्या सहित। पं० हरगोविन्द शास्त्री
१-६ सर्ग ८-०० सम्पूर्ण २०-००

९ संस्कृत स्वयंशिक्षक प्रभा (व्याकरणम्)। गौरीशंकर शास्त्री १-००

१० महावीरचरितम् (नाटकम्)। महाकवि भवभूति। 'प्रकाश' सं० हि० टीका सहित। आचार्य रामचन्द्र मिश्र १०-००

११ रसगङ्गाधरः (अलंकारः)। पण्डितराज जगन्नाथ। आचार्य बदरीनाथ कृत 'चन्द्रिका' संस्कृत टीका एवं आचार्य मदनमोहन झा कृत हिन्दी टीका सहित। १-३ भाग सम्पूर्ण ८०-००। प्रथमाननपर्यन्त प्रथम भाग २०-००
द्वितीयानन का उत्प्रेक्षानिरूपणान्त द्वितीय भाग ३०-००
अतिशयोक्त्यलङ्कारादिसमाप्तिपर्यन्त तृतीय भाग ३०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२ **कर्पूरमंजरी (नाटकम्)**। राजशेखर। 'मकरन्द' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। श्रीरामकुमार आचार्य ५-००

१३ **संस्कृत वाङ्मय परिचय (साहित्येतिहासः)**। मधुसूदन प्रसाद मिश्र ३-००

१४ **प्रबोधचन्द्रोदयम् (नाटकम्)**। श्रीकृष्णमिश्र। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। आचार्य रामचन्द्र मिश्र ५-००

१५ **काव्यप्रकाशः (अलंकारः)**। आचार्य मम्मट। 'शशिकला' हिन्दी टीका सहित। डॉ० सत्यव्रत सिंह १-३ उल्लास ५-००
सम्पूर्ण २०-००
दशम उल्लास ८-००

१६ **ऋतुसंहारम् (काव्यम्)**। महाकवि कालिदास। 'प्रभा' हिन्दी टीका सहित। श्री केदारनाथ शर्मा १-००

१७ **पञ्चतन्त्रम्**। श्रीविष्णुशर्मा। 'सरला' हिन्दी टीका। श्रीगोकुलदास गुप्त १५-००
मित्रभेद [प्रथम तन्त्र] ४-०० मित्रसम्प्राप्ति [द्वितीय तन्त्र] २-५०
काकोलूकीय [तृतीय तन्त्र] २-५० लब्धप्रणाश [चतुर्थ तन्त्र] २-००
अपरीक्षितकारक [पञ्चम तन्त्र] श्रीकृष्णमणित्रिपाठीकृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या ३-५०

१८ **प्रियदर्शिका (नाटकम्)**। श्रीहर्ष। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। आचार्य रामचन्द्र मिश्र ५-००

१९ **अहिबलचक्रम् (ज्यौतिषम्)**। सान्वय 'शिशुतोषिणी' हिन्दी टीका सहित। पं० श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी १-५०

२० **प्रसन्नराघवम् (नाटकम्)**। महाकवि जयदेव। 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। आचार्य श्री शेषराजशर्मा 'रेग्मी' १०-००

२१ **भोजप्रबन्ध (काव्यम्)**। वल्लालसेन। 'राज्यश्री' हिन्दी टीका सहित। पं० केदारनाथ शर्मा। डॉ० भोलाशङ्करव्यास सम्पादित ३-००

२२ **लघुमन्जूषारहस्यम् (व्याकरणम्)**। [वै० सि० लघुमन्जूषा-प्रश्नोत्तरी] स्वामी रामेश्वर पुरी २-००

२३ **काव्य प्रबंध (काव्यम्)**। पं० बालकृष्णभट्ट शास्त्री ३-००

२४ **कुवलयानन्दः (अलंकारः)**। अप्पयदीक्षित। 'अलंकारसुरभि' हिन्दी टीका। डॉ० भोलाशंकर व्यास २०-००

२५ **अमृतमन्थन अथवा जीवन का दिव्यपक्ष (वेदान्तः)**। भाषा। डॉ० मङ्गलदेव शास्त्री ६-००

२६ **चम्पूरामायणम् (चम्पू)**। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। आचार्य रामचन्द्र मिश्र। बा० का० यन्त्रस्थ। सु० का० ५-०० सम्पूर्ण १५-००

२७ **संस्कृतपाठमाला (व्याकरणम्)**। पं० राहुल सांकृत्यायन। प्र० भाग १-२५
द्वितीय भाग १-२५ तृतीय भाग १-२५ चतुर्थ भा० १-२५ पंचम भाग १-२५
सम्पूर्ण १-५ भाग ६-२५

२८ **श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणम्**। मूलमात्र। सम्पा० पं० शिवरामशर्मा वशिष्ठ ३०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२९ **साहित्यदर्पणम् (अलंकारः)**। विश्वनाथकविराज। 'शशिकला' हिन्दी टीका सहित। डॉ० सत्यव्रत सिंह १–६ परिच्छेद २०–००
७–१० परिच्छेद १०–०० सम्पूर्ण ३०–००

३० **चन्द्रालोकरहस्यम् (अलंकारः)**। [चन्द्रालोक-प्रश्नोत्तरी]। जे० एल० मानवल्ली तथा जी० ए० वेताल ४–००

३१ **चम्पूभारतम् (चम्पू)**। अनन्तभट्ट। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। आचार्य रामचन्द्र मिश्र १५–००

३२ **आदर्श-हिन्दी-संस्कृत-कोशः (कोशः)**। प्रो० रामस्वरूप शास्त्री। द्वितीय संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण शीघ्रप्राप्य

३३ **वाग्भटालङ्कारः (अलङ्कारः)**। सिंहदेवगणि विरचित संस्कृत व्याख्या। डॉ० सत्यव्रतसिंह कृत 'शशिकला' हिन्दी टीका सहित ३–००

३४ **श्रुतबोधः (छन्दः)**। महाकवि कालिदास। सान्वय 'विमला' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। श्री कनकलाल ठक्कुर एवं ब्रह्मशङ्कर मिश्र ०–७५

३५ **पंचरात्रम् (नाटकम्)**। महाकवि भास। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। आचार्य रामचन्द्र मिश्र ५–००

३६ **हर्षचरितम् (गद्यकाव्यम्)**। महाकवि बाणभट्ट। श्री शङ्कर कवि विरचित 'सङ्केत' टीका। आचार्य जगन्नाथ पाठक कृत हिन्दी टीका सहित। १–२ उच्छ्वास ५–०० सम्पूर्ण १५–००

३७ **काव्यादर्शः (अलंकारः)**। महाकवि दण्डी। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। आचार्य रामचन्द्र मिश्र १५–००

३८ **कृषकाणां नागपाशः (नाटकम्)**। पं० श्री भगीरथप्रसाद त्रिपाठी १–००

३९ **प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् (नाटकम्)**। महाकवि भास। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। पं० श्री कपिलदेव गिरि ५–००

४० **कथा-संवर्तिका (गद्यकाव्यम्)**। पं० श्री भगीरथप्रसाद त्रिपाठी १–००

४१ **बृहत्संहिता (ज्यौतिषम्)**। वराह मिहिर। 'विमला' हिन्दी टीका सहित। पं० श्री अच्युतानन्द झा ३०–००

४२ **संस्कृतव्याकरणम् (व्याकरणम्)**। पं० श्री रामचन्द्र झा ८–००

४३ **नृसिंहचम्पू (चम्पू)**। श्रीसूर्य। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री ५–००

४४ **अभिनव-बृहज्ज्यौतिषसारः (ज्यौतिषम्)**। हिन्दी टीका सहित। श्री वासुदेव गुप्त १०–००

४५ **ऋग्वेदभाष्यभूमिका (वेदः)**। सायणाचार्य। हिन्दी टीका सहित। आचार्य जगन्नाथ पाठक ५–००

४६ **चारुदत्तम् (नाटकम्)**। महाकवि भास। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। आचार्य श्री कपिलदेव गिरि ५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४७ **अनर्घराघवम् (नाटकम्)**। मुरारि कवि। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। आचार्य रामचन्द्र मिश्र १५—००

४८ **छन्दोविंशतिका (छन्दः)**। 'विमला' हिन्दी टीका। पं० रामचन्द्र झा ०—७५

४९ **संस्कृतसाहित्येतिहासः (साहित्येतिहासः)**। आचार्य रामचन्द्र मिश्र १०—००

५० **कर्णभारम् (नाटकम्)**। महाकवि भास। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। पं० श्री रामजी मिश्र २—००

५१ **दूतघटोत्कचम् (नाटकम्)**। महाकवि भास। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। पं० श्री रामजी मिश्र २—००

५२ **दूतवाक्यम् (नाटकम्)**। महाकवि भास। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। पं० श्री रामजी मिश्र २—००

५३ **मध्यमव्यायोगः (नाटकम्)**। महाकवि भास। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्ती टीका सहित। पं० श्री रामजी मिश्र २—००

५४ **कौमुदी-कथा-कल्लोलिनी (व्याकरणम्)**। प्रो० रामशरण शास्त्री शीघ्रप्राप्य

५५ **गाथासप्तशती (काव्यम्)**। शालिवाहन हाल। हिन्दी टीका सहित। श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी १०—००

५६ **बालचरितम् (नाटकम्)**। महाकवि भास। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। पं० श्री रामजी मिश्र ४—००

५७ **निरुक्तम् (वेदः)**। यास्क। १–७ अध्याय। हिन्दी टीका सहित। प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'। नवीन संशोधित संस्करण १६—००

५८ **अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटकम्)**। महाकवि कालिदास। हिन्दी टीका सहित। श्री देवदत्त शास्त्री। चतुर्थ अंक २—५०

५९ **प्राकृतपुष्करिणी (काव्यम्)**। हिन्दी अनुवाद युक्त। डॉ० जगदीशचन्द्रजैन २—५०

६० **सिद्धान्तकौमुदी (व्याकरणम्)**। भट्टोजिदीक्षित। **कारकप्रकरणम्** हिन्दी टीका सहित। डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय ३—५०

६१ **वैराग्यशतकम् (वेदान्तः)**। भर्तृहरि। हिन्दी टीका सहित। जगन्नाथ शास्त्री होशिंग तथा राधेलाल त्रिवेदी २—५०

६२ **लीलावती (ज्यौतिषम्)**। भास्कराचार्य। सोपपत्तिक-सोदाहरण 'तत्त्वप्रकाशिका' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। पं० श्री लखनलाल झा १०—००

६३ **संस्कृत व्याकरण की उपक्रमणिका (व्याकरणम्)**। स्व० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर। हिन्दी टीका सहित। अनुवादक—श्री गोपालचन्द्र वेदान्तशास्त्री ४—००

६४ **कादम्बरी-शुकनासोपदेशः (गद्यकाव्यम्)**। महाकवि बाणभट्ट। 'उत्तमा' एवं 'मालती' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। पं० रमाकान्त झा तथा पं० हरिहर झा ५—००

६५ **कादम्बरी-महाश्वेतावृत्तान्तः (गद्यकाव्यम्)**। महाकवि बाणभट्ट। हिन्दी टीका सहित। श्री प्रद्युम्न पाण्डेय १०—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६६ **नवसाहसाङ्कचरितम् (काव्यम्)**। आचार्य परिमलपद्मगुप्त । हिन्दी टीका सहित । श्री जितेन्द्रचन्द्र शास्त्री । प्रथमसर्ग २–०० सम्पूर्ण २०–००

६७ **शृङ्गारशतकम् (काव्यम्)**। भर्तृहरि । हिन्दी व्याख्या तथा पद्यानुवाद सहित । जगन्नाथ शास्त्री होसिंग तथा राधेलाल त्रिवेदी २–५०

६८ **संस्कृतव्याकरणोदयः (व्याकरणम्)**। डॉ० जयमन्त मिश्र ६–००

६९ **सुभद्राहरणम् (नाटकम्)**। माधवभट्ट । 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित । आचार्य त्रिनाथ शर्मा २–००

७० **कौषीतकिब्राह्मणपर्यालोचनम्** अथवा **कौषीतकिब्राह्मण आचार-विचाराः (वेदः)**। डॉ० मङ्गलदेव शास्त्री ३–००

७१ **अलंकारपीयूषः (अलंकारः)**। हिन्दी टीका युक्त । डॉ० गङ्गासागर राय ३–००

७२ **संस्कृत-व्याकरण-कौमुदी (व्याकरणम्)**। स्व० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर । हिन्दी टीका सहित । पं० गोपालचन्द्र वेदान्तशास्त्री । प्रथम भाग ४–०० द्वितीय भाग ४–०० तृतीय भाग ५–०० चतुर्थ भाग ४–०० सम्पूर्ण १७–००

७३ **अविमारकम् (नाटकम्)**। महाकवि भास । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । आचार्य श्री रामचन्द्र मिश्र ४–५०

७४ **न्यायकुसुमाञ्जलिः (न्यायः)**। श्री उदयनाचार्य । हरिदास भट्टाचार्यकृत 'हरिदासी' संस्कृत टीका एवं 'कुसुमाञ्जलिपरिमल' हिन्दी टीका सहित । हिन्दी व्याख्याकार—आचार्य श्री विश्वेश्वरसिद्धान्त शिरोमणि २०–००

७५ **कौटिलीयअर्थशास्त्रम् (अर्थशास्त्रम्)**। हिन्दी टीका सहित । श्री वाचस्पति गैरोला [उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत] ५०–००

७६ **अभिषेकनाटकम् (नाटकम्)**। महाकवि भास । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । आचार्य रामचन्द्र मिश्र ५–००

७७ **चाणक्यसूत्रम् (नीतिः)**। हिन्दी टीका सहित । श्री वाचस्पति गैरोला १–००

७८ **उत्कीर्णलेखपञ्चकम् (गद्यकाव्यम्)**। 'रमा' हिन्दी टीका सहित । श्री हरिहर झा एवं रमाकान्त झा ४–००

७९ **अभिलेखमाला (गद्यकाव्यम्)**। 'रमा' हिन्दी टीका सहित । श्री हरिहर झा एवं रमाकान्त झा ८–००

८० **सिद्धान्तकौमुदी–वैदिकीप्रक्रिया (व्याकरणम्)**। हिन्दी व्याख्या सहित । श्री उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' ७–००

८१ **पारिजातहरणचम्पूः (चम्पूकाव्यम्)**। महाकवि शेषश्रीकृष्ण । सान्वय 'श्रद्धा' हिन्दी टीका सहित । आचार्य त्रिनाथ शर्मा ५–००

८२ **बुद्धचरितम् (काव्यम्)**। अश्वघोष । हिन्दी टीका सहित । महन्त श्री रामचन्द्रदास शास्त्री प्रथम भाग [सर्ग १–१४] ५–०० द्वितीय भाग [सर्ग १५–२८] ६–०० सम्पूर्ण ११–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८३ **हर्षचरितम् (गद्यकाव्यम्)**। पञ्चमोच्छ्वास। महाकवि बाणभट्ट। 'सुधा' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। श्री शिवनाथ शर्मा पाण्डेय ५—००

८४ **चन्द्रप्रभचरितम् (गद्यकाव्यम्)**। म० म० आशुकवि शङ्करलाल। 'पौर्णमासी' संस्कृत व्याख्या, परिशिष्ट नोट्स सहित ६—००

८५ **संस्कृत प्रकाशः (व्याकरणम्)**। श्री कुबेरनाथ द्विवेदी ३—५०

८६ **किरातार्जुनीयम् (काव्यम्)**। महाकवि भारवि। 'सुधा' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय १३वाँ सर्ग २—५०

८७ **लटकमेलकम् (नाटकम्)**। कवि शङ्करधर। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। पं० श्री कपिलदेव गिरि २—००

८८ **ऊरुभंगम् (नाटकम्)**। महाकवि भास। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका। पं० श्री कपिलदेव गिरि २—००

८९ **वैदिक-सूक्तपञ्चकम् (वेदः)**। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। आचार्य मधुसूदनप्रसाद मिश्र ०—७५

९० **लघुसारस्वतव्याकरणम् (व्याकरणम्)**। श्री अनुभूतिस्वरूपाचार्य। पं० श्री गणेशदत्तमिश्र सम्पादित ०—७५

९१ **लघुसिद्धान्तचन्द्रिका (व्याकरणम्)**। श्रीरामशर्मा पं० श्री गणेशदत्त मिश्र सम्पादित ०—७५

९२ **चारुचर्या (नीतिः)**। महाकवि क्षेमेन्द्र। 'प्रकाश' हिन्दी टीका। श्री पं० देवदत्त शास्त्री १—२५

९३ **ज्यौतिषप्रश्न-फल-गणना (ज्यौतिषम्)**। 'विमला' हिन्दी टीका सहित। पं० श्री दयाशंकर उपाध्याय २—००

९४ **वीरोत्साहवर्धनम् (काव्यम्)**। पं० श्री सुरेशचन्द्र त्रिपाठी ०—७५

९५ **तर्कसंग्रहरहस्यम्। (न्यायः)**। [तर्कसंग्रह-प्रश्नोत्तरी]। आचार्य श्री कीर्त्यानन्द झा १—००

९६ **सौगन्धिकाहरणम् (नाटकम्)**। श्रीविश्वनाथ। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। पं० श्री कपिलदेव गिरि ३—००

९७ **ध्वन्यालोकः (अलंकारः)**। आनन्दवर्द्धनाचार्य। अभिनवगुप्तकृत 'लोचन' संस्कृत टीका एवं 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। हिन्दी व्याख्याकार— आचार्य जगन्नाथ पाठक। प्रथम उद्योत ७—००, १—२ उद्योत १६—०० सम्पूर्ण ३०—००

९८ **विश्वगुणादर्शचम्पूः (चम्पूकाव्यम्)**। श्रीवेंकटाध्वरी। बालकृष्ण शास्त्री कृत 'पदार्थचन्द्रिका' संस्कृत टीका तथा श्रीजयशङ्कर कृत सान्वय 'प्रभा' हिन्दी टीका सहित। सुरेन्द्रनाथ शास्त्री सम्पादित २०—००

९९ **हरिश्चन्द्रोपाख्यानम् (वेदः)**। सायणभाष्य सहित। 'प्रकाश' हिन्दी टीका। उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' ३—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०० **वेदान्तपरिभाषा (वेदान्तः)**। श्रीधर्मराजाध्वरीन्द्र। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। डॉ० गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर। नवीन परिवर्द्धित संस्करण २०–००

१०१ **मानसागरी (ज्यौतिषम्)**। 'सुबोधिनी' हिन्दी टीका सहित। श्री मधुकान्त झा २०–००

१०२ **वैदिक-सूक्त-मञ्जरी (वेदः)**। पदपाठ, हिन्दी-अंग्रेजी व्याख्या सहित। सम्पादक–डॉ० रामकृष्ण शास्त्री २–५०

१०३ **हास्यार्णवप्रहसनम् (नाटकम्)**। जगदीश्वर भट्टाचार्य। 'प्रभा' हिन्दी टीका सहित। ईश्वरप्रसाद चतुर्वेदी ३–५०

१०४ **संस्कृत-भाषा विज्ञानम् (व्याकरणम्)**। चक्रवर्ती श्रीरामाधीन चतुर्वेदी ७–५०

१०५ **कुमारसंभवम् (काव्यम्)**। महाकवि कालिदास। मल्लिनाथ कृत 'सञ्जीवनी' तथा 'प्रकाश' हिन्दीटीकासहित। पं०प्रद्युम्नपाण्डेय। १–८ सर्ग ७–०० सम्पूर्ण १५–००

१०६ **सूर्यशतकम् (काव्यम्)**। मयूरभट्ट। 'कला' हिन्दी टीका, विस्तृत भूमिकादि सहित। श्री रमाकान्त त्रिपाठी ३–५०

१०७ **प्रमेयरत्नमाला (जैन)**। लघुअनन्तवीर्य [आचार्य माणिक्यनन्दी कृत 'परीक्षामुख' सूत्र पर टीका]। 'चिन्तामणि' व्याख्या सहित। श्री हीरालाल शास्त्री जैन २०–००

१०८ **पाणिनीयनाटकम् (नाटकम्)**। श्रीगोपालशास्त्री 'दर्शनकेशरी' ३–५०

१०९ **अभिधानचिन्तामणिः (कोशः)**। हेमचन्द्राचार्य। 'मणिप्रभा' हिन्दी व्याख्या, विमर्श सहित। पं० हरगोविन्द शास्त्री २५–००

११० **रसगंगाधरहृदयम् (अलंकारः)**। [रसगंगाधर-प्रश्नोत्तरी] श्री ज्ञानचन्द्र त्यागी ३–००

१११ **मेघदूतम् (काव्यम्)**। महाकवि कालिदास। 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। आचार्य श्री शेषराजशर्मा 'रेग्मी' १०–००

११२ **नीलकण्ठविजयचम्पूः (चम्पूकाव्यम्)**। नीलकण्ठ दीक्षित। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। आचार्य रामचन्द्र मिश्र ६–००

११३ **सर्वदर्शनसंग्रहः (दर्शनम्)**। माधवाचार्य। हिन्दी टीका सहित श्री उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' ५०–००

११४ **भारतकथा (काव्यम्)**। म० म० गङ्गाधर शास्त्री। 'बोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। पं० सनत्कुमार शुक्ल २–००

११५ **शब्दधातुरूपसंग्रहः (व्याकरणम्)**। सम्पादक—पं० रामचन्द्र झा १–००

११६ **अद्भुतोदयम् (नाटकम्)**। गोकुलनाथ। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। आचार्य रामचन्द्र मिश्र ८–००

११७ **निबन्धप्रकाशः (व्याकरणम्)**। आचार्य कृष्णकुमार अवस्थी ५–००

११८ **औचित्यविचारचर्चा (अलंकारः)**। क्षेमेन्द्र। 'प्रभा' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। आचार्य श्री व्रजमोहन झा ७–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

११९ **रामाभ्युदययात्रा (काव्यम्)**। संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। पं० श्रीरुद्रप्रसाद अवस्थी ७–००

१२० **कृष्णस्यशान्तिप्रयासः (काव्यम्)**। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। पं० बालकेश्वर प्रसाद मिश्र ३–००

१२१ **काव्यमीमांसा (अलंकारः)**। राजेशेखर। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। डॉ० गङ्गासागर राय १८–००

१२२ **संस्कृतरचना (व्याकरणम्)**। ['स्टूडेण्ट गाइड टू संस्कृत कम्पोजिशन' आप्टे रचित का हिन्दी रूपांतर] अनु० डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय १२–००

१२३ **देववाणी प्रवेशिका (व्याकरणम्)**। श्री अनसूयाप्रसाद भट्ट।
प्रथम भाग १–५० द्वितीय भाग २–०० तृतीय भाग १–५०
चतुर्थ भाग २–५० पंचम भाग ३–५० सम्पूर्ण ११–००

१२४ **ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्यम् (वेदान्तः)**। श्रीशङ्कराचार्य। 'ब्रह्मतत्त्व-विमर्शिनी' हिन्दी टीका सहित। स्वामी श्री हनुमानदास षट्शास्त्री
प्रथम भाग [१–२ अध्याय] ३०–०० द्वितीय भाग [३–४ अध्याय] २०–००

१२५ **विद्धशालभञ्जिका (नाटकम्)**। राजशेखर। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। रमाकान्त त्रिपाठी ५–००

१२६ **चण्डकौशिकम् (नाटकम्)**। आर्यक्षेमेश्वर। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। श्री जगदीश मिश्र ६–००

१२७ **आर्यासप्तशती (काव्यम्)**। गोवर्द्धनाचार्य विरचित संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी २०–००

१२८ **राघवपाण्डवीयम् (काव्यम्)**। पण्डित कविराज। 'सुबोधिनी' तथा 'सरला' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। पं० दामोदर झा २०–००

१२९ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता (वेदः)**। 'प्रकाश' नामक टिप्पणी सहित। सम्पादक—दौलतराम गौड़ वेदाचार्य ८–००

१३० **प्राकृतप्रबोधः (व्याकरणम्)**। डॉ० नेमिचन्द शास्त्री १२–५०

१३१ **लघुसिद्धान्तकौमुदी (व्याकरणम्)**। श्रीवरदराजाचार्य। वैज्ञानिक, विवेचनात्मक हिन्दी अनुवाद सहित। श्री महेशसिंह कुशवाहा
[उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत] प्रथम खण्ड : व्याख्या भाग सम्पूर्ण ३०–००
द्वितीय खण्ड : परिशिष्टात्मक रूपसिद्धि भाग २०–००

१३२ **परमतत्त्वमीमांसा (दर्शनम्)**। विद्याभूषण श्रीकृष्ण जोशी ६–००

१३३ **नन्दिकेश्वरकाशिका (व्याकरणम्)**। उपमन्युकृत टीका सहित ०–५०

१३४ **आश्चर्यचूडामणिः (नाटकम्)**। महाकवि शक्तिभद्र विरचित। 'रमा' 'मालती' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। पं० श्री रमाकान्त झा ६–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१३५ **मत्तविलास प्रहसनम् (नाटकम्)**। श्री महेन्द्रविक्रम वर्म कृत। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। श्री कपिलदेव गिरि २-००

१३६ **काव्यालङ्कारः (अलंकारः)**। महाकवि रुद्रट विचरित। नमिसाधु कृत संस्कृतटीका तथा 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। पं० रामदेव शुक्ल १५-००

१३७ **ब्रह्मसूत्रशाङ्करभाष्यम् (वेदान्तः)**। शङ्कराचार्य। 'ब्रह्मतत्त्वप्रकाशिका' हिन्दी टीका सहित। आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि। चतुःसूत्री ८-००

१३८ **व्याकरणमहाभाष्यम् (व्याकरणम्)**। महर्षि पतञ्जलि विरचित। 'प्रदीप' (कैयट) संस्कृत टीका एवं 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित आचार्य मधुसूदन प्रसाद मिश्र। पस्पशाह्निकम् ५-००, १-५ आह्निक २०-००

१३९ **विज्ञप्तिमात्रतासिद्धि विंशतिकारिका-वृत्तिश्च (बौद्ध)**। आचार्य वसुबन्धु। हिन्दी टीका सहित। डॉ० महेश तिवारी ८-००

१४० **प्रबन्धरत्नाकरः (निबन्ध)**। डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल ३०-००

१४१ **नारीजागरणनाटकम् (नाटकम्)**। श्रीगोपालशास्त्री 'दर्शनकेशरी' ५-००

१४२ **सूक्तिमञ्जरी (काव्यम्)**। हिन्दीटीका सहित। आचार्य बलदेव उपाध्याय १०-००

१४३ **समयमातृका (काव्यम्)**। महाकवि क्षेमेन्द्र। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। डॉ० रमाशङ्कर त्रिपाठी ५-००

१४४ **वेतालपञ्चविंशतिः (गद्यकाव्यम्)**। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। पं० श्री दामोदर झा १५-००

१४५ **कादम्बरीकथासारः (गद्यकाव्यम्)**। हिन्दी-अंग्रेजी व्याख्या सहित सम्पादक—श्री बलराम सदाशिव अग्निहोत्री १५-००

१४६ **किरातार्जुनीयम्। (काव्यम्)**। महाकवि भारवि। 'प्रबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। प्रो० समीर शर्मा प्रथम सर्ग ३-००

१४७ **कठोपनिषद् (उपनिषद्)**। 'शांकरभाष्य' 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। सुरेन्द्रदेव शास्त्री। प्रथमाध्याय २-०० सम्पूर्ण ५-००

१४८ **सहृदयानन्दम् (काव्यम्)**। महाकवि कृष्णानन्द प्रणीत। 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित। पं० वाचस्पति द्विवेदी ६-००

१४९ **संस्कृत-प्रथम-पाठमाला (व्याकरणम्)**। डॉ० जे० आर० बेलन्टाइन। हिन्दी अनुवाद सहित। अनु० उमेशचन्द्र पाण्डेय ३-००

१५० **धम्मपदं (बौद्ध)**। सटिप्पण 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित श्री कन्छेदीलाल गुप्त ७-००

१५१ **जवाहरलालनेहरू-विजय-नाटकम् (नाटकम्)**। हिन्दी टीका सहित। श्री रमाकान्तमिश्र ४-००

१५२ **युधिष्ठिरविजयम् (काव्यम्)**। महाकवि श्री वासुदेव। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित। प्रो० व्रजेशचन्द्र श्रीवास्तव २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१५३ **कारकदर्शनम् (व्याकरणम्)**। [सिद्धान्तकौमुदी का कारक भाग]
हिन्दी टीका सहित। डॉ० कलानाथ झा ५–००
१५४ **बृहदवकहडाचक्रम् (ज्यौतिषम्)**। 'बालबोधिनी' हिन्दी टीका सहित।
पं० अवधविहारी अग्निहोत्री २–००
१५५ **ब्रह्मसूत्र (वेदान्त)**। 'सुषमा' हिन्दी टीका। स्वामीहनुमानदास षट्शास्त्री १०–००
१५६ **टालस्टाय-कथासप्तकम् (गद्यकाव्यम्)**। संस्कृत टीका सहित।
भगीरथप्रसाद त्रिपाठी 'वागीशशास्त्री' ५–००
१५७ **वेद-सञ्चयनम् (वेदः)**। हिन्दी टीका सहित। डॉ० यदुनन्दन मिश्र ८–००
१५८ **सांख्यकारिका (सांख्य)**। ईश्वरकृष्ण। 'गौडपादभाष्य' सहित।
'गौडपादभाष्यभाववर्णिनी' सं० हि० टीका युक्त। पं० ज्वालाप्रसाद गौड़ ४–५०
१५९ **मेघदूतम् (काव्यम्)**। कालिदास। [पद्यानुवाद] पं० सुधाकर मिश्र
एवं [भाषानुवाद] आचार्य श्री शेषराज शर्मा १०–००
१६० **कादम्बरी-कथामुखम् (गद्यकाव्यम्)**। बाणभट्ट। संस्कृत-हिन्दी
व्याख्या सहित। प्रो० समीर शर्मा ६–००
१६१ **मुद्राराक्षसम् (नाटकम्)**। विशाखदत्त। संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी
व्याख्या सहित। श्री जगदीशचन्द्र मिश्र १५–००
१६२ **नीतिवाक्यामृतम् (जैन)**। हिन्दी टीका सहित। रामचन्द्र मालवीय १०–००
१६३ **ऋग्वेदसंहिता (वेदः)**। प्रथम अध्याय, सूक्त १–१९। सस्वर,
संहिता पाठ, पद पाठ, सायणभाष्य, स्कन्दभाष्य, हिन्दी व्याख्या, तथा
हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद। सम्पा० प्रो० उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' २०–००
१६४ **अनुवादरत्नाकरः (व्याकरणम्)**। डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी २०–००
१६५ **अभिधावृत्तिमातृका (काव्यम्)**। डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी ७–००
१६६ **शब्दव्यापारविचारः (अलंकारः)**। डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी ४–००
१६७ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता**। पदपाठ-उव्वट-महीधरभाष्यसंवलित 'तत्वबोधिनी'
हिन्दी व्याख्या सहित। डॉ० रामकृष्ण शास्त्री यंत्रस्थ

भास नाटक चक्रम्। (महाकवि भास के सम्पूर्ण नाटकों का सङ्कलन)

आचार्य बलदेव उपाध्याय सम्पादित 'महाकविभास' नामक सुविस्तृत भूमिकादि विभूषित 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्यासहित। ५०–००

भर्तृहरिशतकत्रयम्। (नीतिशतक, श्रृंगारशतक, वैराग्यशतक)

सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या पद्यानुवाद सहित।

मूल के साथ हिन्दी भावानुवाद, हिन्दी पद्यानुवाद भी प्रकाशित किया गया है। संस्कृत न जानने वाले व्यक्ति भी ग्रन्थों के मूल भावों को हृदयङ्गम कर आनन्द के भागी हो सकते हैं। ७–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्याभवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला

१	बौद्धदर्शन मीमांसा (दर्शन) । पं० बलदेव उपाध्याय	३०-००
२	सदाचार सोपान । पं० रामबालक शास्त्री	०-५०
३	महाकवियों की अमर रचनाएँ (जीवनी) । चक्रधर शर्मा	३-००
४	संस्कृत कवि दर्शन । डाक्टर भोलाशंकर व्यास	१०-००
५	पथचिह्न । शान्तिप्रिय द्विवेदी	२-००
६	भारतीय इतिहास । श्री रामस्वरूप	२-००
७	भारत का भूगोल । श्री रामस्वरूप	१-५०
८	नागरिक शास्त्र । पं० हनुमान प्रसाद शर्मा	१-००
९	गोस्वामी तुलसीदास । पं० सीताराम चतुर्वेदी	४-००
१०	भारतीय व्रतोत्सव । आचार्य श्री पुरुषोत्तम चतुर्वेदी	४-००
११	हमारे आधुनिक कवि और उनकी कविताएँ । व्यथित हृदय	४-५०
१२	हिन्दू संस्कार । डाक्टर राजबली पाण्डेय । नवीन संशोधित तृतीय संस्करण	३०-००
१३	काव्याङ्ग निर्णय । जङ्गबहादुर मिश्र 'रञ्जन'	यन्त्रस्थ
१४	कादम्बरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन । डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	२०-००
१५	भक्ति का विकास । डॉ० मुंशीराम शर्मा	५०-००
१६	जीवन दर्शन । डाक्टर मुंशीराम शर्मा	३-००
१७	साहित्य और सिद्धान्त । श्यामलाकान्त वर्मा	यन्त्रस्थ
१८	ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य । श्री वी० एम० चिन्तामणि	३-५०
१९	अक्षर अमर रहें (निबन्ध संग्रह) । वाचस्पति गैरोला	५-००
२०	मराठी का भक्ति साहित्य । प्रो० भी० गो० देशपाण्डे । साधारण संस्करण	१०-००
	राज संस्करण	१२-००
२१	भक्तितरङ्गिणी । डाक्टर मुन्शीराम शर्मा	३-००
२२	मंदाकिनी । डाक्टर देवर्षि सनाढ्य	१-२५
२३	भारतीय भाषा विज्ञान । पं० किशोरीदास वाजपेयी शास्त्री	८-००
२४	सावित्री सत्यवान् । पं० राजनारायण शुक्ल	२-००
२५	विक्रमादित्य । (संवत् प्रवर्तक) डॉ० राजबली पाण्डेय	१२-००
२६	हिन्दुओं की प्रबुद्ध रचनाएँ । थि० गोल्डस्टकर । अनु० सुश्री रमा शास्त्री	४-००
२७	असामान्य मनोविज्ञान । डाक्टर रामकुमार राय	यन्त्रस्थ
२८	संस्कृत साहित्य का इतिहास (बृहत् संस्करण) । श्री वाचस्पति गैरोला	३५-००
२९	संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास । श्री वाचस्पति गैरोला	२५-००
३०	कलाविलासिनी वासवदत्ता । श्री देवदत्त शास्त्री	३-५०
३१	चिन्तन के नये चरण । श्री देवदत्त शास्त्री	८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३२ **प्राकृत व्याकरण**। आचार्य श्री मधुसूदनप्रसाद मिश्र ७-००
३३ **रसराज**। महाकवि मतिराम मिश्र प्रणीत। आचार्य रामजी मिश्र रचित सुबोध व्याख्या समालोचना सहित १०-००
३४ **प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन**। डाक्टर राय गोविन्दचन्द १६-००
३५ **हिन्दी के पौराणिक नाटक**। डाक्टर देवर्षि सनाढ्य १५-००
३६ **सब धर्मों की बुनियादी एकता**। डाक्टर भगवानदास २०-००
३७ **वैदिक व्याकरण**। श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय ४-००
३८ **अवन्ति कुमारियाँ**। श्री देवदत्त शास्त्री ३-००
३९ **मानक हिन्दी व्याकरण**। श्री रामचन्द्र वर्मा ४-००
४० **वैदिक माइथोलाजी**। (वैदिक पुराकथा शास्त्र)। प्रो० ए० मैकडोनल। हिन्दी रूपान्तरकार—डाक्टर रामकुमार राय २०-००
४१ **महाकवि कालिदास**। डाक्टर रमाशंकर तिवारी (देवपुरस्कार से पुरस्कृत) २०-००
४२ **प्राकृत साहित्य का इतिहास**। डाक्टर जगदीशचन्द्र जैन ३०-००
४३ **मार्कण्डेयपुराण : एक अध्ययन**। आचार्य बदरीनाथ शुक्ल ६-००
४४ **चारुचर्या**। महाकवि क्षेमेन्द्र। हिन्दी टीका सहित। देवदत्त शास्त्री २-५०
४५ **पौराणिक कथाएँ**। श्री हृदयराम शर्मा ५-००
४६ **वैदिक इण्डेक्स**। (वैदिक नामों और विषयों की व्याख्यात्मक-अनुसूची) मैक्डोनेल और कीथ। अनु० डाक्टर रामकुमार राय। १-२ भाग ६८-००
४७ **कालिदास : एक अनुशीलन**। श्री देवदत्त शास्त्री ५-००
४८ **संस्कृत साहित्य का इतिहास**। आर्थर मैकडोनल। हिन्दी अनुवाद सहित। श्री चारुचन्द्र शास्त्री। द्वितीय भाग—यन्त्रस्थ प्रथम भाग १०-००
४९ **हिन्दी और मराठी का निर्गुण सन्त काव्य**। डॉ० प्रभाकर माचवे २०-००
५० **पाणिनीयकालीन भारतवर्ष**। (पाणिनीय कृत अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन)। डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल ३०-००
५१ **कौटिलीय अर्थशास्त्र**। (शोधपूर्ण हिन्दी रूपान्तर) श्रीवाचस्पति गैरोला ४०-००
५२ **दिनकर की उर्वशी**। (समीक्षात्मक अनुशीलन) डाक्टर रमाशंकर तिवारी ४-००
५३ **भारतीय साहित्य की रूपरेखा**। डाक्टर भोलाशंकर व्यास १०-००
५४ **परिक्रमा**। स्व० श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ४-००
५५ **लौकिक संस्कृत साहित्य**। ए० बी० कीथ। अनुवादक-श्री चारुचन्द्र शास्त्री १०-००
५६ **स्मृति के हस्ताक्षर**। श्री देवदत्त शास्त्री ५-००
५७ काव्यचिन्ता। डाक्टर रमाशंकर तिवारी ६-००
५८ **भारतीय इतिहास का परिचय**। डाक्टर राजबली पाण्डेय १३-००
५९ **विश्लेपणात्सक मनोविज्ञान**। डॉ० सी० जी० युङ्ग। अरविन्द वसावड़ा २-००
६० **मध्यकालीन साहित्य में अवतारवाद**। डॉ० कपिलदेव पाण्डेय। भूमिका लेखक-डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ४०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६१ वैदिक निबन्धावली। डॉ० मुंशीराम शर्मा ५-००
६२ आचार्य हेमचन्द्र और उनका शब्दानुशासन : एक अध्ययन।
डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री २०-००
६३ संस्कृत सुकवि समीक्षा। आचार्य बलदेव उपाध्याय ४०-००
६४ व्यावहारिक मनोविज्ञान। डॉ० रामकुमार राय १०-००
६५ व्यावहारिक मनोविज्ञान की रूपरेखा। डॉ० रामकुमार राय ७-५०
६६ वैदिक आख्यान। डॉ० गंगासागर राय २-००
६७ मूल संस्कृत उद्धरण। (ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्टस) ले०-प्रो० जे० मूइर।
अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय। १-५ भाग सम्पूर्ण २००-००
६८ प्राचीन भारत में अपराध और दंड। डॉ० हरिहरनाथ त्रिपाठी ७-००
६९ चित्र और चिन्तन। श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी ३-५०
७० प्रयोगवादी काव्यधारा : तथोक्त नई कविता। डॉ० रमाशंकर तिवारी
भूमिका ले०—श्री लक्ष्मीनारायण सुधांशु २०-००
७१ प्रतिभादर्शन। (भाषातत्त्व शास्त्र)। आचार्य हरिशंकर जोशी ३०-००
७२ काव्यात्ममीमांसा। डॉ० जयमन्त मिश्र २०-००
७३ महाकवि भास : एक अध्ययन। आचार्य बलदेव उपाध्याय ५-००
७४ अभिनव निबन्धावली। श्री श्यामलाकान्त वर्मा १०-००
७५ राजनय के सिद्धान्त और व्यवहार। श्रीमती कृष्णाराय ५-००
७६ चार्वाकदर्शन की शास्त्रीय समीक्षा। डॉ० सर्वानन्द पाठक १६-००
७७ संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास। श्री कृष्णचैतन्य।
अनुवादक—डॉ० विनयकुमार राय २५-००
७८ निबन्ध सौरभ। श्री बाबूलाल मिश्र २-००
७९ महाकवि भवभूति। डॉ० गङ्गासागर राय ७-००
८० पुराण विमर्श। आचार्य बलदेव उपाध्याय ३५-००
८१ संस्कृत भाषा। टी० बरो। अनुवादक—डॉ० भोलाशंकर व्यास ३५-००
८२ भारवि काव्य में अर्थान्तरन्यास। श्री उमेशप्रसाद रस्तोगी ८-००
८३ चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन।
डॉ० छविनाथ त्रिपाठी १५-००
८४ वैदिक युग में भारतीय आभूषण : एक अध्ययन। राय गोविन्दचन्द २०-००
८५ सांख्ययोग दर्शन का जीर्णोद्धार (सांख्य)। श्री हरिशंकर जोशी २०-००
८६ संस्कृत साहित्य का इतिहास। (वैदिक साहित्य की रूपरेखा सहित)।
श्री हंसराज अग्रवाल १०-००
८७ वैदिक साहित्य की रूपरेखा। श्री हंसराज अग्रवाल २-००
८८ अपराध और दण्डशास्त्र। श्री कौशलकुमार राय १०-००
८९ भारतीय साहित्यशास्त्र और काव्यालंकार। डॉ० भोलाशंकर व्यास १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

९० **विविधार्थ** । भारतरत्न डॉ० भगवानदास । द्वितीय संस्करण ७–५०
९१ **संस्कृत साहित्य में मौलिकता एवं अनुहरण** । श्री उमेशप्रसाद रस्तोगी १०–००
९२ **भारतीय प्रज्ञा** । (मॉनियर विलियम्स कृत इण्डियन विज़डम का हिन्दी अनुवाद) । अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय ३५–००
९३ **जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज** । डॉ० जगदीशचन्द्र जैन ३०–००
९४ **नगरीय समाजशास्त्र** । कौशलकुमार राय १०–००
९५ **मन्त्र और मातृकाओं का रहस्य** । डॉ० शिवशंकर अवस्थी शास्त्री २०–००
९६ **कविवर डॉ० रामकुमार वर्मा और उनका काव्य** । प्रो० दशरथराज ४–००
९७ **बार्हस्पत्य राज्य व्यवस्था** (अर्थशास्त्र) डॉ० राघवेन्द्र वाजपेयी १६–००
९८ **हिन्दी शिवमहिम्नस्तोत्र** (पद्यानुवाद) । पं० राधेलाल त्रिवेदी १–२५
९९ **सोमेश्वरकृत मानसोल्लास : एक सांस्कृतिक अध्ययन** । शिवशेखरमिश्र ३०–००
२०० **भारतीय इतिहास के स्रोत : सिक्के** । मूल लेखक—ई० जे० रैपसन । हिन्दी अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय १६–००
२०१ **पुरुषार्थ** । डॉ० भगवानदास २०–००
२०२ **स्मृतियाँ और कृतियाँ** । श्री शांतिप्रिय द्विवेदी ५–००
२०३ **साहित्य शास्त्र सार** । श्री हंसराज अग्रवाल तथा श्रुतिकांतजी ४–५०
२०४ **कृष्ण-भक्ति काव्य में सखीभाव** । डॉ० शरणबिहारी गोस्वामी ३५–००
२०५ **हिन्दी काव्य की सामाजिक भूमिका** । डॉ० शम्भूनाथ सिंह १०–००
२०६ **व्याकरणशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास** । श्री रमाकान्त मिश्र ५–००
२०७ **वेदकालीन समाज** । डॉ० शिवदत्त ज्ञानी ३०–००
२०८ **महाकवि शूद्रक** । डॉ० रमाशङ्कर तिवारी २०–००
२०९ **राजतरङ्गिणीकोश** (कोश) । डॉ० रामकुमार राय २२–००
२१० **औचित्य-सम्प्रदाय का हिन्दी काव्यशास्त्र पर प्रभाव** । (प्रत्यक्ष तथा परोक्ष) । डॉ० चन्द्रहंस पाठक ३०–००
२११ **हेमचन्द्राचार्य जीवनचरित्र** । (सचित्र) । डॉ० जी० व्हूलर । अनु० कस्तूरमल बाँठिया ७–५०
२१२ **वेदार्थ-चन्द्रिका** (वैदिक) । डॉ० मुन्शीराम शर्मा ७–५०
२१३ **भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि सिद्धान्त** । डॉ०राजवंश सहाय 'हीरा' २०–००
२१४ **लौकिक संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास** । श्री गौरीनाथ शास्त्री । अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय १०–००
२१५ **मधुपर्क** (काव्य) । श्री देवीरत्न अवस्थी 'करील' १०–००
२१६ **दक्षिण भारत** (आरम्भ से प्राचीन राजवंशों के पतन तक) । डॉ० बलराम श्रीवास्तव । नवीन परिवर्द्धित संस्करण शीघ्रप्राप्य
२१७ **कवियों की लोकदृष्टि (संस्कृत साहित्य के कुछ रससिद्ध कवियों के चिरन्तन साहित्य का परि-मन्थन)** । श्री शिवशंकर त्रिपाठी १८–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

११८ **न्याय परिचय** । म० म० फणिभूषण तर्कवागीश । हिन्दी रूपान्तरकार–डॉ० किशोरनाथ झा — १५-००

११९ **महर्षि वेदव्यास (एक ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पर्यालोचन)** । पं० उमाशंकर दीक्षित — ४-५०

१२० **जवाहरलाल नेहरू विजयनाटक** । श्री रमाकांत मिश्र — १-००

१२१ **साहित्य शास्त्रीय तत्त्वों का आधुनिक समालोचनात्मक अध्ययन** । श्री मधुसूदन शास्त्री — १२-५०

१२२ **वाग्विज्ञान** (भाषाशास्त्र) । आचार्य पं० श्री सीताराम चतुर्वेदी — ३५-००

१२३ **भारतीय दर्शन में चेतना का स्वरूप** । डॉ० श्रीकृष्ण सक्सेना — १५-००

१२४ **बौद्ध-न्याय** । ले०–एफ० टी० शर्वाट्स्की । अनुवादक–डॉ० रामकुमार राय — ३५-००

१२५ **मध्य भारतीय भाषा चयन** । डॉ० वीरमणि उपाध्याय — ५-००

१२६ **पौराणिक आख्यान** । डॉ० गंगासागर राय — २-००

१२७ **अभिज्ञानशाकुन्तल : एक अध्ययन** । श्री काशीनाथ द्विवेदी — ५-००

१२८ **संस्कृत नाट्य सिद्धान्त** । डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी — १२-५०

१२९ **पल्लव इतिहास और उसकी आधार सामग्री** । डॉ० बलराम श्रीवास्तव — ८-००

१३० **सुलभ ज्यौतिष ज्ञान** (ज्यौतिष) । दैवज्ञ वासुदेव सदाशिव खानखोजे — १६-००

१३१ **सुदामाचरित** । नरोत्तमदास । 'बालबोधिनी' व्याख्या सहित — १-००

१३२ **पुराण की लोक भारती** । डॉ० जयशंकर त्रिपाठी — २-००

१३३ **अलंकार मीमांसा** । डॉ० राजवंश सहाय 'हीरा' — ५-००

१३४ **निबन्ध पारिजात** । (हिन्दी साहित्यिक निबन्ध) । रजनीकांत लाहरी — ५-००

१३५ **हिंसा या अहिंसा** । (हिन्दी नाटक) । सेठ गोविन्ददास — ३-००

१३६ **अपभ्रंश साहित्य : परम्परा और प्रवृत्तियाँ** । डॉ० राजवंशसहाय 'हीरा' — ३-००

१३७ **वैदिक वाङ्मय का इतिहास** । श्री रमाकांत शास्त्री — ५-००

१३८ **मुहूर्त पारिजात : ज्यौतिष कल्पद्रुम** । पं० सोहनलाल व्यास सम्पादक—पं० सीताराम झा — १५-००

१३९ **भारत और एशिया के अन्य देश** । श्रीमती सुदर्शना सिंहल — १५-००

१४० **सद्धर्मचन्द्रिका** (वेदान्त) । स्वामी श्री हनुमानदासजी षट्शास्त्री — २-५०

१४१ **गरीबी या अमीरी** अथवा **श्रम या उत्तराधिकार** (हिन्दी नाटक) । सेठ गोविन्ददास — ३-००

१४२ **विचारचन्द्रोदय** (वेदान्त) । पीताम्बरी भा० टी० । स्वामी हनुमानदास — ३-००

१४३ **व्यञ्जना : सिद्धि और परम्परा** । डॉ० कृष्णकुमार शर्मा — १०-००

१४४ **संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास** । (प्रश्नोत्तर रूप में) । डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी — २-००

१४५ **बघेलखण्ड के संस्कृत काव्य** । डॉ० राजीवलोचन अग्निहोत्री — २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चौखम्बा राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला

१ **स्वतन्त्र कलाशास्त्र** । डॉ० कान्तिचन्द्र पाण्डेय ।
प्रथम भाग (भारतीय) ५०–०० द्वितीय भाग (पाश्चात्य) ५०–००
२ **विष्णुपुराण का भारत** । डॉ० सर्वानन्द पाठक २५–००
३ **वैदिक योगसूत्र** । श्री हरिशङ्कर जोशी २५–००
४ **शृङ्गार रस का शास्त्रीय विवेचन** । डॉ० इन्द्रपाल सिंह । (आचार्य भरत से भानुदत्त के ग्रंथों में आये हुए शृंगार रस का एकत्रीकरण) १०–००
५ **वैशेषिक दर्शन : एक अध्ययन** । श्री नारायण मिश्र २०–००
६ **काश्मीर शैवदर्शन और कामायनी** । डॉ० भँवरलाल जोशी २५–००
७ **संस्कृत साहित्य में नीति का उद्गम एवं विकास** ।
डॉ० प्रभाकर नारायण कवठेकर २५–००
८ **संस्कृत महाकाव्य की परम्परा** । (कालिदास से श्रीहर्ष तक) ।
डॉ० केशवराव मुसलगाँवकर २५–००
९ **भारतीय संगीत का इतिहास** । (वैदिक काल से गुप्त काल तक) ।
डॉ० शरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे ३५–००
१० **प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान** । डॉ० वासुदेव उपाध्याय ३५–००
११ **साहित्यानुशासनम्** । आचार्य सीताराम चतुर्वेदी ३५–००
१२ **अलंकारानुशीलन** । डॉ० राजवंश सहाय 'हीरा' २५–००
१३ **अलंकारशास्त्र की परम्परा** । डॉ० राजवंश सहाय 'हीरा' १०–००
१४ **सौन्दरानन्द : साहित्यिक एवं दार्शनिक गवेषणा** ।
डॉ० ब्रह्मचारी ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन' १५–००
१५ **शक्तिभाष्य का अध्ययन** (तंत्र) । डॉ० श्रीमती सुशीला 'कमलेश' २५–००
१६ **संस्कृत-साहित्य-कोशः** । डॉ० राजवंश सहाय 'हीरा' ५०–००
१७ **भाषाविश्लेषण** । डॉ० मोतीलाल गुप्त १५–००
१८ **भारत की आधुनिक आर्य-भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण** । यन्त्रस्थ
१९ **भारतीय संस्कृति एवं धार्मिक विचार** । यन्त्रस्थ
२० **भारतीय संस्कृति की एक झलक** । यन्त्रस्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

॥ श्रीः ॥

काशी मिथिला ग्रन्थमाला

१	वाजसनेयिनां संक्षिप्ताह्निकम् । संग्रहकर्ता-उग्रानंदशर्मा । मैथिली टीका	०–५०
२	छान्दोगानां संक्षिताह्निकम् । पं० उग्रानंद शर्मा । मैथिली टीका	०–५०
३	छान्दोगानां सन्ध्यातर्पणपद्धति । संग्रहकर्ता–उग्रानंद शर्मा	०–२५
४	वाजसनेयिनां सन्ध्यातर्पणपद्धतिः वैतरणीदावादिपरिशिष्ट सहिता ।	०–२५
५	षडङ्गशतरूद्रिय पद्धतिः ।	यंत्रस्थ
६	वाजसनेयिनां छान्दोगानाम् च आभ्युदयिकश्राद्धपद्धतिः । जूटिकाबन्धनमातृकापूजासहिता । पं० रामचंद्रझा । मैथिली टीका	०–५०
७	सूर्यादिद्वादस्तवीस्तोत्रम् अन्नपूर्णादिस्तोत्रसहितम् ।	०–३०
८	मिथिलादेशीया कथा सहिता श्रीसत्यनारायणपूजापद्धतिः । रामचंद्रझा	यंत्रस्थ
९	मिथिलादेशीया कथा सहिता श्रीसत्यनारायणपूजापद्धतिः । रामचंद्रझा	१–००
१०	छान्दोगानाम् एकोदिष्टपद्धतिः । 'इन्दुमती' मैथिली टीका, रामचन्द्रझा	०–४०
११	वाजसनेयिनाम् एकोदिष्टपद्धतिः । 'इन्दुमती' मैथिली टीका, रामचन्द्रझा	०–७५
१२	वाजसनेयिनां पार्वणपद्धतिः । 'इन्दुमती' मैथिली टीका, रामचन्द्र झा	०–५०
१३	छान्दोगानां पार्वणपद्धतिः । 'इन्दुमती' मैथिली टीका । रामचन्द्र झा	०–५०
१४	वाजसनेयिनां विवाहपद्धतिः । 'इन्दुमती' मैथिली टीका, रामचन्द्र झा	३–००
१५	छान्दोगानां विवाहपद्धतिः । 'इन्दुमती' मैथिली टीका । रामचन्द्र झा	४–००
१६	वाजसनेयिनाम् उपनयनपद्धतिः । 'इन्दुमती' मैथिली टीका, रामचन्द्रझा	२–५०
१७	छान्दोगानाम् उपनयनपद्धतिः । 'इन्दुमती' मैथिली टीका । रामचन्द्रझा	३–००
१८	प्रतिहारषष्ठी (विवस्वत् षष्ठी) । व्रतकथापद्धतिः । पं० रामचन्द्र झा	०–१५
१९	आह्निकपञ्चदेवपूजापद्धतिः । पं० रामचन्द्र झा	०–१०
२०	वर्षकृत्यम् । श्रीरुद्रधर विरचित । 'मैथिली' टीका सहित । सम्पा०— रामचन्द्र झा । प्रथम भाग १५–०० द्वितीय भाग, १५–०० सम्पूर्ण	३०–००
२१	कूपोत्सर्गपद्धतिः ।	०–४०
२२	गृहोत्सर्गपद्धतिः ।	०–४०
२३	एकादशी व्रतोद्यापनपद्धतिः । 'इन्दुमती' टिप्पणी सहित । रामचन्द्रझा	०–७५
२४	आकाशदीप-तुलसी-कार्तिकोद्यापनत्रयपद्धतिः । पं० रामचन्द्र झा	०–५०
२५	दुर्गापूजाश्यामापूजापद्धतिः । 'इन्दुमती' टिप्पणी सहित । रामचन्द्रझा	२–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२६ पितृकर्म-निर्णयः । संग्रहकर्त्ता—श्री त्रिलोकनाथ मिश्र । रामचन्द्र झा ५–००
२७ मैथिलीसाम्प्रदायिक दुर्गासप्तशती । सम्पादक—कनकलाल ठक्कुर २–५०
२८ त्राद्वशुल्कचतुर्थी-चन्द्रपूजा-चन्द्रव्रत कथा सहित । श्री रामचन्द्र झा ०–२५
२९ सिद्धविनायक चतुर्थी-व्रत-कथा । सम्पादक : पं० रामचन्द्र झा ०–३०
३० हरितालिका-व्रतपूजा-कथा । सम्पादक : पं० रामचन्द्र झा ०–२५
३१ वाजसनेयिनां श्राद्धपद्धतिः । म० म० श्रीदत्तानुसारिणी कुमारकर्तृक श्राद्धपद्धति सहित । म० म० श्री वाचस्पति मिश्र । श्रीरामचन्द्र झा ४–००
३२ छान्दोगानां श्राद्धपद्धतिः । म० म० श्री दत्तानुसारिणीकुमार-कर्तृक श्राद्धपद्धति सहित । म० म० श्री वाचस्पति मिश्र कृत 'इन्दुमती' मैथिली टीका सहित । सम्पादक—श्री रामचन्द्र झा ४–००
३३ तिथिनिर्णयः । १–२५
३४ छान्दोगानां नामकरण । ५–००
३५ गयाश्राद्धपद्धतिः । पं० श्री रामचन्द्र झा

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

चौखम्बा राष्ट्रभारती ग्रन्थमाला

१ साहित्यालोक । [आई० ए०, बी० ए० तथा बी० ए० आनर्स के छात्रों हेतु पाठ्यक्रमानुसार] डॉ० राजवंश सहाय 'हीरा' ७–५०
२ तुलसीदास की दोहावली का विवेचनात्मक अध्ययन । श्रीगौरीशंकरमिश्र २०–००
३ लोलिम्बराज और उनकी कृतियाँ : एक अध्ययन । डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, एम० ए०, पी० एच्० डी० २५–००

चौखम्बा आयुर्विज्ञान ग्रन्थमाला

१ आयुर्वेदीय रोगों का वर्गीकरण । डॉ० रमानाथ द्विवेदी एवं डॉ० गुरुदीपसिंह ६–००
२ एलोपैथिक की पेटेन्ट औषधियाँ । (एलोपैथिक पेटेण्ट मेडिसिन) डॉ० शिवनाथ खन्ना २०–००

चौखम्बा सुरभारती स्टडीज

१ काव्यालङ्कारकारिका (अभिनवं काव्यशास्त्रम्) । रचयिता—डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी । संस्कृत वृत्ति एवं आंग्लानुवाद सहित ३०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

१ **पुराणपर्यालोचनम् (पुराण)**। डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी।
प्रथम : गवेषणात्मक भाग ३०-०० द्वितीय : समीक्षात्मक भाग २०-००

२ **रघुवंशमहाकाव्यम् (काव्यम्)**। महाकविकालिदास। 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्। आचार्य शेषराजशर्मा 'रेग्मीः'। प्रथमः सर्गः २-२५

३ **लघुसिद्धान्तकौमुदी (व्याकरणम्)**। श्रीवरदाचार्य। 'शिवाख्य' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेता। श्री गोमतीप्रसाद शास्त्री ७-००

४ **हितोपदेश-मित्रलाभः (नीतिः)**। अश्लीलांशवर्जितः। 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतः। आचार्य शेषराजशर्मा 'रेग्मीः' ५-५०

५ **तर्कसंग्रहः (नीतिः)**। श्रीमदन्नम्भट्ट। पदकृत्यटीकासहितो हिन्द्यभाषाऽनुवादद्वितीयोपेतश्च। आचार्य श्रीशेषराजशर्मा 'रेग्मीः' २-५०

६ **तर्कसंग्रहः (नीतिः)**। श्रीमदन्नम्भट्ट। हिन्दी व्याख्या सहित। आचार्य श्री शेषराजशर्मा 'रेग्मीः' १-००

७ **कुमारसम्भव-महाकाव्यम् (काव्यम्)**। महाकविकालिदास। 'विमला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्। पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी। १-२ सर्ग ४-००
तृतीय सर्ग २-०० चतुर्थ सर्ग २-०० पञ्चम सर्ग २-५०

८ **भक्तिरत्नावली (वेदान्तः)**। पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी १५-००

९ **रघुवंशमहाकाव्यम् (काव्यम्)**। महाकविकालिदास। 'विमला' 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्। पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी। द्वितीयसर्ग २-२५
तृतीयसर्ग २-२५, चतुर्थसर्ग २-००, पञ्चमसर्ग २-००
६-७ सर्ग ४-००, १३-१४ सर्ग ४-००, पृथक्-पृथक् प्रत्येक सर्ग २-००

१० **नीतिशतकम् (नीतिः)**। श्रीभर्तृहरि। 'विमला'-संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम् पं श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी ३-००

११ **अलङ्कार-सार-मञ्जरी (अलङ्कारः)**। सान्वय विस्तृत हिन्दीव्याख्या सहित। सम्पादक—म० म० पण्डितराज श्रीगोपालशास्त्री 'दर्शनकेशरी' २-००

१२ **बृहद्वास्तुमाला (ज्यौतिषम्)**। सम्पादक—ज्यौतिषाचार्य स्व० पं० श्री रामनिहोर द्विवेदी ८-००

१३ **नैषधमहाकाव्यम् (काव्यम्)**। श्रीहर्ष। 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम्। आचार्य श्रीशेषराजशर्मा 'रेग्मीः' प्रथम सर्ग ५-००
१-३ सर्ग १०-०० १-५ सर्ग १५-०० १-९ सर्ग २५-००

१४ **औचित्य-जीवनम् (दर्शनम्)**। हिन्दी टीका सहित। मायाप्रसाद त्रिपाठी ४-००

१५ **पञ्चतन्त्र-अपरीक्षितकारकम्**। श्रीविष्णुशर्मा। परीक्षोपयोगि 'विमला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी ३-५०

१६ **युग पुराण**। हिन्दी टीका सहित। पं० श्री कृष्णमणि त्रिपाठी २-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१७ **भट्टिमहाकाव्यम् (काव्यम्)**। 'काव्यमर्मविमर्शिकाख्य' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम्। म० म० पण्डितराज श्रीगोपालशास्त्री 'दर्शनकेशरी'। नवीन संशोधित संस्करण। १-४ सर्ग ७-००, ५-८ सर्ग ८-०० १४-२२ सर्ग ८-००

१८ **सांख्यकारिका (सांख्य)**। श्रीईश्वरकृष्ण। 'सांख्यप्रकाश' नामक परीक्षोपयोगि संस्कृत-हिन्दी व्याख्यायुक्त। पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी ५-००

१९ **सवृत्तिरष्टाध्यायीसूत्रपाठः (व्याकरणम्)**। श्रीमत्पाणिनिमुनि। सम्पादक—म० म० पण्डितराज श्रीगोपालशास्त्री 'दर्शनकेशरी' ३-००

२० **किरातार्जुनीयम् (काव्यम्)**। 'विजया' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्। श्री ब्रह्मानन्द त्रिपाठी। द्वितीय सर्ग १-५० चतुर्थ सर्ग २-०० ३-६ सर्ग ६-००

२१ **स्वप्नवासवदत्तम् (नाटकम्)**। महाकवि भास। 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्। आचार्य श्री शेषराजशर्मा 'रेग्मीः' ६-००

२२ **दशकुमार-पूर्वपीठिका**। पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी कृत 'विमला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्यायुक्त ४-००

२३ **काव्यमीमांसा (अलङ्कारः)**। राजशेखर। परीक्षोपयोगि 'विमला-सुधा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी। १-५ अध्याय ३-५०

२४ **प्रस्तावरत्नाकरः (निबन्धः)**। वाराणसी, बिहार आदि की पूर्व एवं उत्तरमध्यमा परीक्षोपयोगि संस्कृत निबन्ध संग्रह। डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी ५-००

२५ **शिशुपालवधम् (काव्यम्)** महाकविमाघ। श्रीरामजी लाल शर्मा कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या तथा परीक्षोपयोगि टिप्पण्यादि युक्त। प्रथम सर्ग २-५० द्वितीय सर्ग ३-००, तृतीय सर्ग २-५०, चतुर्थ सर्ग २-५०, १-४ सर्ग १०-००

२६ **मूलरामायणम्** (वाल्मीकिरामायणान्तर्गता)। पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित १-७५

२७ **पालि-पल्लविनी**। (अवध विश्वविद्यालय के एम० ए० (हिन्दी) प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम पर आधारित संकलन)। कुमारी मुकुलरानी त्रिपाठी। भू० लेखक—डॉ० रमाशंकर तिवारी ५-००

२८ **प्रतिमानाटकम् (नाटकम्)**। महाकविभास। 'विमला' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतम्। आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र ७-००

२९ **चन्द्रालोकः (अलङ्कारः)**। जयदेवकवि। 'विमला'-'सुधा'-संस्कृत-हिन्दी-व्याख्याद्वयोपेतः। डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी। पञ्चम मयूख ४-००, सम्पूर्ण ८-००

३० **काव्यदीपिका (अलङ्कारः)**। कान्तिचन्द्रभट्टाचार्येणसंगृहीता। 'सुधा'-'विमला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेता। डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी। अष्टमशिखा २-५०, सम्पूर्ण ७-००

३१ **रत्नावली-नाटिका (नाटकम्)**। श्रीहर्ष। 'सुधा'-संस्कृत-हिन्दीटीकाद्वयोपेता। पं० परमेश्वरदीन पाण्डेय एम० ए०, साहित्याचार्य ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

|| श्रीः ||

संस्कृत साहित्य और वाङ्मय

व्याकरण-ग्रन्थाः

१ अनुवाद चन्द्रिका। लोकमणि जोशी ३-००

२ (नवीन) अनुवाद चन्द्रिका। डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी ८-५०

३ (बृहत्) अनुवाद रत्नाकर। डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी
[इस संस्करण के सांगोपांग अध्ययन से छात्रों को संस्कृत व्याकरण का पूर्ण ज्ञान होगा और लघुकौमुदी या सिद्धान्तकौमुदी के गद्य-पद्यों का अनुवाद सहज में करने लगेंगे। इसमें व्यावहारिक शब्द-कोषों का संग्रह भी कर दिया है, जो अधिक उपयोगी है।] [वि. सं. १६४] २०-००

४ अभिनव निबन्धावलि। श्री श्यामलाकान्त वर्मा
[इसमें लगभग १०० परीक्षोपयोगी हिन्दी निबन्धों का संग्रह किया गया है। छात्रों के लिये इसी प्रकार के वर्गीकरण की आवश्यकता थी। भाषा, शैली, कौशल आदि सभी दृष्टियों से इसकी उत्तमता स्वीकृत की गई है।]
नवीन संस्करण १९७७ [वि. रा. ७४] १०-००

५ अभिनव प्राकृत-व्याकरण। डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री २०-००

६ अष्टाध्यायी (भाष्य)। ब्रह्मदत्त जिज्ञासु कृत हिन्दी टीका सहित। द्वितीय १६-००
प्रथम भाग—यन्त्रस्थ तृतीय २०-००

७ अष्टाध्यायीसूत्रपाठः। पाणिनिमुनि। सम्पा० श्रीगोपालशास्त्री दर्शनकेशरी ३-००

८ आचार्य हेमचन्द्र और उनका शब्दानुशासन : एक अध्ययन। डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री।
[शब्दानुशासन सम्बन्धी हैम की विशेषताओं, उपलब्धियों और अभावों पर प्रकाश डाला गया है तथा पाणिनि एवं पाणिनि से भिन्न अन्य अनेक वैयाकरणों के साथ अनेक दृष्टियों से उनकी तुलना की गयी है।] [वि. रा. ६२] २०-००

९ उपसर्गवर्ग। महादेवभट्टाचार्य। सम्पा० अमरनाथ पाण्डेय ३-००

१० उपसर्गार्थ चन्द्रिका। चारुदेव शास्त्री। प्रथम खण्ड ३०-००

११ ऋजुपाणिनीयम्। श्रीगोपालशास्त्री दर्शनकेशरी १-००

१२ कच्चायन व्याकरण (पालिव्याकरण)। हिन्दी टीका सहित २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१३ **कारकदर्शनम्** । (सिद्धान्तकौमुदी-कारकप्रकरण) हिन्दी व्याख्या सहित ।
व्याख्याकार—डॉ० कलानाथ झा ।
[इसकी छात्रोपयोगी व्याख्या काशिका, तत्त्वबोधिनी, बालमनोरमा तथा महाभाष्य आदि टीकाओं पर आधारित है । ग्रन्थ के प्रतिपाद्य विषय को अधिक स्पष्ट किया गया है ।] [वि. सं. १५३] ५–०

१४ **काशिकावृत्तिः** । काशिकाविवरणपञ्जिका, पदमञ्जरीव्याख्यासहित । १-६ भाग १८०–०

१५ **काशिकावृत्तिः** । पाणिनिविरचितव्याकरणसूत्राणांवृत्तिः वामनजयादित्य-विनिर्मित । 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित । १–२ भाग ५०–०

१६ **काशिकावृत्ति-वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदीतुलनात्मकअध्ययनम्** ।
डॉ० महेशदत्त शर्मा २२–०

१७ **कृदन्तरूपमाला** । श्री श० रामसुब्रह्मण्य शास्त्री । १–५ भाग ५०–०

१८ **कौमुदी-कथा-कल्लोलिनी** । आचार्य रामशरण शास्त्री
[इसमें रोचक गद्य-कथानकों में सिद्धान्त-कौमुदी के 'इको यणचि' सूत्र से लेकर उत्तर कृदन्त के अन्तिम सूत्र तक के प्रायः सभी उदाहरणों को देकर कथा-साहित्य की एक नवीन विधि का यह अनूठा प्रयोग है ।] [वि. सं. ५४] यंत्रस्थ

१९ **गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम्** । (पण्डित-पछार) । महाकविअम्बिकादत्तव्यास ३–०

२० **ज्ञापकसंग्रह** । नागेशभट्ट । एन. एस. रामानुजताताचार्य कृत विवृति सहित १७–०

२१ **तद्धितान्तकेचनशब्दाः** । भागीरथीप्रसादत्रिपाठी ५–०

२२ **देववाणी प्रवेशिका** । पं० अनसूयाप्रसाद भट्ट । १–५ भाग सम्पूर्ण
[बालक, बालिकाओं की रुचि और संस्कृत को व्यवहार भाषा के क्षेत्र में लाने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत पुस्तक कक्षा एक से पाँच के लिये पाँच भागों में पृथक्-पृथक् तैयार की गयी है । जिससे प्रारम्भिक अनुवाद का भी सामान्य ज्ञान प्राप्त हो जाता है और परिशिष्ट में दिया गया बालकोपयोगी 'सूक्तिसंग्रह' उन्हें सदाचारी बनने की प्रेरणा देता है ।] [वि. सं. १२३]
प्रथम भाग १–५०, द्वि० भाग २–०० तृ० भाग १–५०, च० भाग २–५
पं० भाग ३–५० । १–५ भाग ११–०

२३ **धातुपाठः** । पाणिनिमुनिविरचित । सटिप्पण १–०

२४ **नन्दिकेश्वरकाशिका** । उपमन्यु कृत टीका सहित [वि. सं. १३३] ०–५

२५ **निबन्ध पारिजात** । डॉ० रजनीकान्त लहरी
[इस पुस्तक में संकलित निबन्ध साहित्य के विविध वादों और रूपविधाओं को स्पष्ट करने के उद्देश्य से लिखे गये हैं ।] [वि. रा. १३४] ५–०

२६ **निबन्धप्रकाशः** । पं० कृष्णकुमार अवस्थी
[वाराणसी की पूर्वमध्यमा द्वितीयखण्ड के अनिवार्य प्रथमपत्र में संस्कृत निबन्ध के लिए स्वीकृत] [वि. सं. ११७] ५–०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२७ **निबन्धसौरभ** । (प्रथम परीक्षोपयोगी) श्रीबाबूलाल मिश्र
[इसमें बिहार–वाराणसी उभय प्रथम परीक्षोपयोगी लघुकाय हिन्दी निबन्ध अत्यन्त सरल भाषा और ऋजु शैली में लिखे गए हैं ।] [वि. रा. ७८] २–००

२८ **निबन्धादर्शः** । म० म० श्री गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी ५–००

२९ **न्यासकल्पलता** । (पाणिनिसूत्रन्यासशास्त्रार्थः) ३–००

३० **परमलघुकला** । (प्रश्नोत्तरी) ३–००

३१ **परमलघुमञ्जूषा** । 'अर्थदीपिका' टीका एवं हिन्दी टीका । श्री अलखदेव शर्मा १०–००

३२ **परमलघुमञ्जूषा** । 'तत्वप्रकाशिका' टीका । पं० कृष्णमाधव झा १–२५

३३ **परिभाषेन्दुप्रकाश** । पं० शुकदेव झा २–००

३४ **परिभाषेन्दुशेखरः** । हैमवती व्याख्या युक्त । कालिकाप्रसाद शुक्ल ४९–००

३५ **परिभाषेन्दुशेखरः** । गदा टीका ४–४०

३६ **परिभाषेन्दुदीपिका** । हरिशङ्कर झा १–५०

३७ **परिष्कारदर्पणः** । शास्त्रार्थकला सहित । वेणीमाधव शास्त्री कृत सटिप्पण ६–००

३८ **पाणिनिकालीन भारतवर्ष** । डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल
[महर्षि पाणिनि विरचित संस्कृत-व्याकरण के सूत्रों के आधार पर उस काल के भारतीय जीवन और संस्कृति का विस्तृत प्रामाणिक अध्ययन है । अष्टाध्यायी के भूले हुए शब्दों को यहाँ नये अर्थों के साथ समझाने का प्रयास किया गया है ।] द्वितीय संस्करण [वि. रा. ५०] ३०–००

३९ **पाणिनीयधातुपाठसमीक्षा** । डॉ० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी (वागीशशास्त्री) १८–५०

४० **पाणिनीयप्रबोधः** । श्रीगोपालशास्त्री 'दर्शनकेशरी' ४–५०

४१ **पाणिनीयव्याकरणवादरत्नम्** । श्री सूर्यनारायणशुक्ल कृत ।
न्यायपरिष्कारप्रकरण । १–२ भाग ८–००

४२ **पाणिनीय व्याकरणे प्रमाण समीक्षा (शोधग्रन्थ)** । डॉ० रामप्रसाद त्रि० २६–२५

४३ **पाणिनीयशिक्षा** । सूर्यनारायणशुक्ल कृत 'प्रदीप' व्याख्या सहित ०–७५

४४ **पाणिनीयशिक्षायाः शिक्षान्तरैः समीक्षा** । डॉ० मधुकर पाठक ७–५०

४५ **पालि-पल्लविनी** (अवध विश्वविद्यालय के एम० ए० (हिन्दी) प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम पर आधारित संकलन)। कु० मुकुलरानी त्रिपाठी । भूमिका लेखक—डॉ० रमाशंकर तिवारी ५–००

४६ **पालि-प्रवेशिका** । कोमलचन्द्र जैन ६–५०

४७ **पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-संग्रहः** । डॉ० रामअवध पाण्डेय १५–००

४८ **पालिव्याकरण** । भिक्षुधर्मरक्षित ३–५०

४९ **पूर्वपक्षावली** । सुपरिष्कृता १–००

५० **प्रक्रियाकौमुदी** । प्रकाश टीका सहित । प्रथम भाग ५२–००, द्वितीय भाग ६७–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५१ **प्रथमा शब्द-धातुरूपसग्रहः** । (वाराणसी की प्रथमा परीक्षा-पाठ्य स्वीकृत शब्द-धातुरूपों का संग्रह) । सम्पादक—पं० रामचन्द्र झा [वि. सं० ११५] १-००

५२ **प्रबन्धरत्नाकरः** । (शास्त्री, आचार्य, बी० ए०, एम० ए० आदि परीक्षोपयोगी शताधिक निबन्धों का संग्रह) । डॉ० रमेशचन्द्र शुक्ल
[विद्यार्थियों की सहायता के लिए आवश्यकतानुसार निबन्ध-ग्रन्थ सुलभ नहीं हैं । इस अभाव की पूर्ति के लिए विद्वान् लेखक ने प्रबन्धों का यह संग्रह प्रस्तुत किया है, जिसमें प्राचीन एवं नवीन सुललित भाषा में सभी विषयसम्बन्धी लिखित सौ से ऊपर निबन्ध हैं । इस ग्रन्थ से सभी उच्च कक्षाओं के परीक्षार्थी विशेष लाभान्वित होंगे ।] [वि. सं. १४०] ३०-००

५३ **प्रबन्धाम्रुतम्** । आचार्य रमाकान्त ठाकुर १-७५

५४ **प्रस्तावतरङ्गिणी (निबन्धोपयोगी ग्रन्थ)** । चारुदेव शास्त्री ७-००

५५ **प्रस्तावरत्नाकरः** । (उच्चतरमाध्यमिक (इण्टर)–विशारद–स्नातक–शास्त्रि-परीक्षासु निर्धारित विविध विषय-निबन्ध संवलितः) डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी ५-००

५६ **प्राकृतप्रकाशः** । 'संजीवनी', 'सुबोधिनी', 'मनोरमा' एवं 'प्राकृतमञ्जरी' नामक संस्कृत टीका तथा हिन्दी टीका सहित । सम्पा० बलदेव उपाध्याय ३७-७५

५७ **प्राकृतप्रबोध** । डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री
[हिन्दी माध्यम से प्राकृत व्याकरण के ज्ञान के लिए सर्वांगपूर्ण यह संस्करण प्रस्तुत किया गया है । अनुवाद और निबन्ध के लिए यह ग्रन्थ सर्वोत्तम है ।] [वि. सं०. १३०] १२-५०

५८ **प्राकृतप्रवेशिका** । कोमलचन्द्र जैन ६-५०

५९ **प्राकृत भाषाओं का व्याकरण** । रिचर्डपिशल । अनु० डॉ० हेमचन्द्र जोशी २०-००

६० **प्राकृतव्याकरण (हिन्दी)** । आचार्य मधुसूदनप्रसाद मिश्र
[लेखक ने महाराष्ट्री, मागधी, शौरसेनी, पैशाची, अपभ्रंश आदि प्राकृत के सभी अवान्तर भेदों का अत्यन्त सुबोध रूप से प्रतिपादन करके एक बहुत बड़ी कमी को पूर्ण किया है ।] [वि. रा. ३२] ७-००

६१ **प्राकृतव्याकरणम्** । हेमचन्द्राचार्य । भाषानुवाद सहित । १–२ भाग २५-००

६२ **प्राकृतव्याकरणवृत्तिः** । त्रिविक्रमदेवनिर्मित । सपरिशिष्ट २५-००

६३ **प्राकृतविमर्श** । डॉ० सरयूप्रसाद अग्रवाल १०-००

६४ **(प्रौढ) अनुवाद रत्नाकर** । डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी [वि. सं. १६४] २०-००

६५ **प्रौढमनोरमा** । शब्दरत्न-ज्योत्स्ना-कुचमर्दिनी व्याख्या । पञ्चसन्धिप्रकरणान्त ६-००

६५क **प्रौढमनोरमा–सशब्दरत्न** । पं० श्री द्वारकाप्रसादद्विवेदी कृत 'बालप्रकाशिका' संस्कृत-हिन्दी व्याख्योपेता । शीघ्रप्रा[प्य]

६६ **प्रौढमनोरमा** । भट्टोजिदीक्षितविरचित । बृहच्छब्दरत्न-लघुशब्दरत्न व्याख्या सहित । सम्पादक—डॉ० सीताराम शास्त्री । प्रथम भाग ३०-००

६७ **प्रौढमनोरमा** । शब्दरत्नसहित । तत्पुरुषादि-तिङन्तसन्नन्तप्रक्रियापर्यन्त ५०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६८ **प्रौढमनोरमा** । हरिदीक्षितविरचित । सम्पा० वेंकटेशलक्ष्मण जोशी ।
पञ्चसंधि–प्रथम भाग ३०–००

६९ **फक्किकाप्रश्नोत्तरी** । परीक्षोपयुक्त पंक्तिव्याख्यानरूप ग्रन्थ ३–००

७० **फक्किकारत्नमंजूषा** । परीक्षोपयुक्त । कनकलाल ठाकुर कृत । प्रथम भाग ४–००

७१ **बटुतोषिणी** । हरिशङ्कर झा १–५०

७२ **बनारस-प्रथमा-सोत्तरा-प्रश्नावली** । ५–००

७३ **भट्टिमहाकाव्यम्** । 'काव्य-मर्मविमर्शिकाख्य'-संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम् । श्रीगोपालशास्त्री 'दर्शनकेशरी' । संशोधित परिवर्द्धित संस्करण । १–४ सर्ग ७–००
५–८ सर्ग ८–०० १४–२२ सर्ग ८–००

७४ **भारत में संस्कृत की अनिवार्यता क्यों ?** डॉ० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी
[संस्कृत भारत की आत्मा, प्राण, प्रज्ञा, जीवनदर्शन, दृष्टि और कलेवर है। संस्कृत भारतीय संस्कृति का सर्वस्व है। भारतीय संस्कृति और प्राचीन इतिहास का मर्म जानने हेतु संस्कृत पढ़ना प्रत्येक भारतीय का अनिवार्य कर्तव्य है। संस्कृत पढ़े बिना भारतीय नागरिक सच्चा भारतीय कहलाने का अधिकारी नहीं है। जन भाषाओं के संवर्द्धन और स्वरूपरक्षण के लिए, अपने देश की भौगोलिक सीमाओं की वास्तविकता जानने के लिए संस्कृत का पढ़ना अनिवार्य है। विद्वान् रचयिता ने इस पुस्तक में यह बताया है कि संस्कृत में ज्ञान विज्ञान का अथाह भण्डार पड़ा है। विदेशियों के आक्रमण के पूर्व तक संस्कृत जनजीवन से पूर्णतः जुड़ी हुई थी। सम्प्रति इस वैज्ञानिक युग में संस्कृत को जनजीवन से कैसे जोड़ा जाए ? क्या प्राचीन ज्ञान-विज्ञान को आधुनिक ज्ञान-विज्ञान से जोड़ा जा सकता है ? इत्यादि पहलुओं पर भी इस ग्रन्थ में विचार किया गया है। यह इस विषय का प्रथम ग्रन्थ है। इसकी भाषा तथा शैली आकर्षक है। प्रत्येक भारतीय के घर में इसका रहना अनिवार्य है।] ५–००

७५ **भाषा विज्ञान की भारतीय परम्परा और पाणिनी** । डॉ० रामदेव त्रिपाठी ३१–००

७६ **भाषावृत्ति** । पुरुषोत्तमदेव । स्वामी द्वारिकादास सम्पादित ३५–००

७७ **भूषणसारचन्द्रिका** । हरिशङ्कर झा १–५०

७८ **भूषणसारप्रकाश** । शुकदेव झा ३–००

७९ **मध्यसिद्धान्तकौमुदी** । 'बालप्रकाशिका' संस्कृत-हिन्दीव्याख्यापेता ।
व्याख्याकारः—पं० श्रीद्वारकाप्रसाद द्विवेदी शीघ्रप्राप्य

८० **मध्यसिद्धान्तकौमुदी** । संस्कृत-हिन्दी व्याख्यासहित । पं० रामचन्द्र झा १६–००

८१ **मध्यकौमुदीरहस्यम्** । (मध्यकौमुदी-प्रश्नोत्तरी) ४–००

८२ **मनोरमारत्नप्रकाश** । पं० शुकदेव झा ३–००

८३ **मनोरमारत्नविवेक** । हरिशङ्कर झा २–००

८४ **माधवीयधातुवृत्तिः** । सायणाचार्य कृत ३०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८५ **मानक हिन्दी व्याकरण।** आचार्य रामचन्द्र वर्मा
[इसमें अनेक शब्दभेदों की बिलकुल नई प्रकार की व्याख्या दी गई है; और विषय-विभाजन भी बहुत कुछ नये ढङ्ग से किया गया है।] [वि. रा. ३९] ४–००
८६ **राष्ट्रभाषा सरल हिन्दी व्याकरण।** पं० केदारनाथ शर्मा २–००
८७ **रूपचन्द्रिका।** सम्पादक—पं० रामचन्द्र झा १०–००
८८ **लघुकाशिका।** सुदर्शनाचार्यत्रिपाठी। प्रथम भाग १९–२५, द्वितीय भाग १९–००
८९ **लघुशब्देन्दुशेखरः।** नागेशभट्टकृत। श्रीखुद्दीझाकृत नपदान्तपर्यन्त नागेशोक्तिप्रकाश टीका सहित ५–००
९० **लघुशब्देन्दुशेखरः।** म० म० श्री नित्यानन्दपन्त पर्वतीय कृत शेखरदीपक टीका सहित। पंचसन्धिप्रकरण १२–००
९१ **लघुशब्देन्दुकला।** (शब्देन्दुशेखर-प्रश्नोत्तरी) २–५०
९२ **लघुशब्देन्दुप्रकाश।** पं० शुकदेव झा २–५०
९३ **लघुसारस्वतव्याकरणम्।** सं० गणेशदत्त मिश्र
[विद्वान् लेखक ने बड़े कौशल से इस पुस्तक का सम्पादन किया है। बीच-बीच में उपयोगी ज्ञातव्य सामग्री हिन्दी में भी दी गई है।] [वि. सं. ९०] ०–७५
९४ **लघुसिद्धान्तकौमुदी।** 'शिवाख्य' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित।
[प्रस्तुत संस्करण में अत्यन्त सरल तथा सारगर्भ टीका-टिप्पणी और हिन्दी अनुवाद आदि से दुरूह व्याकरण विषय को अत्यन्त सुगम एवं छात्रोपयोगी बनाया गया है।] व्याख्याकार—श्री गोमतीप्रसाद शास्त्री (नवीन संस्करण) ७–००
९५ **लघुसिद्धान्तकौमुदी।** महेशसिंह कुशवाहा कृत विवेचनात्मक 'माहेश्वरी' हिन्दी व्याख्या सहित। (उ० प्र० सरकार द्वारा पुरस्कृत)। १–२ भाग

प्रथम खण्ड : व्याख्या भाग

[पुस्तक की व्याख्या बहुत ही सुबोध और आधुनिक शैली में प्रस्तुत की गई है। कहीं भी पुरानी पण्डिताऊ शैली का प्रयोग नहीं हुआ है। सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस व्याख्या में वृत्ति का अर्थ न देकर सूत्र का अर्थ दिया गया है। प्रत्येक सूत्र का विभक्ति-निर्देश कर पहले शब्दार्थ दिया गया है और फिर अनुवृत्ति देकर उसका भावार्थ। अन्त में उपयुक्त उदाहरण देकर उस अर्थ को पुष्ट किया गया है। सूत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों और प्रत्याहारों को भी स्पष्ट और प्रचलित शब्दों में प्रकट किया गया है। अनेकों आलोचनात्मक और विवेचनात्मक टिप्पणियाँ दी गयी हैं जो कि सूक्ष्म से सूक्ष्म विषयों को भी स्पष्ट कर देती है। व्याख्या सरल होने के साथ ही प्रामाणिक भी है, क्योंकि उसका आधार वृत्ति न होकर महाभाष्य, काशिका आदि आर्षग्रन्थ है। ३०–००

द्वितीय खण्ड : रूपसिद्धि भाग

[इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने "लघुसिद्धान्तकौमुदी" में प्रयुक्त रूपों की अकारादिक्रम से साधनिकता दी है। छात्रों को बोध कराने के लिये प्रत्येक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूप की सिद्धि में शास्त्रीय दृष्टि कोण अपनाया गया है। साधनिका में पूर्ण वैज्ञानिक पद्धति अपनाने के कारण दुरूहता कहीं भी नहीं आने पाई है। रूपसिद्धि में सूत्रों का क्रम सोपान की भाँति लक्ष्यसिद्धि तक पहुँचाने में सहायक हो, अपनी उपादेयता को सिद्ध करता है। केवल स्थूलरूप में लक्ष्यसिद्धि को इङ्गित करना प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य नहीं है, अपितु रूपों की सिद्धि में अभीष्ट सतर्कता बरती गई है। जिस कारण उत्सर्ग, अपवाद, विप्रतिषेध, अन्तरङ्ग, बहिरङ्ग आदि नियमों का यथास्थान उल्लेख एवं उपयोग कर प्रत्येक शब्द की सिद्धि सूक्ष्मता के साथ की गई है। साधनिक में शास्त्रीय-क्रम का यथोक्त निर्वाह होने के कारण आरम्भ से अन्त तक पाणिनि द्वारा प्रयुक्त प्रक्रिया की यथार्थता का अवबोध सहज ही हो जाता है। किसी भी रूप की सिद्धि में कोई बात छोड़ी नहीं गई है। साधारण से साधारण विषय का भी समावेश निर्दिष्ट स्थान पर ही किया गया है। छात्रों को व्युत्पन्न बनाने एवं परीक्षा हेतु उचित दिग्दर्शन कराने के लिये यह ग्रन्थ अपूर्व सिद्ध होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है। स्वच्छता और शुद्धता के साथ प्रकाशित यह ग्रन्थ व्याकरण की दुरूहता को दूर करने में सर्वथा सिद्ध होगा।] [वि. सं. १३१] २०–००

९६ **लघुसिद्धान्तकौमुदी**। 'सुधा' संस्कृत टीका युक्त १५–००

९७ **लघुसिद्धान्तचन्द्रिका**। सं० गणेशदत्त मिश्र
[संस्कृत भाषा के तिङन्त भाग के व्याकरण का ज्ञान अल्पवयस्क बालकों को बहुत थोड़े परिश्रम से ही हो जाय यही प्रस्तुत पुस्तक के संकलन का उद्देश्य है।] [वि. सं. ९१] ०–७५

९८ **लघुकौमुदी-सोत्तरा-प्रयोगसूची**। प्रयोगार्थ सहित, इन्दुमती टिप्पणी १–५०

९९ **लौकिकन्यायशास्त्रार्थकला तथा कूटशास्त्रार्थकला**। वेणीमाधवशास्त्री १–५०

१०० **वाक्यपदीयम्**। ब्रह्मकाण्ड। सूर्यनारायणशुक्ल कृत संस्कृत, रामगोविन्दशुक्ल कृत हिन्दी टीका, श्रीरुद्रप्रसादअवस्थी कृत परिशिष्ट सहित १३–००

१०१ **वाक्यपदीयम्**। 'प्रकाश' व्याख्या, रघुनाथशर्मणा विरचित अम्बाकर्त्री व्याख्या।
प्रथम काण्ड २६–५० द्वितीय काण्ड २८–००, तृतीय काण्ड २५–००

१०२ **वेदाङ्गप्रकाशः**। नामिक १–३०, कारकीय ०–७५, सामासिक ०–७५
आख्यातिक ७–००, सौवर ०–५०, पारिभाषिक १–००, अव्ययार्थ ०–३५
धातुपाठ १–००, वर्णोच्चारण शिक्षा ०–३०, स्त्रैणतद्धित २–२५
सन्धिविषय २–००, उणादिकोश २–५०, गणपाठ ०–७५

१०३ **(हिन्दी) वैदिक व्याकरण**। श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय
[बी. ए. तथा एम. ए. परीक्षाओंके पाठ्यक्रमानुसार नवनिर्मित इस ग्रंथ में वेद का सुबोध व्याकरण, स्वरचिह्न, पद-पाठ आदि के विषय में समाधान तथा क्रिया रूपों का एक लघुकोश भी प्रकाशित किया गया है।] [वि. रा. ३७] ४–००

४ वैयाकरणभूषण। (:। प्रभा–दर्पण–व्याख्योपेतः। श्रीसभापति शर्मोपाध्याय ३५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०५ **वैयाकरणभूषणसारः** । 'सरला' 'सुबोधनी' व्याख्याद्वयोपेतः ६–००
१०६ **वैयाकरणभूषणसार** । तत्त्वदर्शिनी टीका युक्त । परि० सूर्यनारायण शास्त्री ३०–००
१०७ **वैयाकरणसिद्धान्तमंजूषा** । नागेशभट्ट । सम्पा० कालिकाप्रसाद शुक्ल ३६–००
१०८ **वैयाकरणसिद्धान्तलघुमंजूषा** । रत्नप्रभाव्याख्योपेता । सभापतिशर्मोपाध्याय ३०–००
१०९ **वै० सि० लघुमंजूषारहस्यम्** । (वै० सि० लघुमंजूषा-प्रश्नोत्तरी)
[इसमें ग्रंथ के दुरूहांशों को ऐसे सरल शब्दों में लिखा गया है कि विद्यार्थियों को ग्रंथ का आशय शीघ्र ही समझ में आ जाय ।] [वि. सं. २२] २–००
११० **व्याकरणचन्द्रोदय** । पं० चारुदेवशास्त्री । १–५ भाग सम्पूर्ण १४५–५०
१११ **व्याकरणमहाभाष्यम्** । सप्रदीप–'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित ।
आचार्य युधिष्ठिर मीमांसक सम्पादित ।
[महाभाष्य सरल संस्कृत भाषा का सर्वोच्च निदर्शन होते हुये भी आशय की दृष्टि से गंभीर ग्रन्थ है । प्रस्तुत संस्करण में भाषान्तर करते हुये भी भाष्याशय को सुस्पष्ट करने का सर्वत्र प्रयास किया गया है । पूर्वापर-संगति तथा भाष्यकार के अभिप्राय के स्पष्टीकरण के लिये प्रदीप (कैयट) संस्कृत व्याख्या सहित महाभाष्य की विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या की गई है । क्लिष्ट पदों का सुविस्तृत अर्थनिर्देश तथा विग्रह भी दिया गया है । अतः यह संस्करण विशेष रूप से उपयोगी है । ग्रन्थगत कोई भी अभिप्राय अविदित नहीं रह जाता । संस्कृत व्याकरण के छात्रों तथा अध्यापकों के हित की दृष्टि से महाभाष्य का यह संस्करण सर्वोत्तम है । **प्रथम आह्निक (पस्पशाह्निक)** ५–००
[वि. सं. १३८] १–५ आह्निक २०–००
११२ **व्याकरणमहाभाष्य (पातञ्जल)** । प्रदीप-उद्योत-तत्त्वालोक । नवाह्निकम् ३५–००
११३ **व्याकरणमहाभाष्यम्** । पातञ्जल । 'प्रदीप' 'उद्योत' तथा पायगुण्डे कृत छाया सहित । प्रथम भाग (नवाह्निक) २५–००, तृतीय भाग (विधिप्रकरणरूपम्) १५–००
चतुर्थ भाग (४–५ अध्याय) २०–००, पञ्चम भाग (स्थानेविधिरूपं) २०–००
११४ **व्याकरणमहाभाष्यम्** । सम्पादक—युधिष्ठिर मीमांसक । भाषा टीका ।
द्वितीय भाग (नवाह्निक से आगे) २५–००, तृतीय भाग (द्वितीय अध्याय) २५–००
११५ **(व्याकरण) महाभाष्य कुञ्जिका** । हरिशङ्कर झा २–००
११६ **(व्याकरण) महाभाष्य दीपिका** । (नवाह्निक प्रश्नोत्तरी) २–५०
११७ **(व्याकरण) महाभाष्यादर्शः** । शुकदेव झा ३–००
११८ **व्याकरणशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास** । श्रीरमाकान्त मिश्र
[वैदिक काल से लेकर व्याकरणशास्त्र का इतिहास क्रमशः पूर्वपाणिनि-काल, त्रिमुनि-काल, व्याख्या-काल और प्रक्रिया-काल के क्रम से सुव्यवस्थित रूप में वर्णित है । प्रायः सभी सम्प्रदायों का वर्णन इसके अन्तर्गत हो गया है । अत्युपयोगी संस्करण है ।] [वि. रा. १०६] ५–००
११९ **व्याकरणसिद्धान्तसुधानिधिः** । श्रीविश्वेश्वरसूरिविरचितः । १–५ खण्ड १२५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२० **व्युत्पत्तिप्रदर्शनं-गूढ़ाशुद्धिप्रदर्शनम्** । पं० महादेव उपाध्याय १-७५

१२१ **व्युत्पत्तिवादः** । वेणीमाधव शास्त्री कृत शास्त्रार्थकला टीका सहित ८-००

१२२ **व्युत्पत्तिवादतरणिः** । (व्युत्पत्तिवाद-प्रश्नोत्तरी) उग्रानन्द झा २-००

१२३ **शक्तिवादः** । गदाधरभट्टाचार्य । हरिनाथतर्कसिद्धान्तभट्टाचार्यकृतटीकासहित १०-००

१२४ **शब्द-धातुरूपसंग्रह** । सम्पादक—रामचन्द्र झा [वि. सं. ११५] १-००

१२५ **शब्द-विमर्श** । डा० अमरनाथ पाण्डेय १६-००

१२६ **शब्दव्यापारविचार** । डा० रेवाप्रसाद द्विवेदी [वि. सं. १६६] ४-००

१२७ **शब्देन्दुसुधा** । हरिशंकर झा २-००

१२८ **संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन** । भोलाशंकर व्यास १०-००

१२९ **संस्कृत धातु-कोष** । ३-००

१३० **संस्कृतपठनपाठन की अनुभूत सरलतम विधि** । ब्रह्मदत्त । १-२ खण्ड १५-००

१३१ **संस्कृत-पाठमाला** । महापडित राहुल सांकृत्यायन । [सुगमतापूर्वक भाषा को अधिकृत करने के लिए लेखक ने बालक-बालिकाओं के मानसिक स्तर का ध्यान रखते हुए पांच भागों में इस पुस्तक की रचना की है ।] [वि. सं. २७]
प्रथम भाग १-२५, द्वितीय भाग १-२५, तृतीय भाग १-२५,
चतुर्थ भाग १-२५, पंचम भाग १-२५, १-५ भाग ६-२५

१३२ **संस्कृतप्रकाश** । श्री कुबेरनाथ द्विवेदी
[प्रस्तुत पुस्तक इलाहाबाद बोर्ड द्वारा हाइस्कूल एवं इण्टर परीक्षा में निर्धारित संस्कृत व्याकरण का परीक्षोपयोगी पाठ्य ग्रन्थ है ।] [वि. सं. ८५] ३-५०

१३३ **संस्कृत प्रथम पाठमाला** । वैलन्टाइन । अनु० श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय
[संस्कृत व्याकरण और रचना का प्रारम्भिक ज्ञान इसमें सुविचारित वैज्ञानिक विधि से गुम्फित है ।] [वि. सं. १४९] ३-००

१३४ **संस्कृतरचना** । आप्टे का हिन्दी रूपान्तर । अनु० डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय
[शुद्ध एवं मुहावरेदार संस्कृत बोलने और लिखने की क्षमता अनायास प्राप्त करने में यह पुस्तक बेजोड़ है ।] [वि. सं. १२२] १२-००

१३५ **संस्कृतरचनानुवादशिक्षकः** । आचार्य विश्वेश्वरसिद्धान्त शिरोमणि ३-५०

१३६ **संस्कृतरचनाप्रकाशः** । प्रो० रमाकान्त द्विवेदी ४-००

१३७ **संस्कृतव्याकरणम्** । पं० रामचन्द्र झा । रचनानुवादखण्ड, निबन्धखण्ड सहित
[व्याकरण, अनुवाद तथा परीक्षोपयोगी सरल संस्कृत निबन्ध के लिए यह सर्वोत्तम पुस्तक है ।] [वि. सं. ४२] ८-००

१३८ **संस्कृत व्याकरण** । ह्विटने । अनु० मुनीश्वर झा । सम्पूर्ण ३०-००

१३९ **संस्कृत व्याकरण की उपक्रमणिका** । ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
अनुवादक : गोपालचन्द्र शास्त्री । [घर बैठे सरल रूप में संस्कृत व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करने के लिये यह पुस्तक अद्वितीय है ।] [वि. सं. ६३] ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२४० **संस्कृतव्याकरणकौमुदी**। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर। अनुवादक : गोपालचन्द्र शास्त्री। [सांगोपांग संस्कृत रचनानुवाद के लिये यह ग्रन्थ अद्वितीय है।] [वि. सं. ७२] प्रथम भाग ४–००, द्वितीय भाग ४–०० तृतीय भाग ५–००, चतुर्थ भाग ४–००। १–४ भाग १७–००

२४१ **संस्कृतव्याकरणप्रबोध**। १–२ भाग। महाप्रभुलाल गोस्वामी ८–००

२४२ **संस्कृतव्याकरणप्रवेशिका**। बाबूराम सक्सेना ६–००

२४३ **संस्कृत व्याकरण रचना तथा अन्य निबन्ध**। रामजी उपाध्याय ८–००, १२–००

२४४ **संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास**। युधिष्ठिर मीमांसक। १–३ भाग ६०–००

२४५ **संस्कृत-व्याकरणोदयः**। डॉ० जयमन्तमिश्र। [वि. सं. ६८] ६–००

२४६ **संस्कृत-स्वयं-शिक्षक**। सातवलेकर कृत। १–२ भाग ११–००

२४७ **संस्कृत-स्वयं-शिक्षकप्रभा**। गौरीशंकर शास्त्री [प्रारम्भिक हिन्दी स्कूलों में छोटे-छोटे बच्चों को संस्कृत पढ़ने-पढ़ाने की कठिनाई को दूर करने के लिये यह पुस्तक लिखी गई है। [वि. सं. ९] १–००

२४८ **संस्कृतालोकः**। रामबालक शास्त्री। १–३ किरण [शास्त्री जी बालकों को संस्कृत-भाषा का ज्ञान कराने के हेतु संस्कृतालोक की ३ किरणों को मूर्त रूप दिया है।] [वि. सं. ३–५] १–३ किरण ३–००

२४९ **सज्जनेन्द्रप्रयोगकल्पद्रुमः**। धर्माधिकारी कृष्णपण्डित कृत ६–००

२५० **सन्धिचन्द्रिका**। कारक, समास, तिङन्त, व्युत्पत्तिप्रदर्शन सहित ३–००

२५१ **समासचक्रम्**। ब्रह्मदत्त मिश्र कृत टिप्पणी सहित ०–२०

२५२ **सादृश्यशास्त्रार्थकला**। ल: कर्मशास्त्रार्थकला ०–५०

२५३ **सारस्वतव्याकरणम्**। पूर्वार्द्ध १५–००, उत्तरार्द्ध १५–००। सम्पूर्ण ३०–००

२५४ **सारस्वतव्याकरणम्**। 'बालबोधनी' संस्कृत-हिन्दी टीका। पूर्वार्द्ध ४–००

२५५ **सिद्धान्तकौमुदी**। मूलमात्र ११–००, १२–००

२५६ **सिद्धान्तकौमुदी**। बालमनोरमा एवं 'दीपिका' हिन्दी व्याख्या सहित। (सर्वश्रेष्ठ अभिनव संस्करण) व्याख्याकार—पं० श्री गोपालदत्त पाण्डेय शीघ्रप्राप्य

२५७ **सिद्धान्तकौमुदी-बालमनोरमाटीका**। प्रथम भाग १०–५०, द्वितीय भाग १०–५० तृतीय भाग ८–५०, चतुर्थ भाग १०–५० सम्पूर्ण ४०–००

२५८ **सिद्धान्तकौमुदी**। इन्दुमती संस्कृत व्याख्या। कारकान्तो भागः ६–००

२५९ **सिद्धान्तकौमुदी**। तत्वबोधिनी टीका। सटिप्पण २२–५०

२६० **सिद्धान्तकौमुदी**। भ्वाद्यादिचुरादिगणान्तप्रयोगसूची। अमृता टिप्पणी १–५०

२६१ **सिद्धान्तकौमुदी**। सविमर्श हिन्दी टीका सहित। श्री बालकृष्ण पञ्चोली कारकान्त प्रथम भाग १५–००, समासादि-द्विरूक्तान्त द्वितीय भाग १५–०० भ्वादिचुराद्यन्त तृतीय भाग १५–००, ण्यन्तादि-कृदन्तान्त चतुर्थ भाग २०–००

२६२ **सिद्धान्तकौमुदी-कारकप्रकरणम्**। उमेशचन्द्र पाण्डेय। हिन्दी व्याख्या [इसमें काशिका के आधारपर सूत्रों की हिन्दी व्याख्या तथा प्रयोगों की साधनिका भी आधुनिक सरल सुबोध हिन्दी भाषा में दी गई हैं।] [वि. सं. ६०] ३५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१६३ **सिद्धान्तकौमुदी-वैदिकीप्रक्रिया** । हिन्दी व्याख्या सहित । श्रीउमाशंकरशर्मा [व्याख्या में समासविग्रह, व्युत्पत्ति, प्रयोगों की साधनिका तथा परीक्षोपयोगी विवरण भी दिये गए हैं ।] [वि. सं. ८०] ७—००

१६४ **सिद्धान्तकौमुदी-सोत्तरा-प्रश्नावली** । पं० रामचन्द्र झा। १—२ भाग ८—००

१६५ **सिद्धान्तकौमुदी-सोत्तरा-प्रश्नावली** । सम्पा०रामगोविन्दशुक्ल १—४ भाग १७—००

१६६ **सिद्धान्तकौमुदी-सोत्तरा-प्रयोगसूची** । इन्दुमती टिप्पणी सहित । १-४ भाग ६—७५

१६७ **सिद्धान्तकौमुदी-स्वरवैदिकप्रक्रिया-प्रयोगसूची** । ०—७५

१६८ **सिद्धान्तकौमुदी-स्वरवैदिक प्रश्नोत्तरी** । पं० विश्वेश्वर झा ३—५०

१६९ **सिद्धान्तचन्द्रिका** । रामाश्रम प्रणीत । बालबोधिनी टीका सहित पूर्वार्द्ध—३—००, उत्तरार्द्ध—३—५० सम्पूर्ण ६—५०

१७० **सिद्धान्तचन्द्रिका** । सुबोधिनी—तत्वदीपिका टीका चक्रधरा टिप्पणी सहित उत्तरार्द्ध १५—००

१७१ **स्फोटवादः** । नागेशकृत । वी० कृष्णमाचार्य २०—००

१७२ **हायर संस्कृत ग्रामर** । एम० आर० काले । अनु०—डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ११—००

न्याय-ग्रन्थाः

१ **उद्योतकर न्यायवार्त्तिक : एक अध्ययन** । डॉ० दयाशङ्कर शास्त्री ४०—००

२ **कारकचक्रम्** । माधवी टीका—प्रदीप टिप्पणी सहित २—१०

३ **कारिकावली-मुक्तावली** । 'बालप्रिया' विस्तृत हिन्दी टीका सहित । व्याख्याकार—श्रीगजाननशास्त्री मुसलगाँवकर । प्रत्यक्षखण्डान्त ८—००

४ **कारिकावली-मुक्तावली-दिनकरी-रामरुद्री** । पण्डितराज श्री राजेश्वर शास्त्री प्रपूरित-रामरुद्री-दिनकरीभ्यां संवलिता ३५—००

५ **का० मुक्तावली-तत्त्वालोकः** । श्री रुद्रधर झा शर्मा २—००

६ **केवलान्वयिप्रकरणम्** । दीधिति—जागदीशी—नारायणी टीका समन्वितम् ४—००

७ **क्रोडपत्रसंग्रहः** । श्री कालीशङ्करप्रणीतानि अनुमानजागदीशी-अनुमानगादाधरी क्रोडपत्राणि । जागदीशीक्रोडपत्रम् समाप्त । गादाधरीक्रोडपत्रम् ५—८ खण्ड २५—००

८ **गादाधरी** । (अनुमानचिन्तामणितद्व्याख्याशिरोमणिकृतदीधितिगर्भिता) सम्पादक—श्री कीर्त्यानन्द झा । सिद्धान्तलक्षणप्रकरणान्त ३०—००, सम्पूर्ण २००—००

९ **गादाधरी-अवयवप्रकरणम्** । ज्वालाप्रसाद गौड़ कृत संस्कृत टीका सहित १२—००

१० **गादाधरीसव्यभिचारप्रकरणम्** । वामाचरणभट्टाचार्य कृत व्याख्या सहित १५—००

११ **गादाधरी-सामान्यनिरुक्तिः** । चन्द्रकला-विलासिनीटीकाद्वयोपेता ६—००

१२ **गा० सामान्यनिरुक्तिः** । गङ्गेशोपाध्याय । दीधिति-गादाधरी-बलदेवी विमलाप्रभा टीकायुत २०—००

१३ **जा० अवच्छेदकत्वनिरुक्तिः** । 'लक्ष्मी' व्याख्या सहित । दत्तात्रेय शास्त्री ६—००

१४ **जा० व्यधिकरणम्** । स्वामिरामप्रपन्नाचार्यकृतदीपिकाटीकोपेतम् १२—००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१५ **जा० सामान्यलक्षणाप्रकरणम्** । काशिकानन्दी व्याख्या सहित ८-००
१६ **जा० व्याप्तपञ्चकं सिंहव्याघ्रलक्षणम्** । पं० श्यामसुन्दर झा ३-००
१७ **जा० सिद्धान्तलक्षणम्** । 'लक्ष्मी' व्याख्या विभूषित १५-००
१८ **तत्त्वचिन्तामणिः** । टीकाद्वयोपेतम् । एन० एस० रामानुजाचार्य सम्पादित
प्रत्यक्षखण्ड ३७-००
१९ **तत्त्वप्रभावली** । कृष्णवल्लभाचार्यसम्पादिता ५०-००
२० **तर्ककुतूहल** । विश्वेश्वर पाण्डेय । सम्पादक—जनार्दनशास्त्री पाण्डेय ७-००
२१ **तर्कभाषा** । आचार्यविश्वेश्वरसिद्धान्तशिरोमणि कृत हिन्दी व्याख्या सहित १६-००
२२ **तर्कभाषा** । चिन्नंभट्ट विरचित व्याख्या सहित १०-००
२३ **तर्कभाषा** । (प्रश्नोत्तर, हिन्दी व्याख्या सहित) २-००
२४ **तर्कभाषा** । 'तत्त्वालोक' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ८-००
२५ **तर्कभाषा** । हिन्दी व्याख्या, परीक्षोपयोगी नोट्स सहित । डॉ०श्रीनिवासशास्त्री १२-००
२६ **तर्कभाषारहस्यम्** । (तर्कभाषा प्रश्नोत्तरी) ०-५०
२७ **तर्कसंग्रहः** । प्रथमा परीक्षोपयोगी हिन्दी टीका सहित । श्रीशेषराजशर्मा रेग्मी १-००
२८ **तर्कसंग्रहः** । 'सपदकृत्य'-चन्द्रकला हिन्दी टीका सहित । [पूर्वमध्यमा द्वितीय वर्ष अनिवार्य प्रथमपत्र में निर्धारित ।] आचार्य श्रीशेषराज शर्मा रेग्मी २-५०
२९ **तर्कसंग्रहः** । प्राचीनतम नौ टीकाओं से विभूषित १०-००
३० **तर्कसंग्रहः** । 'न्यायबोधिनी' व्याख्या । केदारनाथ त्रिपाठी ४-२५
३१ **तर्कसंग्रहः** । स्वकृत दीपिका, गोवर्धन कृत न्यायबोधिनी, अठवले कृत नोट्स वोडस कृत आंग्लानुवाद सहित । पुसलकर कृत संशोधित परिवर्धित ३०-००
३२ **तर्कसंग्रहः** । दीपिका हिन्दी टीका सहित २-००
३३ **तर्कसंग्रह-रहस्यम्** । (तर्कसंग्रह प्रश्नोत्तरी) श्री कीर्त्यानन्द झा
[इस पुस्तिका में 'न्यायबोधिनी' 'पदकृत्य' तथा 'दीपिका' आदि के प्रश्नोत्तर लिखे गए हैं । परीक्षा की दृष्टि से प्रश्नोत्तरों पर ध्यान दिया गया है ।]
[वि. सं. ९५] १-००
३४ **तर्कामृत** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिंन्दी टीका, 'परीक्षासेतु' नामक परिशिष्ट सहित
[इस पुस्तक की ऐसी सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या की गई है कि छात्र स्वयं इसका अध्ययन कर परीक्षा में सफलता प्राप्त कर लेंगे ।] [वि. सं. ६] २-००
३५ **न्याय-कुसुमाञ्जलिः** । श्रीमदुदयनाचार्यप्रणीतः । टीकाचतुष्टयोपेतः ४०-००
३६ **न्यायकुसुमाञ्जलि** । हरिदासी टीका सहित । हिन्दी व्याख्याकार—
आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि
[विद्वान् व्याख्याकार ने शास्त्रार्थ के दुरूह स्थलों पर विमर्श में इतना सुविस्तृत और गंभीर विवेचन किया है कि यह व्याख्या हिन्दी में न्यायकुसुमाञ्जलि की एक स्वतन्त्र मौलिक रचना बन गई है ।] [वि. सं. ७४] यन्त्रस्थ
३७ **न्यायदर्शन** । (वात्स्यायनभाष्य) हिन्दी टीका सहित । पं० ढुण्ढिराजशास्त्री २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३८ **न्यायदर्शन-वात्स्यायनभाष्य** । गङ्गानाथ झा प्रणीत खद्योत टीका ४०–००

३९ **न्यायदर्शन-विद्योदयभाष्य** । उदयवीर शास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित ३०–००

४० **न्याय परिचय** । म० म० फणिभूषण तर्कवागीश । अनु० श्रीकिशोरनाथ झा [लेखक ने गहन अध्ययन के पश्चात् ऐतिहासिक, दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक अध्ययन की विभिन्न विचारधाराओं पर यथेष्ट विचार करके यह ग्रन्थ प्रस्तुत किया है। न्यायशास्त्र के प्रामाणिक इतिहास के परिचय के लिये यह ग्रन्थ अद्वितीय है।] [वि. रा. ११८] १५–००

४१ **न्यायप्रवेशः** । प्रथम भाग । सम्पा० ए० वी० ध्रुव २२–००

४२ **न्यायबिन्दुः** । बौद्धाचार्यश्रीधर्मकीर्तिप्रणीत । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ८–००

४३ **न्यायबिन्दुटीका** । भाषानुवाद-व्याख्यात्मक टिप्पणी । डॉ० श्रीनिवास शास्त्री १७–००

४४ **न्यायभूषण** । श्री भासर्वज्ञ प्रणीत स्वोपज्ञ व्याख्यानं । स्वामी योगिन्द्रानन्द २०–००

४५ **न्यायमञ्जरी** । जयन्तभट्ट कृत । टिप्पणी समेत ३५–००

४६ **न्यायलीलावती** । श्रीभगीरथठक्कर कृत 'विवृत्ति' सनाथेन श्री वर्धमानोपाध्याय कृत 'प्रकाशेन' समुद्भासिता, श्री शङ्करमिश्र रचित 'कण्ठाभरणेन' च समन्विता ५०–००

४७ **न्यायसारः** । महादेवपण्डितविरचित ३–००

४८ **न्यायसिद्धान्तमुक्तावली** । विश्वनाथपञ्चाननविरचित । प्रत्यक्षखण्ड । श्रीगजाननशास्त्री मुसलगाँवकर कृत 'बालप्रिया' विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित ८–००

४९ **पदवाक्यरत्नाकरः** । यदुनाथमिश्र रचित गूढ़ार्थदीपिका व्याख्या सहित १५–००

५० **पदार्थशास्त्र** । श्री आनन्द झा न्यायाचार्य । भाषा ८–००

५१ **प्रामाण्यवादः** । गदाधरभट्टाचार्यकृत ५–००

५२ **भारतीय न्यायशास्त्र : एक अध्ययन** । डॉ० ब्रह्ममिश्र अवस्थी २५–००

५३ **भास्करोदयः** । नीलकण्ठ विरचित तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाश-नीलकण्ठी व्याख्या ३–००

५४ **माथुरी-तर्कप्रकरणम्** । वामाचरणभट्टाचार्य विरचित 'विवृत्ति' सहित २–००

५५ **माथुरी-पञ्चलक्षणी** । व्याप्तिपञ्चकम् । श्रीलोकनाथशास्त्रीकृत सरला टीका ७–५०

५६ **वादवारिधिः** । श्रीगदाधरभट्टाचार्यादिविपश्चिद्वरैर्विरचितः प्रत्यक्षानुमान-शब्दपरिशिष्टाख्यकल्लोलचतुष्टयात्मकः । १–३ खण्ड २०–००

५७ **विषयतावादः** । श्रीढुण्ढिराजशास्त्रीकृतटिप्पणीसमेतः १–५०

५८ **व्युत्पत्तिवादः** । बच्चाझा प्रणीत 'गूढ़ार्थतत्त्वालोक' बृहत्तम भूमिकादि सहित ४५–००

५९ **व्युत्पत्तिवादः** । श्री वेणीमाधवशास्त्री रचित 'शास्त्रार्थकला' टीका सहित ८–००

६० **व्युत्पत्तिवादः** । पं० शिवदत्तकृतव्याख्या । सम्पा० ज्वालाप्रसादगौड़ १५–००

६१ **व्युत्पत्तिवादतरणिः** । (व्युत्पत्तिवाद-प्रश्नोत्तरी) उग्रानन्द झा १–२५

६२ **शक्तिवादः** । पं० श्री हरिनाथतर्कसिद्धान्तभट्टाचार्य विरचित विवृत्ति सहित १०–००

६३ **शब्दशक्तिप्रकाशिका** । श्रीजगदीशतर्कालंकारविनिर्मिता । श्रीकृष्णकान्त विद्यावागीशकृतकृष्णकान्तिटीकया, श्रीमद्रामभद्रसिद्धान्तवागीशविरचितया प्रबोधिनीटीकया च समलंकृता । सटिप्पणा ४०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६४ **शब्दबोधविमर्शः** । डॉ० बदरीनाथ सिंह १५-००
६५ **शाब्दतरङ्गिणी** । के० सुब्रह्मण्यशास्त्री ६-००

सांख्य-ग्रन्थाः

१ **सांख्यकारिका** । ईश्वरकृष्ण । गौड़पादभाष्यसहित । 'भाष्यभाववर्णिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्यायुक्त । व्याख्याकार–पं० ज्वालाप्रसाद गौड़ [सांख्यकारिका के ऊपर 'गौड़पादभाष्य' सर्वोपरि व्याख्या मानी जाती है। परन्तु भावगर्भित जटिल होने के कारण कोमल मति परीक्षार्थी छात्रों के लिये वह दुरूह प्रतीत होता था । अतः लेखक ने गौड़पादभाष्य सहित सांख्यकारिका की सान्वय सरल सुबोध-संस्कृत-हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की है । [वि. सं. १५८] ४-५०
२ **सांख्यकारिका** । संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम् । पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी ५-००
३ **सांख्यकारिका** । माठरवृत्ति सहित । सम्पादक—विन्ध्येश्वरीप्रसाद द्विवेदी १५-००
४ **सांख्यकारिका** । प्रश्नोत्तर, हिन्दी व्याख्या, टिप्पणी सहित २-००
५ **सांख्यतत्त्वकौमुदी** । 'तत्त्वप्रकाश' हिन्दीव्याख्यासहित । श्रीगजाननशास्त्री १५-००
६ **सांख्यतत्त्वकौमुदी** । 'सारबोधिनी' व्याख्यायुक्त १२-००
७ **सांख्यतत्त्वप्रदीप** । डॉ० अमलधारी सिंह ५-००
८ **सांख्यदर्शन** । श्रीरामशर्माआचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ५-७५
९ **सांख्यदर्शनम्** । महादेववेदान्ति नागेशभट्टकृतटीकाद्वय । जनार्दनशास्त्री पाण्डेय १५-००
१० **सांख्यदर्शनम्-विद्योदयभाष्य** । हिन्दी टीका सहित । उदयवीर शास्त्री १६-००
११ **सांख्यदर्शन का इतिहास** । उदयवीर शास्त्री ४०-००
१२ **सांख्ययोगकोशः** । केदारनाथ त्रिपाठी ५-२५
१३ **सांख्ययोगदर्शन का जीर्णोद्धार** । श्री हरिशंकर जोशी [इस ग्रन्थ में आदिकाल से लेकर विज्ञानभिक्षु के काल तक सभी आचार्यों तथा उल्लिखित ग्रन्थों का समालोचनापूर्ण इतिहास, दर्शनों के मूलस्रोत का विशद विवेचन आदि महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रामाणिक विचार देखने को मिलेंगे। लेखक का दावा ग्रन्थ के नाम से ही स्पष्ट है । [वि. रा. ८५] २०-००
१४ **सांख्यसंग्रहः** । (षिमानन्द [क्षेमेन्द्र] विरचित सांख्यतत्त्वविवेचन, वैकुण्ठ-यतिशिष्य कविराजयति प्रणीत सांख्यतत्वप्रदीप आदि ९ ग्रन्थों का संग्रह) १५-००
१५ **सांख्यसिद्धान्त** । (हिन्दी) उदयवीर शास्त्री २४-००
१६ **सांख्यसूत्रम्** । अनिरुद्धवृत्ति सहित ३-००

मीमांसा-ग्रन्थाः

१ **अङ्गत्वनिरुक्तिः** । (मीमांसादर्शनेऽङ्गाङ्गऽङ्गाङ्गिभावविमर्शकः श्रीमन्मुरारि-मिश्रविरचितप्रबन्धः) १२-५०
२ **अधिकरणकौमुदी** । श्री देवनाथठक्कुर कृत ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ **अध्वरमीमांसाकुतूहलवृत्तिः** । वासुदेवदीक्षितविरचित । सम्पादक—श्रीपट्टाभिरामशास्त्री । १–४ भाग सम्पूर्ण १०६–००

४ **अर्थसंग्रहः** । 'मीमांसार्थसंग्रहकौमुदी' टीका 'दीपिका' हिन्दीव्याख्या सहित ५–००

५ **अर्थसंग्रहः** । डॉ० जी० थीबो कृत आंग्लानुवाद सहित २०–००

६ **जैमिनीयन्यायमालाविस्तरः** । मीमांसादर्शनस्यअधिकरणमाला २४–००

७ **तन्त्ररत्नम्** । पार्थसारथिमिश्र कृत । तृतीय–चतुर्थ भाग १८–५०

८ **तन्त्ररहस्य** । रामानुजाचार्य विरचित १२–००

९ **न्यायसुधा** । श्रीमद्भट्टसोमेश्वरकृता तन्त्रवार्तिक व्याख्या । १–१६ भाग १००–००

१० **पूर्वमीमांसाधिकरणकौमुदी** । रामकृष्णभट्टाचार्य विरचित ६–००

११ **प्रकरणपञ्चिका** । शालिकनाथमिश्रविरचित । जयपुरी नारायणभट्ट कृत न्यायसिद्धि व्याख्या सहित । सम्पा० ए० सुब्रह्मण्य शास्त्री २५–००

१२ **बृहती** । प्रभाकरमिश्रविरचित (शाबरभाष्य व्याख्या) म० म० शालिकनाथ मिश्र कृत 'ऋजुविमला' व्याख्याद्वययुता १५–००

१३ **भाट्टचिन्तामणिः** । म० म० श्रीगागाभट्टविरचित १५–००

१४ **भाट्टदीपिका** । खण्डदेवकृत । प्रभावली सहिता । निवीतान्त भाग १५–००

१५ **मानमेयोदयः** । आंग्लानुवाद सहित । सम्पा०—सी० कुन्हन राजा ३०–००

१६ **मीमांसाकोशः** । केवलानन्द सरस्वती सम्पादित । १–७ भाग ३५०–००

१७ **मीमांसाकौस्तुभः** । (मीमांसासूत्रोपरिकाचन विस्तृत टीका) श्री खण्डदेव ७५–००

१८ **मीमांसादर्शनम्** । तन्त्रवार्त्तिकव्याख्याशाबरभाष्यसमेतम् । १–७ भाग १८७–२५

१९ **मीमांसादर्शनम्** । श्रीरामशर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ७–००

२० **मीमांसादर्शनविमर्शः** । डॉ० वाचस्पति उपाध्याय २०–००

२१ **मीमांसानुक्रमणिका** । श्रीमण्डनमिश्रकृता । म० म० गङ्गानाथ झा रचित 'मीमांसामण्डनेन' मण्डिता ३०–००

२२ **मीमांसान्यायप्रकाशः** । आपदेवी । सम्पादक—वासुदेवशास्त्री अभ्यङ्कर ३०–००

२३ **मीमांसापरिभाषा** । डॉ० हरिदत्तशास्त्री कृत हिन्दी टीका, नोट्स सहित २–५०

२४ **मीमांसाश्लोकवार्तिकम्** । कुमारिलभट्टप्रणीतः । पार्थसारथिमिश्र कृत 'न्यायरत्नाकर' व्याख्या सहित । सम्पादक—रामशास्त्री तैलङ्ग । १–३ खण्ड १५–००

२५ **विधिरसायनम्** । अप्पयदीक्षित । सुब्रह्मण्यशास्त्री सम्पादित ९–००

२६ **वेदप्रकाशः** । श्रीसत्यज्ञानानन्दतीर्थविरचित ६–००

२७ **शास्त्रदीपिका** । आचार्य ए० सुब्रह्मण्यशास्त्री सम्पादित । द्वितीय भाग १५–००

योग-ग्रन्थाः

१ **गोरक्षसंहिता** । विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित । डॉ० चमनलाल गौतम ३–००

२ **गोरक्षसिद्धान्तसंग्रह** । श्री जनार्दन शास्त्री पाण्डेय १०–५०

३ **घेरण्डसंहिता** । भाषानुवाद सरल व्याख्या सहित ३–७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४ **पातञ्जलयोगदर्शन** । व्यासभाष्य । ब्रह्मलीनमुनि विरचित हिन्दी विवृत्ति २०-००
५ **पातञ्जलयोगदर्शन** । व्यासभाष्य । हरिहरानन्द कृत भाष्य तथा हिन्दी अनुवाद सहित । अनुवादक—रमाशङ्कर भट्टाचार्य २०-००
६ **पातञ्जलयोगदर्शन** । मणिप्रभाख्यटीकायुत । (कलकत्ता) ५-००
७ **पातञ्जलयोगदर्शनम्** । भोजवृत्ति ४-००
८ **पातञ्जलयोगदर्शन** । श्रीरामशर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ५-७५
९ **पातञ्जलयोगदर्शनम्** । व्यासभाष्य । हिन्दी टीका सहित । डा० सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव १६-५०
१० **पातञ्जलयोगसूत्र** । व्याख्याकारों की दृष्टि से पातञ्जल योगसूत्र का समीक्षात्मक अध्ययन (शोधग्रन्थ) । डॉ० कुमारी विमला कर्णाटक ६५-००
११ **योगसूत्रम्** । योगसूत्रप्रदीपिका व्याख्या सहित । सटिप्पण २-५०
१२ **वैदिकयोगसूत्र** । श्रीहरिशङ्कर जोशी
[प्रस्तुत ग्रन्थ में वेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद-पुराणादि में विकीर्ण तथा व्याप्त योगदर्शन का विवेचन किया गया है सोमयोग, अग्नियोग आदि का विवेचन तो इस ग्रन्थ के अतिरिक्त कहीं मिलेगा ही नहीं। अकाट्य तर्कों तथा युक्तियों के साथ आकर-ग्रन्थों के वचन भी प्रमाणत्वेन उपन्यस्त हैं ।]
[चौ. रा. ३] २५-००
१३ **शिवसंहिता** । हिन्दी टीका सहित । डॉ० चमनलाल गौतम ३-००
१४ **शिवस्वरोदय** । भाषा टीका । डॉ० चमनलाल गौतम ३-५०
१५ **सांख्ययोगदर्शन का जीर्णोद्धार** । श्री हरिशंकर जोशी [वि. रा. ८५] २०-००
१६ **हठयोगप्रदीपिका** । भाषा टीका । डॉ० चमनलाल गौतम ४-००
१७ **हठयोगप्रदीपिका** । स्वात्मारामयोगीन्द्रविरचित । ब्रह्मानन्द प्रणीत ज्योत्स्ना व्याख्या-आंग्लानुवाद समलंकृत २०-००

योग-ग्रन्थ (भाषा)

१ **अष्टाङ्गयोगसिद्धि** । डा० चमनलाल गौतम ५-७५
२ **आसन** । सातवलेकर ४-००
३ **आत्मविज्ञान** । स्वा० योगेश्वरानन्द सरस्वती १८-००
४ **प्राणायाम के असाधारण प्रयोग** । चमनलाल गौतम ५-७५
५ **बहिरङ्गयोग** । स्वामी व्यासदेव १८-००
६ **ब्रह्मविज्ञान** । स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती २०-००
७ **ब्रह्मचर्य्य की प्रचण्ड शक्ति** । चमनलाल गौतम ३-००
८ **योग और पुरुषत्त्व** । दाऊदयाल गुप्त ५-७५
९ **योग और महिलाएं** । दाऊदयाल गुप्त ५-७५
१० **योग और यौवन** । दाऊदयाल गुप्त ५-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२१ **योगदर्शन** । डा० सम्पूर्णानन्द ७-००
२२ **योग मनोविज्ञान** । डा० शान्तिप्रकाश आत्रेय ३०-००
२३ **शक्तिपात** । (कुण्डलिनी महायोग) स्वामी विष्णुतीर्थ । १-२ भाग ४-५०
२४ **सूर्यनमस्कार** । सातवलेकर २-००
२५ **हिमालय का योगी** । स्वामी योगेश्वरानन्द ८-००

वैशेषिक-ग्रन्थाः

१ **प्रशस्तपादभाष्यम्** । किरणावलीटीकासहित । जितेन्द्र एस० जेटली सम्पादित ३०-००
२ **मानमनोहरः** । स्वामी योगीन्द्रानन्द । हिन्दी टीका सहित १२-००
३ **वैशेषिकदर्शन** । (प्रशस्तपादभाष्य) पं० ढुण्ढिराजशास्त्री कृत हिन्दीव्याख्या २५-००
४ **वैशेषिकदर्शन** । (उपस्कार सहित) । पं० ढुण्ढिराजशास्त्री कृत हिन्दीव्याख्या ३५-००
५ **वैशेषिकदर्शन** । 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित । प्रो० नारायण मिश्र ४-००
६ **वैशेषिकदर्शन** । विद्योदयभाष्य । पं० उदयवीर शास्त्री २०-००
७ **वैशेषिकदर्शन** । अविज्ञातकर्तृक प्राचीन व्याख्या सहित ७-५०
८ **वैशेषिकदर्शन** । श्रीरामशर्माआचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ५-७५
९ **वैशेषिकदर्शन : एक अध्ययन** । प्रो० नारायण मिश्र
[भारतीय दर्शनों में वैशेषिकदर्शन का स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण है । परन्तु नव्य-न्याय के उद्भव के पश्चात् यह दर्शन उपेक्षित सा रहा है । अतः आज इस दर्शन के तथ्यों का विवरण अत्यावश्यक है । इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए "वैशेषिक दर्शन : एक अध्ययन" ग्रन्थ का सम्पादन हुआ है । न्याय-वैशेषिक दर्शन के मर्म को समझने के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपादेय है । [चौ. रा. ५] १६-००

दर्शन-संग्रहः

१ **आधुनिक तर्कशास्त्र की भूमिका** । डॉ० संकठाप्रसाद सिंह १२-००
२ **आधुनिक भारतीय चिन्तन** । डॉ० विश्वनाथ नरवणे १९-००
३ **आधुनिक युग में धर्म** । डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् १०-००
४ **औचित्य-जीवनम्** । मायाप्रसाद त्रिपाठी ४-००
५ **काश्मीर शैवदर्शन और कामायनी** । भँवरलाल जोशी
[इस ग्रन्थ में लेखक ने काश्मीर शैवदर्शन के अति गूढ़ सिद्धान्तों का स्वच्छ गंभीर व्याख्यात्मक शैली में विवेचन करने के पश्चात् 'कामायनी' के अन्तर् में व्यापकरूप से अनुस्यूत दार्शनिक विचारधारा का मौलिक दृष्टि से सांगोपांग अन्वेषण प्रस्तुत किया है । कामायनी में काश्मीर शैवदर्शन के अन्वेषण सम्बन्धी लेखक के निष्कर्ष अत्यन्त गम्भीर और तर्क-सम्मत हैं] [चौ० रा० ६] २५-००
६ **ग्रीक और मध्ययुगीन दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास** । जगदीश सहाय १२-५०
७ **चार्वाक दर्शन** । आनन्द झा १२-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८ **चार्वाक दर्शन की शास्त्रीय समीक्षा** । डॉ० सर्वानन्द पाठक
[चार्वाकदर्शन पर यह सर्वप्रथम अनुसंधानात्मक ग्रन्थ है जो प्रत्येक विश्वविद्यालय के एम. ए. परीक्षार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक है ।]
[वि. रा. ७६] १६-००

९ **जीवन की आध्यात्मिक दृष्टि** । डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् १३-५०

१० **तत्त्वप्रकाशः सिद्धान्तशैवदर्शनम्** । तात्पर्यदीपिका टीका सहित । डॉ० कामेश्वरनाथमिश्र ३०-००

११ **दर्शन का प्रयोजन** । डॉ० भगवानदास ४-५०

१२ **दर्शन की कहानी** । विलडूरेण्ट । अनुवादक—कैलाशनारायण चौधरी १५-००

१३ **दर्शन संग्रह** । डॉ० दीवानचन्द ६-५

१४ **धर्म-दर्शन** । डॉ० लक्ष्मीनिधि शर्मा २५-००

१५ **निरीश्वरवाद : भारतीय एवं पाश्चात्त्य** । डॉ० याकुब मसीह १०-४

१६ **नीति विज्ञान के मूल सिद्धान्त** । लक्ष्मी सक्सेना १०-००

१७ **पश्चिमी दर्शन** । डॉ० दीवानचन्द्र ४-००

१८ **पाश्चात्त्य दर्शन** । चन्द्रधर शर्मा १०-००

१९ **ब्रैडले का दर्शन** । लक्ष्मी सक्सेना १२-५

२० **भारतीय धर्म और दर्शन** । बलदेव उपाध्याय ३५-०

२१ **भारतीय दर्शन** । वाचस्पति गैरोला १४-

२२ **भारतीय दर्शन** । बलदेव उपाध्याय ३५-०

२३ **भारतीय दर्शन** । डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् । १-२ खण्ड १००-०

२४ **भारतीय दर्शन** । डॉ० उमेशमिश्र ८-०

२५ **भारतीय दर्शन** । डॉ० देवराज २५-०

२६ **भारतीय दर्शन** । दत्त तथा चटर्जी १५-०

२७ **भारतीय दर्शन का इतिहास** । सुरेन्द्रनाथदास गुप्त । प्रथम भाग यन्त्रस्थ
२-५ भाग ६४-०

२८ **भारतीय दर्शन की रूपरेखा** । एम० हरियन्ना । अनु० डॉ० गोवर्धनभट्ट—श्रीमतीमन्जुगुप्त—सुखवीर चौधरी २०-०

२९ **भारतीय दर्शन प्रकाश** । (प्रश्नोत्तर में) प्रो० राधेश्याम शर्मा ६-०

३० **भारतीय दर्शन में चेतना का स्वरूप** । डॉ० श्रीकृष्णसक्सेना
[डॉ० सक्सेना की Nature of Conciousness in Hindu Philosophy नामक अंग्रेजी पुस्तक भारतीय दर्शन शास्त्र के अनुरागियों में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी है; उसी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का हिन्दी रूपान्तर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है ।]
[वि. रा. १२३] १५-०

३१ **भारतीय दर्शन में प्रामाण्यवाद** । शारदागाँधी ५०-०

३२ **भारतीय दर्शन-शास्त्र का इतिहास** । डॉ० हरिदत्त शास्त्री १२-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३३ **यूरोपीय दर्शन** । रामावतार शर्मा ३-५०
३४ **राधाकृष्णन् का विश्वदर्शन** । शान्ति जोशी ९-००
३५ **विश्वधर्मदर्शन** । साँवलिया विहारीलाल वर्मा २२-००
३६ **वैदिकदर्शन** । डॉ० फतह सिंह ९-००
३७ **षड्दर्शनरहस्य** । रङ्गनाथ पाठक ५-००
३८ **समकालीन धर्म-दर्शन** । डॉ० याकुब मसीह १६-७५
३९ **समकालीन पाश्चात्य दर्शन** । लक्ष्मी सक्सेना १६-००
४० **समकालीन भारतीय दर्शन** । लक्ष्मी सक्सेना १४-००
४१ **सर्वदर्शनसंग्रहः** । उमाशङ्करशर्मा 'ऋषि' कृत विशद हिन्दी व्याख्या, भूमिकादि विभूषित (सजिल्द अभिनव संस्करण)

इस संस्करण की विशेषताएँ—

१ मूल का अनुसरण करते हुए सरल साहित्यिक हिन्दी भाषा में अनुवाद तथा विस्तृत व्याख्या।

२. शास्त्रार्थ-स्थलों पर समस्याओं की पृष्ठ-भूमि दिखाकर उनकी सर्वाङ्गपूर्ण विवेचना तथा बीच-बीच में सारांश-कथन ।

३. ऐतिहासिक टिप्पणियाँ ।

४. प्रत्येक दर्शन का विषयानुसार अनुच्छेदों में विभाजन ।

५. हिन्दी भूमिका में लेखक के समयादि पर विचार और सभी दर्शनों का संक्षिप्त पर्यालोचन ।

६. अंग्रेजी भूमिका में दर्शनों के तारतम्य का, ग्रन्थ की शैली का तथा दर्शनों की विषयवस्तु का विवेचन ।

७. परिशिष्टों में दर्शन-सम्बन्धी अत्युपयोगी शोधपूर्ण सामग्री का संकलन ।

[वि. सं. ११३] ५०-००

४२ **स्फोटदर्शन** । पं० रङ्गनाथ पाठक १०-००
४३ **सांख्य योगदर्शन का जीर्णोद्धार** । श्री हरिशंकर जोशी [वि. रा ८५] २०-००
४४ **साधुदर्शन तथा सत्प्रसङ्ग** । म० म० डॉ० गोपीनाथकविराज । १-२ भाग २०-००

वेदान्त-ग्रन्थाः

१ **अद्वैतसिद्धिः** । न्यायामृतसमन्विता । आलोचनात्मक विस्तृत हिन्दी व्याख्या सहित । स्वामी योगीन्द्रानन्द । प्रथम भाग ४०-००, द्वितीय भाग ३६-००
१-२ भाग ७६-००
२ **अद्वैतामोदः** । वासुदेवशास्त्री प्रणीत १८-७५
३ **अध्यात्मभागवतसंग्रहः** । हिन्दी टीका सहित ५-००
४ **अपरोक्षानुभूति प्रवचन** । स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५ **अमृत-मन्थन अथवा जीवन का दिव्य पक्ष** । डॉ० मङ्गलदेव शास्त्री
[सुबोध हिन्दी अनुवाद के साथ रोचक छन्दों में निर्मित । छात्र, अध्यापक, गृहस्थ, साधु सबके लिए उपयोगी ।] (वि० सं० २५) ६-०
६ **अष्टावक्रसंहिता** । स्वामी नित्यस्वरूपानन्द कृत आंग्लानुवाद सहित ६-०
७ **आत्मबोधः** । शङ्कराचार्य कृत । स्वामी निखिलानन्द कृत आंग्लानुवाद सहित ८-०
८ **आत्मानात्मविवेक-आत्मबोधश्च** । जगदीशचन्द्र मिश्र कृत सं० हि० टीका ५-०
९ **आभोगः** । वाचस्पति मिश्र कृत भामती की टीका, कल्पतरु की व्याख्या । लक्ष्मीनृसिंह विरचित २०-०
१० **उपदेशसाहस्री** । हिन्दी अनुवाद सहित । चमनलाल गौतम ८-७
११ **उपदेशसाहस्री** । स्वामी जगदानन्द कृत आंग्लानुवाद सहित ६-०
१२ **औचित्यजीवनम्** । मायाप्रसाद त्रिपाठी । हिन्दी टीका सहित ४-०
१३ **काथबोधः** । साजनीकृतटीकोपेतः । दत्तात्रेयसम्प्रदायाऽनुगत २-०
१४ **हिन्दी खण्डनखण्डखाद्य** । हिन्दी व्याख्याकार—श्रीहनुमानदास षट्शास्त्री ३०-०
१५ **चर्पट-पञ्जरिका** । स्वामी योगानन्द २-५
१६ **चित्सुखी** । श्रीचित्सुखाचार्य कृत नयनप्रसादिनी व्याख्या, भाषानुवाद सहित २४-०
१७ **चित्सुखीरहस्यम्** । (प्रथम परिच्छेद-चित्सुखी प्रश्नोत्तरी) श्रीरामेश्वरपुरी २-०
१८ **जीवनदर्शन** । डॉ० मुंशीराम शर्मा
[जीवन क्या है ? वह कैसे विकसित होता है तथा उन्नत बनता है ? जीवन-पथ में कैसे-कैसे मोड़ आते हैं आदि आदि । 'जीवनदर्शन' पढ़कर आप जीवन का वास्तविक मूल्याङ्कन कर सकेंगे ।] [वि. रा. १६] ३-
१९ **तत्वदीपनम्** । श्रीअखण्डानन्दमुनिकृतम् (पञ्चपादिकाविवरणस्यव्याख्यानम्) ५०-
२० **तत्त्वप्रकाशः** । धराधीश्वर भोजकृत । 'तात्पर्यदीपिका' वृत्ति व्याख्याद्वयः हिन्दी भाषानुवाद सहित । डॉ० कामेश्वरनाथ मिश्र ३०-
२१ **तत्त्वप्रकाशिकाव्याख्या भावबोधः** । रघूत्तमपति कृत १५-
२२ **त्रिपुरारहस्यम्-ज्ञानखण्डम्** । हिन्दीव्याख्या सहित । स्वामीसनातनदेवजी १६-
२३ **त्रिपुरारहस्यम्-ज्ञानखण्डम्** । श्रीनिवासबुधविरचित तात्पर्यदीपिका व्याख्या ९-
२४ **नारदभक्तिसूत्र** । स्वामी त्यागीशानन्द कृत आंग्लानुवाद सहित ४-
२५ **नैष्कर्म्म्यसिद्धिः** । सुरेश्वराचार्य । सच्चिदानन्देन्द्र प्रणीत व्याख्या १५-
२६ **न्यायकल्पलतिका** । बृहदारण्यकवार्तिकसार व्याख्या । वी० सुब्रह्मण्यशास्त्री
प्रथम भाग १७-००, द्वितीय भाग ५४-
२७ **न्यायचन्द्रिका** । आनन्दपूर्णमुनीन्द्रप्रणीत । स्वरूपानन्दमुनीन्द्र कृत न्याय-प्रकाशिका व्याख्या सहित १८-
२८ **न्यायरक्षामणि** । अप्पयदीक्षित । सम्पा०—एस. आर. कृष्णमूर्ति शास्त्री २०-
२९ **न्यायसिद्धाञ्जनम्** । वेदान्तदेशिककृत । नीलमेघाचार्य कृत भाषानुवाद सहित २५-
३० **पञ्चदशी** । पीताम्बरजी कृत हिन्दी टीका सहित १०-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३१ **पञ्चदशी** । रामकृष्ण व्याख्या सहित १०–००

३२ **पञ्चीकरणम्** । शङ्कराचार्य । आंग्लानुवाद सहित २–००

३३ **परमतत्त्वमीमांसा (मतिप्रशिक्षशास्त्रम्)** । विद्याभूषण श्रीकृष्णजोशी
[पाश्चात्त्य आध्यात्मिक दर्शन तथा दार्शनिकों का एकत्र क्रमबद्ध वर्णन प्राप्त करने के लिये संस्कृत में लिखा गया यह नवीन ग्रन्थ है। [वि. सं. १३२] ६–००

३४ **पुरुषार्थचतुष्टय** । श्रीप्रेमवल्लभ त्रिपाठी । हिन्दी व्याख्या सहित १५–००

३५ **पुरुषार्थसुधानिधिः** । सायणाचार्य विरचित । टी० चन्द्रशेखरन् सम्पादित १४–००

३६ **प्रणवकल्पः** । (स्कन्दपुराणान्तर्गत) श्रीगदाधरेन्द्रसरस्वतीप्रणीतप्रणव-कल्पप्रकाशाख्यभाष्यसमलंकृत ६–००

३७ **प्रत्यक्तत्वचिन्तामणिः** । सदानन्द कृत । स्वोपज्ञ व्याख्या । १–२ भाग १०–००

३८ **प्रेमपत्तनम्** । सव्याख्या ३–००

३९ **बोधसारः** । श्री नरहरि कृत । तच्छिष्यपण्डितश्रीदिवाकरकृतटीकयासहितश्च ७५–००

४० **बोधैक्यसिद्धिः** । अच्युतराय प्रणीत । अद्वैतात्मप्रबोधव्याख्या । प्रथम भाग ७–५०

४१ **ब्रह्मविद्यारहस्यविवृतिः** । सच्चिदानन्देन्द्र २–५०

४२ **ब्रह्मसिद्धान्तः** । मधुसूदनओझाविरचित । गिरिधरशर्माचतुर्वेदी रचित सिद्धान्तप्रकाशिनी व्याख्या सहित १२–००

४३ **ब्रह्मसिद्धिव्याख्या** । आनन्दपूर्णमुनि विरचित भावशुद्धि, चित्सुखमुनि विरचित अभिप्रायप्रकाशिका व्याख्याद्वय सहित २४–००

४४ **ब्रह्मसूत्रम्** । 'सुषमा' हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—स्वामी हनुमान दास जी षट्शास्त्री
[सम्पूर्ण शांकरभाष्य का गूढ़तत्त्व इस हिन्दी व्याख्यान में प्रतिफलित हो उठा है। संस्कृत की ससन्दर्भ वेदान्त-सूक्तियां पदे-पदे अनुस्यूत हैं। भाषा बड़ी सरल और प्रवाहपूर्ण है।] [वि. सं. १५५] १०–००

४५ **ब्रह्मसूत्रदीपिका** । श्रीमच्छङ्करानन्दभगवद्विरचित तथा तत्वानुसंधानम् श्रीमहादेवानन्दसरस्वतीप्रणीतम् १२–००

४६ **ब्रह्मसूत्रप्रमुखभाष्यपञ्चकसमीक्षणम्** । श्रीरामशरणशास्त्री ३५–००

४७ **ब्रह्मसूत्रभाष्य** । स्वामी गम्भीरानन्द कृत आंग्लानुवाद सहित ३०–००

४८ **ब्रह्मसूत्रवृत्तिः** । हरिदीक्षितविरचित ४–७५

४९ **ब्रह्मसूत्रवृत्ति-मिताक्षरा** । अन्नंभट्ट कृत ७–००

५० **ब्रह्मसूत्र-शांकरभाष्यम्** । आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्त शिरोमणि कृत सविमर्श 'ब्रह्मतत्त्वप्रकाशिका' हिन्दी व्याख्या सहित । चतुःसूत्र्यन्त
[अनेक विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत इस चतुःसूत्र्यन्त भाग की सर्वबोधगम्य व्याख्या की शिक्षाधिकारी विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है, जो एकदम नवीन तथा परीक्षोपयोगी है।] [वि. सं. १३७] ८–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५१ **ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्यम्** । 'ब्रह्मतत्त्वविमर्शिनी' हिन्दी व्याख्या सहित ।
व्याख्याकार—स्वामी हनुमानदास षट्शास्त्री ।
[ग्रन्थ लगाने के लिये यह सर्वश्रेष्ठ व्याख्या हैं। छात्र, अध्यापक, जिज्ञासु, मुमुक्षु सभी वर्ग के व्यक्तियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। विश्वविद्यालयीय परीक्षार्थियों के लिए डॉ० वीरमणि प्रसाद उपाध्याय विरचित प्राच्य-पाश्चात्त्यउभय-मत-समन्वयात्मक सुविशद इसकी भूमिका मात्र ही पर्याप्त है।] [वि.सं. १२४]
प्रथम भाग १–२ अध्याय ३०–००, द्वितीय भाग ३–४ अध्याय २०–००
सम्पूर्ण १–२ भाग ५०–००

५२ **ब्रह्मसूत्रशांकरभाष्यम्** । चतुःसूत्र्यन्त । पूर्णानन्दीयव्याख्यासहितया, श्रीगोविन्दानन्दप्रणीतया 'रत्नप्रभया' च समन्वितम् । प्रथमाध्यायादारभ्य द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयपादपर्यन्तम् १०–००

५३ **ब्रह्मसूत्रों पर प्रणीत शक्ति-भाष्य का अध्ययन** ।
लेखिका—डॉ० श्रीमती सुशीला 'कमलेश' (चौ० रा० १५) २५–००

५४ **बृहदारण्यकवार्तिकसारः** । हरिहरकृपालु कृत हिन्दी अनुवाद । १–२ भाग ४०–००

५५ **बृहदारण्यकवार्तिकसारः** । विद्यारण्यस्वामिविरचित ४५–००

५६ **भक्ति का विकास** । डॉ० मुंशीराम शर्मा । संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण
[परमपुरुषार्थ रूपमें प्राप्य 'भगवत्' और 'भक्ति' तत्त्व के विषय में जितना कुछ जानना आवश्यक है वह सब इस ग्रन्थ में उपनिबद्ध है।] [वि. रा. १५] ५०–००

५७ **भक्ति-तरङ्गिणी** । डॉ० मुंशीराम शर्मा [वि. रा. २१]
[भक्ति-भाव से ओत-प्रोत वेद मन्त्रों का सरस हिन्दी गीतों में अनुवाद । भक्ति-तरङ्गिणी अध्यात्म-पथ के यात्रियों के लिये अनुपम सम्बल सिद्ध होगी] ३–००

५८ **भक्तिरत्नावली** । डॉ० श्रीकृष्णमणित्रिपाठी ।
[भक्तिरत्नावली, श्रीमद्भागवत के भक्ति परक श्लोकों का संकलन है। भक्ति मार्गियों के लिए यह ग्रन्थ सर्वाधिक उपादेय एवं महत्त्वपूर्ण है। यह विभिन्न विश्वविद्यालयों में शास्त्री तथा आचार्य कक्षाओं में पाठ्यग्रन्थ के रूप में निर्धारित है। अतएव छात्रों की आवश्यकता को दृष्टि में रखते हुये, विद्वान् प्राध्यापक डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी ने भक्तिरत्नावली की सरलतम संस्कृत-हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की है। पुस्तक के प्रारम्भ में भक्ति विषयक एक विवेचनात्मक विस्तृत भूमिका भी दी गयी है। इससे पुस्तक की उपयोगिता निःसन्देह बढ़ गयी है। १५–००

५९ **भक्तिरसायनम्** । स्वोपज्ञ टीका हिन्दी टीका सहित ७–००

६० **भक्तिरसामृतसिन्धु** । रूपगोस्वामी । हिन्दी अनुवाद सहित १५–००

६१ **भगवन्नामकौमुदी** । लक्ष्मीधर विरचित । अनन्तदेव कृत व्याख्या सहित २–००

६२ **योगवाशिष्ठ (संक्षिप्त)** । हिन्दी टीका सहित । श्रीरामशर्मा । १–२ भाग २४–००

६३ **योगवाशिष्ठ** । भाषा मात्र । १–२ भाग ८५–००

६४ **योगवाशिष्ठः** । आनन्दवोधेन्द्रसरस्वती कृत संस्कृत टीका । प्रथम भाग ४०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६५ **योगवाशिष्ठसार**। क्षितिशचन्द्र चक्रवर्ती ५-००

६६ **लघुयोगवाशिष्ठः**। आत्मसुखविरचित। वाशिष्ठचन्द्रिका व्याख्या सहित २०-००

६७ **वाक्यवृत्ति**। स्वामी जगदानन्द कृत आंग्लानुवाद सहित २-५०

६८ **वाक्यसुधा**। स्वामी योगानन्द कृत हिन्दी टीका विवेचन सहित २-५०

६९ **विवरणादिप्रस्थानविमर्शः**। पं० वीरमणिप्रसाद उपाध्याय रचित १-५०

७० **विवरणोपन्यासः**। श्रीरामानन्दसरस्वती विरचितः विवरणतात्पर्यस्य व्याख्यानम् तथा '**वाक्यसुधा**' श्रीशंकराचार्य विरचिता श्री ब्रह्मानन्दभारती कृतव्याख्यासहितः १२-००

७१ **विवरणप्रमेयसंग्रहः**। हिन्दी टीका सहित १५-००

७२ **विवेकचूड़ामणिः**। श्रीशंकराचार्यकृत। आंग्लानुवाद सहित। अनुवादक—मोहिनी एम० चटर्जी ६-३०

७३ **वेदान्तकल्पलतिका**। मधुसूदनसरस्वतीविरचित। आर० डी० करमरकर कृत आंग्लानुवाद सहित १०-००

७४ **वेदान्तकौमुदी**। डॉ० राधेश्याम चतुर्वेदी कृत 'भावदीपिका' 'ज्ञानदीपिका' संस्कृत व्याख्या सहित। सम्पा० सिद्धेश्वर भट्टाचार्य ८०-००

७५ **वेदान्तदर्शनम्**। श्रीरामानन्दसरस्वती कृत ब्रह्मामृतवर्षिणी नामक विस्तृत सूत्रार्थनिर्णायिका टीका सहित २५-००

७६ **वेदान्तदर्शन**। श्रीरामशर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित ५-७५

७७ **वेदान्तदर्शन का इतिहास**। पं० उदयवीर शास्त्री ३०-००

७८ **वेदान्तपरिभाषा**। व्याख्याकार—श्रीगजाननशास्त्री मुसलगाँवकर [पहले मूल ग्रन्थ को लगाकर बाद में शंका-समाधान पुरःसर वेदान्त के मार्मिक सिद्धान्तों, क्लिष्ट अंशों तथा मत-मतान्तरों पर सरल शब्दों में व्यापक प्रकाश डाला गया है। पाण्डित्यपूर्ण विशद् भूमिका भी छात्रों के लिए परम उपादेय है।] [वि. सं० १००] २०-००

७९ **वेदान्तपरिभाषा-रहस्यम्**। स्वामी श्री रामेश्वरपुरी २-५०

८० **वेदान्तसारः**। श्रीरामशरणशास्त्रीकृत 'भावबोधिनी' संस्कृत-हिन्दीव्याख्या सहित [इस अभिनव संस्करण की व्याखया में अज्ञान (माया), अध्यारोप, तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि इत्यादि स्थल इतने विस्तार एवं सरलतापूर्वक लिखे गये हैं कि साधारण से साधारण छात्र के लिये भी यह ग्रन्थ अत्यन्त सुबोध हृदयंगम करने योग्य हो गया है।] [वि. सं. १] ५-००

८१ **वेदान्तसारः**। 'सुबोधिनी' विद्वन्मनोरञ्जनी। कर्णेल जी० ए० जेकब रचित नोट्स एवं टिप्पणी २०-००

८२ **वेदान्तसारः**। प्रश्नोत्तर व्याख्या सहित। प्रो० राधेश्याम वर्मा २-००

८३ **वैयासिकन्यायमाला**। भारततीर्थमुनिप्रणीत। स्वामी सत्यानन्द सरस्वती कृत भाषानुवाद टिप्पणी सहित ८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८४ **वैराग्यशतकम्** । श्रीभर्तृहरिविरचित । हिन्दी व्याख्या सहित २–५०
८५ **शङ्करदिग्विजयः** । सत्यानन्द सरस्वती ४–००
८६ **शङ्कराचार्य : उनके मायावाद तथा अन्य सिद्धान्तों का आलोचनात्मक अध्ययन** । राममूर्ति शर्मा २५–००
८७ **शांकरपादभूषणम्** । रघुनाथसूरिविरचित । १–२ भाग १५–७०
८८ **शाण्डिल्यभक्तिसूत्रम्** । नारायणतीर्थ विरचित भक्तिचन्द्रिका व्याख्या स्वप्नेश्वरभाष्य-नारदभक्तिसूत्र-भक्तिमीमांसा सहित १०–००
८९ **श्रीलक्ष्मीनारायणसंहिता** । कृष्णद्वैपायनव्यासप्रणीत । सम्पा० स्वामी कृष्णवल्लभाचार्य । १–५ जिल्द में २२०–००
९० **संक्षेपशारीरकम्** । सुबोधिनी-अन्वयार्थप्रकाशिका व्याख्या । १–२ भाग १७–००
९१ **संक्षेपशारीरकम्** । हिन्दी टीका सहित २०–००
९२ **सनत्सुजातीयदर्शनम्** । संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित ४–००
९३ **सिद्धान्तबिन्दुः** । मधुसूदनसरस्वतीप्रणीत । वासुदेवशास्त्री अभ्यङ्कर कृत व्याख्या सहित १५–००
९४ **सूतसंहिता** । श्रीविद्यारण्यप्रणीत । तात्पर्यदीपिका सहित । १–३ भाग २१–६५
९५ **सौन्दर्यलहरी** । हिन्दी अनुवाद तथा श्रीविद्यातत्त्वकुण्डलिनीरहस्य सहित १०–००
९६ **स्वराज्यसिद्धिः** । हिन्दी टीका सहित २–००
९७ **स्वानुभवादर्शः** । माधवाश्रमविरचित । स्वकृतटीकाविभूषितश्च तथा **अनुभूतिलेशः** । वामनपण्डित विरचित १२–००

वेदान्त-विशिष्टाद्वैत-ग्रन्थाः

१ **आगमप्रामाण्यम्** । संस्कृत एवं आंग्ल टीका । डॉ० एम० नरसिंहमाचारी १८–००
२ **तत्त्वमुक्ताकलापः** । वेदान्ताचार्यविरचितसर्वार्थसिद्धिर्नामवृत्तिः । श्रीवीरराघवाचार्य सम्पादित ४५–००
३ **न्यायपरिशुद्धिः** । सटीक । श्रीवेदान्ताचार्यप्रणीत ५०–००
४ **न्यायसिद्धाञ्जनम्** । वेदान्तदेशिक । नीलमेघाचार्य कृत हिन्दी टीका सहित २५–००
५ **न्यायसिद्धाञ्जनम्** । 'रत्नपेटिका' रंगरामानुजभाष्यद्वय ३५–००
६ **परमार्थभूषणम्** । शतदूषणीमण्डनम्-शतभूषण्यादिखण्डनरूपम् । उत्तमूरवीरराघवाचार्येणविरचितम् २५–००
७ **रामानुज-वेदान्तसारः** । सटिप्पण 'अधिकरणसारावली' सहित ५–००
८ **वेदान्तदीपः** । श्रीभगवद्रामानुजाचार्यविरचित । ब्रह्मसूत्रव्याख्या २०–००
९ **श्रीभाष्यम्** । भाष्यार्थदर्पण टीका सहित । १–२ भाग सम्पूर्ण ३०–००
१० **श्रीभाष्यम्** । वेदान्ताचार्य । **तत्वटीकाशतदूषणी च** । श्रीवीरराघवाचार्य ४५–००
११ **श्रीभाष्यम्** । सुदर्शनसूरिकृतश्रुतिप्रकाशिकाव्याख्यासहित । १–२ भाग ६०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२ **श्रीभाष्यवार्त्तिकं यतीन्द्रमतदीपिका च** । श्रीनिवासाचार्य कृता तथा **सकलाचार्यमतसंग्रहश्च** १२-००

१३ **सिद्धित्रयम्** । यामुनाचार्यकृत । वीरराघवाचार्यविरचित 'गूढप्रकाश' टिप्पणी, आंग्लानुवाद सहित १२-५०

वेदान्त-द्वैताद्वैत-ग्रन्थाः

१ **ब्रह्ममीमांसाभाष्यम्** । (वेदान्तपारिजातसौरभनामकं व्याख्यानम्) ४-००

२ **ब्रह्मसूत्रवृत्तिः** । श्रीदेवाचार्यप्रणीत 'सिद्धान्तजाह्नवी', श्रीसुन्दरभट्टविरचितसिद्धान्त-सेतु व्याख्या तथा श्री गिरिधरप्रपन्न रचित **लघुमंजूषा** युक्ता दशश्लोकी च १२-००

३ **वेदान्तरत्नमंजूषा** । श्री पुरुषोत्तमाचार्यविरचिता तथा **वेदान्ततत्त्वबोधः** १२-००

४ **वेदान्तसिद्धान्तसंग्रहः** । श्रुतिसिद्धान्तापरनामकः श्रीवनमालिमिश्रब्रह्मचारिकृतः स्वकृतस्यैव कारिकारूपमूलग्रंथस्य व्याख्यात्मकः तथा **वेदान्तकारिकावली** । पण्डित श्रीपुरुषोत्तमप्रसादकृता । **अध्यात्मसुधातरंगिणी** टीका सहिता २०-००

५ **श्रुत्यन्तकल्पवल्ली** । श्रीमत्पुरुषोत्तमप्रसादविरचितः तथा श्री ब्रजेश्वरप्रसाद कृता **श्रुतिसिद्धान्तमञ्जरी** च १८-००

वेदान्त-शुद्धाद्वैत (वल्लभसम्प्रदाय) ग्रन्थाः

१ **गूढार्थदीपिका** । धनपतिसूरिकृता । श्रीमद्भागवतदशमस्कन्धस्थ रासपञ्चाध्यायी व्याख्या, भ्रमरगीतव्याख्या तथा जगन्नाथसुधिविनिर्मिता 'रसव्याख्या' च २४-००

२ **तत्त्वार्थदीपनिबन्धः** । वल्लभाचार्य कृत 'प्रकाश' संस्कृत टीका तथा 'स्नेहप्रपूरणी' हिन्दी व्याख्या सहित । श्रीकेदारनाथ मिश्र २०-००

३ **प्रमेयरत्नार्णव** । हिन्दी अनुवाद सहित । श्री केदारनाथ मिश्र १२-००

४ **प्रस्थानरत्नाकरः** । गोस्वामी श्री पुरुषोत्तमजी महाराज विरचित १२-००

५ **ब्रह्मवादसंग्रहः** । हिन्दी भाषानुवाद सहित ४-००

६ **ब्रह्म-सूत्रवृत्तिः-मरीचिका** । (अणुभाष्यानुसारि) श्री ब्रजनाथभट्ट कृत । सम्पा० रत्नगोपालभट्ट । १-२ भाग १२-००

७ **भक्तिहंस** । श्रीविट्ठलनाथस्वामिविरचित । हिन्दी अनुवाद सहित ८-००

८ **रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी** । हिन्दी टीका सहित । श्रीजगन्नाथ चतुर्वेदी (मुनमुनजी) ३०-००

९ **शुद्धाद्वैतमार्तण्डः** । गोस्वामी गिरिधरजी महाराज विरचित । श्रीरामकृष्ण भट्ट विरचित प्रकाश व्याख्या सहित । **प्रमेयरत्नार्णवः** लालभट्ट उपनाम श्री बालकृष्ण भट्ट विरचित तथा श्री हरिराय विरचित **ब्रह्मवादः** सहित ५-००

१० **श्रीवल्लभाचार्य के दर्शन का यथार्थ स्वरूप** । गो० श्याम ८-००

११ **श्रीविद्वन्मण्डनम्** । श्रीविट्ठलनाथदीक्षितकृतम् । गोस्वामी श्री पुरुषोत्तमजी महाराज कृत सुवर्णसूत्र व्याख्या सहित १५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२२ **श्रीसुबोधिनी**। श्रीवल्लभाचार्यविनिर्मिता। श्रीमद्भागवतस्य दशमस्कन्ध-जन्मप्रकरणे प्रथमाध्यायन्तं व्याख्या। गोस्वामिश्रीविट्ठलनाथदीक्षित विरचित टिप्पणी तथा गोस्वामिश्रीपुरुषोत्तमजी महाराज विरचित 'प्रकाश' व्याख्या १५-००

वेदान्त-ग्रन्थ (भाषा)

१ **अद्वैतवेदान्त**। डॉ० राममूर्ति शर्मा ३७-००
२ **अमृतमन्थन**। (जीवन का दिव्यपक्ष) डॉ० मङ्गलदेव शास्त्री (वि० सं० २५) ६-००
३ **आत्मप्रबोध**। १-००
४ **आभास और सत्**। एफ० एच० ब्रेडले। अनु० डॉ० फतहसिंह ११-००
५ **ज्ञान वैराग्य प्रकाश**। स्वामी परमानन्द परमहंस ४-५०
६ **चिद्विलास**। श्रीसम्पूर्णानन्द ६-००
७ **जीवनज्योति**। पं० मङ्गलदेव शास्त्री १६-००
८ **जीवनदर्शन**। डॉ० मुंशीराम शर्मा
[जीवन क्या हैं ? वह कैसे विकसित होता है तथा उन्नत बनता है ? जीवन-पथ में कैसे-कैसे मोड़ आते हैं आदि आदि। 'जीवनदर्शन' पढ़कर आप जीवन का वास्तविक मूल्याङ्कन कर सकेंगे।] [वि. रा. १६] ३-००
९ **तत्त्वज्ञान**। डॉ० दीवानचन्द ५-००
१० **दासबोध**। भाषा। अनु० श्री राजकुमार भारतीय ७-५०
११ **पञ्चीकरण**। श्रीरामविरचित। जयकृष्ण कृत व्याख्या। गुजराती से हिन्दी अनुवाद। चमनलाल गौतम २-७५
१२ **पारसमणि**। (पारस भाग का हिन्दी अनुवाद) स्वामी आत्मानन्द ६-००
१३ **पूजातत्त्व**। म० म० गोपीनाथ कविराज ४-००
१४ **प्राणतत्त्व**। स्वामी विष्णुतीर्थ २-५०
१५ **भक्ति का विकास**। डॉ० मुंशीराम शर्मा
[परमपुरुषार्थ रूप में प्राप्य 'भगवत्' और 'भक्ति' तत्त्व के विषय में जितना कुछ जानना आवश्यक है वह सब इस ग्रन्थ में उपनिबद्ध है।] [वि. रा. १५] ५०-००
१६ **भक्तितरङ्गिणी**। डॉ० मुंशीराम शर्मा
[भक्तिभाव से ओत-प्रोत वेद मन्त्रों का सरस हिन्दी गीतों में अनुवाद। भक्ति-तरङ्गिणी अध्यात्म-पथ के यात्रियों के लिये अनुपम सम्बल सिद्ध होगी।] [वि. रा. २१] ३-००
१७ **भक्तिसागर**। स्वामी चरणदास विरचित ४०-००
१८ **महावाक्य**। परमहंस स्वामी योगानन्द २-५०
१९ **योगवासिष्ठ-भाषा**। १-२ भाग सम्पूर्ण ८५-००
२० **विचारचन्द्रोदय**। भाषा। हनुमानदास जी षट्शास्त्री
[श्री पीताम्बर पण्डित विरचित षोडश कलाओं से पूर्ण यह ग्रन्थ भावुक महात्माओं के लिये परम हितकर है। [वि. रा. १४२] ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२१	**विचारसागर** । निगमानन्द परमहंस	७–५०
२२	**वेदान्त छन्दावली** । १–५ भाग	८–२५
२३	**वेदान्तदीपिका** । स्वामी योगानन्द (आलूवाले बाबा)	२–५०
२४	**वेदान्तरहस्य** । स्वामी योगानन्द	२–००
२५	**वेदान्त रत्नावली** ।	१–००
२६	**वृत्तिप्रभाकर** । स्वामी श्रीआत्मानन्दजी मुनि	९–००
२७	**शङ्कराचार्य** । आचार्य बलदेव उपाध्याय	१५–००
२८	**शङ्कराचार्य का आचार-दर्शन** । डॉ० रामानन्द तिवारी	७–००
२९	**श्रुति की टेर** । भोला	८–७५
३०	**सत्यार्थप्रकाश** । स्वामी दयानन्द सरस्वती । सम्पा० युधिष्ठिर मीमांसक	५–००
३१	**सद्धर्मचन्द्रिका** । स्वामी हनुमानदासजी षट्शास्त्री	२–५०

स्वामी महेशानन्दगिरि साहित्य

१	**ईशावास्योपनिषद्** ।	२–५०
२	**कठोपनिषद्** । प्रथम भाग	२०–००
३	**गीता प्रवेश** ।	१५–००
४	**जीवन-यज्ञ** । आंग्लभाषानुवाद	१२–००
५	**दश-शान्तयः** । (वैदिक सम्प्रादान्तर्गत) भाषा टीका	३–००
६	**मानवता की ओर** ।	१५–००
७	**मानसोल्लास माधुरी** ।	२०–००
८	**व्यक्तित्व का विकास** ।	५–००
९	**श्वेताश्वतर-उपनिषद्** ।	२०–००
१०	**साधन संग्राम** । १–२ भाग	२५–००

स्वामी अखण्डानन्द साहित्य

१	**अपरोक्षानुभूति प्रवचन** ।	६–००
२	**आत्मबोध** ।	३–००
३	**आनन्दवाणी** । ७वाँ भाग	१–५०
४	**कठोपनिषद् प्रवचन** । प्रथमभाग ९–००, द्वितीयभाग	१२–००
५	**कपिलोपदेश** ।	३–७५
६	**कर्मयोग** ।	६–००
७	**गीता दर्शन** ।	५–५०
८	**गोपियों के पाँच प्रेम गीत** ।	०–४०
९	**ज्ञान-विज्ञान योग** ।	६–००
१०	**ध्यानयोग** ।	६–००
११	**नारदभक्तिदर्शन** ।	९–००
१२	**ब्रह्मसूत्र-प्रवचन** । १–३ भाग	३०–००
१३	**ब्रह्मज्ञान और उनकीसाधना** ।	९–७५
१४	**भक्तियोग** ।	६–००
१५	**भक्तिसर्वस्व** ।	७–५०
१६	**भागवत विचार-दोहन** ।	३–००
१७	**माधुर्य-मन्जूषा** ।	३–००
१८	**माधुर्य-मयंक** । सनातनदेव	३–००
१९	**माधुर्य-लहरी** । (सतानदेवजी)	२–००
२०	**मानवजीवन और भागवत-धर्म** ।	४–५०
२१	**माडूक्य-प्रवचन** । (आगम-प्रकरण)	१०–००
२२	**माण्डूक्य-प्रवचन** । (वैतथ्य-प्रकरण)	७–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२३ माण्डूक्य-प्रवचन । (अद्वैत-प्रकरण) ४–५०
२४ मुण्डक-सुधा । ३–७५
२५ राम-शताब्दी-स्मृति । २०–००
२६ विभूतियोग । ५–२५
२७ विवेक कीजिये । ५–५०
२८ वेणुगीत । ३–००
२९ व्यवहार और परमार्थ । ३–७५
३० श्रीभक्तिरसायनम् । संस्कृत १२–००
३१ श्रीभक्तिरसायन-प्रपा । (संस्कृत) ३–००
३२ श्रीमद्भागवत-रहस्य । ३–७५
३३ सांख्ययोग । ९–७५
३४ साधना और ब्रह्मानुभूति । ५–२५
३५ स्पन्द-तत्व । ०–४५

श्री अरविन्द साहित्य

१ गीता प्रबन्ध । १६–६०
२ दिव्यजीवन । १–३ भाग । प्रथम १३–००, द्वितीय ११–८०, तृतीय २०–००
३ नाटक और कहानियाँ । १–२ भाग । प्रथम २०–००, द्वितीय २२–००
४ पूर्व जन्म और क्रम विकास । १८–२५
५ भारतीय संस्कृति के आधार । १३–००
६ मानव एकता का आदर्श । १३–२५
७ मानवचक्र । १२–५०
८ योग समन्वय । १–२ भाग ३०–५५
९ वेदरहस्य । १–२ भाग ३७–००
१० श्री अरविन्द : अपने विषय में । १८–००
११ श्री अरविन्द : श्रीमाताजी के विषय में । १८–००
१२ श्री अरविन्द की बंगला रचनाएँ । १८–००
१३ श्री अरविन्द के पत्र । १–३ भाग । प्रथम १७–९५, द्वितीय २५–००, तृतीय ३०–००
१४ श्री अरविन्द साहित्य संग्रह । १–२० खण्ड सम्पूर्ण ३२५–००
१५ श्री अरविन्द जन्मशती विशेषाङ्क (प्रज्ञा) । सम्पा० डॉ० रत्नशङ्करमिश्र १०–००

आचार्य श्री रजनीश साहित्य

१ अज्ञात के नये आयाम । १–००
२ अन्तर्यात्रा । ५–००
३ अन्तर्वीणा । ६–००
४ अमृतकण । १–१०
५ अहिंसादर्शन । १–००
६ ईशावास्योपनिषद । १५–००
७ कामयोग, धर्म और गाँधी । ५–००
८ कामुकता ध्यान और नग्नता । ४–००
९ क्रान्ति बीज । ६–००
१० क्रान्ति वैज्ञानिक प्रक्रिया । १–५०
११ कृष्ण : मेरी दृष्टि में । ४०–००
१२ गहरे पानी पैठ । ५–००
१३ गीता आहट । १–५०
१४ गीतादर्शन । १–२ पुष्प ३०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१५	गीतादर्शन । पुष्प ४	३०-००
१६	गीतादर्शन । पुष्प ५	१२-००
१७	गीतादर्शन । पुष्प ६	३०-००
१८	गीतादर्शन । पुष्प ८	२५-००
१९	गीतादर्शन । पुष्प ९	२५-००
२०	गीतादर्शन । पुष्प ११	३-००
२१	गूंगे की सरकार ।	३५-००, ५०-००
२२	घाट भुलाना बाट बिनु ।	१२-००
२३	जनसंख्या विस्फोट समस्या और समाधान	१-५०
२४	जिन खोजा तिन पाइया ।	४०-००
२५	जीवन क्रांति के सूत्र ।	८-००
२६	ज्यों की त्यों धरि दीन्ही चदरिया ।	५-००
२७	ताओ उपनिषद् ।	२-००
२८	ताओ उपनिषद् । १-२ भाग	८०-००
२९	धर्म और राजनीति ।	१२-००
३०	ध्यान : एक वैज्ञानिक दृष्टि ।	२-००
३१	नये मनुष्य की जन्म की दिशा ।	१-२५
३२	निर्वाण उपनिषद् ।	१५-००
३३	पथ की खोज ।	२-००
३४	पद घुंघरु बाँध ।	८-००
३५	पाथेय ।	३५-००
३६	प्रभु की पगडण्डियाँ ।	६-००
३७	प्रभु के फूल ।	५-००
३८	प्रेम के स्वर ।	१-५०
३९	प्रेम है द्वार प्रभु का ।	१२-००
४०	बिखरे फूल ।	१-००
४१	भगवान, मार्ग और मैं ।	८-००
४२	भारत, गाँधी और मैं ।	३-००
४३	महावीर परिचय और वाणी ।	२०-००
४४	महावीर : मेरी दृष्टि में ।	३०-००
४५	महावीर या महाविनाश ।	१५-००
४६	महावीर वाणी । १-२ भाग	६०-००
४७	मिट्टी के दिये ।	५-००
४८	सुख नहीं आनन्द खोजें ।	१-५०
४९	मुल्ला नसरुद्दीन ।	५-००
५०	मैं कहता आँखन देखी ।	६-००
५१	मैं कौन हूँ ?	६-००
५२	मैं मृत्यु सिखाता हूँ ।	२०-००
५३	युक्रान्द । (मासिक पत्रिका)	१-२५
५४	युवक और यौन ।	१-००
५५	शान्ति की खोज ।	३-५०
५६	शिवसूत्र ।	२५-००, ५०-००
५७	शून्य की नाव ।	५-००
५८	सत्य की खोज ।	५-००
५९	सत्य की पहली किरण ।	६-००
६०	सत्य के अज्ञात सागर का आमन्त्रण ।	२-००
६१	समाजवाद अर्थात् आत्मघात	६-००
६२	समाजवाद से सावधान ।	५-००
६३	समुन्द समाना बूँद में ।	९-००
६४	सम्भावनाओं की आहट ।	८-००
६५	सम्भोग से समाधि की ओर ।	६-००
६६	साधना पथ ।	५-००
६७	सूर्य की ओर ।	२-००
६८	सूली ऊपर सेज पिया की ।	७-००
६९	हँसना मना है ।	३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीरामकृष्ण-विवेकानन्द-साहित्य

१	आचार्यशंकर। स्वामी अपूर्वानन्द कृत	४-६०
२	आत्मतत्त्व।	२-५०
३	आत्मानुभूति तथा उसके मार्ग।	१-७५
४	ईशदूत ईसा।	०-५०
५	कवितावली।	२-२०
६	कर्मयोग।	२-२५
७	गीतातत्त्व। स्वामी शारदानन्द	३-५०
८	ज्ञानयोग।	३-७५
९	ज्ञानयोग पर प्रवचन।	०-९०
१०	चिन्तनीय बातें।	१-५०
११	जाति, संस्कृति और समाजवाद।	३-००
१२	देववाणी (उच्च आध्यात्मिक उपदेश)।	३-२५
१३	धर्मतत्त्व।	२-००
१४	धर्मप्रसंग में स्वामी शिवानन्द।	५-००
१५	धर्मरहस्य।	१-३०
१६	धर्मविज्ञान।	२-५०
१७	धर्मवेदान्त।	४-००
१८	नारदभक्तिसूत्र।	१-२०
१९	पत्रावली। १-२ भाग। प्रथम ७-०० द्वितीय	६-००
२०	परमार्थ प्रसंग। स्वामी विरजानन्द कृत	३-७५
२१	परिव्राजक (मेरी भ्रमण कहानी)।	२-००
२२	पवहारी बाबा।	०-६०
२३	प्राच्य और पाश्चात्य।	१-८०
२४	प्रेमयोग।	३-००
२५	भक्तियोग।	३-००
२६	भगवान् बुद्ध का संसार को सन्देश।	३-२५
२७	भगवान् श्रीकृष्ण और भगवद्गीता।	३-७०
२८	भगवान् रामकृष्ण, धर्म तथा संघ।	१-७५
२९	भारत का ऐतिहासिक क्रमविकास एवं अन्य प्रबन्ध।	२-२५
३०	भारत में विवेकानन्द।	१०-००
३१	भारत में शक्तिपूजा। स्वामी शारदानन्द	१-७५
३२	भारतीय नारी।	१-७०
३३	मन की शक्तियाँ तथा जीवन गठन की साधनाएँ।	०-७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३४	मरणोत्तर जीवन।	१–००
३५	महापुरुषों की जीवन गाथाएँ।	३–००
३६	माँ शारदा। स्वामी अपूर्वानन्द	८–००
३७	मेरे गुरुदेव।	१–२०
३८	राजयोग।	६–००
३९	रामकृष्णसंघ : आदर्श और इतिहास। स्वामी तेजसानन्द कृत	२–००
४०	वर्तमान भारत।	०–८०
४१	व्यावहारिक जीवन में वेदान्त।	२–००
४२	विविध प्रसङ्ग।	२–३०
४३	विवेकानन्दचरित। सत्येन्द्रनाथ मजूमदार कृत	७–५०
४४	विवेकानन्दजी की कथाएँ।	२–२०
४५	विवेकानन्दजी के सङ्ग में।	६–५०
४६	विवेकानन्दजी के सान्निध्य में।	१–८०
४७	विवेकानन्दसंचयन। विवेकानन्दजी का लेख, व्याख्यान, पत्र आदि का संग्रह	१४–००
४८	वेदान्त-सिद्धान्त और व्यवहार। स्वामी शारदानन्द	०–५०
४९	शिकागो वक्तृता।	०–८०
५०	शिक्षा।	१–७०
५१	शिवानन्द-स्मृति संग्रह। स्वामी अपूर्वानन्द द्वारा संकलित। १–३ खण्ड प्रथम ७–५०, द्वितीय ८–५०, तृतीय	१०–००
५२	श्रीरामकृष्ण और श्री माँ। स्वामी अपूर्वानन्द कृत	४–६०
५३	श्रीरामकृष्ण उपदेश।	१–००
५४	श्रीरामकृष्ण भक्तमालिका। १–२ भाग। प्रथम ८–५०, तृतीय	१०–००
५५	श्रीरामकृष्णलीलाप्रसंग। स्वामी शारदानन्द कृत सुविस्तृत। १–३ खण्ड प्रथम खण्ड १०–००, द्वितीय खण्ड ११–००, तृतीय खण्ड	९–००
५६	श्रीरामकृष्णलीलामृत। (जीवनचरित) १–२ भाग। प्र० ५–००, द्वि०	६–००
५७	श्रीरामकृष्णवचनामृत। १–३ भाग। प्र० ९–००, द्वि० ८–००, तृ०	१०–००
५८	सरलराजयोग।	०–६०
५९	साधुनागमहाशय।	३–००
६०	सार्वलौकिक नीति तथा सदाचार।	२–२०
६१	स्वाधीन भारत! जय हो!	२–००
६२	स्वामी विवेकानन्द जी से वार्तालाप।	४–५०
६३	हमारा भारत।	०–७५
६४	हिन्दू-धर्म।	२–२५
६५	हिन्दू-धर्म के पक्ष।	०–७५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीमद्भगवद्गीता

१ **गीता और विज्ञान** । मान्धातासिंह गहमरी ३०-००
२ **गीतादर्पण** । अर्थात् श्रीभगवद्गीता पर श्री रामेश्वरानन्दी अनुभवार्थदीपक भाषा-भाष्य । स्वामी आत्मानन्द मुनि ५-००
३ **गीताप्रवचन : गीताव्याख्यानमाला** । गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी । २-३ भाग २२-००
४ **गीताप्रवचन** । हिन्दी । विनोबाभावे ५-१०
५ **गीता-प्रवेश** । हिन्दी । महेशानन्द गिरि १५-००
६ **गीतारहस्य** । लोकमान्यतिलकप्रणीत । हिन्दी ३२-००, अंग्रेजी ३२-००
७ **गीताविश्वकोश** । सांवलिया बिहारीलाल वर्मा १६-००
८ **चतुर्विंशगीता** । श्रीरामशर्मा आचार्य । हिन्दी अनुवाद सहित । १-२ भाग २०-००
९ **भगवद्गीता** । अन्वय-हिन्दी व्याख्या । सीतारामदास कृत १०-००
१० **भगवद्गीता** । श्रीधरस्वामी कृत-सुबोधिनी टीका सहित २०-००
११ **भगवद्गीता** । अमृतवर्षिणीटीका । अमृत सरियाराम भरणोत । १-४ भाग ६५-३५
१२ **भगवद्गीता** । ज्ञानेश्वरी-हिन्दी १०-००
१३ **भगवद्गीता** । आनन्दगिर-शांकरभाष्यव्याख्याद्वयोपेता ११-००
१४ **भगवद्गीता** । मधुसूदनी संस्कृत व्याख्या, हिन्दी अनुवाद सहित । अनु० हरिहरकृपालु । १-२ भाग ५०-००
१५ **भगवद्गीता** । शांकरभाष्यानुसारि भाषानुवाद सहित । अनन्तानन्दसरस्वती २-२५
१६ **भगवद्गीता** । सानुवाद शंकरानन्दी व्याख्या सहित २०-००
१७ **भगवद्गीता-रामानुजभाष्य** । तात्पर्यचन्द्रिका टीका सहित ३५-००
१८ **भगवद्गीता-शांकरभाष्यार्थप्रकाशः** । रामानुज १५-००
१९ **भगवद्गीता** । डॉ० सर्वेपल्ली राधाकृष्णन् । अनुवादक—विराज २५-००
२० **भगवद्गीता** । (गीतामृतमञ्जूषा) स्वामीभगवतानन्दसरस्वती । १-१८ भाग १००-००

उपनिषद्-ग्रन्थाः

१ **अष्टाविंशत्युपनिषद्** । मूलमात्र ४-००
२ **अष्टोत्तरशतोपनिषद्** । हिन्दीटीकासहित । श्रीरामशर्माआचार्य । १-३ भाग ३०-००
३ **ईशादिद्वादशोपनिषद्** । स्वा० विद्यानन्दगिरि कृत विद्यानन्दी मिताक्षरा हिन्दी टीका १२-००
४ **ईशावास्य प्रवचनसुधा** । स्वा० विद्यानन्दगिरि ४-००
५ **ईशावास्योपनिषद्** । शांकरभाष्य-आनन्दगिरी टीका १-९०
६ **ईशावास्योपनिषद्** । शांकरभाष्यसमन्विता । भाषार्थदीपिका हिन्दी व्याख्या २-५०
७ **ईशावास्योपनिषद्** । शा० भा०-आ० गिरि-हिन्दीटीका (स्वामी काशिकानन्द) ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८ **उपनिषद्** । रङ्गरामानुजभाष्य । प्रथमभाग (केन-कठ-प्रश्न-मुण्डक-माण्डूक्य एवं श्वेताश्वेतरोपनिषद्) २०-००

९ **उपनिषद्** । रङ्गरामानुजभाष्य । द्वितीयभाग (तैत्तिरीय-ऐतरेय-छान्दोग्योपनिषद्) २५-००

१० **उपनिषद दर्शन का रचनात्मक सर्वेक्षण** । रामचन्द्र द० रानाडे १०-००

११ **उपनिषदां-समुच्चय** । शङ्करानन्द नारायण विरचित 'दीपिका' संवलित १२-५०

१२ **उपनिषदों की भूमिका** । डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् १०-००

१३ **एकादशोपनिषद्** । अमरदासकृतउपनिषन्मणिप्रभा-मिताक्षरा-दीपिका सहित १५-००

१४ **ऐतरेयोपनिषद्** । शांकरभाष्य-आनन्दगिरि व्याख्या युक्त २-५०

१५ **(हिन्दी) कठोपनिषद्** । शाङ्करभाष्य 'प्रकाश' हिन्दीटीका सहित । व्याख्याकार—सुरेन्द्रदेव शास्त्री । [वि. सं. १४७]
[हिन्दी व्याख्या में एक-एक पद पर विशद व्याख्यान प्रस्तुत करके पश्चात् भावार्थ अलग से सुस्पष्ट किया गया है । भाषा एवं शैली अत्यन्तसुबोध है । पाण्डित्यपूर्ण भूमिका तथा 'नोट्स' आदि परीक्षार्थी के लिये बहुत उपयोगी है ।] ५-००

१६ **कठोपनिषद्** । संस्कृत-हिन्दी टीका । महेशानन्द गिरि । प्रथम भाग २०-००

१७ **काठकोपनिषद्** । शाङ्करभाष्य-आनन्दगिरि व्याख्या सहित ८-००

१८ **केनोपनिषद्** । शाङ्करभाष्य-आनन्दगिरि व्याख्या सहित १-९०

१९ **कौषितकीब्राह्मणोपनिषद्** । शङ्करानन्द कृत दीपिका टीका । कावेल कृत आंग्लानुवाद सहित ३५-००

२० **छान्दोग्योपनिषद्** । शांकरभाष्य-आनन्दगिरि व्याख्या सहित १६-००

२१ **तैत्तिरीयोपनिषद्** । शांकरभाष्य-आनन्दगिरिव्याख्यायुत ८-००

२२ **तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यवार्तिकम्** । सुरेश्वराचार्य कृत आनन्दगिरि व्याख्या १४-००

२३ **दशोपनिषद्** । मूलमात्र ३-७५

२४ **दशोपनिषद्** । ब्रह्मयोगि कृत व्याख्या सहित । १-२ भाग ३०-००

२५ **न्यायकल्पलतिका** । बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यवार्तिक व्याख्या । आनन्दपूर्णमुनीन्द्र विरचित । प्रथम भाग १७-००, द्वितीय भाग ५४-००

२६ **प्रश्नोपनिषद्** । शांकरभाष्य-आनन्दगिरि १-९०

२७ **बृहदारण्यकोपनिषद्** । शांकरभाष्य-माधवानन्दकृत आंग्लानुवाद २५-००

२८ **बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यवार्तिकम्** । सुरेश्वराचार्य कृत आनन्दगिरि व्याख्या ६-००

२९ **माण्डूक्योपनिषद्** । शांकरभाष्य-आनन्दगिरि टीका सहित ५-००

३० **माण्डूक्योपनिषद्** । गौड़पादकारिका । शांकरभाष्य—आनन्दगिरि-विधानन्दी मिताक्षरा । हिन्दी अनुवाद सहित १२-००

३१ **मुण्डकोपनिषद्** । शांकरभाष्य-आनन्दगिरि १-२५

३२ **योगोपनिषद्** । सम्पादक—पं० अ० महादेव शास्त्री ३०-००

३३ **शाक्तोपनिषद्** । ब्रह्मयोगि कृत व्याख्या सहित (८ उपनिषद्) ८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३४ शैवोपनिषद् । ब्रह्मयोगि कृत व्याख्या सहित (१५ उपनिषद्) १२-००
३५ श्वेताश्वेतरोपनिषद् । शांकरभाष्य-शंकरानन्दीविवरण सहित ६-२५
३६ श्वेताश्वेतरोपनिषद् । महेशानन्दगिरि २०-००
३७ सन्यासोपनिषद् । ब्रह्मयोगिकृत व्याख्या सहित (१७ उपनिषद्) १२-००
३८ सामान्यवेदान्तोपनिषद् । ब्रह्मयोगि कृत व्याख्या सहित (२४ उपनिषद्) २०-००

वैदिक-ग्रन्थाः

१ अथर्ववेदः । (शौनकीयः) पदपाठ-सायणभाष्य-पाठभेद-टिप्पणी सहित । १-४ भाग (५ जिल्द में) ३००-००
२ अथर्ववेदः । वेदार्थबोधिनी हिन्दी व्याख्या । व्याख्याकार-डॉ० रामकृष्ण शास्त्री सम्पा० विश्वनाथ शास्त्री । प्रथमखण्ड १-१० काण्ड ४०-००
३ अथर्ववेद एवं गोपथब्राह्मण । एम० ब्लूमफील्ड का हिन्दी रूपान्तर । अनुवादक—डॉ० सूर्यकान्त शास्त्री ३५-००
४ अथर्ववेद-परिशिष्ट । जार्ज मेलवील बोलिङ्ग जूलियस वौन नेजेलिन सम्पादित । डॉ० रामकुमार राय कृत हिन्दी नोट्स ७५-००
५ अथर्ववेदभाष्यम् । सायणभाष्यमनुसृत्यसनातनभाष्योपेतः । पं० माधवाचार्य । १-२ खण्ड । प्रथम २५-००, द्वितीय ४०-००, तृतीय भाग ३६-००
६ अथर्ववेद में सांस्कृतिक तत्त्व । डॉ० आर० सी० मिश्र १०-००
७ अथर्ववेदसंहिता । मूलमात्र । सजिल्द २०-००
८ अथर्ववेदसंहिता । जयदेवविद्यालङ्कार कृत भाषाभाष्य सहित । १-४ भाग ४८-००
९ अथर्ववेदसंहिता । सातवलेकर कृत सुबोध हिन्दीभाष्य सहित । १-५ भाग १००-००
१० अथर्ववेदसंहिता । सायणभाष्यावलम्बी सरल हिन्दी भावार्थ सहित । श्रीरामशर्मा आचार्य । १-२ भाग १८-००
११ अथर्ववेदे शान्तिपुष्टिकर्माणि । डॉ० माया मालवीया ८-००
१२ आपस्तम्बशुल्वसूत्रम् । संस्कृत टीका एवं आंग्लानुवाद । अनुवादक—डॉ० सत्यप्रकाश ६०-००
१३ आपस्तम्बश्रौतसूत्रम् । धूर्तस्वामिभाष्योपेतं रामाग्निचिद्वृत्तिसहितम् । (१-३ सम्पुटानि १-१० प्रश्नाः) ७८-००
१४ आश्वलायनसूत्रप्रयोगदीपिका । भट्टमन्जनाचार्य विरचित १२-००
१५ आर्षेयब्राह्मण । सायणभाष्य सहित । डॉ० वी० आर० शर्मा १८-५०
१६ उहगानम्-उह्यगानम् । पं० ए० एम० रामनाथदीक्षित ६०-००
१७ ऋक्तंत्रम् : सामप्रातिशाख्यम् । 'ऋकतन्त्रविवृत्ति' तथा सामवेद-सर्वानुक्रमणि टीका सहित । डॉ० सूर्यकान्त ४०-००
१८ ऋक्सूक्तवैजयन्ती । १०८ सूक्तों का हिन्दी अनुवाद । सम्पादक—वेलणकर, पराड़कर, जोशी २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१९ **ऋक्सूक्तसंग्रहः** । सायणभाष्यानुसारी-पिटर्सन की हिन्दी व संस्कृत व्याख्या १५–००

२० **ऋग्वेदप्रातिशाख्यम्** । उव्वट-महीधरभाष्य । डॉ० एस० भट्टाचार्य सम्पा० ७२–००

२१ **ऋग्वेदप्रातिशाख्य : एक परिशीलन** । डॉ० वी० के० वर्मा ४५–००

२२ **ऋग्वेदभाषाभाष्य** । युधिष्ठिरमीमांसककृत (ऋषिदयानन्दभाष्य का) अनुवाद सहित । १–३ भाग (म० १, सूक्त १–१०५ पर्यन्त) ८०–००

२३ **(हिन्दी) ऋग्वेदभाष्यभूमिका** । सायणाचार्य विरचित । हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार–आचार्य जगन्नाथ पाठक
[परीक्षा की दृष्टि से सारे तथ्यों को पूर्णरूप से हिन्दी में विवेचन करके समझाया गया है और साथ ही सायणाचार्य के जीवन तथा साहित्य पर भी विचार किया गया है ।]
[वि. स. ४५] ५–००

२४ **ऋग्वेदसंहिता** । मूलमात्र २०–००

२५ **ऋग्वेदसंहिता** । (पदपाठ सहित) डॉ० मैक्समूलर सम्पादित । १–२ भाग ६०–००

२६ **ऋग्वेदसंहिता** । हिन्दी भाषार्थ सहित । श्रीरामशर्मा आचार्य । १–४ भाग ३६–००

२७ **ऋग्वेदसंहिता** । जयदेव विद्यालङ्कार कृत भाषाभाष्य सहित । १–६ भाग ९६–००

२८ **ऋग्वेदसंहिता** । सायणभाष्य सहित । १–५ भाग । पूना संस्करण ३९८–००

२९ **ऋग्वेदसंहिता** । (प्रथम अध्याय, सूक्त १–१९) सस्वर, संहितापाठ, पदपाठ, सायणभाष्य तथा स्कन्दभाष्य के महत्त्वपूर्ण अंश, हिन्दी व्याख्या, हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित । सम्पादक—प्रो० उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' [वि. सं. १६३] २०–००

३० **ऋग्वेद सुबोधभाष्य** । सातवलेकर कृत । १–७ मण्डल १–४ भाग ११०–००

३१ **ऐतरेयारण्यकम्** । सायणभाष्य सहित ६–९०

३२ **ऐतरेयब्राह्मणम्** । सायणभाष्यसमेतम् । १–२ भाग १९–०५

३३ **ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्ट** । (मूल संस्कृत उद्धरण) प्रो० जे० मूइर कृत । सम्पादक एवं हिन्दी अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय । १–५ भाग सम्पूर्ण २००–००

इस संस्करण की विशेषता—

भाग १ : हिन्दू जातियों की उत्पत्ति-सम्बन्धी पौराणिक विवरणों से सम्बद्ध मूल संस्कृत उद्धरणों का संकलन, उनका हिन्दी अनुवाद तथा यह विवेचन कि वैदिक काल में भी जातिवाद का अस्तित्व था अथवा नहीं ।

भाग २ : इस तथ्य की विवेचना करते हुये कि हिन्दू जाति के लोग हिमालय के उस पार से आये तथा भारोपीय जाति की पश्चिमी शाखा से सम्बद्ध थे, अथवा नहीं, इस विषय पर मूल संस्कृत उद्धरणों का संग्रह तथा उनका हिन्दी अनुवाद ।

भाग : ३ ऋग्वेद सूक्तों के संग्रह के ठीक पूर्व अथवा उसके पश्चात् के भारतीय कृतिकारों के वेदों की उत्पत्ति, विभाजन, प्रेरणा-स्रोत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और अधिकारिकता को व्यक्त करने वाले मूल संस्कृत उद्धरणों का संग्रह तथा हिन्दी अनुवाद।

भाग ४ : वैदिक सूक्तों, ब्राह्मण-ग्रन्थों तथा इतिहास-पुराण में मिलने वाले ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और अम्बिका आदि देवी-देवताओं से सम्बद्ध मूल संस्कृत उद्धरणों का हिन्दी अनुवाद सहित संग्रह तथा यह विवेचन कि देवी-देवताओं सम्बन्धी आरम्भिक धारणायें बाद की कृतियों के किस प्रकार उत्तरोत्तर परिवर्तित होती गईं।

भाग ५ : वैदिक कालीन भारतीयों के सृष्टिरचना, पुराकथाशास्त्रीय और धार्मिक विचारों तथा जीवन और रीति-रिवाजों को व्यक्त करने वाले सानुवाद मूल संस्कृत उद्धरणों का संग्रह तथा उनकी विवेचना। [वि. रा. ६७]

३४ **कपिष्ठलकठसंहिता**। (कृष्णयजुर्वेदीय) डॉ० रघुवीर ३६–००

३५ **कात्यायनश्रौतसूत्रम्**। कर्क-महीधरभाष्यसहित। डॉ० ए० वेबर सम्पादित ५०–००

३६ **कौषितकीब्राह्मणपर्यालोचनम् अथवा कौषितकीब्राह्मणआचारविचारः**। डॉ० मङ्गलदेवशास्त्री सम्पादित [वि. सं. ७०] ३–००

३७ **गोपथब्राह्मणम्**। क्षेमकरण त्रिवेदी कृत भाष्य सहित। सम्पा० श्रीप्रज्ञादेवी ४०–००

३८ **जैमिनीय-आर्षेय-उपनिषद्-ब्राह्मण**। सम्पादक—डॉ० वी० आर० शर्मा २४–००

३९ **जैमिनीयं सामगानम्**। भगवज्जैमिनीप्रणीतम्। सम्पादक—विभूतिभूषण भट्टाचार्य ४५–५०

४० **तैत्तिरीयसंहिता**। कृष्णयजुर्वेदीय। सायणभाष्य-पदपाठ सहित। १–७ भाग ६२–६०

४१ **देवताध्याय-संहितोपनिषद्-वंश-ब्राह्मणानि**। सव्याख्यानि। डॉ० बे० रामचन्द्रशर्मणा सम्पादितानि १२–००

४२ **दैवतसंहिता**। (चारों वेदों का देवतानुसार मन्त्र-संग्रह) सातवलेकर सम्पा० ३०–००

४३ **दैवम्**। देवकृत। शुकमुनि विरचित पुरुषकाराख्यवार्तिकोपेतम्। सटिप्पण ८–००

४४ **निरुक्तम्**। श्री छज्जुराम शास्त्री कृत संस्कृत टीका, श्री भागीरथ शास्त्री कृत हिन्दी अनुवाद सहित ४०–००

४५ **निरुक्तम्**। (नैघण्टु-नैगमकाण्ड की हिन्दी व्याख्या) आचार्य विश्वेश्वर २०–००

४६ **(हिन्दी)। निरुक्त**। १–७ अध्याय। विवेचनात्मक बृहत् हिन्दी व्याख्या, भूमिकादि सहित। व्याख्याकार—प्रो० उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि' [इस परीक्षोपयोगी संस्करण का अनुवाद शब्दशः किया गया है तथा वैदिक मन्त्रों के अन्वय और शब्दार्थ के साथ अर्थ दिये गये हैं। यथास्थल अनुसन्धानात्मक टिप्पणियाँ और सर्वांगपूर्ण भूमिका दी गयी है।] [वि. सं. ५७] १६–००

४७ **निदानसूत्रम्**। के० एन० भटनागर ४०–००, ६०–००

४८ **न्यू वैदिक सिलेक्शन**। अन्वय-सायणभाष्य-शब्दा०-आंग्लानुवाद, नोट्स सहित। तैलंग तथा चौबे। प्रथम भाग १८–०० द्वितीय भाग १८–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४९ **पञ्चविधिसूत्रम् तथा मात्रालक्षणम्** । सटीक । सं० डॉ० वी० आर० शर्मा ७–००
५० **पञ्चसूक्तम्** । 'सिद्धान्तदीपिका' संस्कृत-हिन्दी टीका २–००
५१ **पुष्पसूत्रम्** । (सामप्रातिशाख्यं) पुष्पर्षिप्रणीत । श्रीमदजातशत्रुकृतभाष्य २०–००
५२ **प्रतिहारसूत्रम्** । (सामवेदस्यश्रौतसूत्रान्तर्गत) श्री वरदराजकृत दशतय्या समन्वित । सम्पा० डॉ० वी० आर० शर्मा २५–००
५३ **प्रातिशाख्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन** । डॉ० इन्द्रा २५–००
५४ **बौधायनशुल्वसूत्रम्** । डॉ० सत्यप्रकाश तथा पं० रामस्वरूप शर्मा ६०–००
५५ **भारद्वाजशिक्षा** । सव्याख्या ५–००
५६ **मन्त्रसंहिता** । शुक्लयजुर्वेदीय ५२३ मन्त्रों का संग्रह १०–००
५७ **मूल संस्कृत उद्धरण** । (ओरिजिनल संस्कृत टेक्स्ट्स) लेखक—प्रो० जे० मूइर । सम्पा० एवं हिन्दी अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय । १–५ भाग २००–००
५८ **यजुर्वेदरुद्राष्टाध्यायी** । हिन्दी टीका सहित ६–००
५९ **यजुर्वेदसंहिता** । मूलमात्र । सङ्कलयिता—महर्षि दैवरात । सम्पा० डॉ० सिद्धेश्वरभट्टाचार्य ५५–००
६० **रजोवाद** । मधुसूदन ओझा विरचित ६–००
६१ **रुद्र** । नमक-चमकात्मक अध्याय ३–००
६२ **रुद्राध्यायः** । सायण-भट्टभास्करभाष्य सहित १२–००
६३ **रुद्राध्यायः** । विष्णुसूरिविरचितभाष्यसंवलित २–५०
६४ **लाट्यायनश्रौतसूत्रम्** । अग्निष्टोमान्तम् । सटीक ७–००
६५ **वाराहश्रौतसूत्रम्** । डॉ० रघुवीर सम्पादित २०–००, ३२–००
६६ **वेदत्रयी परिचय** । स्व० पं० सत्यव्रतसामश्रयिभट्टाचार्य ५–००
६७ **वेददिग्दर्शन** । माधवाचार्य शास्त्री ८–००
६८ **वेदसंचयनम्** । हिन्दी टीका सहित । डॉ० यदुनन्दन मिश्र [सायणभाष्य सहित सटिप्पण हिन्दी व्याख्या विभूषित, गोरखपुर विश्वविद्यालय के बी० ए० परीक्षा के लिये निर्धारित । ५० पृष्ठों की समीक्षात्मक भूमिका छात्रों के लिये पर्याप्त उपयोगी है] [वि. सं. १५७] ८–००
६९ **वेदार्थकल्पलता** । महर्षि दैवरात १२५–००
७० **वेदार्थचन्द्रिका** । डॉ० मुन्शीराम शर्मा । [वि. रा. ११२] [प्रस्तुत ग्रंथ के २५ भावपूर्ण निबन्धों में कुछ प्रमुख प्रकाशदाता वेदमन्त्रों की यथार्थ हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है । लेखक वेद के मर्मज्ञ हैं । इसके भाव, भाषा, शैली आदि देखकर आप मुग्ध हो जायेंगे । एक बार अवश्य पढ़ें ।] ६–५०
७१ **वेदार्थप्रवेशिका** । डॉ० सम्पूर्णानन्द २–५०
७२ **वेदेऽश्विनौ** । डॉ० तृ० कृ० कृष्णस्वामी (अय्यर) शर्मा २०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७३ **वैदिक आख्यान** । डॉ० गङ्गासागर राय
[इस पुस्तक में जीवन को सुगठित एवं समुन्नत बनाने वाले प्रेरणाप्रद वैदिक आख्यानों का गुम्फन इतनी सरस भाषा एवं शैली में किया गया है कि एक ही बैठक में बिना पुस्तक समाप्त किये जी नहीं मानता ।] [वि. रा. ६६] २–००

७४ **वैदिक इण्डेक्स** । (वैदिक-कोष) मैकडोनेल और कीथ । (हिन्दी रूपान्तर) अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय । १–२ भाग सम्पूर्ण
[इसमें सन्दर्भ संकेत संख्यायें तथा फुटनोट में उनकी व्यवस्था का क्रम वही किया गया है जैसा कि मूल ग्रन्थ में है । इस अवस्था के कारण जो निःसन्देह अत्यन्त कठिन और कहीं-कहीं असम्भव सा कार्य था, अनुवाद की उपयोगिता और विषय-व्यवस्था की प्रामाणिकता अत्यन्त बढ़ गई है । [वि. रा. ४६] ६०–००

७५ **वैदिक निबन्धावली** । डॉ० मुन्शीराम शर्मा
[इस निबन्ध संग्रह में वेदों की एक स्वल्प झाँकी प्रस्तुत करने वाले २५ निबन्ध हैं । ये निबन्ध उच्च कक्षा के विद्यार्थियों, शोध-छात्रों एवं जनसाधारण वेदप्रेमियों के लिए अत्यन्त लाभप्रद है]· [वि. रा. ६१] ५–००

७६ **वैदिकपदानुक्रमकोषः** । विश्वबन्धु सम्पादित । १–१६ भाग १२००–००

७७ **वैदिक माइथोलॉजी** । (वैदिक पुराकथाशास्त्र) प्रो० ए० ए० मैकडोनल । (हिन्दी रूपान्तर) अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय । [वि. रा. ४०]
[यह ग्रन्थ वेद की आत्मा का भासमान प्रदीप है । वैदिक देवताओं का रहस्य जानना यदि अभीष्ट हो तो इस ग्रन्थरत्न को अवश्य पढ़कर लाभ उठाइये ।] २०–००

७८ **वैदिक युग के भारतीय आभूषण** । डॉ० रायगोविन्दचन्द
[वैदिक युग में मनुष्य कौन-कौन से आभूषण किस प्रकार धारण करता था, किस आभूषण के कितने भेदापभेद या प्रकार थे, आदि का प्रामाणिक तथा सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत ग्रन्थ का विषय है ।] [वि. रा. ८४] २०–००

७९ **वैदिक योगसूत्र** । श्री हरिशंकर जोशी
[प्रस्तुत ग्रन्थ में वेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद-पुराणादि में विकीर्ण तथा व्याप्त योगदर्शन का विवेचन किया गया है । सोमयोग, अग्नियोग आदि का विवेचन तो इस ग्रन्थ के अतिरिक्त कहीं मिलेगा ही नहीं । अकाट्य तर्कों तथा युक्तियों के साथ आकर-ग्रन्थों के वचन भी प्रमाणत्वेन उपन्यस्त हैं ।] [चौ. रा. ३] २५–००

८० **वैदिक वाङ्मय का इतिहास** । डॉ० रमाकान्त शास्त्री [वि. रा. १३७] ५–००

८१ **वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति** । गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी ११–५०

८२ **वैदिक विश्वदर्शन** । हरिशंकर जोशी । १–४ भाग ४९–००

८३ **(हिन्दी) वैदिक व्याकरण** । श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय
[बी० ए० तथा एम० ए० परीक्षाओं के पाठ्यक्रमानुसार नवनिर्मित इस पुस्तक में वेद का सुबोध व्याकरण, स्वरचिह्न, पद-पाठ आदि के विषय में समाधान तथा क्रियारूपों का कोश भी प्रकाशित किया गया है] [वि. रा. ३७] ४–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८४ **वैदिक साहित्य और संस्कृति** । बलदेव उपाध्याय २०-००

८५ **वैदिक साहित्य का इतिहास** । (प्रश्नोत्तर) राजकिशोर सिंह ४-००

८६ **वैदिक साहित्य की रूपरेखा** । प्रो० हंसराज अग्रवाल
[इस पुस्तक में वैदिक साहित्य के आदि से अन्त तक की प्रत्येक महत्त्वपूर्ण अङ्ग की जानकारी संक्षेप से करा दी गई है। इसके अध्ययन से छात्रों को सर्वांगपूर्ण वैदिक साहित्य की महत्त्वपूर्ण बातों का आवश्यक ज्ञान हो जायगा ।]
[वि. रा. ८७] २-००

८७ **वैदिकसिद्धान्तमीमांसा** । युधिष्ठिर मीमांसक । प्रथम भाग ३०-००

८८ **वैदिकसूक्तपञ्चकम्** । 'प्रकाश' हिन्दीव्याख्योपेतम् । सम्पा० एवं अनुवादक— आचार्य श्री मधुसूदन प्रसाद मिश्र । (१. वाचस्पतिसूक्तं, २. कृषिसूक्तं, ३. सहृदयतासूक्तं, ४. शुद्धिसूक्तं, ५. निर्भयतासूक्तम्) [वि. सं. ८९] ०-७५

८९ **वैदिक सूक्तमञ्जरी** । विस्तृत हिन्दी व्याख्यान, अंग्रेजी अनुवाद सहित । डॉ० रामकृष्णशास्त्री अनुदित
[विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रम के अनुसार प्रस्तुत पुस्तक में ऋग्वेद तथा शुक्ल-यजुर्वेद के सूक्तों का संकलन है ।] [वि. सं. १०२] २-५०

९० **व्यासशिक्षा** । श्रीसूर्यनारायणसूरावधानिविरचित । सम्पा० पट्टाभिरामशास्त्री १८-००

९१ **शतपथब्राह्मणम्** । रत्नदीपिका हिन्दी टीका सहित । प्रथम भाग १००-००

९२ **शतपथब्राह्मणम्** । सायणभाष्य सहित । १–५ भाग सम्पूर्ण ७५०-००

९३ **शतपथब्राह्मणम्** । हिन्दी अनुवाद सहित । सम्पा० डॉ० चमनलाल गौतम ११-००

९४ **शांख्यायनारण्यकम्** । ऋग्वेदान्तर्गत १-२५

९५ **शुक्लयजुःप्रातिशाख्यम्** । आंग्लानुवाद सहित । श्रीमती इन्दु रस्तोगी १५-००

९६ **शुक्लयजुर्वेद-प्रातिशाख्यम् अथवा वाजसनेयि-प्रातिशाख्यम्** । भाष्यद्वयसहित । टीकाकार—डॉ० वीरेन्द्रकुमार वर्मा ६५-००

९७ **शुक्लयजुर्वेदीयरुद्राष्टाध्यायी** । मूलमात्र १-२५

९८ **शुक्लयजुर्वेदवाजसनेयिसंहिता** । (माध्यन्दिनकाण्वशाखा) महीधर भाष्य सहित । डॉ० ए० वेबर सम्पादित ५०-००

९९ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । सम्पा० श्री दौलतरामगौड़ वेदाचार्य
[प्रस्तुत संस्करण सम्पूर्ण शुक्लयजुर्वेद का ३२ पेजी छोटा गुटका संस्करण है । वेदमन्त्र सभी सस्वर दिए गए हैं। प्रसिद्ध कर्मकाण्डी वैदिक विद्वान् ने आवश्यक स्थलों पर 'प्रकाश' नामक टिप्पणी भी दी है ।] [वि. सं. १२९] ८-००

१०० **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । मूलमात्र । पत्रात्मक । बम्बई—१५-०० काशी २०-००

१०१ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । सरल हिन्दी भावार्थ सहित । श्रीरामशर्मा आचार्य ९-००

१०२ **शुक्लयजुर्वेदसंहिता** । जयदेवविद्यालङ्कार कृत भाषाभाष्य सहित १–२ भाग २४-००

१०३ **शुल्वसूत्रम्** । श्रीकर्कभाष्य-महीधरवृत्ति सहित २-००

१०४ **षडविंशब्राह्मण** । सायणभाष्य सहित । डॉ० बी० आर० वर्मा सम्पादित २०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०५ **सन्ध्याभाष्यम्** । श्यामनारायण चतुर्वेदी १०–००
१०६ **सत्याषाढश्रौतसूत्रम्** । गोपीनाथभट्टविरचितवैजयन्त्या-ज्योत्स्ना व्याख्यया च समेतम् । १–१० भाग ५३–३५
१०७ **सांख्यायनगृह्यसंग्रहः** । पं० वासुदेवकृत । कौषीतकिगृहसूत्राणि ६–००
१०८ **सामतन्त्रम्** । (सामवेदीयं प्रातिशाख्यम्) । ए० एम० रामनाथ दीक्षित २०–००
१०९ **सामविधानब्राह्मणम्** । वे० रामचन्द्र शर्मा सम्पादित १५–००
११० **सामवेदसंहिता** । मूलमात्र ५–००
१११ **सामवेदसंहिता** । हिन्दी भावार्थ सहित । श्रीरामशर्मा आचार्य ८–००
११२ **सामवेदसंहिता** । जयदेव विद्यालङ्कार कृत भाषाभाष्य सहित २०–००
११३ **सामवेद-रुद्रजपविधिः** । सचित्र । संहिता-पदपाठ, हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित । सम्पा० आचार्य ऋषिशंकर अग्निहोत्री ४–००
११४ **सामवेदार्षेयदीपः** । भट्टभास्कराध्वरीन्द्रप्रणीत । डॉ० वे० रामचन्द्र शर्मा १३–५०
११५ **सामवेदीयसुबोधिनीपद्धतिः** । श्रीशुक्लविश्रामात्मज-श्रीशिवरामविरचित २०–००
११६ **हरिश्चन्द्रोपाख्यानम्** । सायणभाष्य सहित । 'प्रकाश' हिन्दी टीका । व्याख्याकार—श्री उमाशंकरशर्मा 'ऋषि' [वि. सं. ९९] ३–००
११७ **हिम्स फ्राम दि ऋग्वेद** । पिटर्सन । फर्स्ट सीरीज २०–००, सेकेण्ड सीरीज १५–००

कर्मकाण्ड-ग्रन्थाः

१ **अन्त्यकर्मदीपिकः** । म० म० नित्यानन्दपन्तपर्वतीयविरचितः ८–००
२ **आपस्तम्बगृह्यसूत्रम्** । श्रीहरदत्तप्रणीत अनाकुला, श्रीसुदर्शनाचार्य प्रणीत तात्पर्यदर्शन संस्कृत व्याख्या तथा सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या युक्त ३५–००
३ **उपनयनपद्धतिः** । वायुनन्दन मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित ३–००
४ **और्ध्वदेहिककर्मपद्धतिः** । अमृतवर्षिणी टिप्पणी सहित ६–००
५ **कर्मठगुरुः** । मुकुन्दवल्लभ ९–००
६ **कर्मकाण्ड-प्रदीपः** । दशकर्मादिपद्धति । जनार्दनशास्त्री पाण्डेय १५–००
७ **कातियेष्टिदीपकः** । (दर्शपौर्णमासपद्धतिः) महामहोपाध्याय पं० श्रीनित्यानन्दपन्तपर्वतीयविरचित ६–००
८ **कुण्डमण्डपसिद्धिः** । हिन्दी टीका सहित १–८०
९ **कूपोत्सर्गपद्धतिः** । [मि. २१] ०–५०
१० **कृतितत्त्वसंग्रहः** । रचयिता—दैवज्ञ पं० तूफानी शर्मा १२–००
११ **गायत्रीपुरश्चरणपद्धतिः** । शंकराचार्य विरचित ५–००
१२ **गायत्रीपूजापद्धतिः** । श्री विभाकराचार्य संगृहीत १–००
१३ **गायत्रीमहाविज्ञान** । १–३ भाग १८–००
१४ **गायत्रीयज्ञविधान** । १–२ भाग ६–००
१५ **ग्रहशान्तिः ग्रहप्रयोगः** । दौलतरामगौड़ १६–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१६	**गृह्यसूत्रसंग्रहः** । हिन्दी टीका सहित	१०-००
१७	**गृहोत्सर्गपद्धतिः** । [मि. २२]	०-५०
१८	**गोभिलगृह्यसूत्रम्** । म० म० श्री मुकुन्दशर्मा कृत मृदुलाव्याख्या	१०-००
१९	**चूडाकरणपद्धतिः** । विद्याधरकृतविस्तृतटिप्पणीपरिशिष्टसहित	१-००
२०	**दीक्षाप्रकाशिका** । विष्णुभट्टप्रणीत	२-००
२१	**दुर्गापूजा** । दौलतरामगौड़विरचित	८-००
२२	**दुर्गापूजा-श्यामापूजापद्धतिः** । (शारदीय) [मि. २५]	२-००
२३	**द्राह्यायणगृहसूत्रवृत्तिः** । रुद्रस्कन्दप्रणीत हिन्दी टीका सहित	८-००
२४	**नारायणबलिप्रयोगः** । 'विष्णुप्रिया' हिन्दी व्याख्या सहित	१-२०
२५	**नित्यनैमित्तिककर्मसमुच्चयः** । शुक्लयजुर्वेदीय	१०-००
२६	**पञ्चमङ्गलम्** ।	०-७५
२७	**पञ्चाङ्गपद्धतिः** । पं० वायुनन्दन मिश्र	१-५०
२८	**पितृकर्मनिर्णयः** । (संग्रहनिबन्ध) श्री त्रिलोकनाथ मिश्र कृत [मि. २६]	५-००
२९	**पितृभक्तिः** । म० म० दत्तोपाध्याय विरचित	१०-००
३०	**प्रेतमञ्जरी** । हिन्दी टीका सहित ।	८-००
३१	**बृहद्ब्रह्मनित्यकर्मसमुच्चयः** । संग्रहमखषोडशसंस्काराद्यनेकविषयसहितः । शास्त्रीदुर्गाशङ्कर कृत टिप्पणी सहित	१५-००
३२	**महालक्ष्मीपूजापद्धतिः** । सर्वदेवपूजाविधान-पूजनमीमांसा । हिन्दीटीकासहित	२-५०
३३	**मूलशान्तिपद्धतिः** । हिन्दी टीका सहित	२-५०
३४	**यज्ञतत्त्व-हवनविधिसहित** ।	२-००
३५	**यज्ञमीमांसा** । पं० वेणीरामशर्मा गौड़	२५-००
३६	**यजुर्वेदीयसन्ध्याप्रयोगः** । पं० वायुनन्दन मिश्र	०-४०
३७	**रामार्चापद्धतिः** । (श्रीशिवसंहितोक्त) पं० गुलाब झा सम्पादित	०-६०
३८	**लाट्यायनश्रौतसूत्रम्** । अग्निष्टोमान्त । मुकुन्दझाबख्शी कृत व्याख्या सहित	७-००
३९	**वर्षकृत्यदीपकः** । (कालनिर्णयव्रतोद्यान सहित) महामहोपाध्याय श्रीनित्यानन्दपन्तपर्वतीयकृत । द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण	१५-००
४०	**वाशिष्ठीहवनपद्धतिः** । हिन्दी टीका सहित । पं० श्री विश्वनाथ शास्त्री	२-००
४१	**वास्तुपूजापद्धतिः** । गृहे-गृध्रादिपतनशान्तिपद्धतिः-गृहप्रवेशपद्धतिश्च	२-००
४२	**विवाहपद्धतिः** । पं० वायुनन्दनमिश्र प्रणीत हिन्दी टीका सहित	३-००
४३	**विश्वकर्मार्चापद्धतिः** । हिन्दी टीका सहित	१-००
४४	**विष्णुयागपद्धतिः** । नवग्रहमखसहित । पं० वायुनन्दमिश्र	८-००
४५	**शान्तिकल्पद्रुमः** । वास्तुशान्ति सहित	२-००
४६	**शिलान्यासपद्धतिः** । देहलीन्यासपद्धति । पं० वायुनन्दन मिश्र कृत	२-००
४७	**श्राद्धकल्पः** । दत्तोपाध्याय विरचित । अशोक चटर्जी सम्पादित	१९-००
४८	**श्राद्धकल्पलता** । श्रीनन्दपण्डितप्रणीत	२०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४९ **श्राद्धकौमुदी ।** सूतकनिर्णय सहित ३-००

५० **श्राद्धचन्द्रिका ।** भारद्वाजदिवाकरभट्टनिर्मित १०-००

५१ **श्राद्धपद्धतिः ।** (वाजसनेयिनां) म० म० वाचस्पतिमिश्रकृत । [मि. ३१] ४-००

५२ **श्राद्धपारिजात ।** रुद्रदत्त पाठक कृत । हिन्दी टीका सहित १५-००

५३ **श्राद्धप्रयोगदीपिका ।** पं० गोपालशास्त्री नेने कृत संशोधित एवं परिष्कृत २-००

५४ **श्राद्धविवेकः ।** वायुनन्दन प्रणीत २०-००

५५ **श्राद्धविवेकः ।** म० म० रुद्रधर विरचित ५-००

५६ **श्रावणी-उपाकर्मपद्धतिः ।** (यजुर्वेदीय) वायुनन्दन मिश्र प्रणीत ५-००

५७ **श्रौतसूत्रम् ।** कात्यायनप्रणीत । देवयाज्ञिकपद्धति सहित । १-८ खण्ड ५०-००

५८ **श्रौतसूत्रम् ।** सत्याषाढविरचित । १-१० भाग ५३-३५

५९ **षोडशसंस्कारविधि ।** (सनातनी) गंगाप्रसादशास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित ५-७५

६० **संक्षिप्तदीक्षापद्धतिः ।** तुलादानपद्धति सहित ०-४०

६१ **सन्ध्याभाष्यम् ।** श्यामनारायण चतुर्वेदी १०-००

६२ **सन्ध्योपासन ।** सातवलेकर कृत १-५०

६३ **सन्यासपद्धतिः ।** हिन्दी टीका सहित २-५०

६४ **संस्कारगणपतिः ।** श्रीमद्याज्ञिकप्रवरश्रीमद्रामकृष्णप्रणीतः । पारस्कर-
गृह्यसूत्रस्यातिविस्तृतव्याख्यानस्वरूपः ६०-००

६५ **संस्कारदीपकः ।** म० म० श्रीनित्यानन्दपन्तपर्वतीयकृत । प्रथम भाग ८-००
द्वितीय भाग १२-००, तृतीय भाग १२-००, १-३ भाग सम्पूर्ण ३२-००

६६ **संस्कारदीपकः ।** म० म० हर्षनाथ झा रचित । सम्पा० दुर्गाधर झा ७-००

६७ **संस्काररत्नमाला ।** (गोपीनाथभट्टीया) । १-२ खण्ड ८-००

६८ **सर्वदेवप्रतिष्ठामयूखः ।** प्रभुविद्याप्रतिष्ठार्णव २२-००

६९ **सामवेदीयसुबोधिनीपद्धतिः ।** श्रीशुक्लविश्रामात्मज श्रीशिवरामविरचित २०-००

७० **हिन्दू संस्कार ।** (सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन) डॉ० राजबली पाण्डेय [यह ग्रन्थ हिन्दू संस्कृति के अध्ययन की दिशा में महत्त्वपूर्ण देन है । गर्भ में आने के समय से मृत्यु के समय तक और मृत्यूत्तर संस्कारों के माध्यम से उनके परवर्ती लोकोत्तर प्रयाण तक के हिन्दू जीवन को समझने के लिए यह ग्रन्थ कुञ्जी का काम देता है ।] तृतीय संशोधित संस्करण [वि. रा. १२] ३०-००

धर्मशास्त्र-ग्रन्थाः

१ **आङ्गिरसस्मृतिः ।** १२-००

२ **आचारेन्दुः ।** त्र्यम्बकविरचित ७-००

३ **आपस्तम्बगृह्यसूत्रम् ।** श्रीहरदत्तप्रणीत 'अनाकुला', श्री सुदर्शनाचार्य कृत 'तात्पर्यदर्शन' टीका । डॉ० उमेशचन्द्रपाण्डेय कृत हिन्दी टीका सहित ३५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४ **आपस्तम्बधर्मसूत्रम्**। श्रीहरदत्तमिश्रविरचितउज्ज्वलावृत्ति। डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय कृत हिन्दी टीका सहित ३५–००
५ **आशौचनिर्णयः**। म० म० वाचस्पतिमिश्रप्रणीत १–००
६ **कृत्यकल्पतरुः**। लक्ष्मीधर विरचित। १–९ काण्ड (१० जिल्द में) १७०–००
७ **क्यों? (धर्म-दिग्दर्शन)**। माधवाचार्य शास्त्री। १–२ भाग २७–००
८ **गौतमधर्मसूत्राणि**। श्रीहरदत्तमिश्र कृत मिताक्षरावृत्ति तथा डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय कृत हिन्दी अनुवाद सहित १५–००
९ **चतुर्वर्गचिन्तामणि**। हेमाद्रिसूरिविरचित (श्राद्धकाण्ड)। सम्पादक—विश्वनाथ शास्त्री ४५–००
१० **चतुर्विंशतिमतसंग्रहः**। श्रीभट्टोजिदीक्षित १२–००
११ **जयसिंहकल्पद्रुमः**। ३०–००
१२ **जात्युपधिविवेकः**। स्वामीमाधवचैतन्यभारती १२–००
१३ **तिथिनिर्णयः**। भट्टोजिदीक्षितविरचितः, श्रीमन्नागोजिभट्टविरचितश्च ६–००
१४ **तिथिनिर्णयः**। रामचन्द्र झा [मि. ३३] १–२५
१५ **त्रिस्थलीसेतुः**। नारायणभट्टविरचित ६–९०
१६ **दत्तकमीमांसा**। नन्दपण्डितविरचित। सव्याख्या ६–९०
१७ **धर्म: तुलनात्मक दृष्टि में**। डॉ० राधाकृष्णन १०–००
१८ **धर्म और समाज**। डॉ० राधाकृष्णन्। अनुवादक—विराज २०–००
१९ **धर्मकल्पद्रुमः**। स्वामीदयानन्द कृत। १–८ भाग ४६–५०
२० **धर्मकोशः (व्यवहारकाण्ड)**। लक्ष्मणशास्त्री सम्पादित। १–३ भाग १२०–००
२१ **धर्मकोशः (उपनिषत्काण्ड)**। लक्ष्मणशास्त्री सम्पादित। १–४ भाग २२५–००
२२ **धर्मकोशः (संस्कारकाण्ड)**। लक्ष्मणशास्त्री सम्पादित। प्रथम भाग ७०–००
२३ **धर्मकोशः (राजनीतिकाण्ड)**। लक्ष्मणशास्त्री साम्पादित। १–३ भाग २००–००
२४ **धर्मविज्ञान**। स्वामी दयानन्द कृत। हिन्दी। १–३ भाग १३–००
२५ **धर्मशास्त्र का इतिहास**। डॉ० पी० वी० काणे। अनु० अर्जुनचौबे काश्यप १–५ भाग ९२–००
२६ **धर्मशास्त्रीयव्यवस्थासंग्रह**। सुभद्रशर्मा सम्पादित १०–००
२६क **धर्मशास्त्रेण-मलमास-विचारः**। पं० कृष्णमाधव झा ०–५०
२७ **धर्मसिन्धुः**। 'सुधाविवृत्ति' सहित धर्मबोधिनी हिन्दी टीका विभूषित ४०–००
२८ **निर्णयसिन्धुः**। कमलाकरभट्टविरचित। मूलमात्र २०–००
२९ **निर्णयसिन्धुः**। कमलाकरभट्ट। भाषा टीका। दौलतराम गौड़ १२०–००
३० **पारस्करगृह्यसूत्रम्**। हरिहरभाष्य हिन्दी अनुवाद सहित। पं० हरिहर शास्त्री विद्यालङ्कार। १–३ कण्डिका। सम्पूर्ण १७–००
३१ **पाराशरस्मृतिः**। 'सुबोधिनी' हिन्दी टीका सहित ३–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४९ **श्राद्धकौमुदी** । सूतकनिर्णय सहित ३-००

५० **श्राद्धचन्द्रिका** । भारद्वाजदिवाकरभट्टनिर्मित १०-००

५१ **श्राद्धपद्धतिः** । (वाजसनेयिनां) म० म० वाचस्पतिमिश्रकृत । [मि. ३१] ४-००

५२ **श्राद्धपारिजात** । रुद्रदत्त पाठक कृत । हिन्दी टीका सहित १५-००

५३ **श्राद्धप्रयोगदीपिका** । पं० गोपालशास्त्री नेने कृत संशोधित एवं परिष्कृत २-००

५४ **श्राद्धविवेकः** । वायुनन्दन प्रणीत २०-००

५५ **श्राद्धविवेकः** । म० म० रुद्रधर विरचित ५-००

५६ **श्रावणी–उपाकर्मपद्धतिः** । (यजुर्वेदीय) वायुनन्दन मिश्र प्रणीत ५-००

५७ **श्रौतसूत्रम्** । कात्यायनप्रणीत । देवयाज्ञिकपद्धति सहित । १–८ खण्ड ५०-००

५८ **श्रौतसूत्रम्** । सत्याषाढविरचित । १–१० भाग ५३-३५

५९ **षोडशसंस्कारविधि** । (सनातनी) गंगाप्रसादशास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित ५-७५

६० **संक्षिप्तदीक्षापद्धतिः** । तुलादानपद्धति सहित ०-४०

६१ **सन्ध्याभाष्यम्** । श्यामनारायण चतुर्वेदी १०-००

६२ **सन्ध्योपासन** । सातवलेकर कृत १-५०

६३ **सन्यासपद्धतिः** । हिन्दी टीका सहित २-५०

६४ **संस्कारगणपतिः** । श्रीमद्याज्ञिकप्रवरश्रीमद्रामकृष्णप्रणीतः । पारस्कर-गृह्यसूत्रस्यातिविस्तृतव्याख्यानस्वरूपः ६०-००

६५ **संस्कारदीपकः** । म० म० श्रीनित्यानन्दपन्तपर्वतीयकृत । प्रथम भाग ८-००
द्वितीय भाग १२-००, तृतीय भाग १२-००, १–३ भाग सम्पूर्ण ३२-००

६६ **संस्कारदीपकः** । म० म० हर्षनाथ झा रचित । सम्पा० दुर्गाधर झा ७-००

६७ **संस्काररत्नमाला** । (गोपीनाथभट्टीया) । १–२ खण्ड ८-००

६८ **सर्वदेवप्रतिष्ठामयूखः** । प्रभुविद्याप्रतिष्ठार्णव २२-००

६९ **सामवेदीयसुबोधिनीपद्धतिः** । श्रीशुक्लविश्रामात्मज श्रीशिवरामविरचित २०-००

७० **हिन्दू संस्कार** । (सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन) डॉ० राजबली पाण्डेय [यह ग्रन्थ हिन्दू संस्कृति के अध्ययन की दिशा में महत्त्वपूर्ण देन है । गर्भ में आने के समय से मृत्यु के समय तक और मृत्यूत्तर संस्कारों के माध्यम से उनके परवर्ती लोकोत्तर प्रयाण तक के हिन्दू जीवन को समझने के लिए यह ग्रन्थ कुञ्जी का काम देता है ।] तृतीय संशोधित संस्करण [वि. रा. १२] ३०-००

धर्मशास्त्र-ग्रन्थाः

१ **आङ्गिरसस्मृतिः** । १२-००

२ **आचारेन्दुः** । त्र्यम्बकविरचित ७-००

३ **आपस्तम्बगृह्यसूत्रम्** । श्रीहरदत्तप्रणीत 'अनाकुला', श्री सुदर्शनाचार्य कृत 'तात्पर्यदर्शन' टीका । डॉ० उमेशचन्द्रपाण्डेय कृत हिन्दी टीका सहित ३५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४ **आपस्तम्बधर्मसूत्रम्** । श्रीहरदत्तमिश्रविरचितउज्ज्वलावृत्ति । डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय कृत हिन्दी टीका सहित ३५-००

५ **आशौचनिर्णयः** । म० म० वाचस्पतिमिश्रप्रणीत १-००

६ **कृत्यकल्पतरुः** । लक्ष्मीधर विरचित । १-९ काण्ड (१० जिल्द में) १७०-००

७ **क्यों ? (धर्म-दिग्दर्शन)** । माधवाचार्य शास्त्री । १-२ भाग २७-००

८ **गौतमधर्मसूत्राणि** । श्रीहरदत्तमिश्र कृत मिताक्षरावृत्ति तथा डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय कृत हिन्दी अनुवाद सहित १५-००

९ **चतुर्वर्गचिन्तामणि** । हेमाद्रिसूरिविरचित (श्राद्धकाण्ड) । सम्पादक—विश्वनाथ शास्त्री ४५-००

१० **चतुर्विंशतिमतसंग्रहः** । श्रीभट्टोजिदीक्षित १२-००

११ **जयसिंहकल्पद्रुमः** । ३०-००

१२ **जात्युपधिविवेकः** । स्वामीमाधवचैतन्यभारती १२-००

१३ **तिथिनिर्णयः** । भट्टोजिदीक्षितविरचितः, श्रीमन्नागोजिभट्टविरचितश्च ६-००

१४ **तिथिनिर्णयः** । रामचन्द्र झा [मि. ३३] १-२५

१५ **त्रिस्थलीसेतुः** । नारायणभट्टविरचित ६-९०

१६ **दत्तकमीमांसा** । नन्दपण्डितविरचित । सव्याख्या ६-९०

१७ **धर्म : तुलनात्मक दृष्टि में** । डा० राधाकृष्णन १०-००

१८ **धर्म और समाज** । डॉ० राधाकृष्णन् । अनुवादक—विराज २०-००

१९ **धर्मकल्पद्रुमः** । स्वामीदयानन्द कृत । १-८ भाग ४६-५०

२० **धर्मकोशः (व्यवहारकाण्ड)** । लक्ष्मणशास्त्री सम्पादित । १-३ भाग १२०-००

२१ **धर्मकोशः (उपनिषत्काण्ड)** । लक्ष्मणशास्त्री सम्पादित । १-४ भाग २२५-००

२२ **धर्मकोशः (संस्कारकाण्ड)** । लक्ष्मणशास्त्री सम्पादित । प्रथम भाग ७०-००

२३ **धर्मकोशः (राजनीतिकाण्ड)** । लक्ष्मणशास्त्री साम्पादित । १-३ भाग २००-००

२४ **धर्मविज्ञान** । स्वामी दयानन्द कृत । हिन्दी । १-३ भाग १३-००

२५ **धर्मशास्त्र का इतिहास** । डॉ० पी० वी० काणे । अनु० अर्जुनचौबे काश्यप १-५ भाग ९२-००

२६ **धर्मशास्त्रीयव्यवस्थासंग्रह** । सुभद्रशर्मा सम्पादित १०-००

२६क **धर्मशास्त्रेण-मलमास-विचारः** । पं० कृष्णमाधव झा ०-५०

२७ **धर्मसिन्धुः** । 'सुधाविवृत्ति' सहित धर्मबोधिनी हिन्दी टीका विभूषित ४०-००

२८ **निर्णयसिन्धुः** । कमलाकरभट्टविरचित । मूलमात्र २०-००

२९ **निर्णयसिन्धुः** । कमलाकरभट्ट । भाषा टीका । दौलतराम गौड़ १२०-००

३० **पारस्करगृह्यसूत्रम्** । हरिहरभाष्य हिन्दी अनुवाद सहित । पं० हरिहर शास्त्री विद्यालङ्कार । १-३ कण्डिका । सम्पूर्ण १७-००

३१ **पाराशरस्मृतिः** । 'सुबोधिनी' हिन्दी टीका सहित ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३२ **पाराशरस्मृतिः** । माधवाचार्य कृत व्याख्या सहित । म० म० श्रीचन्द्रकान्त तर्कालङ्कार परिशोधिता । प्रथम भाग ४०—००, द्वितीय भाग ५०-०

३३ **पुरुषार्थचतुष्टय** । श्रीप्रेमवल्लभत्रिपाठी । हिन्दी टीका सहित १५-०

३४ **पुरुषार्थचिन्तामणिः** । पूना संस्करण ११-२

३५ **पौराणिक-धर्म एवं समाज** । सिद्धेश्वरी नारायण ३०-०

३६ **प्रमुख स्मृतियों का अध्ययन** । डॉ० लक्ष्मीदत्त ठाकुर ६-५

३७ **प्राचीन भारत में अपराध और दण्ड** । डॉ० हरिहरनाथ त्रिपाठी [वैदिक काल से लेकर आजतक के एतद्विषयक सम्पूर्ण भारतीय साहित्य के पर्यालोचन के साथ ही विदेशी व्यवस्थाओं और मान्यताओं का भी परिचय इससे प्राप्त होता है । अपराधों की जो सूची प्रस्तुत की गई है वह राजनीति के छात्रों, अध्यापकों, शोध तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के बड़े ही उपयोग की वस्तु है ।] [वि. रा. ६८] ७-०

३८ **प्राच्यधर्म और पाश्चात्य विचार** । डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् २५-०

३९ **प्रायश्चित्तेन्दुशेखरः** । नागोजिभट्टप्रणीत तथा कुण्डार्क, केशवविरचित टीका ३-१

४० **बीस स्मृतियाँ** । श्रीरामशर्मा कृत हिन्दी टीका सहित । १-२ भाग २०-०

४१ **ब्राह्मणोत्पत्तिमार्तण्डः** । हिन्दी टीका सहित ४५-०

४२ **बौधायनधर्मसूत्रम्** । श्रीगोविन्दस्वामिप्रणीतविवरणसमेतम् ३५-०

४३ **बौधायनशुल्वसूत्र** । द्वारकानाथी संस्कृत टीका एवं प्रो० जी० थिबोकृत आंग्लानुवाद सहित ५०-०

४४ **मदनमहार्णवः** । विश्वेश्वरभट्टविरचित । एम्बर कृष्णमाचार्य—एम० आर० नम्बियर सम्पादित ३०-०

४५ **मनुस्मृतिः** । कुल्लूकभट्टप्रणीत मन्वर्थमुक्तावली तथा हिंन्दी टीका सहित २५-०

४६ **मनुस्मृतिः** । श्री हरगोविन्दशास्त्री कृत 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका सहित १-४ अध्याय ५-००, सम्पूर्ण १०-०

४७ **मनुस्मृतिः** । (द्वितीय अध्याय) संस्कृत-हिन्दी टीका सहित २-०

४८ **मनुस्मृतिः** । मेधातिथिभाष्य सहित । १-२ भाग ५०-०

४९ **मनुस्मृतिनवनीतम्** । सम्पा० डॉ० रामजी उपाध्याय २-०

५० **यतिधर्मसंग्रहः** । विश्वेश्वरसरस्वतीप्रणीतः ३-५

५१ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः** । विज्ञानेश्वरकृत 'मिताक्षरा' संस्कृत टीका । डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय कृत 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित । आचाराध्याय ६—००, सम्पूर्ण ३०-०

५२ **याज्ञवल्क्यस्मृतिः** । 'बालम्भट्टी' 'मिताक्षरा' टीका । व्यवहाराध्याय १००-०

५३ **राजनीतिरत्नाकरः** । चण्डेश्वर कृत हिन्दी टीका सहित १२-०

५४ **विधानमाला** । नृसिंहभट्टविरचित ७-८

५५ **विष्णुस्मृतिः** । जे० जॉली सम्पादित । नन्दपण्डित कृत वैजयन्ती टीका २०-०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५६ **वीरमित्रोदयः** । महामहोपाध्यायश्रीमित्रमिश्रविरचित । तीर्थप्रकाशः ५०-००
शुद्धिप्रकाशः २०-००, समयप्रकाश २०-००, भक्तिप्रकाशः १२-००
५७ **व्यवहारनिर्णयः** । वरदराजकृत ३०-००
५८ **व्यवहारविज्ञानम्** । सम्पा० हरिहर झा । प्रथम भाग ०-७५ द्वि० भाग २-००
५९ **व्रात्यताप्रायश्चित्तनिर्णयः** । (महान्लघुश्च) नागेशभट्टविरचितः ६-००
६० **शुद्धिप्रदीपः प्रायश्चितप्रदीपः कृत्यप्रदीपश्च** । कृष्णमित्रप्रणीतः ६-००
६१ **श्रीभृगुस्तुतिः** । स्वामी माधव चैतन्य भारती १-२५
६२ **षडशीतिः** । आदित्याचार्यप्रणीत । श्रीनन्दपण्डितकृत 'शुद्धिचन्द्रिका' व्याख्या १२-००
६३ **सब धर्मों की बुनियादी एकता** । भारतरत्न डॉ० भगवानदास
[इस ग्रन्थ में संसार भर के धार्मिक मज़हबों और उनके श्रेष्ठ धर्मग्रन्थों की बारीक जानकारी देते हुए यह समझाया गया है कि सब धर्मों-मजहबों का उद्देश्य भौतिक और आध्यात्मिक कल्याण पाना ही है] [वि. रा. ३६] २०-००
६४ **सरयूपारीयब्राह्मणवंशावली** । वेणीमाधवशास्त्री ५-००
६५ **स्मृतिचन्द्रिका** । १-५ भाग १७-००
६६ **स्मृतिशास्त्रीयोपादानम् [महाभारते]** । प्रथमभाग मूलमात्र । सुरेशचन्द्र १५-००
६७ **स्मृतिसारोद्धारः** । विद्वद्वरश्रीविश्वम्भरत्रिपाठिसंकलित २५-००
६८ **स्मृतीनां समुच्चयः** । सप्तविंशस्मृतिसंग्रह ९-५०
६९ **हिन्दू संस्कार** । (सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन) डॉ० राजबलीपाण्डेय
[यह ग्रन्थ हिन्दू संस्कृति के अध्ययन की दिशा में महत्त्वपूर्ण देन है । गर्भ में आने के समय से मृत्यु के समय तक और मृत्यूत्तर संस्कारों के माध्यम से उसके परवर्ती लोकोत्तर प्रयाण तक के हिन्दू जीवन को समझाने के लिए यह ग्रन्थ कुञ्जी का काम देता है ।] तृतीय संशोधित संस्करण [वि. रा. २२] ३०-००

स्तोत्र-व्रत-माहात्म्य-ग्रन्थाः

१ **अन्नपूर्णास्तोत्रम्** । लक्ष्मीलहरी सहित ०-२५
२ **आदित्यहृदयस्तोत्र** । ०-५०
३ **अर्धनारीश्वरस्तोत्रम्** । अर्धनारीश्वरस्तुतिनामावली ०-७५
४ **आळवन्दारस्तोत्रम्** । ०-२५
५ **ऋणमोचनमङ्गलस्तोत्रम्** । ०-२०
६ **एकादशीमाहात्म्यम्** । 'सरला' हिन्दी टीका सहित ६-००
७ **कालीकवचम्** । काली ताराध्यान सहित ०-२५
८ **गङ्गालहरी** । मूलमात्र ०-१५
९ **गङ्गालहरी** । पीयूषलहरी व्याख्या सहित १-५०
१० **गङ्गालहरी** । निर्मला नामक भाषा टीका सहित ०-५०
११ **गणेशमहिम्नस्तोत्रम्** । पुष्पदन्त विरचित ०-१०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२ **गणेशसहस्रनामावली।** ०-७०
१३ **गायत्रीरामायणम्।** ०-१०
१४ **चर्पटमञ्जरी।** इन्दुमती नामक भाषा टीका सहित ०-२५
१५ **तुलसीपूजापद्धतिः।** ०-१५
१६ **दक्षिणामूर्तिस्तोत्रम्।** ०-२०
१७ **दत्तात्रेयस्तोत्रम्।** ०-२०
१८ **दुर्गाकवचम्।** अर्गला-कीलक सहित ०-१०
१९ **देवीपुष्पाञ्जलिस्तोत्रम्।** शङ्कराचार्यकृत ०-१०
२० **देवीसहस्रनामावली।** ०-६०
२१ **देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्।** ०-२५
२२ **नर्मदाष्टकम्।** ०-१०
२३ **प्रश्नोत्तरी (मणिरत्नमाला)।** इन्दुमती भाषा टीका ०-२५
२४ **बगलामुखीस्तोत्रम्।**
२५ **बटुकभैरवस्तोत्रम्।** अनुष्ठानविधिसहित
२६ **बृहत्स्तोत्ररत्नाकरः।** सम्पादक—पं० रामतेज पाण्डेय ८-००
२७ **भारतीय व्रतोत्सव।** आचार्य पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी।
[इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें सभी व्रतोत्सवों का काल-विज्ञान एवं विधि-विज्ञान बुद्धिगम्य रूप में दिया गया है तथा शास्त्र व लोक दोनों के अनुसार विधियों की युक्तियुक्तता सिद्ध की गई है।] [वि. रा. १०] ३-००
२८ **महालक्ष्मीस्तोत्रम्।** महालक्ष्म्यष्टक-अम्बाष्टकद्वयोपेतम्
२९ **महाविद्यास्तोत्रम्।**
३० **महिम्नस्तोत्रम्।** शिवताण्डवस्तोत्रञ्च। मूल ०-५०
३१ **महिम्नस्तोत्रम्।** 'मधुसूदनी'-संस्कृतटीकासहितम् १-००
३२ **मृतसञ्जीविनीजपविधि-महामृत्युञ्जयजपस्तोत्रादि युत** ०-२
३३ **रामरक्षास्तोत्रम्।** ०-१
३४ **रामरक्षास्तोत्रम्।** बुधकौशिकविरचित। मुद्गलाचार्य रचित व्याख्या हिन्दी टीका तथा रामभद्रयन्त्र सहित ०-५०
३५ **ललितात्रिशतिस्तोत्रम्।** शाङ्करभाष्य २-००
३६ **विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम्।** सचित्र ०-१
३७ **शनिस्तोत्रम्।** दशरथकृत कृष्णाष्टकयुत ०-१
३८ **हिन्दी शिवमहिम्नस्तोत्र।** हिन्दीपद्यानुवाद सहित।
[प्रस्तुत संस्करण में मूल की हिन्दी व्याख्या तथा छन्दोबद्ध हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। श्लोक का पूरा भाव-वैभव इस अनुवाद में उतर आया है। अवश्य अवलोकनीय संस्करण है] [वि. रा. ९८] १-२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३९ **शिवस्तोत्रम्।** शिवकवच-शिवमानसपूजा-शिवमहिम्न-शिवापराधक्षमापनस्तोत्र सहित

४० **शीतलाष्टकम्।** ०-०५

४१ **श्रीशिवकर्णामृतस्तोत्रम्।** सम्पादक—पं० जगन्नाथ शर्मा १-५०

४२ **श्रीशिवस्तोत्रावली।** श्रीमदुत्पलदेवाचार्यविरचित। श्रीक्षेमराजाचार्य-निर्मितविवृतिसमेत। काश्मीरी स्वामी श्री राजानक लक्ष्मण कृत हिन्दी टीका २०-००

४३ **सत्यनारायणव्रतकथा।** 'विष्णुप्रिया' हिन्दी टीका सहित १-५०

४४ **सन्तानगोपालस्तोत्रम्।** ०-२५

४५ **सिद्धसरस्वतीस्तोत्रम्।** (गणेशस्तवराजस्तोत्रम्, सरस्वतीस्तोत्रम्, सरस्वत्यष्टकम्, सरस्वतीकवचम्, देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्, कालभैरवाष्टकम्) प्रत्यक्षफलोपयोगी। ०-२५

४६ **सूर्यशतकम्।** 'कला' हिन्दी टीका सहित
[अत्यन्त सरल तथा व्यवस्थित हिन्दी भाषा में व्याख्या तथा टिप्पणियों में पौराणिक अन्तःकथाएँ आदि विषय स्पष्ट किए गए हैं। विचारपूर्ण विशद भूमिका में भी कवि तथा काव्य से सम्बन्धित गवेषणापूर्ण अनल्प सामग्री प्रस्तुत की गई है।] [वि. सं. १०६] ३-५०

४७ **सूर्यादिद्वादशस्तवीस्तोत्रं**–अन्नपूर्णादिस्तोत्र सहित

तन्त्रादि-आगम-ग्रन्थाः

१ **अहिर्बुध्न्यसंहिता (पञ्चरात्रागमान्तर्गता)** १-२ भाग ५०-००

२ **आनन्दलहरी।** हिन्दी टीका व विस्तृत व्याख्या सहित २-२५

३ **उड्डीशतन्त्रम्।** रावणविरचित। हिन्दी टीका सहित २-००

४ **उपासना महाविज्ञान।** डॉ० चमनलाल गौतम ९-००

५ **ओंकारसिद्धि।** डॉ० चमनलाल गौतम ५-७५

६ **कर्पूरस्तवः।** श्रीमहाकालप्रणीत। रुचिरा व्याख्या सहित ८-००

७ **कर्पूरस्तव।** २-००

८ **काथबोधः।** साजनी कृत टीकोपेत २-००

९ **कामधेनुतंत्र।** सम्पा० भद्रशील शर्मा २-५०

१० **काली-कर्पूरस्तवः।** सविधि। पुण्यशील शर्मा १-५०

११ **कालीतन्त्रम्।** सम्पा० भद्रशील शर्मा ३-००

१२ **काशी की सारस्वत साधना।** म० म० डॉ० गोपीनाथ कविराज २-५०

१३ **कौलावलीनिर्णय।** रमादत्तशुक्ल। हिन्दी मात्र ५-००

१४ **क्या रामचरितमानस तन्त्र है?** ९-१०

१५ **गणेशसिद्धि।** सम्पादक—डॉ० चमनलाल गौतम ९-००

१६ **गायत्री उपासना।** राजेशदीक्षित ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१७ **गायत्रीतन्त्र** । सम्पा०—डॉ० चमनलाल गौतम ५-७५
१८ **गायत्रीतत्त्वविमर्शः** । २-००
१९ **गायत्रीतन्त्रम्** । श्रीमच्छङ्करमुखविनिःसृतम् । गायत्री-शापोद्धार-गायत्रीकवच-दशमहाविद्यास्तोत्रैः संभूषितम् । हिन्दी टीका सहित ४-००
२० **गायत्रीपूजापद्धतिः** । श्रीविभाकराचार्यसंगृहीत १-००
२१ **गायत्रीमहाविज्ञान** । श्रीरामशर्मा आचार्य कृत । १-३ भाग १८-००
२२ **गायत्री यज्ञ विधान** । १-२ भाग ६-००
२३ **गायत्री योग** । सम्पा० डॉ० चमनलाल गौतम ५-७५
२४ **गायत्रीसिद्धि** । डॉ० चमनलाल गौतम ५-७५
२५ **गुप्तसाधनातंत्र** । भद्रशीलशर्मा २-५०
२६ **गुह्यमन्त्र और उनका विनियोग** । डॉ० कृष्णलाल ४०-००
२७ **गुह्यसमाजतन्त्र** । सम्पा० बी० भट्टाचार्य २४-००
२८ **गोरक्षसंहिता** । सम्पा० जनार्दन पाण्डेय । प्रथम भाग ५०-०० द्वि० भाग ३४-००
२९ **गौतमीयतन्त्र** । सम्पा० पं० बद्रीनाथ झा १६-००
३० **जपसूत्रम्** । स्वामी प्रत्यज्ञानन्द सरस्वती । अनु० कुमारी प्रेमलता शर्मा २०-००
३१ **जयाख्यसंहिता** । कृष्णमाचार्य सम्पादित ५०-००
३२ **ज्ञानसंकलनीतंत्र** । सम्पा० भद्रशीलशर्मा ३-००
३३ **तन्त्रमहाविद्या** । पं० श्रीरामशर्मा आचार्य एवं डॉ० चमनलाल गौतम ५-७५
३४ **तन्त्रमहासाधना** । डॉ० चमनलाल गौतम कृत हिन्दी अनुवाद सहित १०-००
३५ **तन्त्रमहासिद्धि** । श्रीरामशर्मा आचार्य एवं डॉ० चमनलान गौतम ५-७५
३६ **तन्त्ररहस्य** । पं० श्रीरामशर्मा आचार्य एवं डॉ० चमनलाल गौतम ५-७५
३७ **तन्त्ररहस्य** । के० एस० रामास्वामीशास्त्री सम्पादित १२-००
३८ **तन्त्रविज्ञान** । पं० श्रीरामशर्मा आचार्य एवं डॉ० चमनलाल गौतम ५-७५
३९ **तन्त्रशक्ति** । रुद्रदेव त्रिपाठी ८-००
४० **तन्त्रसंग्रहः** । सम्पा० म० म० गोपीनाथ कविराज । १-२ भाग ३३-००
४१ **तंत्र-सिद्धान्त और साधना** । देवदत्तशास्त्री २५-००
४२ **तांत्रिकपञ्चाङ्ग** । स्वामीजी महाराज, दतिया ४-००
४३ **तांत्रिक साहित्य** । म० म० गोपीनाथ कविराज ३०-००
४४ **तारारहस्यम्** । सटिप्पण 'विद्या' हिन्दी व्याख्या सहित ४-००
४५ **तारिणीपारिजातः** । विद्वदुपाध्याय प्रणीत ४-००
४६ **तोडलतन्त्र** । सम्पा० भद्रशील शर्मा २-००
४७ **त्रिपुरारहस्यम्** । (**ज्ञानखण्डम्**) । ज्ञानप्रभा हिन्दी व्याख्या सहित । स्वामी सनातनदेवजी महाराज १६-००
४८ **त्रिपुरारहस्यम्** (**ज्ञानखण्डम्**) । श्रीनिवासबुधविरचित तात्पर्यदीपिका व्याख्या सहित । म० म० गोपीनाथ कविराज ९-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४९ **त्रिपुररहस्यम्।** माहात्म्यखण्ड २५-००

५० **दुर्गाकल्पद्रुम।** सप्तशतीपाठ। भालचन्द जगन्नाथ ६-००

५१ **दुर्गापञ्चाङ्गम्।** २-००

५२ **दुर्गापूजा-श्यामापूजापद्धतिः (शारदीय)।** 'इन्दुमती' टिप्पणी सहित। सम्पा० पं० रामचन्द्र झा [मि.]२५] २-००

५३ **दुर्गासप्तशती।** स्थूलाक्षर। (बम्बई) पत्रात्मक—९-००, सजिल्द १०-००

५४ **दुर्गासप्तशती।** मूलमात्र (गुटका) ४-००

५५ **दुर्गासप्तशती।** हिन्दी टीका सहित ८-००

५६ **दुर्गासप्तशती।** शब्दशः पद्यानुवाद २-००

५७ **दुर्गासप्तशती का आध्यात्मिक रहस्य।** काशीनाथ झा ४-००

५८ **दुर्गास्तवमञ्जरी।** हिन्दी टीका सहित ३-००

५९ **देवरहस्य।** डॉ० चमनलाल गौतम ९-००

६० **धन प्राप्ति के प्रयोग।** भद्रशील शर्मा १-५०

६१ **नारदीयसंहिता।** आर० पी० चौधरी सम्पादित २४-००

६२ **नित्याषोडशिकार्णवः।** शिवानन्द कृत 'ऋतुविमर्शिनी' एवं 'पार्थरत्नावली' टीका युक्त। २५-००

६३ **निर्वाणतंत्रम्।** भद्रशील शर्मा सम्पादित २-००

६४ **नीलतन्त्रम्।** सम्पा० भद्रशील शर्मा ३-००

६५ **पञ्चमकार तथा भावत्रय।** ६-००

६६ **परशुरामतन्त्रम्।** सम्पा० भद्रशील शर्मा १-००

६७ **परातन्त्रम्।** श्रीधन शमशेरजङ्गबहादुर राणा ३-००

६८ **पारायणविधि।** २-००

६९ **पुराणसंहिता।** श्रीमद्वेदव्यासविरचित। आलमन्दारसंहिता-बृहत्सदाशिव संहिता-सनत्कुमारसंहिता संवलित २५-००

७० **प्रत्यभिज्ञाहृदयम्।** राजानकक्षेमराजाचार्यविरचितम्। सविमर्श हिन्दी व्याख्या सहित। प्रो० शिवशङ्कर अवस्थी १२-००

७१ **बगलामुखी सिद्धि।** सम्पा० डॉ० चमनलाल गौतम ५-५०

७२ **भारतीय संस्कृति और साधना।** म० म० गोपीनाथ कविराज। प्रथम भाग ३५-००
द्वितीय भाग ७-५०

७३ **भैरवीचक्रपूजन।** १-००

७४ **मन्त्र और मातृकाओं का रहस्य।** डॉ० शिवशङ्कर अवस्थी २०-००
[प्रस्तुत ग्रन्थ में व्याकरणागम, सूतादिसंहिताओं, पुराणवचनों तथा रहस्यमयी स्मृतियों का प्रमाणार्थ उपयोग हुआ है। अहन्ता, कामकला, कुण्डलिनी, परा-पश्यन्ती आदि वाग्भेद, ओङ्कार तथा तद्गत अकार, उकार, मकार, बिन्दु, अर्द्धचन्द्र, रोधिनी, नाद, नादान्त, शक्ति आदि कलाओं, पूर्णा या परा प्रकृति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एवं तदन्तर्गत पर पुरुष, अपर पुरुष, पर काल, अपर काल, पर प्रकृति, अपर प्रकृति तथा प्रतिभा आदि तत्वों की व्यापक चर्चा इसमें द्रष्टव्य है। वर्णों का वैज्ञानिक एवं दार्शनिक विवरण, मन्त्रों के स्वरूप तथा शक्ति का तलस्पर्शी विवेचन इस ग्रन्थ की विशेषता है। हिन्दी भाषा का यह सर्वप्रथम ग्रन्थ है जिसमें तन्त्र जैसे दुरूह विषय का व्यवस्थित और बोधगम्य वर्णन देखने को मिलेगा] [वि. रा. ९५] २०-००

७५ **मन्त्रकोष।** २-००
७६ **मन्त्रपारायणविधिः।** २-००
७७ **मन्त्रमहाविज्ञान।** हिन्दी अनुवाद सहित। चमनलाल गौतम। १-४ खण्ड ३२-००
७८ **मन्त्रयोग।** हिन्दी अनुवाद सहित। डॉ० चमनलाल गौतम ८-००
७९ **मन्त्रयोगसंहिता।** मूलमात्र। डॉ० रामकुमार राय ३५-००
८० **मन्त्र सिद्धि का उपाय।** मन्त्र-साधना के लिए सद्गुरु-समान २-००
८१ **मन्त्रशक्ति।** डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी ६-००
८२ **मन्त्रशक्ति के अद्भुत चमत्कार।** डॉ० चमनलाल गौतम ३-५०
८३ **मन्त्रशक्ति से कामना सिद्धि।** डॉ० चमनलाल गौतम ५-७५
८४ **मन्त्रशक्ति से रोग निवारण।** डॉ० चमनलाल गौतम ५-७५
८५ **मन्त्रशक्ति से विपत्ति निवारण।** डॉ० चमनलाल गौतम ५-७५
८६ **महाकालसंहिता।** कामकला खण्ड ३०-००
८७ **महानिर्वाणतंत्रम्।** हरिहरानन्दभारती कृत टीका। आर्थरएवेलेन सम्पादित ३५-००
८८ **महानिर्वाणतंत्रम्।** सटीक। जीर्ण ८-५०
८९ **महामृत्युञ्जयपञ्चांगम्।** २-००
९० **महार्थमञ्जरी।** महेश्वरानन्दकृत स्वोपज्ञव्याख्या। सम्पा० ब्रजवल्लभद्विवेदी १७-५०
९१ **मातृकाभेदतंत्रम्।** मूलमात्र ३-००
९२ **मानसपूजन।** १-००
९३ **मुद्रायें एवं उपचार।** भद्रशील शर्मा ३-००
९४ **यज्ञतत्त्व।** म० म० पं० गोपीनाथ कविराज २-००
९५ **लक्ष्मीतन्त्रम्।** (पञ्चरात्रागम) वी० कृष्णमाचार्य सम्पादित ६०-००
९६ **लक्ष्मीसिद्धि।** सम्पा० डॉ० चमनलाल गौतम ८-७५
९७ **लुप्तागमसंग्रहः।** प्रथम भाग। म० म० गोपीनाथ कविराज सम्पादित १२-००
९८ **वरिवस्यारहस्यम्।** भास्करराय। आंग्लानुवाद सहित। सम्पा० पं० सुब्रह्मण्यशास्त्री २०-००
९९ **वाममार्ग।** पं० देवीदत्त शुक्ल ६-००
१०० **विनयसुधा।** १-२५
१०१ **विष्णुरहस्य।** डॉ० चमनलाल गौतम ९-००
१०२ **विष्वक्सेनसंहिता।** सम्पा० लक्ष्मीनरसिंह भट्ट २९-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०३ **विश्वामित्रसंहिता** । डॉ० उमाशंकर भट्ट २२-००
१०४ **वैदिकमंत्रविद्या** । हिन्दी अनुवाद सहित । डॉ० चमनलाल गौतम ८-००
१०५ **शतचण्डी-विधानम्** । मण्डप, कुण्ड, होमद्रव्य आदि प्रयोगविधि सहित ३-७५
१०६ **शक्ति-भाष्य का अध्ययन** । लेखिका—डॉ० श्रीमती सुशीला 'कमलेश'
[प्रस्तुत ग्रन्थ संस्कृत दर्शन शास्त्र की वह अमूल्य निधि है जिसने सृष्टि के आदि काल से पूजा-पद्धति में प्रचलित शक्तिमत-परंपरा को सुसम्बद्ध दर्शन का रूप प्रदान करके एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति की है। विदूषी लेखिका ने प्रस्तुत ग्रन्थ में शाक्तमत को अपनी लौकिक प्रतिभा के द्वारा दर्शनों की परम्परा में एक गौरवपूर्ण उच्चतम स्थान देने का अथक प्रयास किया है। जिज्ञासुओं को इससे अधिक लाभ होगा।] [चौ. रा. १५] २५-००
१०७ **शक्तितत्त्व** । सम्पा० पं० रमादत्त शुक्ल ५-००
१०८ **शाक्तदर्शन** । ३-००
१०९ **शाक्तधर्म क्या है ?** ३-००
११० **शाक्तानन्द तरङ्गिणी** । ३-५०
१११ **शाक्तप्रमोदः** । दश-महाविद्या । मूलमात्र ३०-००
११२ **शारदातिलक** । सरल हिन्दी अनुवाद सहित । डॉ० चमनलाल गौतम १०-००
११३ **शिवरहस्य** । डॉ० चमनलाल गौतम । १-२ भाग ११-५०
११४ **शैवपरिभाषा** । शिवाग्रयोगीन्द्रकृत ३-७५
११५ **श्रीकमलानित्यार्चन** । ३-००
११६ **श्रीकमलास्तवमञ्जरी** । ३-००
११७ **श्रीकल्पद्रुम** । 'गुप्तावतार' बाबा मोतीलाल जी । १-२ भाग ५-५०
११८ **श्रीकालीनित्यार्चनम्** । अर्गला, कीलक, कवच आदि स्तोत्र सहित ५-००
११९ **श्रीकालीस्तवमञ्जरी** । हिन्दी टीका सहित ३-५०
१२० **श्रीकालीस्वरूपतत्त्वम्** । भगवती आद्या के ध्यान का आध्यात्मिक रहस्य ३-००
१२१ **श्रीतारानित्यार्चन** । पं० रमादत्त शुक्ल ४-००
१२२ **श्रीतारास्तवमञ्जरी** । ३-००
१२३ **श्रीतारास्वरूप-तत्त्वम्** । ३-००
१२४ **श्रीत्रिपुरामहोपनिषद्** । १-५०
१२५ **श्रीदुर्गानित्यार्चनम्** । ३-००
१२६ **श्रीनाथादिगुरुत्रयम्** । ३-५०
१२७ **श्रीप्रश्नसंहिता** । श्रीमती सीतापद्मनाभन सम्पादित ३६-००
१२८ **श्रीबगलानित्यार्चनम्** । ३-००
१२९ **श्रीबगलापूजापद्धतिः** । २-००
१३० **श्रीबालानित्यार्चनम्** । ४-००
१३१ **श्रीभगवतीगीता** । पद्यानुवाद व व्याख्या सहित ५-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१३२ श्रीभुवनेश्वरीनित्यार्चनम् । ४-००
१३३ श्रीभुवनेश्वरीरहस्य । ३-००
१३४ श्रीभुवनेश्वरीस्तवमञ्जरी । ३-००
१३५ श्रीललितानित्यार्चनम् । ४-००
१३६ श्रीविद्याखड्गमाला । ४-००
१३७ श्रीविद्यानित्यार्चनम् । ५-५०
१३८ श्रीश्यामासपर्यावासना । ४-५०
१३९ श्रीषोडशीनित्यार्चनम् । ४-००
१४० षट्चक्रनिरूपण । स्वामी हंसस्वरूप महाराज १-५०
१४१ संक्षिप्त तान्त्रिकमाह्निकम् । ४-५०
१४२ सनत्कुमारसंहिता । पं० वी० कृष्णमाचार्य सम्पादित ४८-००
१४३ सन्तान-सुख प्राप्ति के प्रयोग । भद्रशील शर्मा १-५०
१४४ सप्तशतीतत्त्व । पं० रमादत्त शुक्ल ९-००
१४५ सप्तशतीमीमांसा । रमादत्त शुक्ल २-५०
१४६ सप्तशतीरहस्यम् । श्यामानन्द नाथ ३-५०
१४७ सांख्यायनतन्त्रम् । सम्पा० भद्रशील शर्मा ३-००
१४८ सात्वततन्त्रम् । (वैष्णवतन्त्रम्) १०-००
१४९ साधक का संवाद । (शाक्तधर्म की जानकारी रोचक ढङ्ग से कराती है) ४-५०
१५० साधनमाला । विनयतोष भट्टाचार्य सम्पादित । १-२ भाग १०-००
१५१ सौन्दर्यलहरी । हिन्दी अनुवाद तथा श्रीविद्यातत्त्वकुण्डलिनीरहस्य सहित १०-००
१५२ सौन्दर्यलहरी । पद्यानुवाद सहित २-००
१५३ हिन्दी कुलार्णव । ३-००
१५४ हिन्दी कौलावलीनिर्णय । ५-००
१५५ हिन्दी तंत्रसार । रमादत्त शुक्ल १५-००
१५६ हिन्दी शाक्तानन्दतरङ्गिणी । शाक्तधर्म-मूलसिद्धान्त-परिचयोपयोगी ३-५०

Sir John Woodroffe (Arthur Avalon)

157 Principles of Tantra, 40-0
158 Sakti & Sakta, 25-0
159 The Great Liberation, 1971 10-0
160 Introduction to Tantra Shastra, 1973
161 Ishopanishad, The Wave of Bliss, The
Greatness of Shiva, 1971 10-0
162 Tantraraja Tantra, Ramakalavilasa, 1971 12-0
163 The Serpent Power, 1973 30-0

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

164 The World as Power 1973 30–00
165 The Garland of Letters — 15–00

अष्टादश-महापुराण-ग्रन्थाः

१ **अग्निपुराणम् (१)** । मूलमात्र । सम्पा० आचार्य बलदेव उपाध्याय २५–००
२ **अग्निपुराण** । हिन्दी अनुवाद सहित । श्री रामशर्मा आचार्य । १–२ भाग २०–००
३ **काशीखण्डम्** । संस्कृत व्याख्या सहित १८–००
४ **कूर्मपुराणम् (२)** । हिन्दी अनुवाद सहित । (काशीराज ट्रस्ट) ५०–००
५ **कूर्मपुराणम्** । हिन्दी अनुवाद सहित । श्रीरामशर्मा आचार्य । १–२ खण्ड २०–००
६ **गरुड़पुराणम् (३)** । मूलमात्र । सम्पा० श्रीरामशङ्कर भट्टाचार्य १५–००
७ **गरुड़पुराणम्** । हिन्दी अनुवाद सहित । श्रीरामशर्मा आचार्य । १–२ भाग २०–००
८ **गरुड़पुराण** । प्रेतकल्प । भाषा टीका ५–००
९ **गरुड़पुराण : एक अध्ययन** । डॉ० अवधविहारीलाल अवस्थी ४०–००
१० **नारदपुराण । (४)** । हिन्दी अनुवाद सहित । श्रीरामशर्मा आचार्य ।
१–२ भाग २०–००
११ **पद्मपुराणम् (५)** । मूलमात्र । १–५ भाग २२५–००
१२ **पद्मपुराण** । हिन्दी अनुवाद सहित । श्रीरामशर्मा आचार्य । १–२ भाग २०–००
१३ **पुराण की लोकभारती** । डॉ० जयशङ्कर त्रिपाठी [वि. रा. १३२] २–००
१४ **पुराणदिग्दर्शनम्** । माधवाचार्य शास्त्री विरचित १७–००
१५ **पुराणपरिशीलन** । म० म० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी २०–००
१६ **पुराणपर्यालोचनम्** । पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी । १–२ भाग
[भारतीय वाङ्मय में पुराण साहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है । पुराणों के बिना वेदों का उपबृंहण सम्भव नहीं है । परन्तु समस्त पुराणों का अध्ययन सामान्य पाठक के लिए सहज सम्भव नहीं है । अतः सम्पू० सं० विश्वविद्यालय, पुराणेतिहास विभाग के भूतपूर्व प्राध्यापक तथा अध्यक्ष डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी ने अनेक वर्षों के अध्ययन-अध्यापन एवं निर्वचन से प्राप्त अनुभव के आधार पर उपर्युक्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का लेखन सरलतम संस्कृत भाषा में किया है । प्रस्तुत पुस्तक में पुराणों के लोकोपयोगी विषयों का मनोवैज्ञानिक तर्कसङ्गत एवं हृदयस्पर्शी विवेचन निबद्ध कर विद्वान् लेखक ने पुराण जगत् को एक नवीन कृति भेंट की है । पुराणों पर की गयी शङ्काओं का भी समाधान दिया गया है । विषय-प्रतिपादन की श्रेष्ठता के साथ ही इसकी भाषा अत्यन्त सरल एवं सुबोध है । यह ग्रन्थ पुराण साहित्य के अध्येताओं एवं शोध छात्रों के लिए विशेष रूप से संग्रहणीय है ।] [चौ. सु. १] प्रथम : गवेषणात्मक भाग ३०–००
द्वितीय : समीक्षात्मक भाग २०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१७ **पुराणविमर्श** । आचार्य बलदेव उपाध्याय । (उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत) [इसमें ऐतिहासिक पद्धति में पुराण की आलोचना विद्यमान है, साथ ही साथ परम्परा पद्धति से पुराणविषयक मननीय सामग्री भी सङ्कलित है । पुराण के अनुशीलन में यह एक नवीन दृष्टिकोण को अग्रसर करता है, जो एकदम नवीन तथा पूर्णतया विश्लेषणात्मक है ।] [वि. रा. ८०] ३५-००

१८ **पुराणविषयानुक्रमणी** । (राजनीतिक) राजबली पाण्डेय । प्रथम भाग १५-००

१९ **पौराणिक आख्यान** । डॉ० गङ्गासागर राय
[आख्यान या कहानी जनता के मनोरंजन के साधन हैं । पौराणिक कथानक उपदेशप्रद तथा रोचक होने के कारण विद्वज्जन से लेकर पामर जन तक को आकृष्ट करता है । घर-घर में पौराणिक शिक्षाप्रद कथाओं का प्रसार हो इसी उद्देश्य से राष्ट्रभाषा में यह पुस्तक लिखी गयी है । कथावाचक पौराणिक व्यासों के लिये तो यह पुस्तक अद्वितीय है ।] [वि. रा. १२३] २-००

२० **पौराणिक कथाएँ** । श्री हृदयराम शर्मा । (पुराणों में बिखरे हुए ७१ चरित्र नायकों का अपूर्व कथा-संग्रह)
[उदात्त चरित्रों से परिपूर्ण लगभग ७४ पौराणिक कथाओं को लोकरुचि के अनुकूल रूप देकर यह ग्रन्थ सम्पादित किया गया है । आबाल-वृद्ध सभी को इसमें पर्याप्त रुचिपूर्ण कहानी कहने-सुनने की प्रवृत्ति तुष्ट होकर उत्कृष्ट मनोरंजन भी होगा ।] [वि. रा. ४१] ५-००

२१ **पौराणिक धर्म एवं समाज** । (हिन्दी) डॉ० एस० एन० राय ४०-००

२२ **ब्रह्मपुराणम् (६)** । संस्कृत मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित १००-००

२३ **ब्रह्मपुराण** । हिन्दी अनुवाद सहित । श्रीरामशर्मा आचार्य । १-२ भाग २०-००

२४ **ब्रह्मवैवर्तपुराणम् (७)** । मूलमात्र । सजिल्द । १-२ भाग । पूना १७-९०

२५ **ब्रह्मवैवर्तपुराण** । श्रीरामशर्मा कृत हिन्दी अनुवाद सहित । १-२ भाग २०-००

२६ **ब्रह्माण्डपुराणम् (८)** । मूलमात्र २४-००

२७ **भविष्यपुराणम् (९)** । मूलमात्र दुष्प्राप्य

२८ **भविष्यपुराण** । श्रीरामशर्मा कृत हिन्दी अनुवाद सहित । १-२ भाग २०-००

२९ **भागवतकथा** । (साप्ताहिक) राममूर्ति शास्त्री ३५-००

३० **भागवत धर्म** । हरिभाऊ उपाध्याय । १-२ भाग १७-००

३१ **मत्स्यपुराणम् (१०)** । मूलमात्र २०-००

३२ **मत्स्यपुराण** । भाषा । अनुवादक—रामप्रताप त्रिपाठी ४०-००

३३ **मत्स्यपुराण** । हिन्दी अनुवाद सहित । श्रीरामशर्मा आचार्य । १-२ भाग २०-००

३४ **मार्कण्डेयपुराणम्** । (११) मूलमात्र १५-००

३५ **मार्कण्डेयपुराण : एक अध्ययन** । आचार्य बदरीनाथ शुक्ल
[इस ग्रन्थ में अध्यायक्रम से मार्कण्डेयपुराण का सम्पूर्ण कथा-सूत्र पूर्ण सुरक्षित रखा गया है; कथा की परम्परा में कहीं भी त्रुटि नहीं आने पाई है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कथावाचक और अनुसंधानकर्त्ता दोनों के लिए यह ग्रंथ समान उपयोगी है ।]
[वि. रा. ४३] ६-००

३६ **मार्कण्डेयपुराण** । हिन्दी अनुवाद सहित । श्रीरामशर्मा । १-२ भाग २०-००

३७ **ललितोपाख्यानम्** । ब्रह्माण्डपुराणान्तर्गत ५-२५

३८ **लिङ्गपुराणम् (१२)** । मूलमात्र । जीर्ण २०-००

३९ **लिङ्गपुराण** । श्रीरामशर्मा कृत हिन्दी अनुवाद सहित । १-२ भाग २०-००

४० **वामनपुराणम् (१३)** । मूल एवं हिन्दी अनुवाद सहित (काशीराजट्रस्ट) ५०-००

४१ **वामनपुराण** । श्रीरामशर्मा कृत हिन्दी अनुवाद सहित । १-२ भाग २०-००

४२ **वाराहपुराण (१४)** । मूलमात्र दुष्प्राप्य

४३ **वाराहपुराण** । हिन्दी अनुवाद सहित । डॉ० चमनलाल गौतम । १-२ भाग २०-००

४४ **विष्णुपुराणम्** । भाषा टीका सहित ७-००

४५ **विष्णुपुराण** । श्रीरामशर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित । १-२ भाग २०-००

४६ **विष्णुधर्मोत्तरपुराणम्** । (चित्रसूत्रम्) डॉ० अशोक शास्त्री ७-२५

४७ **विष्णुपुराण का भारत** । डॉ० सर्वानन्द पाठक
[प्रस्तुत ग्रन्थ में विष्णुपुराण के आधार पर भौगोलिक आधार, समाजव्यवस्था, राजनीतिक संस्थान, शिक्षा-साहित्य, संग्रामनीति, आर्थिकदशा, धर्म आदि विषयों पर प्रामाणिक रूप से तत्कालीन भारत की जीवन्त झाँकी प्रस्तुत की गई है । ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से इसका प्रमुख महत्त्व है ।]
[चौ. रा. २] २५-००

४८ **वैष्णवमहापुराणम् (१५)** । मूलमात्र । दुष्प्राप्य

४९ **शिवमहापुराण (१६)** मूलमात्र । पत्राकार ४५-००

५० **शिवपुराण** । हिन्दी टीका सहित । श्रीरामशर्मा आचार्य २०-००

५१ **शिवपुराण** । भाषा । पं० प्यारेलाल रूग्गू ४०-००

५२ **शिवपुराण की दार्शनिक तथा धार्मिक समालोचना** ।
डा० रामशङ्कर त्रिपाठी ३०-००

५३ **श्रीमद्भागवतम् (१७)** । मूलमात्र । गुटका २५-००

५४ **श्रीमद्भागवतम्** । चूर्णिका संस्कृत व्याख्या सहित ६०-००

५५ **श्रीमद्भागवतम्** । अन्वितार्थप्रकाशिका टीका सहित । पत्रात्मक १००-००

५६ **श्रीमद्भागवतम्** । लाला शालिग्राम कृत हिन्दी टीका । पत्राकार ९०-००

५७ **श्रीमद्भागवतम्** । सामयिकी हिन्दी टीका सहित । पत्रात्मक ६०-००

५८ **श्रीमद्भागवतम्** । एकादशस्कन्ध । हिन्दी टीका सहित । १-२ भाग ७-००

५९ **स्कन्दमहापुराणम् (१८)** । (प्रभास और नागर खण्ड छोड़कर सम्पूर्ण)
१-५ खण्ड (६ जिल्दों में) ३००-००

६० **स्कन्दपुराण** । हिन्दी अनुवाद सहित । श्रीरामशर्मा आचार्य । १-२ भाग २०-००

६१ **सुखसागर** । (भागवत) सरल भाषा । स्थूलाक्षर । सचित्र ४२-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपपुराणम्

१ **कल्किपुराणम्** । सम्पा० डॉ० अशोक चटर्जी — १८-००
२ **कल्किपुराणम्** । हिन्दी अनुवाद सहित — ५-७५
३ **कालिकापुराणम्** । सम्पा० विश्वनारायण शास्त्री ।
आचार्य बलदेव उपाध्याय संशोधित — ३५-००
४ **कालिकापुराण** । हिन्दी अनुवाद सहित । डॉ० चमनलाल गौतम १-२ भाग — २०-००
५ **देवीपुराणम्** । मूलमात्र — ४०-००
६ **देवीभागवतम्** । मूलमात्र । गुटका — १६-००
७ **देवीभागवतम्** । हिन्दी टीका सहित । पत्राकार — १२०-००
८ **देवीभागवतम्** । हिन्दी अनुवाद सहित । श्रीरामशर्मा । १-२ भाग — २०-००
९ **बृहद्धर्मपुराणम्** । हरप्रसादशास्त्री सम्पादित — ७५-००
१० **बृहन्नारदीयपुराणम्** । ऋषिकेषशास्त्री सम्पादित । सटिप्पण — ७५-००
११ **मल्लपुराणम्** । अज्ञातकर्तृकं । भोगीलाल ज० सन्देशरा—रमणलाल
नागरजी मेहता सम्पादित — १५-००
१२ **युगपुराणम्** । भाषा टीका । पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी [चौ. सु. १६] — २-५०
१३ **वायुपुराण** । भाषा । अनुवादक—रामप्रताप त्रिपाठी — २४-००
१४ **वायुपुराण** । श्रीरामशर्मा आचार्य कृत हिन्दी टीका सहित । १-२ भाग — २०-००
१५ **सूर्यपुराण** । हिन्दी अनुवाद सहित । डॉ० चमनलाल गौतम — १०-००
१६ **सौरपुराणम्** । व्यास विरचित । मूलमात्र — ५-६५

भारतादि-इतिहास-ग्रन्थाः

१ **आनन्दरामायणम्** । हिन्दी टीका सहित । सजिल्द — ३२-००
२ **इतिहास-पुराण का अनुशीलन** । रामशंकर भट्टाचार्य — १६-००
३ **गर्गसंहिता** । भाषाटीका । पत्राकार — ४५-००
४ **गर्गसंहिता** । श्री विभूतिभूषण भट्टाचार्य सम्पादित । प्रथम भाग — १०-००
५ **जैमिनीयाश्वमेधः** । मूलमात्र — ६-४०
६ **भक्तिचन्द्रिका** । आचार्य बलदेव उपाध्याय सम्पादित — १०-००
७ **भक्तिरत्नावली** । डॉ० कृष्णमणि त्रिपाठी [चौ. सु. ८] — १५-००
८ **भुशुण्डिरामायणम्** । पूर्वखण्ड । सम्पा० भगवतीप्रसाद सिंह — १००-००
९ **महाभारतम्** । नीलकण्ठी संस्कृत टीका सहित । सम्पूर्ण — यंत्रस्थ
१० **महाभारतम्** । मूलमात्र । (मद्रास) १-१८ भाग में — २००-००
११ **महाभारतम्** । शोधपूर्णसंस्करण । (पूना) १-२२ जिल्द में सम्पूर्ण — २०००-००
१२ **महाभारतम्** । हिन्दी टीका सहित । सभापर्व — १५-००
१३ **महाभारत** । भाषा । सचित्र — २६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१४ **महाभारत** । सबलसिंह चौहान कृत १८–००

१५ **महाभारतेस्मृतिशास्त्रियोपादानम्** । डॉ० एस० सी० बनर्जी १५–००

१६ **महाभारतकालीन समाज** । सुखमय भट्टाचार्य ३०–००

१७ **महाभारतकोश** । डॉ० रामकुमार राय । १–२ भाग ७०–००

१८ **महाभारत में नारी** । डॉ० वनमाला भवालकर २५–००

१९ **रामाश्वमेधः** । हिन्दी टीका सहित १६–५०

२० **वाल्मीकिरामायणम्** । मूलमात्र । पं० शिवरामशर्मा वशिष्ठ सम्पादित । गुटका [रामायण पूजाक्रम, स्मार्त, वैष्णव तथा माध्व संप्रदाय, रामायण पठनोक्रम, नवाह्नपारायणक्रम, कुशलव ीतक्रम, गायत्रीरामायण, वेदोक्तराममन्त्र, रामतारकषडक्षरमन्त्र, श्रीसीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-आञ्जनेय मन्त्र, रामसाक्षात्प्रकारप्रद मन्त्र, रामहृदय, रामायण माहात्म्य, रामदर्शनादि विविध परिशिष्ट विधूषित [वि. मू. २८] ३०–००

२१ **वाल्मीकिरामायणम्** । गोविन्दराजीय (भूषण)–रामानुजी–तनिश्लोकी–माहेश्वरतीर्थीय व्याख्याचतुष्टय । पत्रात्मक ६०८–००

२२ **वाल्मीकिरामायणम्** । भाषा टीका । पत्राकार १००–००

२३ **वाल्मीकिरामायणम्** । १–७ भाग । डॉ० पी० एल० वैद्य सम्पादित [बड़ोदा संस्करण] ९२५–००

२४ **वाल्मीकिरामायणम्** । ज्वालाप्रसादमिश्र कृत पीयूषधारा हिन्दी टीका सहित । पत्रात्मक ९०–००

२५ **वाल्मीकिरामायणम्** । सातवलेकरकृत हिन्दी टीका सहित । (१–८ जिल्द) १३५–००
बालकाण्ड १५–००, अयोध्याकाण्ड-पूर्वार्द्ध १५–००, अरण्यकाण्ड १५–००
किष्किन्धाकाण्ड १५–००, सुन्दरकाण्ड १५–००, युद्धकाण्ड १–२ भाग ३०–००
उत्तरकाण्ड १५–००

२६ **वाल्मीकिरामायणम्** । सुन्दरकाण्डम् । हिन्दी टीका सहित ४–००

२७ **वाल्मीकीयरामायणकोश** । डॉ० रामकुमार राय ३०–००

२८ **संक्षिप्तवाल्मीकिरामायणम्** । भागवतप्रसाद सिंह १०–००

२९ **हरिवंशपुराण** । श्रीरामशर्मा कृत हिन्दी अनुवाद सहित । १–२ भाग २०–००

३० **हरिवंशपुराण का सांस्कृतिक विवेचन** । श्रीमती बीणापाणि पाण्डे ४–५०

भुवनवाणी ट्रस्ट, लखनऊ द्वारा प्रकाशित अनमोल पुस्तकें—

(सभी ग्रन्थों में मूलपाठ तदवत् उच्चारणों सहित नागरी लिपि में और अनुवाद हिन्दी में है)

१ **महाभारत (मलयालम)** ४०–००

२ **कृत्तिवास रामायण** (आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्धा, सुन्दर)(बंगला) २५–००

३ **कृत्तिवास (लंकाकाण्ड)** १५–००

४ **रामावतारचरित (कश्मीरी)** २०–००

५ **ज़ादे सफ़र (अरबी)** १२–००

६ **सिर्रे अक्बर (फ़ारसी)** २०–००

७ **शरीफ़ज़ाद (उर्दू)** ५–००

८ **श्रीजपुजी–सुखमनी साहब** ५–००

९ **श्रीराम विजय (मराठी)** ४५–००

१० **तिरुक्कुरल (तामिल)** २०–००

११ **भानुभक्त रामायण (नेपाली)** २०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्यौतिष-ग्रन्थाः

१ अङ्क विद्या । गोपेशकुमार ओझा ५-००
२ अध्यात्मज्योतिषविचार । ह० ने० काटवे १५-००
३ अहिबलचक्रम् । सान्वय 'शिशुतोषिणी' हिन्दी टीका सहित
[इस चक्र के द्वारा भूमि में गड़े धन तथा हड्डी आदि दूषित पदार्थों का ज्ञान होता है ।] सम्पादक—ज्यो० आ० विन्ध्येश्वरी प्रसाद [वि. सं. १९] १-५०
४ उत्तरकालामृत । जगन्नाथ भसीन १२-००
५ करणप्रकाशः । श्री ब्रह्मदेव विरचित । सम्पा० म० म० सुधाकर द्विवेदी १०-००
६ कर्मविपाकः । हिन्दी टीका सहित ८-००
७. कालचक्र की उत्पत्ति एवं उत्पन्न क्रमों का विकास । राजेश्वर झा ६-००
८ केरलीय ज्यौतिष । शुक्राचार्य कृत । डॉ० गौरीशङ्करकपूर । भाषा ८-००
९ खेटकौतुकम् । भावबोधिनी हिन्दी टीका सहित ०-४०
१० गणित का इतिहास । डॉ० ब्रजमोहन ९-५०
११ गणित का इतिहास । सुधाकर द्विवेदी कृत ५-००
१२ गणितीयकोष । डॉ० ब्रजमोहन १५-००
१३ गुरुविचार । ह० ने० काटवे । अनु० विद्याधर जोहरापुरकर ४-५०
१४ गोचरविचार । ह० ने० काटवे ४-५०
१५ गोचरविचार । जगन्नाथ भसीन ६-००
१६ गोलपरिभाषा । शंकुज्याक्षेत्रविचारसहिता । तत्त्वप्रकाशिकाविवृतिविभूषिता ०-७५
१७ गोलीय रेखागणित । श्री मीठालाल ओझा कृत २-००
१८ गौरीजातक । 'विमला' हिन्दी टीका सहित ०-७५
१९ ग्रह और रत्न-ग्रह और रोग । राजस्थानी १-५०
२० ग्रहगणित मीमांसा । मुरारिलाल शर्मा विरचित ५-५०
२१ ग्रहगोचरः । शिशुतोषिणी हिन्दी टीका सहित १-००
२२ ग्रहनक्षत्र । डॉ० सम्पूर्णानन्द १५-२५
२३ ग्रहलाघवम् । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । पं० सीताराम झा १५-००
२४ चन्द्रकलानाड़ी । ६-००
२५ चन्द्रविचार । ह० ने काटवे । अनु० विद्याधर जोहरापुरकर ४-००
२६ चमत्कारचिन्तामणिः । सान्वय-भावबोधिनी हिन्दी टीका सहित १-००
२७ चलनकलन-प्रश्नोत्तर-विवरणम् । श्री अच्युतानन्द झा २-५०
२८ चुने हुए ज्योतिष योग । जगन्नाथ भसीन ६-००
२९ जन्मकुण्डलीपत्र । (बेल-बूटेदार) सैकड़ा १२-५०, प्रत्येक पत्र ०-१५
३० जन्मपत्रदीपकः । सोदाहरण सटिप्पण हिन्दी टीका सहित ३-५०
३१ जातकदीपक । बालमुकुन्द त्रिपाठी ३५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३२ **जातकालङ्कारः** । हिन्दी टीका सहित २-००
३३ **जैमिनीयसूत्रम्** । सोदाहरण सोपपत्तिक–संस्कृत-हिन्दी टीका ६-००
३४ **ज्योतिर्विज्ञानम्** । धूलिपाल अर्क सोमयाजी विरचित ९-३०
३५ **ज्योतिष कल्पद्रुम : मुहूर्तपारिजात** । पण्डित सोहनलाल व्यास
सम्पादक—पं० सीताराम झा ज्यौतिषाचार्य १५-००
३६ **ज्योतिष की पहुँच** । फ्रेड हॉयल । अनु० डॉ० गोरखप्रसाद १०-००
३७ **ज्योतिष-प्रश्नफल-गणना** । (ज्योतिश्चक्रम्-राशिचक्रम्) 'विमला'
हिन्दी व्याख्योपेता । श्रीदयाशङ्कर उपाध्याय [वि. सं. ९३] २-००
३८ **ताजिकनीलकण्ठी** । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । सम्पा० पं० गङ्गाधर मिश्र १५-००
३९ **दशाफल रहस्य** । जगन्नाथ भसीन १०-००
४० **दृक्सिद्धपञ्चाङ्गनिर्माणपद्धतिः** । गणपतिदेव विरचित ६-००
४१ **देवकेरलम्** । (चन्द्रकलानाडी) अच्युत प्रणीत । १-२ जिल्द १२-५०
४२ **दैवज्ञाभरणम्** । श्रीनिवासशास्त्री ६-२५
४३ **धराचक्रः** । सुबोधिनी हिन्दी टीका सहित ०-५०
४४ **नरपतिजयचर्या** । श्रीगणेदत्त पाठक कृत सुबोधिनी संस्कृत-हिन्दी व्याख्या १५-००
४५ **पञ्चसिद्धान्तिका** । वाराहमिहिरविरचिता । सुधाकर द्विवेदी कृत संस्कृत
व्याख्या तथा जी० थीबो कृत आंग्लानुवादेन च सहिता । तथ्यामेव सम्पादिता ५०-००
४६ **पञ्चाङ्गविज्ञानम्** । हिन्दी टीका सहित १-००
४७ **पत्रीमार्गप्रदीपिका** । वर्षदीपक । हिन्दी टीका सहित ३-६०
४८ **पद्मकोषः** । 'भावबोधिनी' सरल हिन्दी टीका सहित ०-७५
४९ **परबलयक्षेत्रम्** । श्रीमुरलीधरठक्कुरकृतम् । प्रश्नपत्रसहितम् १-००
५० **पाश्चात्यज्योतिष** । जगन्नाथ भसीन ६-००
५१ **प्रतापोदय सरल ज्योतिष-विज्ञान** । पं० मदनमोहन जैन १-५०
५२ **प्रतिभाबोधकम्** । श्रीगङ्गाधरमिश्रकृत टीका सहित १-८०
५३ **प्रश्नचन्द्रप्रकाश** । चन्द्रदत्त पन्त ७-००
५४ **प्रश्नदर्पण** । भाषा ६-००
५५ **प्रश्नाङ्कचूडामणिः ध्वजादिप्रश्नगणनाश्च** । ०-५०
५६ **प्रस्तारचक्रम्** । श्रीशिवप्रणीत । कमला हिन्दी टीका सहित ०-३०
५७ **फलदीपिका** । हिन्दी अनुवाद सहित । गोपेशकुमार ओझा २२-००
५८ **फलितमार्त्तण्ड** । मुकुन्दवल्लभ १६-००
५९ **फलित सूत्र** । जगन्नाथ भसीन ६-००
६० **बालबोधज्योतिषसारसमुच्चयः** । शास्त्री यज्ञदत्त दुर्गाशङ्कर ठक्कर १०-००
६१ **बीजगणितम्** । बीजनवाङ्कुर व्याख्या सहित ३-७१
६२ **बुधविचार** । ह० ने० काटवे । अनुवादक—विद्याधर जोहरापुरकर ४-००
६३ **बृहज्जातक** । 'विमला' हिन्दी टीका सहित १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६४ **बृहज्ज्यौतिषसारः।** हिन्दी टीका, विशेषविवरण, विविध प्रकार के चक्र, सारणी आदि से सुसज्जित फलित का अभिनव ग्रन्थ। सम्पा० श्री वासुदेव गुप्त
[यह पुस्तक फलित ज्योतिष के दृष्ट, अदृष्ट दोनों अङ्गों की पूर्ण और सम्यक् विवेचना एवं हिन्दी टीका से संयुक्त होने के कारण अत्यन्त हो उपादेय है। विविध प्रकार के चक्रों, सारणियों आदि के दे देने से यह पुस्तक ज्योतिष शास्त्र के सामान्य ज्ञान रखने वालों एवं प्रत्येक गृहस्थों के लिए संग्रहणीय है।]
[वि. सं. ४४] १०-००

६५ **बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्।** 'सुधा' हिन्दी टीका सहित। देवचन्द्र झा ३०-००

६६ **बृहदवकहड़ाचक्रम्।** 'बालबोधिनी' हिंन्दी टीका सहित। डॉ० कलानाथ झा
[सुसंपादन करके इसकी अत्यन्त सरल सुबोध परीक्षोपयोगी व्याख्या प्रस्तुत की गई है।]
[वि. सं. १५४] २-००

६७ **बृहत्संहिता।** पं॰ श्री अच्युतानन्द झा कृत नवीनोदाहरणोपपंत्ति युक्त 'विमला' हिन्दी टीका सहित
[इस व्याख्या द्वारा ग्रन्थ की दुरूह ग्रंथियों का वस्तुतः सम्यक् समुन्मोचन बन पड़ा है। हिन्दी व्याख्या के साथ-साथ वराहमिहिराचार्य की उक्ति का ग्रन्थान्तर से समन्वय करने का भी भगीरथप्रयत्न किया गया है, जो महत्त्वपूर्व विषय है।]
[वि. सं. ४१] ३०-००

६८ **बृहद्वास्तुमाला।** रामनिहोरद्विवेदी कृत। हिन्दी टीका सहित [चौ. सु. १२] ८-००

६९ **बृहद् विमान शास्त्र।** भरद्वाज प्रणीत। जी. आर. जोशयेर १५०-००

७० **ब्रह्मसिद्धान्त।** मधुसूदनओझाविरचित। गिरिधरशर्माचतुर्वेदी कृत व्याख्या १२-००

७१ **भङ्गीविभङ्गीकरणम्।** रङ्गनाथभट्टविरचित २-००

७२ **भावदीपिका।** भास्कराचार्य कृत। गौरीशंकर कपूर ६-००

७३ **भारतीय कुण्डली विज्ञान।** हिन्दी। मीठालाल ओझा १२-००

७४ **भारतीय ज्यौतिष।** नेमिचन्द्रशास्त्री कृत। हिन्दी १८-००

७५ **भारतीय ज्यौतिष।** शङ्कर बालकृष्ण दीक्षित। अनु० शिवनाथ झारखण्डी ८-००

७६ **भारतीय ज्यौतिष का इतिहास।** डॉ० गोरखप्रसाद ६-००

७७ **भावकुतूहलम्।** सान्वय हिन्दी टीका सहित १०-००

७८ **भावप्रकाशः।** जीवनाथ दैवज्ञ प्रणीत। पं० पुष्पलाल झा कृत हिन्दी व्याख्या २-५०

७९ **भावफलाध्यायः।** (लोमेशोक्त-भृगुसंहितोक्त-युग्मसंस्करण) सुबोधिनी-विमला हिन्दी टीका विभूषित ०-७५

८० **भावविचार।** ह० ने० काटवे। अनु० विद्याधर जोहरापुरकर ४-५०

८१ **भावेशविचार।** ह० ने० काटवे। अनु० विद्याधर जोहरापुरकर ५-००

८२ **भुवनदीपक।** विज्ञानभाष्य। शुकदेव चतुर्वेदी ८-००

८३ **भृगुसंहितापद्धति।** भगवानदास मीतल २५-००

८४ **भृगुसंहिता फलित प्रकाश।** राजेश दीक्षित ७२-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८५ **मङ्गलविचार** । ह० ने० काटवे । अनु० विद्याधर जोहरापुरकर ४–००

८६ **महिलायें और ज्यौतिष** । परमानन्द शर्मा । भाषा ६–००

८७ **मानसागरी** । 'सुबोधिनी' हिन्दी व्याख्या, उपपत्ति, विशेष विवरणादि सहित । सम्पा० मधुकान्त झा
[अपनी व्याख्या में इन्होंने जातक का फलादेश तथा जन्मपत्र-निर्माणविधि का सांगोपांग सोदाहरण, सोपपत्तिक विवरण दे दिया है जिससे यह संस्करण साधारण विद्वान् के लिए भी सुगम और संग्रहणीय हो गया है ।]
[वि० सं. १०१] २०–००

८८ **मुहूर्तकल्पद्रुमः** । विठ्ठलदीक्षितविरचित २–००

८९ **मुहूर्तचिन्तामणिः** । 'पीयूषधारा' संस्कृत टीका सहित । केदारदत्त जोशी १५–००

९० **मुहूर्तचिन्तामणिः** । मणिप्रभा हिन्दीटीका सहित । सम्पा०–कपिलेश्वरशास्त्री १०–००

९१ **मुहूर्तपारिजात : ज्यौतिषकल्पद्रुमः** । पं० सोहनलाल व्यास । सम्पा०–पं० सीताराम झा [वि. रा. १३८]
[हिन्दी भाषा के माध्यम से साधारण पढ़े लिखे को भी शुभ मुहूर्तों का ज्ञान कराने के लिये यह ग्रन्थ अद्वितीय है । ज्यौतिषशास्त्र के विद्वान् श्री पं० सीताराम झा जी ने इस ग्रन्थ का सम्पादन कर सोने में सुगन्धि भर दी है ।] १५–००

९२ **मूकप्रश्न विचार** । शुकदेव चतुर्वेदी ८–००

९३ **यन्त्रराज** । (यन्त्रशिरोमणि) महेन्द्र विरचित । सव्याख्या ३–५०

९४ **योग-विचार** । ह० ने० काटवे । अनु० ल० दा० नवरे । १–७ भाग २०–५०

९५ **योगिनीजातकम्** । सोदाहरण 'विमला' हिन्दी टीका सहित ०–७५

९६ **रत्नगर्भाचक्रम्** । 'हरिप्रिया' हिन्दीटीकोदाहरणसंवलित १–००

९७ **रत्नज्यौतिषविज्ञान** । पं० राजशेखर ५–७५

९८ **रत्नपरिचय** । जगन्नाथ भसीन ६–००

९९ **रत्नप्रदीप** । डॉ० गौरीशंकर कपूर २५–००

१०० **रत्नविज्ञान** । (Gemology) डॉ० राधाकृष्ण पराशर २०–००

१०१ **रमलनवरत्नम्** । विमला हिन्दी टीका । पं० अच्युतानन्द झा ७–००

१०२ **रविविचार** । ह० ने० काटवे । अनु० विद्याधर जोहरापुरकर ४–००

१०३ **राश्यभिधानकल्पलता** । मुकुन्दवल्लभ ५–००

१०४ **राहु-केतु-ग्रहण विचार** । ह० ने० काटवे । अनु० विद्याधर जोहरापुरकर ६–००

१०५ **रेखागणितम्** । एकादश-द्वादशाध्यायौ ३–००

१०६ **रेखागणित-षष्ठाध्याय-परिभाषारूप-पञ्चमाध्याय-सहितः** । सम्पा०–पं० मुरलीधर ठक्कुर ०–७५

१०७ **रेखागणित** । पं० सीताराम झा । ५–६ अध्याय ०–५०, ११–१२ अध्याय १–२५

१०८ **रोग, मृत्यु और ज्यौतिष** । पं० राजशेखर दैवज्ञ ४–७५

१०९ **लग्नचन्द्रिका** । हिन्दी टीका सहित ५–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२१० **लग्नरत्नाकरः** । (बृहल्लग्नजातकम्) शिशुबोधिनी हिन्दी टीका सहित १–००
२११ **लग्नवाराही** । वाराहमिहिरकृता । तत्त्वप्रकाशिका हिन्दी टीका सहित ०–५०
२१२ **लघुपाराशरी-मध्यपाराशरी** । सोदाहरण-सुबोधिनी-संस्कृत-हिन्दी टीकासहित ३–००
२१३ **लघुसंग्रहः** । हिन्दी टीका सहित ७–००
२१४ **लीलावती** । नवीन वैज्ञानिक 'तत्त्वप्रकाशिका' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, उपपत्ति, उदाहरण, परिशिष्ट सहित । व्याख्याकारः—श्रीलखणलाल झा
[प्रकरण के अन्त में परिशिष्ट देकर नवीन गणित का भी तुलनात्मक विवेचन किया गया है तथा परीक्षा में आने वाले द्रष्टव्य विषयों को तोड़-मरोड़ करके प्रश्नोत्तर के रूप में 'अभ्यासार्थ प्रश्न' के नाम से लिख दिया गया है । छात्रों के आधुनिक अध्ययन तथा अध्यापकों के अध्यापन सौकर्य की दृष्टि से यह अभिनव सर्वोत्तम संस्करण है] [वि. सं. ६२] १०–००
२१५ **वनमाला** । दैवज्ञश्रीजीवनाथझाविरचित । सान्वय 'अमृतधारा' हिन्दी टीका १–००
२१६ **वर्षफलविचार** । परमानन्द शर्मा ६–००
२१७ **वास्तवचन्द्रशृङ्गोन्नतिसाधनम्** । संस्कृत टीका सहित ३–५०
२१८ **वास्तुमाला (बृहत्)** । पं० रामनिहोर द्विवेदी संगृहीत, हिन्दी भाषानुवाद, टिप्पणी समलंकृत [चौ. सु. १२] ८–००
२१९ **वास्तुरत्नावली** । सोदाहरण सुबोधिनी संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ४–००
२२० **विंशोत्तरी दशा साधन** । सम्पा० सत्यानन्द २–००
२२१ **व्यवसाय का चुनाव और आपकी आर्थिक स्थिति** । जगन्नाथ भसीन ६–००
२२२ **व्यापाररत्न** । (तेजी-मन्दी का अनुपम ग्रन्थ) हरदेवशर्मा द्विवेदी ८–००
२२३ **व्यावहारिक ज्योतिषतत्त्व** । 'तत्त्वप्रभा' हिन्दी व्याख्या सहित । पं० लखणलाल झा १२–००
२२४ **शनिविचार** । ह० ने० काटवे । अनु० विद्याधर जोहरापुरकर ४–००
२२५ **शिवजातकः** । श्रीशिवनिर्मित । शिशुतोषिणी हिन्दी टीका सहित ०–३०
२२६ **शिशुबोधः** । सान्वय-विमला हिन्दी टीका बृहत् परिशिष्ट सहित १–००
२२७ **शीघ्रबोधः** । 'सरला' व्याख्या । पं० अनूपमिश्र ३–००
२२८ **शुक्रविचार** । ह० ने० काटवे । अनु० विद्याधर जोहरापुरकर ४–००
२२९ **शुभाशुभग्रहनिर्णयविचार** । ह० ने० काटवे । अनु० विद्याधर जोहरापुरकर ५–००
२३० **षट्पञ्चाशिका** । भट्टोत्पलकृत संस्कृत टीका 'विभा' हिन्दी टीका सहित २–००
२३१ **सचित्र-ज्योतिषशिक्षा** । बी० एल० ठाकुर । ज्ञान खण्ड ९–००
गणित खण्ड १–२ भाग ३५–०० फलित खण्ड १–३ भाग ६९–००
२३२ **सप्त-ऋषि-नाड़ी** । जगन्नाथ भसीन । आंग्लभाषा में १५–००
२३३ **सरलत्रिकोणमिति** । पं० बलदेवमिश्र कृत ६–००
२३४ **सरलरेखागणितम्** । पं० विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी कृत । १–२ अध्याय २–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१३५ **सिद्धान्तशिरोमणिः** । नवीन वैज्ञानिक उपपत्ति सहित । 'प्रभा' नामक वासनासमलंकृत । टीकाकार—पं० मुरलीधर ठक्कुर । स्पष्टाधिकारान्त प्रथमभाग ८–००

१३६ **सिद्धान्तशिरोमणिः** । वासनाभाष्य-मारीचिभाष्य-दीपिका-शिखा संस्कृत हिन्दी टीका सहित । केदारनाथ जोशी । मध्यमाधिकारान्त ५–००
स्पष्टाधिकार-त्रिप्रश्नाधिकारात्मक २०–०० ग्रहगणिताध्यायः २८–००

१३७ **सुगमज्यौतिषप्रवेशिका** । गोपेशकुमार ओझा १०–००

१३८ **सुलभज्यौतिषज्ञान** । दैवज्ञ वासुदेव सदाशिव खानखोजे
[८५ वर्षों के ख्यातिप्राप्त विद्वान् लेखक ने भारतीय ज्यौतिष-विज्ञान को इस सरलतम रूप से लिखा है कि साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति भो फलित ज्यौतिष का मर्म समझ कर उसे व्यवहार में ला सकता है। लेखक की शैली अत्यन्त सरल, तर्कपूर्ण, व्यवस्थित और आडम्बरहीन है। भारत भर के ख्यातिप्राप्त दैवज्ञों ने मुक्तकण्ठ से इसकी प्रशंसा कर अपनी-अपनी सम्मतियाँ प्रदान की हैं; जो पुस्तक में छपी है।] [वि. रा. १३०] १६–००

१३९ **सूर्यग्रहणम्** । डॉ० कृष्णचन्द्र द्विवेदी विरचित १२–००

१४० **स्त्रीजातकविज्ञान** । पं० राजशेखर १–५०

१४१ **हस्तरेखामहाविज्ञान** । भारतीय योगी १०–००

१४२ **हिन्दू गणित शास्त्र का इतिहास** । अङ्कसंकेत और अङ्कगणित । विभूतिभूषणदत्त—अवधेशनारायण सिंह । अनुवादक—कृपाशङ्कर शुक्ल ५–००

१४३ **होराशास्त्रम्** । वाराहमिहिरकृत । अपूर्वार्थप्रदर्शिका संस्कृत व्याख्या सहित २५–००

छन्दःशास्त्र-ग्रन्थाः

१ **छन्दःकौमुदी** । ०–७५

२ **छन्दोमञ्जरी** । 'प्रभा'–'रुचिरा' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ६–००

३ **छन्दोविंशतिका** । विमला हिन्दी टीका सहित । [वि. सं० ४८]
[वाराणसी तथा बिहार की प्रथमा परीक्षा निर्धारित छन्दोविषयक ग्रन्थ ।] ०–७५

४ **पिङ्गलछन्दःसूत्रं** । (वैदिकच्छन्दः प्रकरणान्त) हलायुधवृत्तियुत-सटिप्पण कादम्बिनी हिन्दी टीका सहित १–५०

५ **पिङ्गलछन्दःशास्त्रम्** । भट्टहलायुधकृतवृत्ति तथा विस्तृत टीका सहित । जीर्ण ९–००

६ **प्राकृतपैङ्गलम्** । संस्कृतव्याख्यात्रयोपेतम् । हिन्दी टीका सहित ।
सम्पादक—डॉ० भोलाशंकर व्यास । १–२ भाग ३१–००

७ **वाग्वल्लभः** । दुःखभञ्जनकविकृतः । पं० देवीप्रसादकृत वरवर्णिनी टीकासहित ८–००

८ **वाणीभूषणम्** । दामोदरमिश्र कृत २–००

९ **वृत्तरत्नाकरः** । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ६–००

१० **वृत्तरत्नाकरः** । पञ्चिका व्याख्या सहित ३–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

११ **वृत्तरत्नाकरः** । केदारभट्ट । 'तात्पर्यटीका', 'सुकविहृदयानन्दिनी', 'छन्दोवृत्तिः' एवं 'पञ्चिका' टीकायुत । सम्पा० आर्येन्द्रशर्मा तथा खाण्डेराव देशपाण्डे १६–००

१२ **वृत्तिवार्तिक** । अप्पयदीक्षित । डॉ० ब्रह्ममित्रअवस्थी ८–००

१३ **श्रुतबोधः** । (अश्लीलांशवर्जितः) प्रथम परीक्षोपयोगी विमला नामक संस्कृत व्याख्या, सोदाहरण हिन्दी टीका सहित (छात्रोपयोगी संस्करण) [वि. सं. ३४] ०–७५

काव्य-ग्रन्थाः

१ **अभिधावृत्तिमातृका** । मुकुलभट्ट कृत । डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी [वि. सं. १६५] ७–००

२ **अमरुकशतकम्** । अमरुककविकृत । रसिकसंजीवनी संस्कृत टीका तथा श्री प्रद्युम्न पाण्डेय कृत हिन्दी टीका सहित ५–००

३ **आर्यासप्तशती** । पर्वतीयश्रीविश्वेश्वरपण्डितप्रणीत ग्रन्थकर्तृकृतव्याख्यासंवलित १५–००

४ **(हिन्दी) आर्यासप्तशती** । गोवर्धनाचार्यविरचित । संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—पं० रमाकान्त त्रिपाठी २०–००
[प्रस्तुत ग्रन्थ संस्कृत में अकारादिक्रम से रचा गया अनेकविधि श्रृङ्गार तथा नीतिसूक्तियों का भण्डार है जिसे अन्वयमुख सरल संस्कृत-हिन्दी व्याखयाओं और विमर्श के साथ प्रकाशित किया गया है] [वि. सं. १२७] २०–००

५ **ऋतुसंहारः** । 'प्रभा' हिन्दी टीका सहित
[इसकी हिन्दी टीका में किन-किन ऋतुओं का किस प्रकार उपभोग किया जाता है इसका सुस्पष्ट विवेचन किया गया है ।] [वि. सं. १६] १–००

६ **औचित्यविचारचर्चा** । महाकवि क्षेमेन्द्र कृत । 'प्रभा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । सम्पा० आचार्य व्रजमोहन शर्मा
[भाव तथा विषय के अनुरूप ही व्याख्या की भाषा अत्यन्त सरल है । बृहदाकार भूमिका में 'औचित्य' के स्वरूप आदि पर उदात्त विवेचन के साथ प्रतिष्ठापक आचार्यों का ऐतिहासिक क्रम से परिचय, औचित्य पर पाश्चात्य आलोचकों की दृष्टि तथा क्षेमेन्द्र के जीवन और कृतित्व आदि विषयों पर पाण्डित्यपूर्ण उपयोगी विचार हैं ।] [वि. सं. ११८] ७–००

७ **कथासरित्सागरः** । सोमवेदभट्टविरचित । केदारनाथशर्मा सारस्वत कृत हिन्दी टीका सहित । प्र० २२–००, द्वि० १२–५०, तृ० ३५–००, १–३ भाग सम्पूर्ण ६९–५०

८ **करुणाकटाक्षलहरी** । हिन्दी टीका सहित । रसिकविहारीजोशी २०–००

९ **कविकण्ठाभरण** । क्षेमेन्द्र कृत हिन्दी अनुवाद सहित २–००

१० **कविकल्पद्रुमः** । बोपदेव विरचित ६–००

११ **कविरहस्यम्** । डॉ० गङ्गानाथ झा कृत । हिन्दी २–००

१२ **कामायनी** । जयशङ्करप्रसाद । संस्कृतानुवाद । भगवानदत्त शास्त्री ५–००

१३ **कालिदास के सुभाषित** । डॉ० भगवतशरण उपाध्याय ७–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१४ **कालिदासग्रन्थावली** । सम्पादक—रेवाप्रसाद द्विवेदी । छात्र संस्करण ११–५०
पुस्तकालय संस्करण ५४–००

१५ **कालिदासग्रन्थावली** । सीताराम चतुर्वेदी २०–००

१६ **काव्यप्रबन्धः** । (काव्यपदार्थत्रिवृत्ति-कविसमयादिनिरूपणात्मक) शास्त्री, आचार्य तथा बी० ए०, एम० ए० के परिक्षार्थियों के लिए अत्युत्तम निबन्धग्रन्थ [इस पुस्तक में काव्य, वाक्य, शब्दार्थ, तात्पर्यार्थ, शक्ति, संकेतग्रह, जातिवाद, लक्षणा, व्यंजना, ध्वनि, रस, स्थायिभावभेद, गुणालंकारभेद तथा श्लेषालंकार-भेदों का निरूपण करके कवित्व का लक्षण तथा महाकवि कालिदास, भवभूति, भारवि, शूद्रक, माघ, दण्डी, बाण आदि कवियों की संक्षिप्त जीवनियों तथा उनकी कृतियों पर प्रकाश डाला गया है] [वि. सं. २३] २–००

१७ **काव्यमञ्जूषा** । ६–००

१८ **किरातार्जुनीयम्** । 'घण्टापथ' 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । सम्पूर्ण ८–००

१९ **किरातार्जुनीयम्** । 'प्रबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका । समीर शर्मा । प्रथम सर्ग [गोरखपुर विश्वविद्यालय की बी० ए० परीक्षा में निर्धारित इस प्रथम सर्ग की अत्यन्त स्पष्ट, सरल एवं सुबोध व्याख्या प्रस्तुत की गयी है । भूमिका में महाकवि भारवि का समय, पूर्ववर्ती आचार्यों की परम्परा उसमें भारवि का स्थान, देश-काल, विषय-वस्तु आदि का मार्मिक परिचय दिया गया है । परीक्षार्थियों के लिये यह संस्करण सबसे उत्तम है ।] [वि० सं० १४६] ३–००

२० **किरातार्जुनीयम्** । 'विजया' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, परीक्षोपयोगी टिप्पणी युक्त व्याख्याकार–डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी । द्वितीय सर्ग १–५०, [चौ. सु.] ३–६ सर्ग ५–००

२१ **किरातार्जुनीयम्** । विश्वविद्यालय पाठ्य स्वीकृत १३वाँ सर्ग । सान्वय संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समास, व्याकरण, कोश, हिन्दी पद्य, भावार्थ आदि सहित । व्याख्याकार—श्री उमेशचन्द्र पाण्डेय [वि. सं. ८६] २–५०

२२ **किरातार्जुनीय : आलोचनात्मक अध्ययन** । प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल २–००

२३ **कुट्टनीमतम्** । (शम्भलीमतकाव्यं) दामोदरगुप्तविरचित । हिन्दीटीका सहित १५–००

२४ **कुमारसंभवम्** । मल्लिनाथकृत सञ्जीविनी एवं 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित । हिन्दी व्याख्याकार—श्री प्रद्युम्न पाण्डेय । [इस संस्करण को पढ़कर संस्कृत का विशिष्ट ज्ञान न रखने वाले व्यक्ति भी अनुवाद की मधुरता से मूल काव्य का रसास्वादन करने में समर्थ हो सकेंगे । ग्रन्थ के आदि में महाकवि की काव्य-कलात्मक विस्तृत समीक्षा भी प्रस्तुत कर दी गई है ।] [वि. सं. १०५] सम्पूर्ण १५–००

२५ **कुमारसम्भवम्** । 'चन्द्रकला' 'विमला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम् । प्रत्येक श्लोक का अन्वय, परीक्षोपयोगि व्याख्या, समास, व्युत्पत्ति, भावार्थ भाषार्थ आदि विविध विषयों से अलंकृत । व्याख्याकार–पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी
प्रथम सर्ग २–५०, १–२ सर्ग ४–००, तृतीय सर्ग २–००
[चौ. सु. ७] चतुर्थ सर्ग २–००, पञ्चम सर्ग २–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२६ **कृष्णस्यशान्तिप्रयासः** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीव्याख्याद्वयोपेतः ।
[श्री बालकेशवप्रसाद मिश्र विरचित इसकी संस्कृत-हिन्दी व्याख्या ससन्दर्भ प्रस्तुत की गई है। शास्त्री के विद्यार्थी अल्पायासेन स्वयं इसका अध्ययन कर सकते हैं। इसकी समालोचनात्मक भूमिका, कथासार भी छात्रों के लिए अधिक उपयोगी है।] [वि. सं. १२०] ३-००

२७ **क्षेमेन्द्रलघुकाव्यसंग्रहः** । डॉ० आर्येन्द्रशर्मा सम्पादित २१-३५

२८ **(हिन्दी) गाथासप्तशती** । हिन्दी व्याख्या सहित ।
व्याख्याकार—श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ।
[पारिवारिक जीवन की तीव्र अनुभूतियों की झाँकी के साथ नायक-नायिकादि की चेष्टाओं और मनोभावों का विशद विवरण] [वि. सं. ५५] १०-००

२९ **गीतगिरीशम्** । (रागकाव्यम्) कविनृपतिरामभट्ट । सम्पा० प्रभातशास्त्री ६-००

३० **गीतगोविन्दकाव्यम्** । श्रीजयदेवविरचितम् । हिन्दी टीका सहित ३-००

३१ **गीतगोविन्दम्** । 'संजीवनी' 'जयन्ती' 'पदद्योतनिका' संस्कृतटीकात्रयोपेतः १८-७०

३२ **गीतपीतवसनम्** । श्रीश्यामरागकवि । सम्पा० प्रभातशास्त्री ५-००

३३ **घटकर्परकाव्यम्** । 'मनोरमा' हिन्दी व्याख्या । आचार्य रामपाल शास्त्री १-५०

३४ **चारुचर्या** । महाकवि श्री क्षेमेन्द्र विरचित । मूल श्लोक तथा 'प्रकाश' हिन्दी अनुवाद सहित । व्याख्याकार—श्री देवदत्त शास्त्री [वि. सं. ९२] १-२५

३५ **चारुचर्या** । (भारतीय सदाचार और शिष्टाचार) सम्पा० श्री देवदत्त शास्त्री
[श्रीक्षेमेन्द्र विरचित चारुचर्या का यह हिन्दी रूपान्तर है। यह ग्रन्थ भारतीय सदाचार एवं शिष्टाचार का कोष है। मनुष्य जिन आचरणों और व्यवहारों से सामाजिक अभ्युदय प्राप्त कर जीवन का लक्ष्य प्राप्त करता है—उनका एकत्र समुच्चय इस पुस्तक में है।] [वि. रा. ४४] २-५०

३६ **चित्रकाव्यकौस्तुभम्** । रामरूपपाठक कृत । प्रेमलता शर्मा १२-००

३७ **चौरपञ्चाशिका** । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित । व्रजेशचन्द्र श्रीवास्तव ४-५०

३८ **जानकीहरणम्** । (१-२ सर्ग) हिन्दी व्याख्याकार—डॉ० यदुनन्दन मिश्र ८-००

३९ **दर्पदलन** । क्षेमेन्द्र । हिन्दी टीका सहित । डॉ० ब्रह्ममित्र अवस्थी २०-००

४० **धम्मपदं** । श्रीकन्छेदीलालगुप्त कृत 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित [चौ.सु. १५०] ७-००

४१ **नलोपाख्यानम्** । आंग्लानुवाद सहित । अनु० मोनियर विलियम्स ५०-००

४२ **नलोपाख्यानम्** । श्री काशीनाथ द्विवेदी कृत 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित ४-००

४३ **नारायणशतकम्** । विद्याधरकृत । पीताम्बर प्रणीत व्याख्या सहित ४-००

४४ **नारायणीयम्** । आंग्लानुवाद सहित २५-००

४५ **नैषधीयचरितम्** । 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । आचार्य शेषराजशर्मा रेग्मी । प्रथम सर्ग ५-००, १-३ सर्ग १०-००, ४-५ सर्ग ६-०० [चौ. सु. १३] १-५ सर्ग १५-००, १-९ सर्ग २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४६ **नैषधीयचरितम्** । मल्लिनाथ कृत 'जीवातु' श्री हरगोविन्द शास्त्री कृत 'मणिप्रभा' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । सम्पूर्ण २४–००

४७ **नैषधीयचरितम्** । श्रीहर्षविरचित । नारायणी व्याख्या सहित ३५–००

४८ **नैषधमहाकाव्य : आलोचनात्मक अध्ययन** । प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल २–५०

४९ **नैषधपरिशीलन** । डॉ० चन्द्रिकाप्रसाद शुक्ल १५–००

५० **पण्डितराज-काव्य-संग्रहः** । जगन्नाथ विरचित । डॉ० आर्यैन्द्रशर्मा सम्पादित १३–३५

५१ **परमानन्दकाव्यम्** । सरदेसाई सम्पादित १८–००

५२ **पुष्पबाणविलासम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका । पं० शोभनाथ शास्त्री १–००

५३ **प्रतापविजयः** । ईशदत्त पाण्डेय । सम्पादक—प्रभातशास्त्री २–२५

५४ **प्रेमरसायनम्** । श्रीविश्वनाथपण्डितविरचित । सटीक १–५०

५५ **बुद्धचरितम्** । अश्वघोषकृतम् । हिन्दी अनुवाद सहित ।
अनुवादक—महन्तश्रीरामचन्द्रदासशास्त्री
[हिन्दी ज्ञाताओं को काव्यानन्द के साथ भगवान् बुद्ध के मार्मिक एवं करुण जीवनचरित द्वारा शान्तरस का आनन्द भी सुलभ कराने की दृष्टि से यह संस्करण प्रस्तुत है । इसमें हिन्दी टीका प्रवाहयुक्त तथा सरल एवं सरस है ।]
[वि. सं. ८२] १–२ भाग सम्पूर्ण ११–००

५६ **बुद्धभूषणम्** । बेलङ्कर सम्पादित ५–००

५७ **बोधिसत्त्वचरितम्** । सत्यव्रत शास्त्री १६–००

५८ **भट्टिकाव्यम्** । 'काव्यमर्मविमर्शिकाख्य' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम् ।
व्याख्याकार—श्रीगोपालशास्त्री 'दर्शनकेशरी'
[इस संस्करण की विशेषताएँ—मूल श्लोक के साथ अन्वय, परीक्षोपयोगि संस्कृत व्याख्या, हिन्दी, समास, कोश, तद्धित, कृदन्त, तिङन्त, वाच्य परिवर्तन आदि परीक्षोपयोगि सामग्री से सुसज्जित नवीन संशोधित संस्करण ।] [चौ. सु. १७]
१–४ सर्ग ७–००, ५–८ सर्ग ८–००, १४–२२ सर्ग ८–००

५९ **भर्तृहरिशतकत्रयम्** । सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या सहित ।
[मूल के साथ हिन्दी भावानुवाद, हिन्दी पद्यानुवाद भी प्रकाशित किया गया है । संस्कृत न जानने वाले व्यक्ति भी ग्रन्थों के मूल भावों को हृदयङ्गम कर आनन्द के भागी हो सकते हैं ।] ७–५०

६० **भामिनीविलासः** । पण्डितराजजगन्नाथकृत । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित
व्याख्याकार—श्री राधेश्याम मिश्र । अन्योक्तिविलास मात्र ६–००, सम्पूर्ण १५–००

६१ **भारत-कथा** । रचयिता—म० म० गङ्गाधरशास्त्री । सान्वय 'बोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित ।
[मूलरामायण की तरह इस लघु पुस्तिका में सम्पूर्ण महाभारत की मूल कथा पूर्ण रूप से सुरक्षित है । प्रस्तुत संस्करण में छात्रों के लिये इसकी बहुत सरल संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्या मूल के साथ प्रकाशित की गई है] [वि. सं. ११४] २–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६२ **मलयमारुत** । डॉ० वी० राघवन सम्पादित । १–२ भाग १०–००
६३ **मूलरामायणम्** । प्रथमपरीक्षोपयोगि संस्कृत व्याख्या हिन्दी भाषानुवाद सहित [चौ. सु. २६] १–७५
६४ **मूलरामायणम् महाभारतीयशीलनिरूपणाध्यायसहितम्** । सुधाव्याख्या २–५०
६५ **मेघदूतम्** । सान्वय 'चन्द्रकला' संस्कृत हिन्दी टीका सहित । व्याख्याकार—आचार्य पं० श्रीशेषराजशर्मा रेग्मी [वि. सं. १११] [इस संस्करण में प्रत्येक श्लोक की—अन्वय, सरल संस्कृत व्याख्या संस्कृत सरलार्थ, हिन्दी अनुवाद तथा टिप्पणी—इस क्रम से विशद व्याख्या दी गई है। टिप्पणी में समास-व्युत्पत्ति-कोष-अलंकार आदि का यथावश्यक निर्देश अत्युपयोगी है। उपोद्घात के ४० पृष्ठों में कालिदास के जन्म-काल-जीवन तथा रचनाओं का पुस्तक समीक्षण, तदनन्तर प्रकृत काव्य का शास्त्रीय दृष्टि से निकर्षण, कालिदास की प्रशस्तियां, मेघदूत के सुभाषित, भौगोलिक शब्दों का संक्षिप्त विवरण, संस्कृत 'उदाहरण' में पौराणिक आधार का उद्धरण, पद्यानुक्रमणी आदि शीर्षकों के अन्तर्गत अतिशय छात्रोपयोगी सामग्री दी गई है।] १०–००
६६ **मेघदूतम्** । 'संस्कृत श्लोक' 'पद्यात्मक' हिन्दी टीका सहित । पं० सुधाकर मिश्र कृत पद्यानुवाद तथा शेषराजशर्मा रेग्मी कृत हिन्दीभाषानुवाद [वि.सं. १५९] १०–००
६७ **मेघदूतम्** । आलोचनात्मक अध्ययन । प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल ३–००
६८ **मोहन मञ्जरी** । जे० वी० पल्लेवार ५–००
६९ **यादवाभ्युदयः** । वेदान्तदेशिकविरचित । संस्कृत टीका एवं तमिल अनुवाद ४०–००
७० **युधिष्ठिरविजयम्** । महाकविश्रीवासुदेवविरचित । 'प्रकाश' संस्कृत हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—प्रो० ब्रजेशचन्द्र श्रीवास्तव [महाकवि वासुदेव विरचित इस महाकाव्य की तुलना विविधवैचित्र्य से परिपूर्ण संस्कृत साहित्य में विरल है। इस ग्रन्थ की श्रेष्ठता अपने कुछ निजी मौलिक तत्त्वों के कारण है। इसमें महाभारत के पीयूष-पयोधि को अष्टसर्गीय काव्यरूप गागर में भर देने का कार्य बहुत ही स्तुत्य है। संस्कृत साहित्य में यह एक अनूठा चित्र काव्य है, जिसमें शब्द, अर्थ तथा भावों के चित्रों की झाँकी एक साथ मिलती है। ऐसे काव्य ग्रन्थ को प्राञ्जल हिन्दी टीका के साथ प्रकाशित करने का उद्देश्य एकमात्र यही है कि सभी संस्कृत-हिन्दी प्रेमी पाठक इसका रस ग्रहण कर सकें।] [वि. सं. १५२] २०–००
७१ **रघुवंशमहाकाव्यम्** । मल्लिनाथ कृत 'सञ्जीविनी' टीका सहित । सम्पूर्ण १५–००
७२ **रघुवंशमहाकाव्यम्** । 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—आचार्य पं० शेषराजशर्मा रेग्मी [चौ. सु. २] प्रथम सर्ग २–२५
७३ **रघुवंशमहाकाव्यम्** । 'विमला' 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, परीक्षोपयोगी टिप्पणी आदि विविध सामग्रीयुक्त । व्याख्याकार–श्रीकृष्णमणित्रिपाठी [चौ. सु. ९]
द्वितीय सर्ग २–००, तृतीय सर्ग २–००, चतुर्थ सर्ग २–००, पञ्चम सर्ग २–००
६–७ सर्ग ४–००, १३–१४ सर्ग ४–००, पृथक-पृथक प्रत्येक सर्ग २–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७४ **रघुवंशदर्पणम्** । डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी सम्पादित ४०-००
७५ **रम्भाशुकसम्वादः** । हिन्दी टीका सहित १-००
७६ **रसचन्द्रिका** । मधुसूदनकवीन्द्रकृत । डॉ० एस० एन० घोषाल शास्त्री सम्पा० २६-००
७७ **रसचन्द्रिका** । विश्वेश्वरपाण्डेयविनिर्मित १-५०
७८ **रसराज** । कविवर मतिराम विरचित । आचार्य रामजी मिश्र रचित सरस, सरल प्रामाणिक हिन्दी व्याख्या, समालोचनादिसहित । [हिन्दी साहित्य का यह प्राचीन अथ च क्लिष्ट लक्षणग्रन्थ है जिस पर अत्यन्त सरस, सरल तथा प्रामाणिक व्याख्या प्रस्तुत की गई है । समालोचनात्मक विस्तृत भूमिका आदि के सहित यह संस्करण साहित्यानुरागियों तथा अध्येताओं के लिये परमापादेय है ।] [वि. रा. ३३] १०-००
७९ **राक्षसकाव्यम्** । नूतनकिशोरकेलि व्याख्या सहित ०-४०
८० **राघवनैषधीयम्** । संस्कृत-हिन्दी व्याख्या । पं० रामकुबेर मालवीय ५-००
८१ **राघवपाण्डवीयम्** । कविराजपण्डितविरचित । सरस, सरल, विवेचनात्मक 'सुबोधिनी' 'सरला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित व्याख्याकार—पं० दामोदर झा [प्रस्तुत महाकाव्य के रचयिता पण्डित कविराज ने इस ग्रन्थ में पाण्डव पक्ष का वर्णन राम के पक्ष के वर्णन से मिला कर तथा कौरव पक्ष का वर्णन रावण-पक्ष के वर्णन से मिलाकर दोनों का समन्वय रोचक ढंग से किया है । श्लेष-काव्यों में यह महाकाव्य सर्वोपरि है । इसके काठिन्य लोक प्रसिद्ध है । सरल सुबोध राष्ट्रभाषा में अनुदित यह ग्रन्थ प्रथम बार प्रकाश में आया है । भूमिका में ग्रन्थ के रचनाकाल, ग्रन्थकार, पात्र-परिचय आदि के बारे में अभिनव विचार सामग्री प्रस्तुत की गयी है] [वि. सं. १२८] २०-००
८२ **राजतरंगिणी** । कल्हणकृत । भाषा । डॉ० रघुनाथ सिंह । १-३ भाग ३००-००
८३ **राजतरङ्गिणी** । श्रीजोनराज । प्राञ्जल हिन्दी अनुवाद तथा विस्तृत ऐतिहासिक विमर्शात्मक व्याख्या सहित । व्याख्याकार—डॉ० रघुनाथ सिंह १००-००
८४ **राजतरङ्गिणी** । जोनराज जैन, श्रीधर तथा शुक विरचित । श्रीकण्ठकौल सम्पादित । मूलमात्र १-२ भाग ८४-००
८५ **राजतरङ्गिणी** । कल्हण कृत । विश्वबन्धु सम्पादित । १-२ भाग ८४-००
८६ **राजतरंगिणी** । श्री शुक विरचित । डॉ० रघुनाथ सिंह । भाषा टीका १००-००
८७ **राजतरंगिणी** । श्री वरजैन कृत । डॉ० रघुनाथसिंह । भाषा टीका १-२ भाग २५०-००
८८ **राजतरङ्गिणीकोश** । डॉ० रामकुमार राय । कल्हण कृत राजतरङ्गिणी का यह कोश हिन्दी में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया गया है, इसमें राजतरङ्गिणी में आये सभी नामों एवं विषयों की ससन्दर्भ व्याख्या प्रस्तुत की गई है । [वि. रा. १०९] २२-००
८९ **रामकृष्णविलोमकाव्यम्** । दैवज्ञसूर्यकविकृत । डॉ० कामेश्वरनाथ मिश्र कृत हिन्दी टीका सहित । २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

९० **रामगीतगोविन्दम्**। रागकाव्यम्। जयदेव। हनुमानत्रिपाठी कृत टीका संवलितम्। सम्पा० प्रभात शास्त्री १०-००
९१ **रामवनगमनम्**। 'सुधा' 'इन्दुमती' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित १-५०
९२ **रामशतकम्**। श्रीसोमेश्वरदेवकृत। 'हृदयमञ्जरी' तथा 'बोलबोधिनी' टीका १५-००
९३ **रामाभ्युदय-यात्रा**। सम्पादक—आचार्य रुद्रप्रसाद अवस्थी कृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित।
[वाराणसी की शास्त्री प्रथमखण्ड परीक्षा के अनिवार्य प्रथमपत्र में निर्धारित]
[वि. सं. ११९] ७-००
९४ **रुक्मिणीहरणं महाकाव्यम्**। काशीनाथशर्मा द्विवेदी विरचित २५-००
९५ **वरदराजस्तवः**। स्वोपज्ञवृत्तिसहित। 'कृष्णा' हिन्दी व्याख्या सहित १०-००
९६ **विक्रमाङ्कदेवचरितम्**। 'सुचारुसुरभि' हिन्दी टीका सहित। प्रथम सर्ग ४-००
९७ **विक्रमाङ्कदेवचरितम्**। विल्हण विरचित। 'रमा' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित।
१-१८ सर्ग १-३ भाग में सम्पूर्ण २२-००
९८ **वीरोत्साह-वर्धनम्**। पं० श्री सुरेन्द्रचन्द्र त्रिपाठी
[भारत-सीमा पर चीनी आक्रमण के प्रसङ्ग पर छात्रों तथा सैनिकों में उत्साह एवं वीर भावों के उद्बोधन के लिये संस्कृत पद्यों में लिखी यह पुस्तिका अनुपम है।] [वि सं. ९४] ०-७५
९९ **वैराग्यशतकम्**। भर्तृहरिविरचित। सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या एवं हिन्दी पद्यानुवाद सहित [वि. सं. ६१] २-५०
१०० **व्यवहारविज्ञानम्**। हरिहर झा सम्पादित। १-२ भाग २-००
१०१ **शकुन्तलामहाकाव्य**। (हिन्दी) भगवानदास शास्त्री 'राकेश' ७-००
१०२ **शिवकथामृतं महाकाव्यम्**। म० म० पं० छज्जूराम शास्त्री। प्रकाशशास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित १६-००
१०३ **शिवतत्त्वरत्नाकरः**। केलदिबसवभूपालविरचित। १-२ भाग ४९-७५
१०४ **शिशुपालवधम्**। (माघकाव्यम्) मल्लिनाथ कृत 'सर्वङ्कषा' व्याख्या श्री हरगोविन्दशास्त्री कृत 'मणिप्रभा' हिन्दी व्याख्या सहित।
[इस ग्रन्थ में अनेकार्थक श्लोक अधिक हैं जो परीक्षा में पूछे जाते हैं; विविध प्रकार से उनकी व्याख्या कर दी गयी है और विमर्श में उन ग्रन्थियों को और भी खोल दिया गया है। ग्रन्थ में आई हुई पौराणिक कथायें, प्रत्येक सर्ग के संक्षिप्त कथासार, महाकवि के इतिवृत्ति तथा काव्य-महाकाव्यादि के लक्षण भेद आदि से सुसज्जित यह संस्करण मौलिक संस्करण के रूप में हो गया है।] [वि. सं. ८] १-६ सर्ग ८-००, सम्पूर्ण २०-००
१०५ **शिशुपालवधम्**। 'बालबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। व्याख्याकार—श्री रामजीलाल शर्मा [चौ. सु. २५]
[इस संस्करण में प्रत्येक श्लोक का सन्दर्भ, अन्वय, सरल संस्कृत व्याख्या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समास-व्याकरण, कोश, अलङ्कार, छन्दादि का स्पष्ट विवेचन करते हुए विशद व्याख्या दी गई है। टिप्पणी में—संदिग्ध एवं शास्त्रार्थ के स्थलों का विशद-विवेचन, पौराणिक कथाओं का स्पष्ट उल्लेख प्रस्तुत किया गया है। भूमिका में काव्य के प्रयोजन, कारण एवं भेदों का उल्लेख करते हुए महाकवि माघ के जीवन-चरित तथा काव्य सौष्ठव का तथा शिशुपालवधमहाकाव्य की विशेषताओं का विशद विवेचन किया गया है। आज तक शिशुपालवध पर इतनी विशद एवं स्पष्ट व्याख्या नहीं हुई है। अतः यह संस्करण छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।] परीक्षोपयोगी १–४ सर्ग १०–००, चतुर्थ सर्ग मात्र २–५०

१०६ **शिशुपालवध: आलोचनात्मक अध्ययन**। प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल २–५०

१०७ **शृंगारतिलकम्**। मधुसूदनशास्त्री कृत संस्कृत-हिन्दी टीका सहित १–६०

१०८ **श्रीकृष्णचरितामृतमहाकाव्यम्**। हिन्दी भाषानुवाद सहित।
रचयिता—कृष्णप्रसाद शर्मा 'घिमिरे' ३०–००

१०९ **श्रीगान्धिचरितम्**। श्रीब्रह्मानन्दशुक्ल विरचित संस्कृत-हिन्दी टीका सहित २–५०

११० **श्रीयुगलशतदलम्**। सत्यव्रत शर्मा 'सुजाग' शास्त्री कृत ४०–००

१११ **श्रीसंस्कृतवाणीसार्तनादविज्ञापना-त्रिंशती**। स्वामी माधवचैतन्य भारतीय कृत। श्री कृष्णानन्द ब्रह्मचारी कृत हिन्दी भावार्थ सहित १–००

११२ **सन्देशरासक**। (अपभ्रंशकाव्य) कवि अब्दुल रहमान विरचित।
डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी सम्पादित १७–००

११३ **संस्कृत काव्य कलिका**। डॉ० आद्याप्रसादमिश्र सम्पादित
[इस पुस्तक में प्रतिज्ञायौगन्धरायण के साथ-साथ महाराज रघु तथा राजकुमार अज के परम-पावन एवं उदात्त चरित्र वर्णित हैं। इसमें उनके अलौकिक तेज, पराक्रम तथा संस्कृतिमूलक आचार आदि के भी दिव्य दर्शन होते हैं।] [यू. पी. इण्टर के लिए पाठ्य-स्वीकृत] १–००

११४ **संस्कृत-काव्य-संग्रहः**। डॉ० विश्वनाथ भट्टाचार्य–रामगोपाल मिश्र सम्पादित १–७५

११५ **संस्कृत-वाङ्मय-परिचयः**। वेद से लेकर २०वीं सदी तक के संस्कृत साहित्य के ग्रन्थों का उद्‌गम, काल, इतिहास, रचयिताओं के संक्षिप्त इतिवृत्ति दिये गये हैं [वि.. सं. १३] ३–००

११६ **संस्कृत-सौरभम्**। (सचित्र : कक्षा ६ से ८ के लिए) पं० करुणापति त्रिपाठी एवं डॉ० सुभाषचन्द्र तनेजा १–३ भाग ४–५०

११७ **समयमातृका**। हिन्दी व्याख्याकार—प्रो० रमाशंकर तिवारी। वेश्याओं, कुट्टिनियों तथा विटों से सम्पत्ति रक्षा के हेतु लिखी गई क्षेमेन्द्र की यह कृति उपदेशात्मक हास्य-व्यङ्ग्य काव्यों में उत्तम है। मूल के साथ सुबोध हिन्दी व्याख्या तथा अपेक्षित स्थलों पर टिप्पणी भी दी गई है।] [वि. सं. १४३] ५–००

११८ **सहृदयानन्दकाव्यम्**। कृष्णानन्दविरचित। श्री वाचस्पति द्विवेदी कृत 'प्रकाश' हिन्दी टीका युक्त
[इस महाकाव्य में महाराज नल के जन्म से लेकर दमयन्ती से पुनर्मिलन तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की कथा आबद्ध है। इसकी हिन्दी व्याख्या में नवीन भावयोजना, कवित्वपूर्ण उक्तियाँ, कल्पना की प्रौढता, भाषा की प्रञ्जलता एवं सरलता पदे पदे प्रतिलक्षित है।] [वि. सं. १४८] ६—००

११९ **सीताचरितम्** । डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी २०—००

१२० **सीतारामविहारकाव्यम्** । ओर्गंष्टिवंशवर्धनलक्ष्मणाध्वरिकृत ५—३५

१२१ **सुरजनचरितम्** । डॉ० चन्द्रधर शर्मा सम्पादित । हिन्दी अनुवाद सहित २०—००

१२२ **सुवृत्ततिलकम्** । क्षेमेन्द्र विरचित । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या युक्त ५—००

१२३ **सुरथचरितम्** । (महाकाव्य) पं० क्षेमधारी सिंह शर्मा । सम्पा० तेजनाथ झा ५—००

१२४ **सूर्यशतकम्** । 'कला' हिन्दी टीका एवं विस्तृत भूमिकादि सहित [अत्यन्त सरल तथा व्यवस्थित हिन्दी भाषा में व्याख्या तथा टिप्पणियों में पौराणिक अन्तःकथाएँ आदि विषय स्पष्ट किए गए हैं। विचारपूर्ण विशद भूमिका में भी कवि तथा काव्य से सम्बन्धित गवेषणापूर्ण अनल्प सामग्री प्रस्तुत की गई है।] [वि. सं. १०६] ३-५०

१२५ **सौन्दरानन्दकाव्य** । अश्वघोषकृत । हिन्दी अनुवादक—सूर्यनारायणचौधरी १०—००

१२६ **सौन्दरानन्द : साहित्यिक एवं दार्शनिक गवेषणा** । डॉ० ब्रह्मचारी ब्रजमोहन पाण्डेय 'नलिन' [चौ. रा. १४] १५—००

१२७ **स्तुतिकुसुमाञ्जलिः** । काश्मीरकजगद्धारभट्टविरचित । 'लघुपञ्जिका' तथा 'प्रेममकरन्द' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित २०—००

१२८ **स्वामीश्रीविवेकानन्दचरितमहाकाव्यम्** । पं० श्रीत्र्यम्बक भण्डारकर कृत २०—००

१२९ **हंससन्देशः** । संस्कृत टीका सहित ४—००

गद्यकाव्य-ग्रन्थाः

१ **अभिनवकथानिकुञ्जः** । सम्पा० शिवदत्तशर्मा चतुर्वेदी ८—००

२ **अभिलेखमाला** । 'रमा' हिन्दी टीका सहित । व्याख्याकार—झा-बन्धु [इस पुस्तक में १—रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख, २—समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भलेख, ३—कुमारगुप्त के मन्दसौर शिलालेख, ४—स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ शिलालेख, ५—पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल शिलालेख, ६—महाराजचन्द्र के मिहरौली शिलालेख, ७—महाराज यशोवर्मा के शिलालेख और ८—बीसल देव के देहली-शिवालिक शिलालेख संगृहीत हैं। इन शिलालेखों के सटिप्पण हिन्दी अनुवाद के साथ-साथ इनके ऐतिहासिक महत्त्व साहित्यिक वैशिष्ट्य का विवेचन भी प्रस्तुत किया गया है।] संशोधित द्वितीय संस्करण [वि. सं. ७९] ८—००

३ **अवन्तिकुमारियाँ** । श्री देवदत्त शास्त्री [इस पुस्तक में तीन अवन्तिकुमारियों (अवन्तिसुन्दरी, मालविका, सरस्वती) के जीवन की मर्मस्पर्शी कहानियों के बीच लेखक ने उस युग की सांस्कृतिक,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धार्मिक एवं नैतिक स्थितियों का बड़ा ही सुन्दर गवेषणात्मक चित्र प्रस्तुत किया है ।] [वि. रा. ३८] ३-००

४ **अशोक के अभिलेख ।** डॉ० राजबली पाण्डेय ७५-००, १००-००

५ **उत्कीर्णलेखपञ्चकम् ।** 'रमा' हिन्दी टीका सहित । व्याख्याकार—झा-बन्धु [इस अभिनव संस्करण में १-रुद्रदामन का जूनागढ़-शिलालेख, २-महाराज चन्द्र का मिहरौली-स्तम्भलेख, ३-कुमार गुप्त का मन्दसौर-शिलालेख, ४-महाराज यशोवर्मा का शिलालेख और ५-वीसलदेव का देहली-शिवालिक स्तम्भलेख, इन संग्रहों का परीक्षा की दृष्टि से सटिप्पण हिन्दी अनुवाद भी किया गया है] [वि. सं. ७८] ४-००

६ **उपाख्यानमञ्जरी ।** (वेतालपञ्चविंशति की कथाओं का संग्रह) १-५०

७ **कथारत्नाकर ।** वाक् कन्वे । प्रथम भाग १५-००, द्वितीय २५-००, सम्पूर्ण ४०-००

८ **कलाविलासिनी वासवदत्ता ।** देवदत्तशास्त्री [महाराज उदयन और महारानी वासवदत्ता की कलाविलासिताओं में भोग और योग का पूर्ण समन्वय है । इसी पौराणिक विषय का राष्ट्रभाषा हिन्दी में विशद विवेचन इस पुस्तक में किया गया है ।] [वि. रा. ३०] ३-५०

९ **कादम्बरी ।** 'चन्द्रकला' 'विद्योतिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका । पं० कृष्णमोहन शास्त्री सम्पादित । पूर्वार्द्ध ३०-००, उत्तरार्द्ध २०-००

१० **कादम्बरी ।** पूर्वार्द्ध । संस्कृत टीका हिन्दी अनुवाद एवं परीक्षोपयोगी नोट्स सहित । सम्पा० प्रो० श्रीनिवास शास्त्री एवं महेशचन्द्र भारतीय २०-००

११ **कादम्बरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन ।** डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल [यह ग्रन्थ सम्पूर्ण कादम्बरी का व्यवस्थित आलोचनात्मक हिन्दी रूपान्तर है । कादम्बरी के विषय में इस एक ग्रन्थ को लेकर आप अन्य किसी ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं रखेंगे । साहित्यप्रेमियों को इस ग्रन्थ का अवश्य संग्रह करना चाहिए ।] [वि. रा. १४] २०-००

१२ **कादम्बरी : कथामुख ।** संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । प्रो० समीर शर्मा [कादम्बरी कथामुख का प्रस्तुत संस्करण विश्वविद्यालयों के छात्रों की कठिनाइयों को ध्यान में रखकर मूल के प्रतिपद की व्याख्या सरल संस्कृत हिन्दी में की गयी है । कठिन पारिभाषिक शब्दों के अर्थ तथा समासविग्रह टिप्पणी (विमर्श) में समझाया गया है । अन्त में प्रमुख कथाओं का सार संक्षेप में देकर भूमिका में परीक्षा में पूछे जाने वाले महत्त्वपूर्ण प्रश्न तथा उनके उत्तर भी दिये गये हैं । इस प्रकार यह अभिनव संस्करण छात्रों के लिये अधिक उपयोगी है] [वि० सं० १६०] ६-००

१३ **कादम्बरी : महाश्वेतावृत्तान्त ।** व्याख्याकार—प्रद्युम्न पाण्डेय [विभिन्न विश्वविद्यालयों की बी० ए० परीक्षा में निर्धारित इस पुस्तक में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कादम्बरी के महाश्वेतावृत्तान्त भाग की अत्यन्त स्पष्ट, सरस एवं सुबोध सटिप्पण हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है।] [वि. सं. ६५] १०–००

१४ **कादम्बरी : शुकनासोपदेश** । सान्वय संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समालोचनात्मक परीक्षोपयोगि भूमिकादि सहित । व्याख्याकर—झा-बन्धु
[इसमें समस्त शब्दों का विग्रह, अत्यन्त सरल संस्कृत में उसकी व्याख्या तथा प्राञ्जल एवं मुहावरेदार हिन्दी में अनुवाद किया गया है।] [वि. सं. ६४] ५–००

१५ **कादम्बरीकथासारः** । हिन्दी-अंग्रेजी व्याख्या, विस्तृत भूमिकादि सहित । सम्पा० एवं व्याख्याकार—डॉ० बलराम सदाशित अग्निहोत्री [वि. सं. १४५]
[विभिन्न विश्वविद्यालयों में पाठ्यस्वीकृत इस संकलन में कादम्बरी का सम्पूर्ण कथा-सूत्र पूर्ण सुरक्षित रखा गया है। व्याख्यान करने में यह ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थी उसके भावों तक पहुँच सकें, साथ ही कथा की धारा भी टूटने न पाए। अंग्रेजी के छात्रों के लिए इसकी अंग्रेजी व्याख्या ही पर्याप्त है] १५–००

१६ **काव्यप्रबन्धः** । (काव्यपदार्थविवृति-कविसमयादिनिरूपणात्मक) शास्त्री, आचार्य एवं बी० ए०, एम० ए० के परीक्षोपयोगी निबन्ध ग्रन्थ ।
[इस पुस्तक में काव्य, वाक्य, शब्दार्थ, तात्पर्यार्थ, शक्ति, संकेतग्रह, जातिवाद लक्षणा, व्यंजना, ध्वनि, रस, स्थायिभावभेद, गुणालंकारभेद तथा श्लेषालंकार-भेदों का निरूपण करके कवित्व का लक्षण तथा महाकवि कालिदास, भवभूति, भारवि, शूद्रक, माघ, दण्डी, बाण आदि कवियों की संक्षिप्त जीवनियों तथा उनकी कृतियों पर प्रकाश डाला गया है] [वि. सं. २३] २–००

१७ **कौमुदी-कथाकल्लोलिनी** । प्रो० रामशरण शास्त्री [वि. सं. ५४]
[इस ग्रन्थ में रोचक गद्य-कथानकों में कौमुदी के अच्संधि से उत्तरकृदन्त तक के प्रायः सभी उदाहरणों को देकर कथासाहित्य की नवीन विधि का अनूठा प्रयोग प्रस्तुत किया गया है। कथा का आधार कथासरित्सागर है। अन्त में छपे 'संस्कृत-हिन्दी-अभिधान' से ग्रन्थ अधिक उपयोगी हो गया है।] शीघ्रप्राप्य

१८ **चउप्पन्न महापुरिसचरियं** । सिरि सीलंकायरिय विरइयं । अमृतलाल मोहनलाल भोजक सम्पादित २१–००

१९ **चतुर्वेदिसंस्कृतरचनावलिः** । पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी २५–००

२० **चन्द्रप्रभाचरितम्** । म० म० श्री शङ्करलाल विरचित । 'पौर्णमासी' संस्कृत व्याख्या, परिशिष्ट नोट्स सहित
[इसकी शैली दण्डी एवं बाणभट्ट की कोटि की उत्कृष्ट हैं। अनेक परीक्षाओं में पाठ्य-स्वीकृत हो जाने के कारण इसकी सर्वबोध्य सुगम छात्रोपयोगी व्याख्या तथा नोट्स भी प्रस्तुत कर दी गयी है] [वि. सं. ८४] ६–००

२१ **चारुचर्या (भारतीय सदाचार)** हिन्दी रूपान्तरकार—श्री देवदत्त शास्त्री
[श्री क्षेमेन्द्र विरचित चारुचर्या का यह हिन्दी रूपान्तर है। यह ग्रन्थ भारतीय सदाचार एवं शिष्टाचार का कोष है। मनुष्य जिन आचरणों और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यवहारों से सामाजिक अभ्युदय प्राप्त कर जीवन का लक्ष्य प्राप्त करता है, उनका एक समुच्चय इस पुस्तक में है।] [वि. रा. ४४] २-५०

२२ **चिन्तन के नये चरण** । श्री देवदत्त शास्त्री
[इस पुस्तक के निबन्धों के सभी विषय सामान्य और व्यापक होने के साथ ही साहित्यकारों एवं अनुसन्धायकों के नित्य उपयोग के हैं।] [वि. रा. ३१] ८-००

२३ **टालस्टाय-कथासप्तकम्** । संस्कृत टिप्पणी सहित । भगीरथप्रसाद त्रिपाठी 'वागीशशास्त्री'
[जगत् विख्यात रूसी विद्वान् टालस्टाय विरचित कथासप्तक के संस्कृत में अनुदित इस ग्रन्थ के प्रकाशित होते ही उत्तर प्रदेश की सरकार ने रूपान्तरकार को पुरस्कृत किया है। इस ग्रन्थ की निम्नलिखित सातो कथायें शिक्षाप्रद और ओजवर्धक हैं—१. त्रयो योगिन्, २. ननु भवेद् विलम्बो नैवान्यः, ३. रसालविशालो गोधूमः, ४. अस्मत्तो मतिमत्तमा बालकाः, ४. कियती भूः ६. मूर्खराट् और ७. प्रश्नत्रयी। संस्कृत रूपान्तर की भाषा अत्यन्त सरल और सुबोध है] [वि. सं. १५६] ५-००

२४ **दशकुमारचरितम्** । पूर्वपीठिका । 'विमला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम् । व्याख्याकार—पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी [चौ. सु. २२] ४-००

२५ **दशकुमारचरितम्** । विस्तृत संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । सुबोधचन्द्र पन्त १०-००

२६ **द्वात्रिंशत्पुत्तलिकासिंहासनम्** । विस्तृत टीका सहित । जीर्ण ६-००

२७ **द्वासुपर्णा** । रामजीउपाध्याय विरचित ३-००

२८ **नलोपाख्यानम्** । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित । श्रीकाशीनाथ द्विवेदी ४-००

२९ **नवसाहसांकचरितम्** । परिमलपद्मगुप्त कृत । जितेन्द्रचन्द्र भारतीय कृत हिन्दी व्याख्या । विस्तृत भूमिका सहित [वि. सं. ६६]
[इसकी सारगर्भित हिन्दी व्याख्या में ग्रन्थ के भाव, भाषा, छन्द, शैली, रस, अलङ्कार आदि का विशद विवेचन किया गया है। प्रथम सर्ग २-००, सम्पूर्ण २०-००

३० **पञ्चतन्त्रम्** । 'सरला' हिन्दीटीकासहित । श्रीगोकुलदास गुप्त [वि. स. १७] १५-००
मित्रभेद (प्रथम तन्त्र) ४-००, मित्रसम्प्राप्ति (द्वितीय तन्त्र) २-००
काकोलूकीय (तृतीय तन्त्र) २-००, लब्धप्रणाशम् (चतुर्थ तन्त्र) २-००
अपरीक्षितकारक (पञ्चम तन्त्र) श्रीकृष्णमणित्रिपाठीकृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या ३-५०

३१ **पौराणिक कथाएँ** । श्री हृदयराम शर्मा । पुराणों में बिखरे हुए ७५ चरित्र नायकों का अपूर्व कथा संग्रह
[उदात्त चरित्रों से परिपूर्ण लगभग ७४ पौराणिक कथाओं को लोकरुचि के अनुकूल रूप देकर यह ग्रन्थ सम्पादित किया गया है। आबाल-वृद्ध सभी को इसमें पर्याप्त रुचिपूर्ण कहानी कहने-सुनने की प्रवृत्ति तुष्ट होकर उत्कृष्ट मनोरंजन भी होगा।] [वि. रा. ४५] ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३२ **प्राकृतपुष्करिणी** । हिन्दी अनुवाद सहित । डॉ० जगदीशचन्द्र जैन ।
[इस ग्रन्थ में ध्वन्यालोक, दशरूपक, सरस्वतीकण्ठाभरण, अलङ्कारसर्वस्व, काव्यप्रकाश, काव्यानुशासन आदि अलङ्कार ग्रन्थों में उद्धृत प्राकृत की सर्वश्रेष्ठ चुनी हुई ५०० गाथाओं का वर्णानुक्रम से सङ्कलन है] [वि. सं. ५९] २–५०

३३ **भारतीयरत्नचरितम्** । रुद्रदत्त पाठक १५–००

३४ **भोजप्रबन्धः** । 'राज्यश्री' हिन्दी टीका । डॉ० भोलाशङ्कर व्यास सम्पादित समालोचनात्मक भूमिका सहित [वि. सं. २१] ३–००

३५ **मन्दाकिनी** । डॉ० देवर्षि सनाढ्य । [वि. रा. २२]
[वाल्मीकि, कालिदास, भर्तृहरि, भारवि, श्रीहर्ष, मयूर, जयदेव आदि संस्कृत साहित्य के महान् मनीषियों की रचनाओं का हिन्दी-व्याख्यात्मक परिचय पाठकों को भारतीय साहित्य के प्रति निष्ठा की भावना उत्पन्न करेगा ।] १–२५

३६ **मन्दारमञ्जरी** । श्री विश्वेश्वरपाण्डेय विरचित । सव्याख्या १०–००

३७ **वासवदत्ता** । सुबन्धु विरचित । 'चपला' 'प्रबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका समालोचना, कवि की जीवनी आदि आधुनिक विषयों से सुसज्जित
[नवीनपद्धति के अनुकूल इसकी सरल सुबोध संस्कृत टीका में प्रति पद का पर्याय, कोश, अलंकार आदि देकर तदनुरूप हिन्दी टीका में भी पद पद का विस्तृत विवेचन किया गया है । इसकी गवेषणात्मक हिन्दी प्रस्तावना भी अध्ययन करने योग्य है । द्वितीय संस्करण] [वि. सं. २] ६–००

३८ **विदुलोपाख्यानम्** । लीला-विलास संस्कृत-हिन्दी टीका सहित १–५०

३९ **विद्वद्विभूति** । प्रो० श्री रामचन्द्र झा कृत २–५०

४० **विश्रुतचरितम्** । 'बालविबोधिनी' संस्कृत-हिन्दी टीका १–२५

४१ **वेतालपञ्चविंशतिः** । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित । पं० दामोदर झा
[बहुत ही सरल तथा प्रवाहमयी प्रस्तुत व्याख्या से मूल के प्रतिपद का अर्थ समझा जा सकता है । आबाल-वृद्ध सभी को इससे पर्याप्त रुचिपूर्ण कहानी कहने सुनने की प्रवृत्ति तुष्ट होकर उत्कृष्ट मनोरंजन भी होगा । ग्रन्थ के आदि भाग से सम्पूर्ण ग्रन्थ के पचीसों कथाओं का अविकल हिन्दी रूपान्तर छापा गया है । असंस्कृतयज्ञ भी राष्ट्रभाषा के माध्यम से महाराज विक्रम और वेताल के प्रश्नोत्तरात्मक संस्कृत कथाओं के रसास्वादन से अनिर्वचनीय आनन्द को प्राप्त करेगें ।] [वि. सं. १४४] १५–००

४२ **शकुन्तलाचरितम्** । वे० वरदाचार्य १–२५

४३ **शिवराजविजयः** । अम्बिकादत्तव्यास । वैजयन्ती हिन्दी व्याख्या । सम्पूर्ण २६–००
१–२ निश्वास ४–००, १–३ निश्वास ५–००, १–४ निश्वास ६–००
४–५ निश्वास ३–००, ५–८ निश्वास ८–००, ९–१२ निश्वास १२–००

४४ **शिवराजविजय कुञ्जिका** । पं० परमानन्द शास्त्री ४–००

४५ **शुकसप्ततिः** । 'विनोदिनी' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेता । श्री रमाकान्त त्रिपाठी १०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४६ **संस्कृत काव्य कथाएँ** । श्री बच्चा पाण्डेय ३-५०

४७ **संस्कृत-गद्य-पद्यसंग्रहः** । हिन्दी टीका सहित ६-००

४८ **संस्कृतगद्यमञ्जरी** । चन्द्रशेखर पाण्डेय कृत २-५०

४९ **संस्कृत गद्य लहरी** । श्री हरिहर झा । १-२ भाग ५-००

५० **स्मृति के हस्ताक्षर** । (अतिशय रोचक और प्रेरक संस्मरण) देवदत्त शास्त्री [वि. रा. ५६] ५-००

५१ **हरिश्चन्द्रोपाख्यानम्** । सायणभाष्यसहित । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित व्याख्याकार—उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' [वि. सं. ९९]
[इसमें मूल के बाद उसका सरल हिन्दी अनुवाद, तब सायणभाष्य और फिर विमर्शात्मक टिप्पणी भी दी गई है । ग्रंथ का कोई भी अंश ऐसा नहीं छूटा जिस पर विवेचनात्मक प्रकाश न डाला गया हो । विशद भूमिका में शास्त्रीय विषयों तथा ग्रंथ से सम्बन्धित पाण्डित्यपूर्ण विचार प्रदर्शित किए गए हैं ।] ३-००

५२ **हर्षचरितम्** । बाणभट्ट कृत । 'संकेत' तथा आचार्य जगन्नाथ पाठक कृत हिन्दी टीकाद्वय, विस्तृत प्रस्तावनादि सहित । [वि. सं. ३६]
[इस संस्करण की हिन्दी व्याख्या अपने आप में इतनी पूर्ण है कि स्वतन्त्र मौलिक रचना प्रतीत होती है। ग्रन्थ की विस्तृत भूमिका भी महाकवि का वंशवर्णन, कवि की आत्मकथा, पात्रालोचन, कादम्बरी का परिचय और उससे तुलना, कथासार, आलोचना आदि विविध परीक्षोपयोगी ज्ञातव्य विषयों से विभूषित है । परिवर्धित द्वितीय संस्करण ।] १-२ उच्छ्वास ५-००, सम्पूर्ण १५-०

५३ **हर्षचरितम्** । (पञ्चम उच्छ्वासः) सुधा-संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार-श्री शिवनाथ शर्मा पाण्डेय
[इसकी हिन्दी व्याख्या में ध्यान रखा गया है कि अनुवाद सरल एवं स्पष्ट हो तथा अनुच्छेद का वास्तविक स्वरूप लुप्त न होने पावे । 'विशेष' में व्याकरण एवं कोष-सम्बन्धी विषयों का तथा 'टिप्पणी' में सांस्कृतिक विषयों का भी निर्देश है। सुविशद भूमिका में परीक्षोपयोगी सभी शास्त्रीय विषयों पर व्यापक विवेचन है ।] [वि. सं. ८३] ५-००

५४ **हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन** । डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल ९-५०

५५ **हर्षचरितसार** । मिराशी । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित १०-००

५६ **हितोपदेश** । 'किरणावली' हिन्दी टीका सहित १२-५०

५७ **हितोपदेश-मित्रलाभः** । 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी-व्याख्योपेतः । व्याख्याकार--आचार्य श्रीशेषराज शर्मा 'रेग्मी' [चौ. सु. ४] ५-५०

अलङ्कारशास्त्र-ग्रन्थाः

१ **अरस्तू का काव्यशास्त्र** । डॉ० नरेन्द्र-महेन्द्र चतुर्वेदी १५-००

२ **अलङ्कारचिन्तामणि** । अजितसेन कृत । संस्कृत-हिन्दी अनुवाद सहित । डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री १८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ **अलङ्कारपीयूष** । डॉ० गङ्गासागर राय
[परीक्षा में प्रष्टव्य चुने हुए ५२ अलंकारों की मार्मिक हिन्दी व्याख्या के साथ इस ग्रन्थ का सम्पादन किया गया है। संस्कृत की मध्यमा, बी० ए० तथा एम० एम० के परीक्षार्थियों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है] [वि. सं. ७१] ३–००
४ **अलङ्कारप्रकाश** । डॉ० वीरेन्द्रकुमार वर्मा १–५०
५ **अलङ्कारप्रदीपः** । श्री विश्वेश्वरपाण्डेयनिर्मित ३–००
६ **अलङ्कारमुक्तावली** । श्रीविश्वेश्वरपाण्डेयनिर्मित २–५०
७ **अलङ्काररत्नाकरः** । शोभाकरमिश्रविरचित । देवधर सम्पादित ८–००
८ **अलङ्कारविद्योतनम्** । पं० कृष्णमाधव झा २–००
९ **अलङ्कारशास्त्र का इतिहास** । कृष्णकुमार २०–००
१० **अलङ्कारशेखरः** । केशवमिश्र । अनन्तराम शास्त्री कृत भूमिकादि सहित ५–००
११ **(हिन्दी) अलङ्कारसर्वस्व** । व्याख्याकार—आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी ३०–००
१२ **अलङ्कारसर्वस्वम्** । 'संजीवनी' संस्कृत व्याख्या सहित । सम्पादिका—कुमारी स० सु० जानकी । संशोधक—डॉ० वी० राघवन ३०–००, ३५–००
१३ **अलङ्कारसारमञ्जरी** । म० म० पण्डित श्रीगोपालशास्त्री 'दर्शनकेशरी' सान्वय परीक्षोपयोगि हिन्दी व्याख्या सहित । परिवर्द्धित द्वितीय संस्करण [चौ. सु. ११] २–००
१४ **औचित्यविचारचर्चा** । 'प्रभा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या । ब्रजमोहन झा
[भाव तथा विषय के अनुरूप ही व्याख्या की भाषा अत्यन्त सरल है । बृहदाकार भूमिका में 'औचित्य' के स्वरूप आदि पर उदात्त विवेचन के साथ प्रतिष्ठापक आचार्यों का ऐतिहासिक क्रम से परिचय, औचित्य पर पाश्चात्य आलोचकों की दृष्टि तथा क्षेमेन्द्र के जीवन और कृतित्व आदि विषयों पर पाण्डित्यपूर्ण उपयोगी विचार हैं ।] [वि. सं. ११८] ७–००
१५ **औचित्य सम्प्रदाय का हिन्दी काव्यशास्त्र पर प्रभाव** । डॉ० चन्द्रहंस पाठक [वि. रा. ११०] ३०–००
१६ **कविकल्पलता** । मूलमात्र २–५०
१७ **काव्यदीपिका** । 'सुधा'–'विमला'–संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेता । व्याख्याकार—डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी । अष्टमशिखा ३–००, सम्पूर्ण ७–००
१८ **काव्यप्रकाशः** । 'शशिकला' हिन्दी व्याख्या, टिप्पणी, समालोचनात्मक विस्तृत प्रस्तावनादि सहित । व्याख्याकार—डॉ० सत्यव्रत सिंह । [वि. सं. १५]
[संस्कृत-हिन्दी-अंगरेजी में समानरूप से इस ग्रन्थ की व्यापकता को देखकर तदनुकूल ही इसकी व्याख्या की गयी है। व्याख्या के साथ-साथ टिप्पणी (नोट्स) में वे सभी विषय दिये गये हैं जो वामनी, काव्यादर्श, ध्वन्यालोक-लोचन आदि में बिखरे पड़े हैं। परिष्कृत तृतीय शोधपूर्ण संस्करण ।]
१–३ उल्लास ५–००, दशमोल्लासमात्र ८–००, सम्पूर्ण २०–००
१९ **काव्यप्रकाशः** । वामनाचार्य झलकीकर प्रणीत व्याख्या सहित ३०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२० **काव्यप्रकाशः** । रसप्रकाश सहित । आंग्लानुवाद । डॉ० एस० एन० घोषाल शास्त्री । प्रथम भाग (१–५ उल्लास) ५०–००

२१ **काव्यप्रकाशः** । मम्मटकृत । आंग्लानुवाद सहित । म० म० डॉ० गङ्गानाथझा ४०–००

२२ **काव्यप्रकाशः** । दशमोल्लासः । 'प्रदीप' 'उद्योत' 'प्रभा' 'सङ्केत' एवं 'चन्द्रिका' टीका युक्त । हरदत्त शर्मा कृत आंग्लानुवाद सहित १०–००

२३ **काव्यप्रकाशः** । टीकात्रय 'बालचित्तानुरञ्जनी' 'सारबोधिनी' 'काव्यप्रकाशदर्पण' ३–६ उल्लास ६०–००

२४ **काव्यप्रकाश** । दीपिका टीका युक्त । २–३ भाग । द्वितीय १–५०, तृतीय १५–००

२५ **काव्यप्रकाश** । (प्रश्नोत्तर रूप में) डॉ० पारसनाथ द्विवेदी ४–००

२६ **काव्यप्रकाशखण्डनम्** । खुश्फहम् सिद्धिचन्द्रगणि विरचित ४–५०

२७ **काव्यप्रकाश-प्रकाश** । (प्रश्नोत्तर रूप में) प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल ५–००

२८ **काव्यप्रकाशरहस्यम्** । (काव्यप्रकाश-प्रश्नोत्तरी) ४–००

२९ **काव्यप्रकाशविवरणम्** । गोकुलनाथोपाध्यायविरचित । पञ्चमोल्लासपर्यन्त ८–००

३० **(हिन्दी) काव्यमीमांसा** । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—डॉ० गङ्गासागर राय । प्रस्तावना–आचार्य बलदेव उपाध्याय [वि. सं. १२१] [इस संस्करण में सटिप्पण मार्मिक हिन्दी व्याख्या की गई है । व्याख्या को अन्य सिद्धान्तों के परिवेश में उपस्थित कर तुलनात्मक तथा आलोचनात्मक रूप दिया गया है । प्रारम्भ की विस्तृत भूमिका में राजशेखर का समय पूर्ववर्ती आचार्यों की परम्परा तथा उसमें राजशेखर का स्थान, देश-काल, विषय-वस्तु आदि का मार्मिक परिचय दिया गया है। अन्त में कई परिशिष्ट भी हैं ।] १८–००

३१ **काव्यमीमांसा** । परीक्षोपयोगि 'विमला'-संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित । व्याख्याकार—पं० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी । [चौ. सु. २३] १–५ अध्याय ३–५०

३२ **काव्य-शास्त्र-दीपिका** । डॉ० विश्वनाथ भट्टाचार्य—रामगोविन्द मिश्र सम्पादित १–६०

३३ **काव्य समीक्षा** । डॉ० विक्रमादित्य राय १२–५०

३४ **काव्याङ्गनिर्णयः** । प्रो० जङ्गबहादुर मिश्र [वि. रा. १३] यन्त्रस्थ

३५ **काव्यादर्शः** । दण्डीविरचित । आचार्य रामचन्द्रमिश्र प्रणीत संस्कृत व्याख्या विमर्शाख्य हिन्दी भाष्य, समालोचनात्मक विस्तृत भूमिका विभूषित [सरल संस्कृत-हिन्दी भाष्य करके इसे सुबोध बनाया गया है । इस संस्करण की प्रस्तावना में लगभग ७० अलंकारशास्त्रियों का समय, रचनाएँ तथा उनकी विशेषताओं का वर्णन है । साथ ही अलंकारशास्त्र, अलंकारशब्दार्थ एवं अलंकारशास्त्र का क्रमविकास नामक प्रसंग भी प्रस्तावना में अपना विशिष्ट स्थान रखते है ।] [वि. सं. ३७] १०–००

३६ **(हिन्दी) काव्यालङ्कार** । महाकवि रुद्रट विरचित । [वि. सं. १३६] [नमिसाधु कृत संस्कृतटिप्पण, सविमर्श 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या, पाण्डित्यपूर्ण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रन्थालोचन, अलंकार-समीक्षण तथा शास्त्रीय विचारों से परिपूर्ण प्रस्तावना-वक्तव्य-परिशिष्ट आदि से सुसज्जित। हिन्दी व्याख्याकार—श्रीरामदेव शुक्ल १५–००

३७ **काव्यालङ्कारः**। भामह विरचित। देवेन्द्रनाथ शर्मा कृत हिन्दी टीका सहित १५–००

३८ **काव्यालंकारसारसंग्रह और लघुवृत्ति की व्याख्या**। डॉ० राममूर्ति त्रि० १५–००

३९ **काव्यालंकारसूत्रवृत्तिः**। 'कामधेनु' व्याख्या सहित 'विद्याधरी' हिन्दी टीका सहित। तृतीयाधिकरण २–०० सम्पूर्ण १०–००

४० **काव्यालङ्कारसूत्राणि**। 'काव्यालङ्कार कामधेनु' व्याख्या। डॉ० बेचन झा १५–००

४१ **काव्येन्दुप्रकाशः**। कामराज दीक्षित प्रणीत। बाबूलाल शुक्ल शास्त्री सम्पा० १०–००

४२ **कुवलयानन्दः**। डॉ० भोलाशङ्कर व्यास कृत 'अलङ्कारसुरभि' नामक सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या, टिप्पणी तथा अलङ्कारशास्त्रीय इतिहासात्मक बृहद् भूमिकादि सहित [इसकी व्याख्या में शास्त्रार्थस्थलों को सुबोध बनाने की अथक चेष्टा की गई है। कुवलयानन्दकार की परिभाषाओं, भेदों तथा उदाहरणों की जहाँ-जहाँ पण्डितराज ने रसगंगाधर में आलोचना की है, उन-उन स्थलों पर पण्डितराज के आक्षेपों को उपन्यस्त कर ग्रन्थ को अधिक उपयोगी बनाया गया है। आरम्भ में एक विस्तृत भूमिका है जिसमें प्रायः सभी प्राचीन अलंकारशास्त्रियों के मतों का समन्वय एवं समीक्षा आदि है।] [वि. सं. २४] २०–००

४३ **चन्द्रालोकः**। 'विमला'-'सुधा'-संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतः। व्याख्याकारः—डॉ० कृष्णमणि त्रिपाठी। पञ्चम मयूख ४–००, सम्पूर्ण ८–००

४४ **चन्द्रालोकः**। गागाभट्ट कृत 'राकागम' टीका सहित १०–००

४५ **चन्द्रालोकरहस्यम्**। चन्द्रालोक-प्रश्नोत्तरी। अभिनव नवीन संस्करण [इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि प्रश्न के उत्तर में अधीत विषय को संक्षिप्त रूप में लिखने की शैली और विषय का ठोस ज्ञान एक साथ ही होता चलता है।] [वि. सं. ३०] ४–०

४६ **चमत्कारचन्द्रिका**। डॉ० पी० एस० मोहन। सम्पा० डॉ० वी० राघवन ५४–००

४७ **(हिन्दी) चित्रमीमांसा**। धरानन्द विरचित 'सुधा' टीका सहित हिन्दी व्याख्याकार—आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र २५–००

४८ **चित्रमीमांसा**। अप्पयदीक्षित कृत। धरानन्द कृत सुधा संस्कृत व्याख्या सहित। सम्पा० कालिकाप्रसाद शुक्ल १६–००

४९ **दशरूपकम्**। धनञ्जयविरचित। **सावलोक**। 'चन्द्रकला' हिन्दीव्याख्योपेतम्। समालोचनात्मक प्रस्तावनादि विभूषित। व्याख्याकार–डॉ० भोलाशङ्कर व्यास [संस्कृत तथा हिन्दी दोनों व्याख्याएँ अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के अत्यधिक उपयोग की हुई हैं। विद्वान् व्याख्याकार ने शास्त्रार्थ के दुरूह स्थलों पर इतना सुविस्तृत और गम्भीर विवेचन किया है कि यह हिन्दी व्याख्या दशरूपक की एक स्वतन्त्र मौलिक रचना के रूप में परिणत हो गई है। ग्रन्थ के आरम्भ में अतिविस्तृत भूमिका देकर भारतीय नाटकों की उत्पत्ति, नाट्यशास्त्र का इति-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हास तथा नाटयशास्त्र के सिद्धान्तों को विस्तार से विश्लेषित किया गया है। यह कहना अत्युक्ति नहीं होगा कि इस रचना से हिन्दी साहित्य की भी अवश्यमेव श्रीवृद्धि हुई है। संस्कृत तथा हिन्दी के अधिकारी विद्वानों और सम्मेलन पत्रिका (प्रयाग), 'आज' (वाराणसी) तथा 'हिन्दीवाङ्मय' पत्र-पत्रिकाओं ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।] [वि. सं. ७] १६–००

५० **दशरूपक : आलोचनात्मक अध्ययन।** प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल ४–००

५१ **(हिन्दी) ध्वन्यालोक-लोचन।** 'लोचन' संस्कृत व्याख्या-'प्रकाश' विस्तृत हिन्दी टीका सहित। व्याख्याकार—आचार्य जगन्नाथ पाठक। [इस ग्रन्थ में 'ध्वन्यालोक' तथा उसकी टीका 'लोचन' का इतना सुन्दर अनुवाद दिया गया है कि छात्रों को ग्रन्थ लगाने में तनिक भी आयास नहीं होगा। गूढ ग्रन्थि और अस्पष्टता के निवारण के लिये सुविशद टिप्पणी के रूप में व्याख्यात्मक विवेचन देकर ग्रन्थाशय को सुस्पष्ट कर दिया गया है। सम्बद्ध विषयों के विचार से परिपूर्ण विशद भूमिका भी ग्रन्थ-गौरव के अनुकूल प्रस्तुत की गई है। मूल लोचन में संशोधन भी किया गया है। अपनी कोटि का यह सर्वप्रथम उपयोगी संस्करण है।] प्रथम उद्योत ७–००, प्रथम-द्वितीय उद्योत १६–००
[वि. सं. ९७] सम्पूर्ण ग्रन्थ ३०–००

५२ **ध्वन्यालोकः।** आलोचनात्मक अध्ययन। डॉ० पारसनाथ द्विवेदी ३–५०

५३ **ध्वन्यालोकरहस्यम्।** (ध्वन्यालोक-प्रश्नोत्तरी) पं० शोभित मिश्र ३–५०

५४ **ध्वन्यालोकसारः।** श्रीपुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी ४–००

५५ **ध्वनिसम्प्रदाय और उनके सिद्धान्त।** डॉ० भोलाशङ्कर व्यास २०–००

५६ **प्रतापरुद्रीय।** विद्यानाथप्रणीत। श्रीकुमारस्वामी कृत 'रत्नापणाख्य' व्याख्या १२–००

५७ **भारतीय साहित्य की रूपरेखा।** डॉ० भोलाशंकर व्यास [भारतीय संस्कृति तथा साहित्य की परम्परा लगभग पाँच-छः हजार वर्षों से निरन्तर प्रवहमान रूप में उपलब्ध होती है। इस संस्कृति और साहित्य की अट्टालिका के निर्माण का इतिवृत्त प्रस्तुत करना ही इस ग्रन्थ का मुख्य विषय है।] [वि. रा. ५३] १०–००

५८ **भावप्रकाशन।** शारदातनय। यदुगिरि यतिराज स्वामी। सम्पादक—के० एस० रामास्वामी ४५–००

५९ **रसगङ्गाधरः।** पण्डितराजजगन्नाथ। आचार्य बदरीनाथ कृत 'चन्द्रिका' संस्कृत टीका एवं आचार्य मदनमोहन झा कृत हिन्दी टीका सहित। [ध्वन्यालोक के सफल टीकाकार जगत् प्रसिद्ध कविशेखर आचार्य बदरीनाथ झा जी की अत्यन्त सरल सुबोध संस्कृत व्याख्या के साथ ही आचार्य मदन-मोहन शास्त्री कृत आधुनिक सुविस्तृत हिन्दी व्याख्या होने से तो सोने में सुगन्धि पैदा हो गयी है। यह हिन्दी व्याख्या केवल संस्कृत छात्रों के लिए ही नहीं प्रत्युत हिन्दी-अंगरेजी छात्रों की कठिनाइयों को विशेष ध्यान में रख कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रस्तुत की गयी है। इसकी समालोचनात्मक विशाल हिन्दी प्रस्तावना भी छात्रों के लिए अधिक उपादेय है। प्रथममाननपर्यन्त प्रथम भाग २०-००
द्वितीयानन का उत्प्रेक्षानिरूपणान्त द्वितीय भाग ३०-००
अतिशयोक्त्यलङ्कारादिसमाप्तिपर्यन्त तृतीय भाग ३०-००
[वि. सं. ११] सम्पूर्ण १-३ भाग ८०-००

६० **रसगङ्गाधर : एक समीक्षात्मक अध्ययन**। कुमारी चिन्मयी माहेश्वरी २५-००

६१ **रसगङ्गाधरहृदयम्**। श्री ज्ञानचन्द्र त्यागी एम० ए०
[इस पुस्तक में रसगङ्गाधर के सभी प्रश्नोत्तरों का संक्षेप में ही ज्ञान कराया गया है जिसके अभ्यास मात्र से परीक्षार्थी परीक्षा में अनायास सफलता प्राप्त करेंगे।] [वि. सं. ११०] ३-००

६२ **रसगङ्गाधर-रहस्यम्**। (प्रश्नोत्तरी)। पं० मदनमोहन झा २-००

६३ **रसचन्द्रिका**। श्रीविश्वेश्वरपाण्डेयनिर्मित १-५०

६४ **रसतरङ्गिणी**। भानुदत्तमिश्रप्रणीत। हिन्दी टीका सहित ९-००

६५ **रसार्णवसुधाकर**। सम्पादक—डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी ८-००

६६ **(हिन्दी) वक्रोक्तिजीवित**। विमर्शाख्य हिन्दीटीका सहित। राधेश्याममिश्र ३०-००

६७ **वाग्भटालङ्कारः**। सिंहदेवगणिविरचित संस्कृत टीका, डॉ० सत्यव्रत सिंह कृत अभिनव 'शशिकला' हिन्दी व्याख्या, विस्तृत समालोचनादि सहित।
[संस्कृत टीका के साथ विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या हो जाने से अब साहित्य शास्त्र के जिज्ञासुओं की साहित्यविषयक जिज्ञासा इस एक ही लघुकाय ग्रन्थ से पूर्ण हो सकती है।] [वि. सं. ३३] ३-००

६८ **(हिन्दी) व्यक्तिविवेक**। राजानकमहिमभट्टप्रणीत। राजानक रूय्यक कृत संस्कृत टीका सहित। हिन्दी व्याख्याकार—डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी २५-००

६९ **वीरतरंगिणी**। म० म० चित्रधरमिश्रविरचित। सम्पा० डा० त्रिलोकनाथ झा ३-००

७० **शब्दव्यापारविचारः**। डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी [वि. स. १६६] ४-००

७१ **शब्दशक्ति**। मम्मट के काव्यप्रकाश पर आधारित। डॉ० पुरुषोत्तमदास १३-००

७२ **श्रृङ्गारप्रकाशः**। भोजदेवविरचितः। प्रथमादिचतुर्दशप्रकाशात्मकः। सम्पादक—जी० आर० जोशयेर १-४ भाग ११०-००

७३ **श्रृङ्गारशतकम्**। भर्तृहरिकृत। सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या, पद्यानुवाद सहित [वि. स. ६७] २-५०

७४ **श्रृङ्गाररसारिणी**। म० म० चित्रधरविरचित। सम्पा० डा० त्रिलोकनाथ झा ४-००

७५ **संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास**। डॉ० सुशीलकुमार डे। १-२ भाग २५-००

७६ **संस्कृत साहित्य में शब्दालंकार**। डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी ४०-००

७७ **सरस्वतीकण्ठाभरणम्**। भोजकृत। रत्नेश्वरमिश्र कृत 'रत्नदर्पण' संस्कृत टीका, डॉ० कामेश्वरनाथ मिश्र कृत हिन्दी टीका। १-२ परिच्छेद ३५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७८ **साहित्यदर्पणः** । विमर्शाख्य 'शशिकला' हिन्दी व्याख्या, वक्तव्य, टिप्पणी, सुविस्तृत प्रस्तावना, दर्पण-समीक्षादि सहित । व्याख्याकार—डॉ० सत्यव्रत सिंह [इसकी विमर्शाख्य विशद व्याख्या द्वारा विषय की दुरूह ग्रन्थियों का वस्तुतः सम्यक् समुन्मोचन बन पड़ा । इसमें कहीं भी मूल की उपेक्षा हुई प्रतीत नहीं होती । आरम्भ में एक सौ पृष्ठों की विस्तृत भूमिका है जिसमें कुछ अलङ्कारों पर वैज्ञानिक शोधसम्बन्धी दृष्टिकोण, स्वरूप तथा परस्पर वैषम्य सङ्केतित हैं । सर्वश्रेष्ठ संस्करण] [वि. सं. २९]

१–६ परिच्छेद २०–००, ७–१० परिच्छेद १०–००, सम्पूर्ण ३०–००

७९ **साहित्यदर्पण** । (प्रश्नोत्तर में) डॉ० जयकिशन प्रसाद ५–००

८० **साहित्यदर्पणादर्शः** । (साहित्यदर्पण-प्रश्नोत्तरी) ४–००

८१ **साहित्य-निबन्धः** । आचार्य शोभितमिश्र २–००

८२ **साहित्य-शास्त्र-सार** । हंसराज अग्रवाल तथा श्रुतिकान्तजी [वि. रा. १०३] ४–५०

८३ **साहित्यालोक** । (हिन्दी) । आई० ए०, बी० ए० तथा बी० ए० आनर्स के छात्रों हेतु पाठ्यक्रमानुसार । डॉ० रानवंशसहाय 'हीरा' [चौ. रा. १] ७–५०

सुभाषित-ग्रन्थाः

१ **व्याससुभाषितसंग्रहः** । डॉ० लुड्विक् स्टेर्नबाक सम्पादित १२–००

२ **संस्कृतसूक्तिरत्नाकरः** । डॉ० रामजी उपाध्याय । हिन्दी अनुवाद सहित ४–००

३ **संस्कृतसूक्तिसागरः** । नारायण स्वामी कृत हिन्दी टीका सहित । सम्पा० सीताराम चतुर्वेदी २१–००

४ **समयोचितपद्यरत्नमालिका** । अकारादिक्रम से सुभाषित पद्यों का संग्रह १–५०

५ **सुभाषित सप्तशती** । डॉ० मङ्गलदेव शास्त्री २–५०

६ **सुभाषितत्रिंशतिः** । भर्तृहरिप्रणीत । रामचन्द्र कृत व्याख्या सहित ५–००

७ **सुभाषितावलिः** । वल्लभदेवसंगृहीत ३०–००

८ **सूक्तिमञ्जरी** । आचार्य बलदेव उपाध्याय

[अनेक साहित्यिक ग्रन्थ के रचयिता तथा सफल व्याख्याकार उपाध्याय जी ने इस ग्रन्थ में विशाल संस्कृत-साहित्य से सूक्तियाँ चुनकर उनकी इतनी चटपटी भाषा में ललित हिन्दी व्याख्या की है कि संस्कृत से अनभिज्ञ भी इस ग्रन्थ के अनुशीलन से अपनी रसपिपासा शान्त कर सकता है ।] [वि. सं. १४२] १०–००

९ **सूक्तिमुक्तावली** । गोकुलनाथोपाध्याय कृत । सम्पा० भूपनारायण झा ७–५०

१० **सूक्तिमुक्तावली** । भीमराज सत्यनारायण कृत हिन्दी टीका सहित १६–००

११ **सूक्तिशतकम्** । सम्पा० हरिहर झा । १–२ भाग २–००

१२ **सूक्तिसंग्रहः** । राक्षसकविकृत । 'प्राज्ञविनोदिनी' व्याख्या संवलित ०–३०

१३ **सूक्तिसागर** । भाषा । रमाशङ्कर गुप्त १०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चम्पू-ग्रन्थाः

१ **चम्पूभारतम्।** (भारतचम्पू) अनन्तभट्टविरचित। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, विस्तृत प्रस्तावनादि सहित। व्याख्याकार—आचार्य श्रीरामचन्द्रमिश्र [आचार्य रामचन्द्र मिश्रजी ने अपनी टीकाओं द्वारा इसे ऐसा सुबोध बना दिया है कि संस्कृत न जानने वाले भी समान रूप से इसका आनन्द ले सकते हैं। चम्पू साहित्य के और भी प्रमुख ज्ञातव्य विषय इस प्रकार उपनिबद्ध कर दिये गये हैं कि चम्पू का पूर्वापर देश, काल और उसकी प्रतिष्ठा अनायास ही हृदयङ्गम हो जाती है] [वि. सं. ३१] १५–००

२ **चम्पूरामायणम्।** भोजराजविरचित। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्। आचार्य श्रीरामचन्द्र मिश्र।
[आचार्य रामचन्द्र मिश्र की लौह लेखनी से प्रसूत छात्रोपयोगी आधुनिक विस्तृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या के साथ यह अभिनव संस्करण संस्कृत–हिन्दी–अंगरेजी छात्रों के लिए समान रूप से उपादेय है। इसकी मनोवैज्ञानिक हिन्दी समालोचना तो परीक्षार्थी विद्यार्थियों के लिए सबसे अधिक उपयोगी है।]
[वि. सं. २६] सम्पूर्ण १५–००

३ **नलचम्पूः।** 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। सम्पूर्ण ३०–००

४ **नलचम्पू : आलोचनात्मक अध्ययन।** प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल २–००

५ **नीलकण्ठविजयचम्पूः।** 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या। आचार्य रामचन्द्र मिश्र [संस्कृत काव्यानन्द हिन्दी जानने वालों को भी प्राप्त हो, इस उद्देश्य से आचार्य रामचन्द्र मिश्र ने हिन्दी व्याख्या सहित यह संस्करण प्रस्तुत किया है। व्याख्या की भाषा का गुम्फन इस कौशल के साथ किया गया है कि मूल न पढ़ने पर भी वैरस्य न उत्पन्न हो।] [वि. सं. ११२] ६–००

६ **नृसिंहचम्पूः।** डॉ० सूर्यकान्तशास्त्री सम्पादित समालोचनात्मक भूमिका विभूषित। संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित
[सरल एवं सरस संस्कृत-हिन्दी में पहली बार अनूदित इसकी विस्तृत भूमिका में सम्पूर्ण ग्रन्थ की विशद आलोचना तथा कवि का प्रामाणिक इतिवृत्त वर्णित है। यह ग्रन्थ विद्यार्थियों के लिये अधिक उपादेय है।] [वि. सं. ४३] ५–००

७ **पारिजातहरणचम्पूः।** शेषकृष्णविरचित। सान्वय-'श्रद्धा' हिन्दीव्याख्योपेतः। व्याख्याकार—आचार्य त्रिनाथ शर्मा
['पारिजात-हरण' जैसे रोचक प्रसङ्ग का चम्पू-काव्यबद्ध होना ही बड़ी रसपूर्ण बात है। उस पर कुशल टीकाकार की भावानुकूल संस्कृत-हिन्दी व्याख्याओं से सर्वबोध्य होकर यह ग्रन्थ और भी उपयोगी हो गया है। व्याख्याएँ अति विशद एवं सरस होने से साहित्यानुरागियों के लिये विशेष उपकारक है।]
[वि. सं. ८१] ५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८ **पुरुषदेवचम्पूः** । अर्हद्दास विरचित ३०–००
९ **मन्दारमरन्दचम्पूः** । कृष्णकविविरचित । सव्याख्या ३–००
१० **यात्राप्रबन्धः** । समरपुरुषदीक्षितविरचित ३–००
११ **वरदाम्बिकापरिणयचम्पूः** । आंग्लानुवाद सहित । सम्पा० डॉ० सूर्यकान्त ३५–००
१२ **विश्वगुणादर्शचम्पूः** । श्री वेंकटाध्वरिप्रणीत । श्रीबालकृष्ण शास्त्री विरचित 'पदार्थ-चन्द्रिका' संस्कृत व्याख्या, जटाशंकर पाठक कृत सान्वय 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या, भूमिकादि सहित
[इस दुर्लभ ग्रन्थ में नाटकीय शैली में भूलोक-वर्णनपूर्वक भारतान्तर्गत समस्त प्रमुख नगर-नागरियों, नदियों, आश्रमों, आरण्यों, तथा विविध विषयों के अध्येताओं का अत्यन्त ललित तथा सरस वर्णन संस्कृत भाषा में उपनिबद्ध है। अनूठी कल्पनाएँ तथा उक्ति-चमत्कार इसकी प्रधान विशेषता है। छात्र-अध्यापक तथा संस्कृत न जानने वाले लोग भी इस संस्करण से विशेष उपकृत होंगे।] [वि. सं. ९८] २०–००
१३ **श्रीनिवासविलासचम्पूः** । धरणीधर प्रणीत व्याख्या सहित ३–००

भाण-प्रहसन-ग्रन्थाः

१ **गौरीदिगम्बर-प्रहसनम्** । श्रीशंकरमिश्रविरचित । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित । पं० श्री तारिणीश झा १–५०
२ **मत्तविलासप्रहसनम्** । श्रीमहेन्द्रविक्रमवर्मविरचित । श्री कपिलदेव गिरि कृत 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित
[जिस समय जैन तथा बौद्ध-धर्म अवनति की ओर जा रहे थे और शैव-सम्प्रदाय आगे बढ़ रहा था कवि ने प्रहसनरूप में उस समय का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया है। व्याख्याकार ने दुष्प्राप्य इस प्रहसन को हिन्दी व्याख्या के साथ इस तरह सम्पादित कर दिया है कि संस्कृत-हिन्दी उभय रंगमञ्च पर इसका सफल अभिनय किया जा सकता है] [वि. सं. १३५] २–००
३ **रससदनभाण** । युवराजकवि विरचित १–००
४ **रूपकषट्कम्** । कविवत्सराज । सम्पा० चिमनलाल डी० दलाल २५–००
५ **लटकमेलकम्** । श्री कपिलदेव गिरि कृत 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित
[हिन्दी व्याख्या से इसकी व्यापकता और बढ़ गई है। भूमिका में नाटक का आलोचन, कथावस्तु, तात्कालिक सामाजिक रीति-नीति आदि पर उत्तम विचार है।] [वि. सं. ८७] २–००
६ **शृङ्गारसर्वस्वभाण** । बल्लालकविविरचित १–००
७ **हास्यचूडामणिप्रहसनम्** । आमात्यवत्सराज । सम्पा० दयाशङ्करत्रिपाठी २–००
८ **हास्यार्णवप्रहसनम्** । श्रीजगदीश्वरभट्टाचार्यविरचितम् । हिन्दी व्याख्या
[प्रस्तुत संस्करण में मूल के साथ विषयानुकूल सरल हिन्दी भाषा के माध्यम से हास्यरस प्रस्तुत किया गया है] [वि. सं. १०३] ३–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाट्य-नाटक-ग्रन्थाः

१ **अनर्घराघवम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समालोचना, पात्रालोचन, कथासार, ग्रन्थकार का जीवनवृत्त नोट्स आदि से विभूषित
[आचार्य रामचन्द्र मिश्र विरचित व्याख्या के साथ यह नाटक प्रकाशित किया गया है। सरलता इस व्याख्या की प्रमुख विशेषता है। भूमिका में ग्रन्थकर्त्ता का विस्तृत जीवनवृत्त, उनके ग्रंथ, उनका शास्त्रपाण्डित्य, उनका कवित्व, फिर कथासार, कथा का आधार, पात्रालोचन आदि तथा परिशिष्ट में नोट्स, नाटकीय विषय, लक्षण सहित छन्द, सूक्तियाँ आदि विषय दिए गए हैं।]
[वि. सं. ४७] १५-००

२ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** । 'किशोरकेलि' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। प्रो० कान्तानाथशास्त्री तेलङ्ग १२-००

२क **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** । 'विमला'-'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम्। व्याख्याकारः—डॉ० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी शीघ्रप्राप्य

३ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** । (चतुर्थ अङ्क) श्रीदेवदत्तशास्त्री कृत परीक्षोपयोगी 'अनुशीलनान्वयार्थ' संस्कृत-हिन्दी टीका, विशद भूमिकादि सहित
[विविध विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत इस चतुर्थ अङ्क की ऐसी सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्या कर दी गई है कि परीक्षार्थी स्वयं इस ग्रन्थ का अनुशीलन कर सकेंगे। लगभग ४० पृष्ठ की विस्तृत भूमिका में इस अङ्क का समीक्षात्मक विवेचन भी किया गया है] [वि. सं. ५८] २-५०

४ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** । संस्कृत टीका हिन्दी अनुवाद सहित। डॉ० निरूपण विद्यालङ्कार तथा डॉ० बाबूराम पाण्डेय १२-००

५ **अभिज्ञानशाकुन्तलम्** । गुरुप्रसाद शास्त्री कृत 'अभिनवराजलक्ष्मी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित १२-००

६ **अभिज्ञानशाकुन्तल : एक अध्ययन** । श्रीकाशीनाथ द्विवेदी
[शाकुन्तल प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में पाठ्य स्वीकृत होने से अभिज्ञान को समझने-समझाने के लिए स्वतन्त्र चिन्तन की आवश्यकता है—उसी की पूर्ति इस पुस्तक द्वारा की गई है।] [वि. रा. १२७] ५-००

७ **अभिनव नाट्यशास्त्र** । सीताराम चतुर्वेदी। प्रथम भाग २५-००

८ **अभिनव रससिद्धान्त** । दशरथद्विवेदी कृत ६-००

९ **अभिषेकनाटकम्** । महाकविभासविरचित। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका, समालोचनादि सहित। टीकाकार—आचार्य रामचन्द्र मिश्र
[भास विरचित इस नाटक की कथा श्रीरामाभिषेक पर आधारित है। प्रतिपद-बोधिनी इसकी संस्कृत-हिन्दी दोनों व्याख्याएँ भाव, भाषा आदि की दृष्टि से पर्याप्त समृद्ध हैं। भूमिका में नाट्यशास्त्रीय विषय सुसंगृहीत हैं।] [वि. सं. ७६] ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१० **अद्भुतोदयनाटकम्** । म० म० गोकुलनाथोपाध्यायविरचित ।
आचार्य रामचन्द्र मिश्र कृत संस्कृत-हिन्दी टीका सहित
[यह नाटक प्रत्येक दृष्टि से अधिक क्लिष्ट है । अतः सरल संस्कृत-हिन्दी व्याख्याओं द्वारा उसके दुरूहांश को सर्वथा दूर कर दिया गया है । समीक्षण तथा परीक्षोपयोगी नोट्स आदि विषयों से सुसज्जित अभिनव सर्वश्रेष्ठ संस्करण]
[वि. सं. ११६] ८-००

११ **अविमारकम्** । महाकविभास । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका, समालोचनात्मक भूमिकादि सहित । टीकाकार—आचार्य रामचन्द्र मिश्र
[आचार्य रामचन्द्र मिश्र विरचित संस्कृत-हिन्दी व्याख्याओं में विषयानुकूल लालित्य तथा अधिक सरलता है । विस्तृत भूमिका तथा परिशिष्ट में नाट्य-शास्त्रीय तथा सम्बद्ध ऐतिहासिक जानकारी का कोई पता नहीं छूटने पाया है । संशोधित द्वि० संस्करण] [वि. सं. ७३] ४-५०

१२ **आश्चर्यचूडामणिः** । शक्तिभद्रविरचित । आचार्य रमाकान्त झा कृत 'रमा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समालोचनादि सहित
[इसकी व्याख्या में अर्थ की स्पष्टता के लिए भावार्थ-योजना का विधान आवश्यक समझ कर दिया गया है । सविमर्श हिन्दी व्याख्या की भाषा इतनी प्रौढ और प्राञ्जल है कि उसे पढ़ने से ग्रन्थ मूल जैसा ही प्रतीत होता है । बृहद् भूमिका, कथासार, नाटनीय-सुभाषितावली आदि से सुसज्जित राष्ट्रभाषा में अनूदित यह संस्करण प्रथम बार प्रकाशित हुआ है] [वि० सं० १३४] ६-००

१३ **उत्तररामचरितम्** । 'चन्द्रकला'-'विद्योतिनी' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतम् ।
प्रो० कान्तानाथशास्त्री तैलङ्ग १२-००

१४ **उत्तररामचरितम्** । संस्कृत टीका, हिन्दी अनुवाद सहित । ब्रह्मानन्दशुक्ल १२-००

१५ **उत्तररामचरित : आलोचनात्मक अध्ययन** । प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल २-५०

१६ **उन्मत्तराघवम्** । 'सुबोधिनी' हिन्दी टीका । आचार्य रामपाल शास्त्री २-००

१७ **ऊरुभङ्गम्** । महाकविभास । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, आलोचना, कथासार सहित । व्याख्याकार—श्रीकपिलदेवगिरि
[महाकवि भास प्रणीत इसकी नाटकीय वस्तु-योजना अत्यन्त कौशलपूर्ण है । इसकी सरल सुबोध संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, विस्तृत भूमिका, कथासार, पात्र-परिचय आदि परीक्षार्थियों के लिए अधिक उपयोगी है ।] [वि० सं० ८८] २-००

१८ **कंसवधनाटकम्** । शेषकृष्णविरचित २-००

१९ **कर्णभारम्** । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या, महाकवि भास का इतिवृत्त, ग्रंथालोचन आदि विषयों से विभूषित । व्याख्याकार—रामजीमिश्र एम० ए०
[आचार्य रामचन्द्र मिश्र विरचित दोनों व्याख्याएँ बड़ी सरल और ग्रन्थ के भावानुरूप हैं । सुविशद भूमिका में समस्त नाटकीय विषय वर्णित हैं ।]
[वि. सं. ५०] २-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२० **कर्पूरमञ्जरी** । आचार्य रामकुमार कृत 'मकरन्द' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, नोट्स, समालोचनात्मक प्रस्तावना सहित
[इस संस्करण में प्रतिपद की सविमर्श संस्कृत-हिन्दी व्याख्या कर दी गई है। इसकी समालोचनात्मक प्रस्तावना, कथासार तथा विविध प्रकार के परिशिष्ट तो अत्यन्त ही उपादेय हैं] [वि. सं. १२] ५-००

२१ **कुन्दमालानाटकम्** । व्याख्याकार—प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल ५-५०

२२ **कृषकाणां नागपाशः** । पं० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी (वागीशशास्त्री) विरचित आधुनिक शिक्षाप्रद, बालकोपयोगी सरल सुबोध एकांकी नाटक
[इस पुस्तक की मौलिकता ने ग्रामीणपृष्ठभूमि पर आधृत रूपक के पात्रों में जान डाल दी है। सर्जन होते ही यह रूपक इलाहाबाद रेडियो स्टेशन के रङ्गमंच से पुरस्कृत हो चुका है।] [वि. सं. ३८] १-००

२३ **गरीबी या अमीरी** । (हिन्दी नाटक) सेठ गोविन्ददास [वि. रा. १४१]
[अफ्रीका के भारतीय मजदूरों पर अमीर अंगरेजों के अत्याचार का आंखों देखा वर्णन इस सामाजिक नाटक का मुख्य विषय है। हिन्दुस्तानी एकेडेमी द्वारा १२००) रु० का प्रथम पुरस्कार लेखक को इस पर प्राप्त हो चुका है।] ३-००

२४ **चण्डकौशिकः** । आर्यक्षेमीश्वरविरचित । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीव्याख्या समालोचनादि सहित । व्याख्याकार—पं० जगदीश मिश्र [वि. सं. १२६]
[संस्कृत-हिन्दी व्याख्या में जन साधारण के अनुकूल भाषा-प्रयोग आदि में सरलता का ध्यान रखा गया है। विस्तृत भूमिका तथा परिशिष्टादि में इतिहास समीक्षा, लक्षण, आलोचन आदि विविध उपयोगी विषय दिए गए हैं] ६-००

२५ **चन्द्रकलानाटिका** । संस्कृत टीका तथा हिन्दी अनुवाद सहित । तारिणीश झा तथा शिवशङ्कर त्रिपाठी ५-००

२६ **चारुदत्तम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या विस्तृत भूमिकादि सहित । व्याख्याकार—श्रीकपिलदेव गिरि
[व्याख्या अपने नाम के अनुरूप आधुनिक ढंग की है। इसकी आलोचनात्मक विस्तृत भूमिका में पात्रालोचन, व्यवस्थित कथासार आदि के साथ अन्य उपादेय विषय भी हैं] [वि. सं. ४६] ५-००

२७ **चतन्यचन्द्रोदयम्** । 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित । आचार्य रामचन्द्र मिश्र १०-००

२८ **छत्रपतिसाम्राज्यम्** । मूलशङ्कर माणिकलाल याज्ञिक । हिन्दी अनुवाद सहित ६-००

२९ **जवाहरलालनेहरू-विजय-नाटकम्** । हिन्दी टीका सहित । श्रीरमाकान्तमिश्र
[पं० जवाहरलाल नेहरू पर सरल संस्कृत में लिखा गया यह नाटक अपना अलग स्थान रखता है। रङ्गमंच पर विद्यार्थियों के अभिनय के लिये यह अधिक रोचक, उपयोगी और शिक्षाप्रद है] [वि. सं. १५१] ४-००

३० **जीवानन्दम्** । आनन्दरायमखिप्रणीत । हिन्दी टीका सहित १०-००

३१ **तापसवत्सराज-नाम-नाटकम्** । सम्पा० डॉ० देवीदत्त शर्मा १०-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३२ **दूतघटोत्कचम्।** रामजी मिश्र विरचित 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, महाकवि भास का जीवनवृत्त, ग्रन्थपर्यालोचन आदि से विभूषित
[इस एकांकी की प्रथम बार संस्कृत-हिन्दी व्याख्याएँ प्रस्तुत की गयी हैं। छात्रों के लिये विचारपूर्ण भूमिका मात्र ही पर्याप्त है।] [वि. सं. ५१] २–००

३३ **दूतवाक्यम्।** रामजी मिश्र विरचित 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, महाकवि भास का इतिवृत्त, समालोचनादि सहित
[अत्यन्त बोधगम्य हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्या तथा सूक्ष्म विचारपूर्वक विशद् आलोचनात्मक भूमिका से युक्त अपूर्व संस्करण] [वि. सं. ५२] २–००

३४ **दूताङ्गदं-नाटकम्।** संस्कृत-हिन्दी टीका, कथासार सहित १–५०

३५ **नरकासुरविजयव्यायोगः।** धर्मसूरिविरचित ४–००

३६ **नागानन्दनाटकम्।** पं० बलदेव उपाध्याय कृत संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ६–००

३७ **नागानन्द-नाटकम्।** 'कल्याणी' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ८–००

३८ **नाटक-चन्द्रिका।** रूपगोस्वामी। हिन्दी व्याख्या सहित। बाबूलालशुक्ल १२–००

३९ **नाटकलक्षणरत्नकोशः।** श्रीसागरनन्दीप्रणीत। हिन्दी व्याख्या सहित। अनुवादक—बाबूलालशुक्ल शास्त्री २०·००

४० **नाट्यकला : प्राच्य एवं पाश्चात्य।** डॉ० सुदर्शन मिश्र ३०–००

४१ **नाट्यदर्पणम्।** रामचन्द्रगुणचन्द्रविरचित। सव्याख्या ३०–००

४२ **नाट्यशास्त्रम्।** 'प्रदीप' हिन्दी व्याख्या। १–७ अध्याय। बाबूलालशुक्ल २०–००

४३ **नाट्यशास्त्रम्।** अभिनव गुप्ताचार्य कृत व्याख्या सहित। चतुर्थ भाग मात्र ३०–००

४४ **नाट्यशास्त्रम्।** 'मयूख' हिन्दी टीका सहित। १–२ अध्याय १–००

४५ **नाट्यशास्त्रम्।** भरतमुनि। 'मधुसूदनी', 'बालक्रीडा' संस्कृत-हिन्दी टीका। आचार्य मधुसूदन शास्त्री। १–२ भाग। प्रत्येक भाग ४७–००

४६ **नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा और दशरूपक।** धनिक की वृत्ति सहित। हजारीप्रसाद द्विवेदी—पृथ्वीनाथ द्विवेदी २२–५०

४७ **नारीजागरणनाटकम्।** पं० श्रीगोपालशास्त्री 'दर्शनकेशरी' [वि. सं. १४१]
[प्रस्तुत नाटक स्त्री-शिक्षा के समर्थन एवं प्रयास की एक कड़ी है। इसमें इतिहास-पुराण-उपनिषद् आदि से उदात्त, मार्मिक तथा उपदेशप्रद चरित्रों का गुम्फन कौशल लेखक के जीवनव्यापी अध्यापनानुभव का फल है। भारतीय महिलाओं को उनके गरिमामय स्वरूप का बोध कराने के लिये लिखा गया यह सरल, सरस एवं मनोरंजक संस्कृत नाटक स्त्री-पुरुष सभी के पढ़ने योग्य है।] ५–००

४८ **पञ्चरात्रम्।** आचार्य श्रीरामचन्द्र मिश्र कृत 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या विस्तृत प्रस्तावनादि सहित
[आचार्य रामचन्द्र मिश्र विरचित संस्कृत एवं हिन्दी व्याख्या ने मणि-काञ्चन संयोग कर दिया है। इसकी विस्तृत भूमिका में कथावस्तु आदि की विवेचना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करके परिशिष्ट में नोट्स तथा नाटकीय विषयों पर पर्याप्त विवेचन प्रस्तुत किया गया है।] [वि. सं. ३५] ५–००

४९ **पाणिनीयनाटकम्** । पं० श्रीगोपालशास्त्री 'दर्शनकेशरी' [वि. सं. १०८]
['त्रिमुनि व्याकरणम्' इस नाटक की भित्ति है। महर्षि पाणिनि के इतिवृत्त के माध्यम से व्याकरणशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास ही इस नाटक द्वारा रङ्गमंच पर दर्शाया गया है। विज्ञ विद्वानों के अनेक प्रशंसा-पत्र पुस्तक में छपे हैं।] ३–५०

५० **प्रचण्डपाण्डवनाटकम्** । 'प्रकाश' हिन्दी टीका सहित । श्री हरिदत्त शास्त्री ३–००

५१ **प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्** । 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, आलोचनात्मक टिप्पणी तथा भूमिकादि सहित
[संस्कृत-हिन्दी व्याख्या के साथ-साथ आलोचनात्मक टिप्पणी—नोट्स, विशद भूमिका हो जाने से यह संस्करण संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी छात्रों के लिए समान रूप से उपयोगी हो गया है।] [वि. सं. ३९] ५–००

५२ **प्रतिमानाटकम्** । 'विमला' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । डॉ० जगदीशचन्द्रमिश्र [चौ. सु. २८] ७–००

५३ **प्रबोधचन्द्रोदयम्** । आचार्य श्रीरामचन्द्र मिश्र कृत 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका, नोट्स (विवरण) विस्तृत प्रस्तावनादि सहित
[आचार्य रामचन्द्र मिश्र जी विरचित सरल, सुबोध संस्कृत तथा सुललित हिन्दी टीका एवं नाटक-समीक्षा, नोट्स, नाटकीय विषय आदि से सुसज्जित यह संस्करण सर्वोत्तम है] [वि. सं. १४] ५–००

५४ **प्रबोधचन्द्रोदय और उसकी हिन्दी परम्परा** । डॉ० श्रीमती सरोज १५–००

५५ **प्रभावतीपरिणयम्** । रामचन्द्र मिश्र कृत 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ८–००

५६ **प्रसन्नराघवम्** । जयदेवविरचित । 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या समालोचना, नोट्स सहित । व्याख्याकार—आचार्य श्री शेषराजशर्मा रेग्मी
[आचार्य श्री शेषराज जी ने प्रतिपद की व्याख्या, समास-विग्रह, कोश, अलंकार आदि देकर इस संस्करण को अधिक सरल बना दिया है। इसकी समालोचनात्मक हिन्दी भूमिका, नोट्स तथा आधुनिक विविध परिशिष्ट तो परीक्षार्थी के लिए अधिक उपादेय हैं।] [वि. सं. २०] १०–००

५७ **प्राचीनभाषानाटक** (मध्यकालीन संस्कृत नाटकों का संग्रह)। सम्पा० जगदीशचन्द्र माथुर ७०–००

५८ **प्रियदर्शिका** । आचार्य श्रीरामचन्द्र मिश्र कृत 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका, नोट्स (विवरण) विस्तृत प्रस्तावनादि सहित
[आधुनिक टीकाकारों में आचार्य रामचन्द्र मिश्र जी का नाम सर्वोपरि है। इस नाटक को भी आपने व्याख्या, विग्रह, समास, अलङ्कार, नोट्स आदि से अलंकृत कर दिया है।] [वि. सं. १८] ५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५९ **बालचरितम्** । श्रीरामजी मिश्र विरचित 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका पर्याय, समास, कोश, अलंकार, हिन्दी, नोट्स, हिन्दी समालोचना, महाकवि भास की जीवनी, कथासार और गवेषणापूर्ण पात्रालोचन से सुसज्जित [सामान्य विद्यार्थियों का बुद्धिवैभव देखकर ही इसकी संस्कृत व हिन्दी टीकाएँ रची गई हैं जिनसे प्रतिपद का अर्थस्पष्ट हो जाता है। समस्त ज्ञातव्य नाट्य-शास्त्रीय विषयों का ज्ञान विशद भूमिका से ही हो जाता है।] [वि. सं. ५६] ५-००

६० **भरतनाट्यमञ्जरी** । भरतनाट्यशास्त्रसे संगृहीत, जी०के० भट्टकृत आंग्लानुवाद ७५-००

६१ **भासनाटकचक्रम्** । (महाकवि भास के सम्पूर्ण नाटकों का संकलन) आचार्य बलदेव उपाध्याय सम्पादित 'महाकवि भास' नामक सुविस्तृत भूमिकादि विभूषित 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित। (शोधपूर्ण संस्करण) [इस संस्करण में भास के १३ नाटकों में से प्रत्येक की अतिसरल संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्याएँ की गई हैं जिनसे ग्रन्थ का कोई शब्द अविदित नहीं रह जाता। उपाध्याय जी की शताधिक पृष्ठों की शोधपूर्ण भूमिका में भास सम्बन्धी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इतनी अधिक उपयोगी सामग्री के साथ भास के सभी नाटकों का यह सम्मिलित संस्करण प्रथम बार ही प्रकाशित हुआ है। छात्रों, अध्यापकों तथा पाठकों के लिए यह नितान्त उपयोगी संस्करण है।]
[चौ. वि.] १-२ भाग ५०-००

६२ **भीमविक्रमव्यायोगः** । व्यासमोक्षादित्यविरचित। **धर्मोद्धरणम् नाम नाटकम्** । दुर्गेश्वरपण्डितविरचित। सम्पा० उमाकान्त प्रेमचन्द शाह १२-००

६३ **मध्यमव्यायोगः** । श्रीरामजी मिश्र विरचित 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, भास की जीवनी पात्रालोचन सहित। [भास विरचित इस संस्कृत एकांकी नाटक की संस्कृत और हिन्दी दोनों व्याख्याएँ ललित भाषा में की गई हैं। भूमिका में सभी नाट्यशास्त्रीय एवं परीक्षा की दृष्टि से उपयोगी विषयों का समावेश है।] [वि. स. ५३] २-००

६४ **महावीरचरितम्** । भवभूतिप्रणीत। आचार्य रामचन्द्र मिश्र कृत 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीव्याख्या-समालोचना-कथासार-नोट्स-नाटकीयादिविषयविभूषित [संस्कृत व्याख्या में प्रतिपद का पर्याय, समास, कोश, अलङ्कार आदि देकर आधुनिक प्रांजल राष्ट्रभाषा हिन्दी में अनुवाद कर दिया गया है। साथ ही परिशिष्ट में हिन्दी नोट्स, नाटकीय विषय आदि देकर तथा ग्रन्थ के आरम्भ में हिन्दी समालोचना, महाकवि की जीवनी कथासार और गवेषणापूर्ण पात्रा-लोचन से सुसज्जित कर इस संस्करग को मौलिकता प्रदान की गयी है। द्वितीय संशोधित संस्करण।] [वि सं. १०] १०-००

६५ **मालतीमाधवनाटकम्** । 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दीटीका। श्रीशेषराजशर्मा १२-००

६६ **मालविकाग्निमित्रम्** । कालिदासकृत। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दीटीकाद्वयोपेतम्। आचार्य रामचन्द्र मिश्र ७-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६७ **मालविकाग्निमित्र : एक आलोचनात्मक अध्ययन**। एम० डी० पारदकर ४-५०
६८ **मुद्राराक्षस-नाटकम्**। संस्कृत-हिन्दी-अङ्ग्रेजी व्याख्यात्रय सहित व्याख्याकार—श्री जगदीशचन्द्र मिश्र [वि. स. १६१] १५-००
६९ **मृच्छकटिकम्**। 'प्रबोधिनी'-'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित १२-००
७० **मृच्छकटिक : आलोचनात्मक अध्ययन**। प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल २-५०
७१ **यूथिका**। रेवाप्रसाद द्विवेदी ३-५०
७२ **रत्नावली-नाटिका**। संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ६-००
७३ **रत्नावलीनाटिका : आलोचनात्मक अध्ययन**। प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल २-५०
७४ **ललितमाधवम्**। नारायणप्रणीत संस्कृत टीका। सम्पा० बाबूलालशुक्ल १८-००
७५ **विक्रमोर्वशीयम्**। 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या। आचार्य रामचन्द्र मिश्र ८-००
७६ **विक्रमोर्वशीयम्**। रङ्गनाथ कृत प्रकाशिका–कोणेश्वर कृत तोटकविवेक काटयवेमभूप कृत कुमागिरिराजीय व्याख्या सहित १०-७०
७७ **विक्रान्तकौरवम्**। पन्नालाल जैन कृत 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ८-००
७८ **विदग्धमाधवः**। 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित। पं० रमाकान्त झा १२-००
७९ **विद्धशालभञ्जिका**। राजशेखरविरचित। सटिप्पण 'प्रकाश' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या, समालोचनात्मक विस्तृत भूमिका सहित [वि. स. १२५]
[महाकवि राजशेखर विरचित इस नाटिका में प्रभातवर्णन, सन्ध्यावर्णन, वसन्तवर्णन तथा चन्द्रिका का वर्णन भी अत्यन्त सजीव है। इसकी हिन्दी टीका में अनावश्यक विस्तार न कर सुबोध व्याख्या प्रस्तुत की गई है। विशद भूमिका में भी ग्रन्थ के गम्भीर अध्ययन एवं शोध के परिणाम उपन्यस्त हैं।] ५-००
८० **विद्यापरिणयम्**। आनन्दराममखिविरचित। 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित। आचार्य रामचन्द्र मिश्र ६-००
८१ **वेणीसंहारनाटकम्**। संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ८-००
८२ **वेणीसंहार : आलोचनात्मक अध्ययन**। प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल २-५०
८३ **संस्कृत नाटकालोचन**। चुन्नीलाल शुक्ल ५-००
८४ **संकल्पसूर्योदयनाटकम्**। वेंकटनाथकृत। प्रभाविलास-प्रभावली-व्याख्याद्वय सहित। १-२ भाग ३०-००, ४५-००
८५ **सामवतम्**। महाकवि अम्बिकादत्तव्यास कृत १०-००
८६ **सुभद्राहरणम्**। माधवभट्टप्रणीत। सान्वय-'प्रकाश' हिन्दीव्याख्योपेतम् आचार्य त्रिनाथ शर्मा [वि. सं. ६९]
[श्रीगदित महाभारतीय रोचक आख्यान के आधार पर रचा गया यह नाटक अब सरल सुबोध हिन्दी व्याख्या के साथ प्रकाशित किया गया है।] ७-००
८७ **सुसंहतभारतम्**। श्री पी० रामचन्द्र रेड्डी ८-००
८८ **सौगन्धिकाहरणम्**। विश्वनाथकृत। 'प्रकाश' हिन्दी टीका भूमिकादि सहित। व्याख्याकार—श्रीकपिलदेव गिरि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[महाभारतीय आख्यान पर आधारित यह संस्कृत नाटक हिन्दी व्याख्या सहित प्रस्तुत है। भूमिका में कविपरिचय, कथावस्तु, पात्रालोचन तथा और भी शास्त्रीय विषयों पर विचार है।] [वि. सं. ९६] ३-००

८९ **स्वप्नवासवदत्तम्** । भासकृत । 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । आचार्य श्री शेषराजशर्मा 'रेग्मी' [चौ. सु. २१] ६-००

९० **हनुमन्नाटकम्** । 'विभा' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित ८-००

९१ **हिन्दी के पौराणिक नाटक** । डॉ० देवर्षिसनाढ्य । [वि. रा. ३५]
[संस्कृत, हिन्दी, बंगला, गुजराती आदि भारतीय भाषाओं में पौराणिक नाटकों की परंपरा का इतिवृत्त इस शोध ग्रन्थ में उपस्थित किया गया है।] १५-००

९२ **हिंसा या अहिंसा** । (हिन्दी-नाटक) सेठ गोविन्दास
[कारखानों में मजदूरों और मिल-मालिकों में कैसा सम्बन्ध होना चाहिए, यही इस क्रान्तिकारी सामाजिक नाटक का मुख्य विषय है।] [वि. रा. १३५] ३-००

कोष-ग्रन्थाः

१ **अनेकार्थसंग्रहकोशः** । हेमचन्द्र विरचित १२-००

२ **अभिधर्मकोश** । वसुबन्धुकृत । भाष्य, स्फुटार्थ व्याख्या । १-८ कोशस्थान सम्पा० द्वारिकादास शास्त्री । १-४ भाग ८०-००

३ **अभिधर्मकोष** । वसुबन्धु कृत । अनु० आचार्य नरेन्द्रदेव १-२ भाग ४५-००

४ **अभिधानचिन्तामणिः** । हेमचन्द्र कृत । 'मणिप्रभा' हिन्दी व्याख्या विमर्श सहित । व्याख्याकार—पं० श्री हरगोविन्द शास्त्री
[प्रस्तुत कोश-ग्रन्थ सारपूर्ण विस्तृत हिन्दी टीका एवं अपूर्व कोश-कला से परिपूर्ण है। इसकी विस्तृत भूमिका, विषयसारिणी, नव-शब्द-योजना तथा अन्तिम शब्दानुक्रमणिका अत्यन्त ही उपादेय और प्रशस्त है] [वि. सं. १०९] २५-००

५ **अमरकोश-रामाश्रमी** । 'प्रकाश' नामक हिन्दी व्याख्या विभूषित ४५-००

६ **अमरकोशः** । 'मणिप्रभा' हिन्दी टीका सहित । प्रथमकाण्ड २-००

७ **अमरकोशः** । संक्षिप्त माहेश्वरी व्याख्या सहित १०-००

८ **अमरकोशः** । कृष्णमित्रटीकोपेतः । सम्पा० डा० सत्यदेव मिश्र । सम्पूर्ण २३-५०

९ **अव्ययकोश** । श्री वा० श्रीवत्साचार्य १२-००

१० **आख्यातचन्द्रिका नाम क्रियाकोशः** । श्रीभट्टमल्लविरचित १०-००

११ **आदर्श-हिन्दी-संस्कृत-कोश** । सम्पादक—प्रो० रामस्वरूप शास्त्री
[इस कोश में लगभग चालीस सहस्र हिन्दी-हिन्दुस्तानी शब्दों तथा मुहावरों के संस्कृत पर्याय दिये गये हैं। प्रत्येक शब्द का लिंगनिर्देश भी किया गया है। हिन्दी क्रिया पदों के संस्कृत धातुओं के गण, पद, सेट, अनिट्, वेट्, णिजन्त आदि के रूप भी दिये गये हैं। सुसंस्कृत तथा परिवर्धित द्वितीय संस्करण]
[वि. सं. ३२] शीघ्रप्राप्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२ **उणादिकोषः** । स्वामी दयानन्द सरस्वती । सम्पा० युधिष्ठिरमीमांसक ७–००, १०–००

१३ **कोशकल्पतरुः** । विश्वनाथ कृत । मधुकरमंगेशपाटकर–के० वी० कृष्णामूर्त्ति शर्मा सम्पादित । १–२ भाग ५०–००

१४ **गणितीयकोश** । (गणितीयपरिभाषा तथा गणितीयशब्दावली) डॉ० व्रजमोहन १५–००

१५ **जैनेन्द्रसिद्धान्तकोश** । जिनेन्द्रवर्णी । १–४ भाग २१०–००

१६ **दोहाकोश** । सिद्धसरहपाद । राहुलसांकृत्यायन कृत हिन्दी छायानुवाद सहित १३–२५

१७ **धर्मकोशः** । श्रीलक्ष्मणशास्त्रीसम्पादित । व्यवहारकाण्ड १–३ भाग १२०–००
उपनिषत्काण्ड १–४ भाग २२५–००, संस्कारकाण्ड प्रथम भाग ७०–००
राजनीतिकाण्ड १–३ भाग २००–००

१८ **नाममाला** । धनञ्जयविरचित । अमरकीर्ति-भाष्य सहित ४–५०

१९ **नामलिङ्गानुशासनम्** । अङ्गरेजी शब्दकोश सहित । सरदेसाई तथा पाध्ये सम्पादित १०–००

२० **पाइअ-सद्द-महण्णवो** । हरगोविन्ददास विरचित । प्राकृत-हिन्दी कोश ३०–००

२१ **पौराणिक कोश** । सम्पा० राणाप्रसाद शर्मा ३०–००

२२ **प्रक्टिकल संस्कृत-इङ्गलिश-डिक्शनरी** । वी० एस० आप्टे ८५–००

२३ **ब्राह्मणोद्धार कोषः** । विश्वबन्धु सम्पादित ७२–००

२४ **भारतवर्षीयप्राचीनचरित्रकोशः** । म० म० सिद्धेश्वरशास्त्री चित्राव ६०–००

२५ **मङ्खकोशः** । मङ्खकोश टीकासार सहित । सम्पा० थियोडोर जखारिया ३०–००, ४०–००

२६ **महाभारतकोश** । रचनाकार—डॉ० रामकुमार राय । १–२ भाग ७०–००

२७ **मीमांसाकोषः** । केवलानन्द सरस्वती सम्पादित । १–७ भाग ३५०–००

२८ **मेदिनीकोशः** । मेदनिकरविरचित ८–००

२९ **राजतरङ्गिणी-कोशः** । डॉ० रामकुमार राय सम्पादित
[कल्हण कृत राजतरङ्गिणी का यह कोश हिन्दी में सर्वप्रथम प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें राजतरङ्गिणी में आये सभी नामों और विषयों की ससन्दर्भ व्याख्या प्रस्तुत की गई है। साथ ही लेखक ने एक विस्तृत भूमिका में कल्हण के व्यक्तित्व और कृतित्व का विवेचन करते हुये विभिन्न विषयों, जैसे राजनीति, समाजशास्त्र, धर्म, और नीति आदि से सम्बद्ध उनके विचारों को प्रस्तुत किया है। राजतरङ्गिणी में आये विभिन्न राजाओं की वंशावलियों तथा कालिक्रमागत तालिकाओं का भी भूमिका में समावेश किया गया है] [वि. रा. १०९] २२–००

३० **वाङ्मयार्णवः** । (संस्कृत पद्यबद्ध विश्वकोश) रामवतार शर्मा विरचित १००–००

३१ **वाचस्पत्यम्** । बृहत्संस्कृताभिधानम् । तर्कवाचस्पति श्रीतारानाथभट्टाचार्येण सङ्कलितम् । १–६ भाग सम्पूर्ण ८००–००

३२ **वाल्मीकीयरामायणकोशः** । डॉ० रामकुमार राय ३०–००

३३ **वैजयन्तीकोषः** । यादवप्रकाशाचार्य । सम्पा० हरगोविन्द शास्त्री ३५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३४ **वैदिक इण्डेक्स** । मैक्डोनेल तथा कीथ (हिन्दी रूपान्तर) अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय । [वि. रा. ४६]
[इसमें सन्दर्भ संकेत संख्यायें तथा फुटनोट में उनकी व्यवस्था का क्रम वही किया गया है जैसा कि मूल ग्रन्थ में है। इस व्यवस्था के कारण जो निःसन्देह अत्यन्त कठिन और कहीं-कहीं असम्भव सा कार्य था, अनुवाद की उपयोगिता और विषय-व्यवस्था की प्रामाणिकता अत्यन्त बढ़ गई है।] १–२ भाग ६०–००

३५ **वैदिककोश** । (वैदिक विषयों एवं नामों का) डॉ० सूर्यकान्त २२–५०

३६ **वैदिकपदानुक्रमकोषः** । विश्वबन्धुसम्पादित । १–१६ भाग १२००–००

३७ **शब्दकल्पद्रुमः** । राजाराधाकान्तदेवबहादुरविरचितः । १–५ भाग ४००–००

३८ **शब्दस्तोममहानिधिः** । श्रीतारानाथतर्कवाचस्पतिविरचित १००–००

३९ **श्रीकोषः** । (हिन्दी-संस्कृत कोष) पं० केदारनाथ शर्मा ५–००

४० **श्रौतकोशः** । वापट सी० दातार, डी० वी० नाने, सी० जी० काशीकर सम्पादित । संस्कृत-अंगरेजी सहित । १–५ भाग १८५–००

४१ **संस्कृत-अङ्गरेजी कोश** । वी० एस० आप्टे । १–३ भाग २१०–००

४२ **संस्कृत-ईङ्गलिश-डिक्शनरी** । मोनियर विलियम्स १५०–००

४३ **संस्कृत धातुकोषः** । सम्पा० युधिष्ठिर मीमांसक ३–००

४४ **संस्कृतशब्दार्थकौस्तुभः** । द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी २२–५०

४५ **संस्कृतसाहित्यकोश** । डॉ० राजवंशसहाय 'हीरा'
[हिन्दी में संस्कृत वाङ्मय की सभी प्रमुख शाखाओं, ग्रन्थों, ग्रन्थकारों, विधाओं, प्रवृत्तियों एवं चिन्तनधाराओं तथा तत्सम्बन्धी अद्यतन अनुसन्धानों एवं गवेषणाओं का एक साथ प्रामाणिक विवरण प्राप्त करने के लिए यह अभिनव कोश-एकमात्र साधन है। तीन विशाल खण्डों में पूर्ण हुआ यह कोश-ग्रन्थ अध्यापक, छात्र तथा शोधकार्यार्थी सभी के लिए अनुपम सहायक है] [चौ. रा. १६] ५०–००

४६ **संस्कृत-हिन्दी कोश** । वी० एस० आप्टे २०–००

४७ **सांख्ययोगकोश** । केदारनाथ त्रिपाठी ५–२५

४८ **सुलभविश्वकोश** । (मराठी) १–६ भाग १५०–००

४९ **हलायुधकोश** । हलायुधभट्टविरचित २५–००

हिन्दी-कोश-ग्रन्थाः

१ **आदर्श-हिन्दी-संस्कृत-कोश** । सम्पादक—प्रो० रामस्वरूप शास्त्री शीघ्रप्राप्य

२ **उर्दू-हिन्दी कोश** । सम्पा० मुहम्मद मुस्तफा खाँ 'मदाह' १८–००

३ **पालि-हिन्दी कोशः** । भदन्तआनन्द कौसल्यायन ५०–००

४ **ब्रजभाषा-सूरकोश** । १–१० भाग (दो जिल्द में)। डॉ० दीनदयालु ८०–००

५ **बृहद् अंग्रेजी-हिन्दी कोश** । सम्पा० डॉ० हरदेव बाहरी ७०–००

६ **बृहद् हिन्दी कोश** । कालिकाप्रसाद ६०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७ **भार्गव अंग्रेजी-हिन्दी-शब्दकोश** । बड़ा २५–००, गुटका १०–००
८ **भार्गव हिन्दी-अंग्रेजी-शब्दकोश** । बड़ा २५–००, गुटका १०–००
९ **मानक अंग्रेजी-हिन्दी-शब्दकोश** । डॉ० सत्यप्रकाश एवं बी० पी० मिश्र ६८–००
१० **मानक हिन्दी कोश** । सम्पा० रामचन्द्र वर्मा । १–५ भाग १५०–००
११ **लघु हिन्दी शब्दसागर** । सम्पा० करुणापति त्रिपाठी २५–००
१२ **लघुत्तर हिन्दी शब्दसागर** । सम्पा० करुणापति त्रिपाठी १५–००
१३ **संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर** । ४५–००
१४ **हिन्दी विश्वकोश** । सम्पा० वीरेन्द्र वर्मा–भगवतशरण उपाध्याय–गोरख प्रसाद आदि । १ व ४–१२ खण्ड ३३०–००
१५ **हिन्दी शब्द-सागर** । सम्पा० श्यामसुन्दर दास १–११ भाग ३७५–००

नीति-अर्थशास्त्र-ग्रन्थाः

१ **अपराध और दण्डशास्त्र** । श्री कौशलकुमार राय [वि. रा. ८८]
[यह विषय प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में स्वीकृत है । इस पर हिन्दी में कुछ पुस्तकें निकली भी हैं परन्तु उनमें किसी में भी दण्डशास्त्र पर सामग्री उपलब्ध नहीं है । इसी कमी की पूर्ति के लिए इस पुस्तक की रचना हुई हैं ।] १०–००

२ **कथा-संवर्तिका** । बालकोपयोगी शिक्षाप्रद लोक-कथाओं का सरल-सुबोध संस्कृत में अनुदित संग्रह
[सन्धिविरहित अति सरल तथा सारगर्भित संस्कृत में लिखी कथाओं की यह पहली पुस्तक है । कहानियाँ अपने ढङ्ग की निराली होती हुई भी नीति और शिक्षापूर्ण हैं ।] [वि. सं. ४०] १–००

३ **कामन्दकीयनीतिसारः** । सव्याख्या । २ रा भाग १२–००
४ **कामन्दकीयनीतिसारः** । हिन्दी टीका सहित ३–००
५ **कौटिलीयम् अर्थशास्त्रम्** । सुसंस्कृत हिन्दी व्याख्या, समालोचना, पारिभाषिक संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश सहित । व्याख्याकार—श्रीवाचस्पति गैरोला
[प्रस्तुत संस्करण में इस बात पर विशेष ध्यान रखा गया है कि अनुवाद की भाषा सुगम तथा वाक्ययोजना लघु हो । मूल के प्रतिपद का अर्थ इसमें स्पष्टतया देखा जा सकता है । पाण्डित्यपूर्ण विशद् भूमिका में वैदिक युग के आदिम साम्यसंघ से लेकर दासराज्यों, गणराज्यों और उनके बाद अधिष्ठित साम्राज्यों के उदय-अस्त का ऐतिहासिक दृष्टि से समीक्षण किया गया है तथा अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नई चेतना को जन्म देने वाले और आधुनिक दृष्टि से उस पर नये सिरे से विचार करने वाले कार्ल मार्क्स, एंगल्ल और लेनिन जैसे महान् राजनीतिज्ञों एवं धुरन्धर अर्थशास्त्रियों के सिद्धान्तों की भी समीक्षा की गई है । ग्रन्थान्त में लगभग ८०० प्रशासनिक शब्दों के अँगरेजी-हिन्दी पर्यायों का संयोजन भी है] [वि. सं. ७५] ५०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६ **कौटिल्य का अर्थशास्त्र** । (शोधपूर्ण हिन्दी रूपान्तर) श्रीवाचस्पति गैरोला [आलोचनात्मक मनोवैज्ञानिक विमर्श, पारिभाषिक संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश ऐतिहासिक प्रस्तावनादि सभी विषयों से विभूषित ।] [वि. रा. ५१] शीघ्रप्राप्य

७ **कौटिलीयार्थशास्त्रम्** । विष्णुगुप्तविरचित । सटिप्पण एन. एस. वेंकटनाथाचार्य १७–५०

८ **चाणक्यनीतिदर्पणः** । हिन्दी टीका सहित २–००

९ **चाणक्यनीति-शाखा-सम्प्रदाय** । साम्पा० एल० स्टर्नबाक । १–२ भाग २१०–००

१० **चाणक्यसूत्र** । अनुवादक—वाचस्पति गैरोला [अर्थशास्त्र पर चाणक्य के लगभग ५०० परमोपयोगी सूत्रों का व्यवस्थित भाषानुवाद] [वि. सं. ७७] १–००

११ **चाणक्यसूत्रम्** । 'बालबोधिनी' 'सरला' संस्कृत-हिन्दी टीका । प्रथमोऽध्यायः ०–७५

१२ **चाणक्यसूत्राणि** । श्रीरामावतार कृत हिन्दी टीका सहित १८–००

१३ **चारुचर्य्या** । (भारतीय सदाचार, शिष्टाचार) । क्षेमेन्द्र कृत । हिन्दी रूपान्तरकार--पं० देवदत्त शास्त्री [श्री क्षेमेन्द्र विरचित चारुचर्या का यह हिन्दी रूपान्तर है । यह ग्रन्थ भारतीय सदाचार एवं शिष्टाचार का कोष है । मनुष्य जिन आचरणों और व्यवहारों से सामाजिक अभ्युदय प्राप्त कर जीवन का लक्ष्य प्राप्त करता है—उनका एकत्र समुच्चय इस पुस्तक में है] [वि. रा. ४४] २–५०

१४ **चारुचर्य्या** । महाकवि श्री क्षेमेन्द्र विरचित मूल श्लोक तथा 'प्रकाश' हिन्दी अनुवाद सहित । व्याख्याकार—पं० देवदत्त शास्त्री [वि. स. ९२] १–२५

१५ **नीतिकल्पतरुः** । व्यासदेव क्षेमेन्द्र । वी० पी० महाजन सम्पादित १०–००

१६ **नीतिवाक्यामृतम्** । सोमदेवसूरि विरचित । हिन्दी टीका सहित । रामचन्द्र मालवीय [वि. स. १६२] १०–००

१७ **नीतिशतकम्** । 'विमला' संस्कृत-हिन्दी व्याख्या युक्त । पं० श्रीकृष्णमणित्रिपाठी [भर्तृहरि योगीन्द्र प्रणीत इस नीतिशतक के १०० श्लोक बालक बालिकाओं को अभ्यास करा देने से निश्चय ही उनका जीवनस्तर उन्नत हो जायगा । व्याख्या अत्यन्त सरल तथा सुबोध है ।] [चौ. सु. १०] ३–००

१८ **नीतिशतकम्** । हरिदास कृत विस्तृत हिन्दी टीका सहित ८–००

१९ **नीतिशास्त्र** । सुश्री शान्ति जोशी ११–५०

२० **नीतिशास्त्र मीमांसा** । जॉर्ज एडवर्ड मूर १३–५०

२१ **नीतिशास्त्रीय सिद्धान्त के पाँच प्रकार** । सी० डी० ब्रॉड ६–३५

२२ **नीति-शृंगार-वैराग्यशतकत्रयम्** । सरल सुबोध हिन्दीव्याख्या, पद्यानुवाद सहित [मूल के साथ हिन्दी व्याख्या तथा साथ में हिन्दी पद्यानुवाद भी किया गया है । संस्कृत न जानने वाले व्यक्ति भी ग्रन्थों के मूल भावों को हृदयङ्गम कर सकते हैं । गद्य एवं पद्य दोनों अनुवादों की भाषा अत्यन्त सरल, ललित तथा भावों के सर्वथा अनुकूल है] [चौ. वि.] ७–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२३ **नीतिसूत्राणि** । बृहस्पतिचाणक्यसोमदेवैर्विरचितानि २-७५
२४ **पञ्चतन्त्रम्** । श्रीविष्णुशर्मा । 'सरला' हिन्दी टीका । श्रीगोकुलदास गुप्त
[आधुनिक ढंग की व्यवस्थित इस टीका की यह विशेषता है कि केवल हिन्दी जानने वाले भी पंचतन्त्र की कथाओं में आए हुए उपदेशों तथा नीतितत्त्वों से भली भाँति अवगत हो जायँगे। यह संस्करण विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं साहित्य तथा नीतिप्रेमियों के लिए समान रूप से उपयोगी है] [वि. स. १७] ११-००
मित्रभेद [प्रथम तन्त्र] ४-००, मित्रसम्प्राप्ति [द्वितीय तन्त्र] २-५०
काकोलूकीय [तृतीय तन्त्र] २-००, लब्धप्रणाश [चतुर्थ तन्त्र] २-००
अपरीक्षितकारक [पञ्चम तन्त्र] श्रीकृष्णमणित्रिपाठीकृत संस्कृत-हिन्दी व्याख्या ३-५०
२५ **पाश्चात्य नीतिशास्त्रम्** । विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि विरचित ४-००
२६ **बार्हस्पत्य राज्य-व्यवस्था** । डॉ० राघवेन्द्र वाजपेयी [वि. रा. ९७]
[राजनीति के प्रमुख आचार्य बृहस्पति ने राज्य-शासन तथा राज्य-प्रबन्ध के लिये जिन विधि-विधानों का आदेश दिया है, उन पर पाण्डित्यपूर्ण आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत पुस्तक में दर्शनीय है। इससे वर्तमान भारतीय राज्य-व्यवस्था के गुण-दोषों पर अनजाने ही पर्याप्त प्रकाश पड़ जाता है] १६-००
२७ **भर्तृहरिशतकत्रय** (नीति-शृंगार-वैराग्यशतक) हिन्दी अनुवाद सहित ७-५०
२८ **भारतीय नीति का विकास** । डॉ० राजवली पाण्डेय ५-००
२९ **भारतीय नीतिशास्त्र** । डॉ० दिवाकर पाठक ७-५०
३० **भारतीय नीतिशास्त्र का इतिहास** । डॉ० भीखनलाल आत्रेय २०-००
३१ **राजनय के सिद्धान्त और व्यवहार** । श्रीमती कृष्णाराय [वि. रा. ७५] ५-००
३२ **राजनीतिरत्नाकरः** । चण्डेश्वरकृत । हिन्दी टीका सहित १२-००
३३ **शुक्रनीतिः** । 'विद्योतिनी' हिन्दी व्याख्या सहित २०-००
३४ **हितोपदेश-मित्रलाभः** । (अश्लीलांशवर्जितः) आचार्य शेषराजशर्मा रेग्मी कृत 'चन्द्रकला' संस्कृत-हिन्दीव्याख्योपेतः ५-५०
३५ **हितोपदेशः** । 'किरणावली' भाषाटीका १२-५०
३६ **हिन्दूराज्यशास्त्र** । श्रीअम्बिकाप्रसाद वाजपेयी ७-००

संगीत-ग्रन्थाः

१ **अप्रकाशित राग** । ज० दे० पत्की सम्पादित । १-३ भाग १४-००
२ **आवाज सुरीली कैसे करें** । लक्ष्मीनारायण गर्ग ६-००
३ **उत्तर भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास** । वी० एन० भातखण्डे ५-००
४ **कथकनृत्य** । लक्ष्मीनारायण गर्ग २०-००
५ **कथकनृत्य परिचय** । हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव ४-००
६ **कथकलि नृत्यकला** । लक्ष्मीनारायण गर्ग ८-००
७ **कायदा और पेशकार** । पं० सत्यनारायण वशिष्ठ ४-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८ **क्रमिकपुस्तकमालिका** । पं० विष्णुनारायण भातखण्डे । प्रथम भाग २-५०
द्वितीय भाग १८-००, तृतीय भाग २५-००, चतुर्थ भाग २५-००
पंचम भाग २५-००, षष्ठ भाग २०-००, १-६ भाग १२३-००

९ **खुसरो तानसेन तथा अन्य कलाकार** । सुलोचना बृहस्पति २०-००

१० **गान्धर्व संगीत प्रवेशिका** । देवकीनन्दन धवन ५-००

११ **गिटार मास्टर** । चिन्तामणि जैन ४-००

१२ **चतुर्थ वर्ष प्रश्नोत्तर** । श्रीमती कमलिनी श्रीवास्तव ४-००

१३ **चित्रकाव्यकौतुकम्** । रामरूपपाठक प्रणीत । स्वोपज्ञ व्याख्या सहित । सम्पा० प्रेमलता शर्मा १२-००

१४ **ठुमरी गायकी** । तुलसीराम देवांगन ७-००

१५ **ठुमरी तरङ्गिणी** । राजाभैया पूँछवाले २-५०

१६ **तबला कौमुदी** । रामशंकर 'पागलदास' । प्रथम भाग २-००, द्वितीय भाग १०-००

१७ **तानमालिका** । राजाभैया 'पूँछवाले' ४-००

१८ **तान संग्रह** । श्रीकृष्णनारायण राजजनकर प्रथम भाग ८-००

१९ **ताल परिचय** । गिरीशचन्द श्रीवास्तव । प्रथम भाग २-५०, द्वितीय भाग ३-७५

२० **ताल प्रकाश** । १२-००

२१ **ताल मार्तण्ड** । पं० सत्यनारायण वशिष्ठ १०-००

२२ **तालमालिका** । राजाभैया पूँछवाले । प्रथम भाग ४-००, तृतीय भाग ५-००

२३ **तुलसी संगीत मणिमाला** । वी० के० वेंकटरामानुज ६-००

२४ **दत्तिलम्** । कलिन्द कृत । हिन्दी टीका सहित ४-००

२५ **ध्रुपद और उसका विकास** । आचार्य कैलासचन्द्र देवबृहस्पति २२-००

२६ **ध्रुपद-धमार गायन** । राजाभैया पूँछवाले प्रथम भाग ५-००

२७ **ध्वनि और संगीत** । ललितकिशोर सिंह ८-००

२८ **नृत्यप्रश्नपञ्जिका** । प्रश्नोत्तर । जगदीशनारायण पाठक ४-००

२९ **नृत्यप्रश्नोत्तरी (१९५९-६०)** । प्रकाशनारायण १-००

३० **नृत्यभारती** । आचार्य सुधाकर । प्रथम भाग ८-००

३१ **नृत्यरत्नकोश** । कुम्भकर्णप्रणीत । १-२ भाग १०-५०

३२ **नृत्यरत्नावली** । जयसेनापति विरचित । सम्पा० डॉ० वी० राघवन २२-००

३३ **पाश्चात्त्य संगीत शिक्षा** । भगवतशरण शर्मा । सम्पा० लक्ष्मीनारायण गर्ग १२-००

३४ **प्रभाकर नृत्य प्रश्नोत्तरी** । जगदीश नारायण पाठक ३-५०

३५ **प्रभाकर प्रश्नोत्तर** । हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव ८-००

३६ **प्रवीणप्रवाह (संगीत प्रवीण के प्रश्नोत्तर)** । हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव ७-००

३७ **बाल सङ्गीत शिक्षा** । विश्वम्भरनाथ भट्ट । १-३ भाग ७-५०

३८ **बेलाविज्ञान** । वेणीप्रसाद श्रीवास्तव १५-००

३९ **बैंजोमास्टर** । चिन्तामणि जैन ४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४० **भातखण्डे संगीत पाठमाला ।** प्रथम भाग ६–००

४१ **भातखण्डे संगीतशास्त्र ।** पं० विष्णुनारायण भातखण्डे । १–४ भाग ८४–२५
प्रथम भाग १८–२५, द्वितीय भाग १६–००, तृतीय भाग १८–००, चतुर्थ भाग ३२–००

४२ **भारत के लोकनृत्य ।** लक्ष्मीनारायण गर्ग १०–००

४३ **भारतीय नृत्यकला ।** केशवचन्द्र वर्मा ५–००

४४ **भारतीय नृत्य शिक्षा ।** महालक्ष्मी १५–००

४५ **भारतीय संगीत का इतिहास ।** श्रीशरच्चन्द्र श्रीधर परांजपे
[इस ग्रन्थ में वैदिक काल से गुप्त काल तक के भारतीय संगीत का प्रमाणबद्ध इतिहास प्रस्तुत किया गया है । संस्कृत भाषा का जो स्थान तुलनात्मक भाषा-विज्ञान के अन्तर्गत है, वही स्थान भारतीय संगीत का तुलनात्मक संगीत विज्ञान में है । इसी दृष्टिकोण से भारतीय संगीत के महत्त्वपूर्ण बालखण्ड के इतिहास का उद्घाटन संस्कृत साहित्य के माध्यम से राष्ट्रभाषा में प्रस्तुत किया गया है ।] [चौ. रा. ९] ३५–००

४६ **भारतीय संगीत कोश ।** विमलाकान्तराय चौधरी २५–००

४७ **भारतीय संगीत वाद्य ।** लालमणि मिश्र ४०–००

४८ **बृहद्देशी ।** मतङ्गमुनि । सम्पा० बालकृष्ण गर्ग १०–००

४९ **मारिफुन्नगतमात ।** राजा नवाबअली । १–३ भाग ३८–००

५० **मीरा संगीत ।** स० आ० महाडकर २–५०

५१ **मुसलमान और भारतीय संगीत ।** आचार्य बृहस्पति २०–००

५२ **मीरा संगीत ।** सम्पा० शंकररायचन्द्र गोलवलकर २–५०

५३ **मृदङ्ग अङ्क ।** सम्पा० लक्ष्मीनारायण गर्ग १०–००

५४ **मृदङ्ग तबला प्रभाकर ।** सम्पा० लक्ष्मीनारायण गर्ग । १–२ भाग १०–००

५५ **मेलरागमालिका ।** महावैद्यनाथशिवकृत ५–००

५६ **यक्षगान ।** के० शिवराम कारंत । अनु० बी० वी० कारंत ६०–००

५७ **रविशंकर के आर्केस्ट्रा ।** सम्पा० लक्ष्मीनारायण गर्ग १२–००

५८ **रवीन्द्र संगीत ।** राधेश्याम पुरोहित ७–००

५९ **राग कोश ।** वसन्त ४–००

६० **रागपरिचय ।** हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव । प्रथम भाग २–२५, द्वितीय भाग ३–५५
तृतीय भाग ६–००, चतुर्थ भाग ६–००

६१ **रागप्रवीण ।** गणेशप्रसाद शर्मा । प्रथम भाग ९–००, द्वितीय भाग ९–००

६२ **रागविज्ञान ।** पं० बी० एन० पटवर्धन । १–७ भाग ५३–००

६३ **वाद्यशास्त्र ।** हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव ३–००

६४ **संगीत अर्चना ।** (तान आलाप) १०–००

६५ **संगीत अष्टछाप ।** सम्पा० लक्ष्मीनारायण गर्ग १०–००

६६ **संगीत कादम्बिनी ।** विश्वम्भरनाथ भट्ट ११–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६७ संगीतकिशोर। जगदीशसहाय कुलश्रेष्ठ		४-००
६८ संगीतचिन्तामणि। आचार्य डॉ० बृहस्पति—श्रीमति सुमित्रा कुमारी		३५-००
६९ संगीतचूड़ामणि। जगदेकमल्ल प्रणीत		६-५०
७० संगीतदर्पणः। हिन्दी टीका। विश्वम्भरनाथभट्ट		६-००
७१ संगीत निबन्ध। आर० एम० अग्निहोत्री		६-००
७२ संगीत निबन्धमाला। जगदीशनारायण पाठक		६-००
७३ संगीत निबन्ध संग्रह। हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव		६-००
७४ संगीत निबन्धावली। सम्पा० लक्ष्मीनारायण गर्ग।	प्रथम भाग	७-००
७५ संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।		७-००
७६ संगीतपारिजातः। हिन्दी टीका सहित		१२-००
७७ संगीतरघुनन्दनम्। विश्वनाथदेवप्रणीत। व्यङ्ग्यार्थचन्द्रिका व्याख्या		५-२५
७८ संगीतरत्नाकरः। शार्ङ्गदेव कृत। चतुरकल्लिनाथ—सिंहभूपाल कृत व्याख्या द्वय सहित।	१-२ व ४ भाग	७०-००
७९ संगीत रत्नाकर। भाषा टीका	प्रथम भाग	२०-००
८० संगीतराजः। नृपतिकुम्भकर्णप्रणीत। डॉ० प्रेमलताशर्मा सम्पा०।	१-२ भाग	८०-००
८१ संगीत लता। सम्पा० शंकररामचन्द्र गोलवलकर	प्रथम भाग	४-००
८२ संगीतलहरी। संग्रहकर्त्री—देवी मेहता		१-००
८३ संगीत विशारद। सम्पा० लक्ष्मीनारायण गर्ग		१२-००
८४ संगीतशास्त्र। के० वासुदेव शास्त्री		८-५०
८५ संगीतशास्त्र। जगदीशसहाय कुलश्रेष्ठ		३-५०
८६ संगीतशास्त्रदर्पण। जगदीशनारायण पाठक। प्रथमभाग २-३५,	द्वितीयभाग	५-००
८७ संगीत शिक्षा। श्रीकृष्णनारायण रातंजनकर।	प्रथम भाग	१-००
८८ संगीतसागर। सम्पा० प्रभुलाल गर्ग		१२-००
८९ संगीतसीकर।		६-००
९० संगीतसोपान।		३-००
९१ संग्रहचूड़ामणि। गोविन्दाचार्य कृत		१५-००
९२ सितार मार्ग।	प्रथम भाग	८-००
९३ सितारमालिका। भगवतशरण शर्मा		१२-००
९४ सितार वादन। सतीशचन्द्र। प्रथम ३-००, द्वितीय ७-५०,	१-२ भाग	१०-५०
९५ सितार शिक्षा। विश्वम्भरनाथभट्ट		८-००
९६ सूर संगीत। सम्पा० लक्ष्मीनारायण गर्ग।	१-२ भाग	९-५०
९७ स्वर मालिका। पं० विष्णुनारायण भातखण्डे		४-००
९८ स्वरमेलकलानिधिः। विश्वम्भरनाथभट्ट कृत हिन्दी टीका सहित		४-००
९९ हमारा आधुनिक संगीत। सुशीलकुमार चौबे		११-००
१०० हमारे प्रिय संगीतज्ञ। हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव		६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०१ **हाईस्कूल संगीतशास्त्र।** भगवतशरण शर्मा ५-५०
102 Hindu Music from Various Authors. Compiled by Raja Sir S. M. Tagore. 50-00
103 Hindustani Music. Its Physics and Aesthetics. by G. H. Ranade 20-00

बौद्ध-ग्रन्थाः

१ **अङ्गुत्तरनिकाय पालि।** भिक्खु जगदीशकाश्यप सम्पादित। १-४ भाग ४८-००
२ **अभिधम्मत्थसंगहो।** अनिरुद्धाचरियविरचित। भदन्त सुमङ्गल सामित्थेर कृत अभिधम्मत्थ विभावनी टीका सहित। भदन्त रेक्त धम्मत्थेर सम्पादित। १-२ भाग ३५-००
३ **अभिधर्मकोषम्।** भाष्यस्फुटार्थसहित। सम्पा० स्वामीद्वारिकादास। १-४ भाग ८०-००
४ **अभिसमाचारिका।** डॉ० वी० जीवानन्द सम्पादित २०-००
५ **अर्थविनिश्चयसूत्रम्।** सम्पा० डॉ० एन० एच० समताणी २५-००
६ **अवदानकल्पलता।** क्षेमेन्द्र विरचित। १-२ भाग ४५-००
७ **अवदानशतकम्।** परशुरामशर्मणा। संस्कृतम् १२-५०
८ **अष्टसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता।** हरिभद्र विरचित आलोक व्याख्या सहित २५-००
९ **आर्यशालिस्तम्बसूत्रं प्रतीत्यसमुत्पादविभङ्गनिदेशसूत्रं, प्रतीत्यसमुत्पादगाथासूत्रम्।** ९-००
१० **कथावत्थु पालि (अभिधम्म पिटके)।** सम्पादक—भिक्खु जगदीश काश्यप ७-५०
११ **खुद्दकनिकाय।** भिक्खु जगदीश काश्यप सम्पादित। १-७ भाग (९ जिल्दों में) ६७-५०
१२ **गण्डव्यूहसूत्रम्।** परशुरामशर्मा वैद्य सम्पादित २०-००
१३ **गुह्यसमाजतंत्रम्।** (तथागतगुह्यक) शीतांशुशेखर वागची सम्पादित १२-५०
१४ **चरियापिटक।** भिक्षुधर्मरक्षित कृत हिन्दी अनुवाद सहित ४-००
१५ **चुल्लनिद्देस पालि।** भिक्खु जगदीश काश्यप ७-५०
१६ **चुल्लवग्ग।** भिक्खु जगदीश काश्यप सम्पादित ७-५०
१७ **जातक।** भदन्त आनन्द कौसल्यायन अनुवादित। १-६ भाग ९०-००
१८ **जातक पालि।** भिक्खु जगदीश काश्यप सम्पादित। १-२ भाग १५-००
१९ **जातकट्ठकथा।** पठमो भाग। भिक्षुधर्मरक्षित सम्पादित। एकनिपातवण्णना १५-००
२० **जातकमाला।** हिन्दी टीका सहित। सूर्यनारायण चौधरी १२-५०
२१ **जातकमाला तथा सुभाषितरत्नकरण्डक कथा।** आर्यसूर कृत १२-५०
२२ **जातकसंग्रहः।** तुङ्गर सम्पादित ५-००
२३ **तत्त्वसंग्रहः।** शान्तरक्षितविरचित। स्वामी द्वारिकादास शास्त्री। १-२ भाग ६०-००
२४ **तान्त्रिक बौद्ध साधना और साहित्य।** नगेन्द्रनाथ उपाध्याय १०-००
२५ **थेरगाथा।** अनु० भिक्षुधर्मरत्न ५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२६ **थेरीगाथाएँ** । डॉ० भरतसिंह उपाध्याय ५–००

२७ **दशभूमिकसूत्रम्** । डॉ० शीतांशुशेखर वागची सम्पादित २०–००

२८ **दीघनिकायः** । भिक्खु जगदीश काश्यप सम्पादित । १–३ भाग २२–५०

२९ **धम्मपदं** । (शोधपूर्ण संस्करण) सटिप्पण 'प्रकाश' हिन्दी व्याख्या सहित । श्रीकन्छेदीलालगुप्त अनुवादित । टिप्पणीकार—श्री सत्कारिशर्मा वङ्गीय [तुलनात्मक टिप्पणियाँ; अँगरेजी, जर्मन, लातिन, हिन्दी, बँगला आदि भाषाओं में प्रस्तुत पूर्व-पूर्व संस्करणों में उपलब्ध सामग्री का पूर्णतया विवेचन; गाथा-सूची, शब्दकोश आदि अनेकविध शोधपूर्ण नवीनताओं से मण्डित यह संस्करण भारतीय भाषाओं में आजतक के प्रकाशित संस्करणों में सभी दृष्टियों से सर्वोत्तम है ।] [वि. सं. १५०] ७–००

३० **धम्मसंगणि** । वापट कृत १५–००

३१ **ध्यान-सम्प्रदाय** । डॉ० भरतसिंह उपाध्याय १५–००

३२ **नवनालन्दा महाविहार शोधग्रन्थ** । डॉ० एस०मुखर्जी सम्पा० । १–२ भाग ३०–००

३३ **नालन्दा-देवनागरी-पालि-ग्रन्थमाला** । देवनागरी लिपि में सम्पूर्ण पालि त्रिपिटक । ४१ जिल्दों में सम्पूर्ण । साधारण सं० २०५–००, पुस्तकालय सं० ३०७–५०

३४ **निदानकथा** । हिन्दी टीका सहित । डॉ० महेश तिवारी अनुवादित १५–००

६५ **न्यायप्रवेश** । हरिभद्रसूरिकृतवृत्ति-पार्श्वदेव कृत पञ्जिका सहित । प्रथम भाग २२–००

३६ **पञ्चप्पकरण-अट्ठकथा** । डॉ० महेशतिवारी सम्पादित । १–३ भाग २८–३७

३७ **पट्ठानपालि** । भिक्खु जगदीश काश्यप सम्पादित । १–६ भाग ४५–००

३८ **परिवार पालि** । भिक्खु जगदीश काश्यप सम्पादित ७–५०

३९ **पाइय-पज्ज-संगहो** । पठमो भाग १–५०

४० **पाचित्तिय पालि** । भिक्खु जगदीश काश्यप सम्पादित ७–५०

४१ **पाराजिक पालि** । भिक्खु जगदीश काश्यप सम्पादित ७–५०

४२ **पालिपल्लविनी** । हिन्दी टीका सहित । कु० मुकुलरानी त्रिपाठी एम० ए० भूमिका लेखक—डॉ० रमाशङ्कर तिवारी [चौ. सु. २७] ५–००

४३ **पालिप्रवेशिका** । सम्पा० डॉ० कोमलचन्द्र जैन ६–५०

४४ **पालि-प्राकृत-अपभ्रंश संग्रह** । सम्पा० रामअवध पाण्डेय १५–००

४५ **पालि रीडर** । (पालिपाठ सङ्कलन) सटिप्पण । श्रीधर्मानन्द कौशाम्बी एवं सी० वी० राजवाड़े । १०–००

४६ **पालिव्याकरण** । भिक्षु धर्मरक्षित ३–५०

४७ **पालि साहित्य का इतिहास** । भिक्षु धर्मरक्षित ६–००

४८ **पालि साहित्य का इतिहास** । भरतसिंह उपाध्याय २५–००

४९ **पालि साहित्य का इतिहास** । राहुल सांकृत्यायन ५–००

५० **पालि साहित्य का इतिहास** । राजकिशोर ३–०००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५१ **प्रमाणवार्तिकभाष्यम्।** धर्मकीर्ति कृत। 'मनोरथनन्दि'-विवृत्तियुत्। सम्पा० द्वारिकादास शास्त्री २५-००

५२ **प्रमाणवार्तिकम्—स्वार्थानुमानपरिच्छेदः।** धर्मकीर्ति कृत। स्वोपज्ञ वृत्ति, आंग्लानुवाद सहित। १-५१ कारिका। सम्पा० एस० मुखर्जी-हजुननागासाकि ४-००

५३ **बुद्धकालीन भारतीय भूगोल।** भरतसिंह उपाध्याय २०-००

५४ **बुद्धकालीन समाज और धर्म।** डॉ० मदनमोहन सिंह १२-००

५५ **बुद्धचरितम्।** अश्वघोषकृतम्। महन्त श्री रामचन्द्रदास शास्त्री कृत हिन्दी अनुवाद सहित। [वि. सं. ८२] सम्पूर्ण १-२ भाग ११-००
प्रथम भाग (१-१४ सर्ग) ५-००, द्वितीय भाग (१५-२८ सर्ग) ६-००

५६ **बोधिचर्यावतार।** शान्तिदेवविरचित। प्रज्ञाकरमतिकृत पञ्जिकाव्याख्यासहित १२-५०

५७ **बोधिसत्त्वचरितम्।** सत्यव्रतशास्त्रीप्रणीत १६-००

५८ **बौद्ध और जैन आगमों में नारी जीवन।** कोमलचन्द्र जैन १५-००

५९ **बौद्धदर्शन-मीमांसा।** पं० बलदेव उपाध्याय। द्वितीय संशोधित संस्करण। (प्रान्तीय १०००) रु० तथा डालमिया २१००) रु० से पुरस्कृत)
[इसमें पांच खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में बुद्ध के मूल धर्म का वर्णन, द्वितीय में बौद्ध-धर्म का विकास, तृतीय में वैभाषिक, सौत्रान्तिक, योगाचार तथा माध्यमिक सम्प्रदायों के गूढ़तथ्यों का सरल विवेचन, चतुर्थ में बौद्ध-न्याय, बौद्ध-योग तथा बौद्ध-तन्त्रों का वर्णन एवं पंचम में बौद्धधर्म का विस्तार से उपाख्यान है।]
[वि. रा. १] ३०-००

६० **बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास।** डॉ० गोविन्दचन्द पाण्डेय १२-००

६१ **बौद्ध धर्म-दर्शन।** आचार्य नरेन्द्रदेव २५-००

६२ **बौद्धन्याय।** मू० ले०—एफ० टी० शर्बाट्स्की। अनु० डॉ० रामकुमार राय
[ग्रन्थ दो भागों में विभक्त है, प्रथम भाग में भारतीय न्यायशास्त्र तथा उसके मध्य एशिया में प्रचार-प्रसार का विवेचन करने के बाद लेखक ने दिङ्नाग के प्रामाण्यवाद तथा प्रत्यक्ष आदि का अध्ययन प्रस्तुत किया है। द्वितीय भाग प्रमुखतः धर्मकीर्त्ति के न्यायविन्दु तथा उस पर धर्मोत्तर की टीका का अनुवाद है। इस भाग के परिशिष्टों में तिब्बती भाषा के न्यायशास्त्रीय ग्रन्थों तथा हिन्दू नैयायिकों के बौद्धन्याय पर किये गये आक्षेपों से सम्बद्ध संस्कृत न्याय ग्रन्थों के उद्धरणों का अनुवाद भी दिया गया है।] [वि. रा. १२४] प्रथम भाग ३५-००

६३ **बौद्ध तर्कभाषा।** मोक्षाकरगुप्त विरचित। अनेकान्तवाद निरास हिन्दी अनुवाद सहित। डॉ० रघुनाथ गिरि ५-००

६४ **बौद्धधर्म का विवेचन।** श्रीनिवासशास्त्री ३५-००

६५ **बौद्धसाहित्य की सांस्कृतिक झलक।** परशुराम चतुर्वेदी ५-००

६६ **बौद्ध सिद्धों के चर्यापद।** आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ६-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६७ **बौद्धालङ्कार-शास्त्रम्** । डॉ० ब्रह्ममित्र अवस्थी अनुवादित १५-००
६८ **भक्तिमार्गीय बौद्धधर्म** । अनु० नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ४-००
६९ **भविसयत्तकहा** । सम्पा० सी० डी० दलाल तथा पी० डी० गुणे ३६-००
७० **भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथा काव्य** । डॉ० देवेन्द्रकुमार शास्त्री २५-००
७१ **भिक्षुणी विनय** । डॉ० गुस्ताक रोथ ३०-००
७२ **मज्झिमनिकाय** । भिक्खु जगदीश काश्यप सम्पादित । १-३ भाग २५-००
७३ **मध्यमकशास्त्रम्** । नागार्जुन विरचित । चन्द्रकीर्ति कृत प्रसन्नपद व्याख्या १२-५०
७४ **मध्यान्तविभागभाष्यम्** । डॉ० नथमलटाटिया-प्रो० अनन्तलाल ठाकुर ४-००
७५ **महापरिनिब्बानसुत्तं** । मूलपालि-हिन्दी अनुवाद तथा अट्ठकथासार सहित । भिक्षु धमरक्षित ६-००
७६ **महायानसूत्रसंग्रह** । १-२ भाग ४५-००
७७ **महायानसूत्रालंकार** । असंग विरचित । डॉ० शीतांशुशेखर बागची सम्पा० २०-००
७८ **महावग्ग पालि** । भिक्खु जगदीश काश्यप ७-५०
७९ **महावंस** । आनन्द कौसल्यायन कृत हिन्दी अनुवाद १०-००
८० **महावंसटीका** । श्रीधरवासुदेव सोहोनी सम्पादित । २०-००
८१ **महावस्तु अवदानं** । डॉ० एस० बागची सम्पादित । प्रथम खण्ड ३५-००
८२ **मिलिन्दपञ्हो (मिलिन्द प्रश्नः)** । मूलपालि-संस्कृत छाया संवलित । विमत्तिच्छेदपर्यन्त ४-००
८३ **मिलिन्दप्रश्न** । हिन्दी अनुवाद सहित । भिक्षु जगदीश काश्यप १५-००
८४ **मूलसर्वास्तिवाद विनयवस्तु** । डॉ० एस० बागची सम्पा० । १-२ खण्ड ६०-००
८५ **यमक पालि** । भिक्खु जगदीश काश्यप सम्पादित । १-३ भाग २२-५०
८६ **यशोधरा** । मैथिलीशरण गुप्त ४-००
८७ **ललितविस्तरः** । पी० एल० वैद्य सम्पादित १२-५०
८८ **वज्जालग्गम्** । रत्नदेवकृतसंस्कृतवृत्तिसंवलितम् । सम्पा० माधव वासुदेव पटवर्धनम् २१-००
८९ **वादन्यायप्रकरणम्** । सम्पा० द्वारिकादास शास्त्री १५-००
९० **विज्ञप्तिमात्रतासिद्धिः** । विंशति-त्रिंशिकाभिधानप्रकरणद्वयात्मिका भाषानुवादसमुल्लसिता । अनु० डॉ० महेश तिवारी
[आचार्य वसुबन्धु विरचित यह ग्रन्थ विज्ञानवाद का आधार-ग्रन्थ है । इसमें विंशतिका (बीस कारिकाएँ) तथा त्रिंशिका (तीस कारिकाएँ) दो प्रकरण हैं । देशी-विदेशी दुर्लभ पाण्डुलिपियों के आधार पर इसका शुद्ध मूलपाठ निश्चित किया गया है, तदनुसार सरल-सुबोध हिन्दी व्याख्या प्रस्तुत की गई है। पाण्डित्यपूर्ण भूमिका तथा अन्त में जटिलता से रहित तथा स्पष्ट है । अधिक बोधगम्य बनाने के लिये सरल शब्दानुक्रमणिका आदि उपयोगी सामग्री भी दी गई है ।] [वि. सं. १३९] ८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

९१ **विभंगपालि** । भिक्खु जगदीश काश्यप सम्पादित ७-५०
९२ **विंशतिकाविज्ञप्तिमात्रतासिद्धिद्वयम्** । ३९-२५
९३ **विशुद्धिमग्गो** । सम्पा० रेवतधम्म (वर्मी) १-३ भाग ९८-००
९४ **शिक्षासमुच्चयः** । शान्तिदेव विरचित १२-५०
९५ **श्रावकभूमि** । आर्यासंग कृत । सम्पा० करुणेश शुक्ल ४५-००
९६ **संयुक्तनिकाय** । भिक्षु जगदीश काश्यप सम्पादित । १-४ भाग ३०-००
९७ **सच्चसंगहो** । अनु० भदन्त आनन्द कौसल्यायन ४-००
९८ **सत्यसिद्धिशास्त्रम्** । हरिवर्म । एन० ऐय्यर स्वामी शास्त्री ६५-००
९९ **सद्धम्मसंगहो** । धम्मकित्ति महासामीकृत । सम्पा० डॉ० महेश तिवारी ३-००
१०० **सद्धर्मपुण्डरीक** । मिश्रित संस्कृत भाषा से अनुदित । अनु० डॉ० राममोहनदास १०-५०
१०१ **सद्धर्मपुण्डरीकसूत्रम्** । परशुरामशर्मा वैद्य संशोधित १२-५०
१२२ **सद्धर्मलङ्कावतारसूत्रम्** । डॉ० पी० एल० वैद्य परिष्कृत १२-००
१०३ **समन्तपासादिका नाम विनयट्ठकथा** । वीरबलशर्मा संशोधित । १-३ भाग ४५-००
१०४ **समाधिराजसूत्रम्** । १६-००
१०५ **सम्मोहविनोदिनी नाम विभङ्गट्ठकथा** । डॉ० यू० धर्मरत्न सम्पादित १५-००
१०६ **सासनवंसो** । डॉ० च० सिं० उपासको ६-००
१०७ **सुत्तनिपात-अट्ठकथा** । डॉ० अङ्गराजचौधरी । प्र० भाग २०-५०, द्वि० भाग ३०-००
१०८ **सुत्तनिपात** । भिक्षु धर्मरक्षित कृत । हिन्दी १२-००
१०९ **सुमङ्गलविलासिनी (दीघनिकाय-अट्ठकथा)** । डॉ० महेशतिवारी प्रथम भाग १९-५०, द्वितीय भाग ३०-००
११० **सुवर्णप्रभाससूत्रम्** । डॉ० शीतांशुशेखर वागची सम्पादित २०-००
१११ **सौगतसिद्धान्तसारसंग्रहः** । (बौद्धदर्शन) डॉ० चन्द्रधर शर्मा कृत हिन्दी अनुवाद सहित ६-००
११२ **सौगतसूत्रव्याख्यानकारिका** । कुमारिल कारिकावली । कुमारिल स्वामिपाद विरचित २-००
११३ **सौन्दरानन्दकाव्य** । हिन्दी टीका सहित १०-००
११४ **स्फुटार्थाश्रीघनाचारसंग्रहटीका** । संघसेन सम्पादित ८-००
115 History and Palaeography of Mauryan Brahmi Script by Dr. C. S. Upasak 12-00

जैन-ग्रन्थाः

१ **अध्यात्मबिन्दु** । हर्षवर्धनोपाध्यानिबद्ध । सम्पा० मुनि श्रीमित्रानन्द विजय ६-००
२ **अनेकान्तजयपताका** । हरिभद्रसूरिविरचित । मुनिचन्द्र प्रणीत व्याख्या सहित । द्वितीय भाग मात्र २५-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३ **अपभ्रंश काव्यत्रयी** । जिनदत्तसूरिविरचित । सम्पा० बी० जे० सान्देसरा २४-००

४ **आख्यानकमणिकोशः** । नेमिचन्द्रसूरि विरचित । आम्रदेव सूरिकृत वृत्ति सहित । सम्पा० मुनि पुण्यविजय २१-००

५ **आचार्य हेमचन्द्राचार्य और उनका शब्दानुशासन : एक अध्ययन** । डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री
[प्रस्तुत ग्रन्थ में शब्दानुशासन सम्बन्धी हैम की विशेषताओं, उपलब्धियों और अभावों पर प्रकाश डाला है तथा पाणिनि एवं पाणिनि से भिन्न अन्य अनेक वैयाकरणों के साथ अनेक दृष्टियों से उनकी तुलना करते हुए विशद् आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। हैम के साथ-साथ अन्य शब्दानुशासनों का भी विवेचन यथास्थान होता चला है।] [वि. रा. ६२] २०-००

६ **आत्मानुशासन** । गुणभद्र कृत संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ७-००

७ **आदिपुराण में प्रतिपादित भारत** । डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री १२-००

८ **आप्तपरीक्षा** । विद्यानन्दिविरचित । हिन्दी टीका सहित ८-००

९ **उक्तिरत्नाकर** । साधुसुन्दरमणिविरचित । सम्पा० मुनि जिनविजय ५-००

१० **उक्तिव्यक्तिप्रकरण** । पं० दामोदर कृत ८-००

११ **उत्तरपुराण**। गुणभद्र विरचित ३०-००

१२ **उत्तराध्ययनसूत्र : एक अध्ययन** । डॉ० सुदर्शनलाल जैन २५-००

१३ **उपासकाध्ययन** । सोमदेवसूरिविरचित । हिन्दी टीका सहित ३०-००

१४ **कथाकोसु** । ३०-००

१५ **कथाकोषप्रकरणम्** । जिनेश्वरसूरिविरचित । सम्पा० जिनविजय १२-५०

१६ **कन्नडप्रान्तीय ताड़पत्रीय ग्रन्थसूची** । १३-००

१७ **करकण्डचरिउ** । मुनिकनकामर विरइउ । हिन्दी-आंग्लानुवाद सहित २०-००

१८ **कर्मप्रकृति** । हीरालाल ८-००

१९ **कविस्वयम्भू** । डॉ० सङ्कटाप्रसाद उपाध्याय १२-५०

२० **कल्पलताविवेकः** । अज्ञातकर्तृक । मुरारिलाल नागर तथा हरिशङ्करशास्त्री ३२-००

२१ **कल्पसूत्र के १५ स्वर्णाक्षरी पृष्ठ और ८ चित्र** । गुजराती २०-००

२२ **कसायपाहुड़सुत्त** । गुणधर विरचित । यतिवृषभ कृत संस्कृत एवं हीरालाल कृत हिन्दी टीका सहित २०-००

२३ **कान्हडदेप्रबन्ध** । १२-२५

२४ **कुन्द-कुन्द प्राभृत संग्रह** । हिन्दी अनुवाद सहित । सम्पा० कैलाशचन्द्रशास्त्री ६-००

२५ **कुमारपालचरित्रसंग्रह** । सम्पा० आचार्य जिनविजय मुनि १०-००

२६ **गणितसारसंग्रह** । १२-००

२७ **गद्यचिन्तामणि** । अनुवादक—पन्नालाल जैन ३०-००

२८ **गोम्मटसारः (जीवकाण्ड)** । नेमिचन्द्राचार्य कृत । संस्कृत छाया हिन्दी टीका सहित ९-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२९ चउपन्नमहापुरिसचरिउ । श्रीलांगसधा		२१–००
३० चौलुक्य कुमारपाल । लक्ष्मीशंकर व्यास		७–००
३१ छक्कम्सुवएसो । सम्पा० मधुसुदन सो० मोदी		३५–००
३२ जम्बूस्वामिचरितम् । राजमल्लविरचितम् । अध्यात्मकमलमार्तण्डश्च		२५–००
३३ जंदूदीव-पण्णत्ति संगहो । पउमणंदिकओ । हिन्दी टीका सहित		१६–००
३४ जयपायड-निमित्त शास्त्र । पूर्वाचार्य विरचित । सव्याख्या		६–६०
३५ जसहरचरिउ । अनु० डॉ० हीरालाल जैन		१८–००
३६ जिनदत्ताख्यानद्वयम् । (प्राकृत) अमृतलाल मोहनलाल भोजक सम्पादित		३–५०
३७ जिनवाणी । अनु० डॉ० हीरालाल जैन		१२–००
३८ जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज । डॉ० जगदीशचन्द्र जैन [हर्ष, शोक, विस्मादि नाना भाव धाराओं में अवगाहन करते हुए भारतीय समाज की जैनागमसाहित्य में प्राप्त ऐतिहासिक स्थिति का, शैली और कौशल की दृष्टि से उनका वर्णन प्राप्त करने के लिये यह एक ही ग्रन्थ है ।] [वि. रा. ९३]		३०–००
३९ जैन आचार । डॉ० मोहनलाल मेहता		५–००
४० जैनकला एवं स्वायत्य । सम्पा० लक्ष्मीचन्द जैन ।	१–३ भाग	५५०–००
४१ जैन ग्रन्थप्रशस्तिसंग्रह । परमानन्द जैन शास्त्री ।	१–२ भाग	१६–५०
४२ जैन तर्कभाषा । यशोविजयोपाध्यायकृत । सुखलालप्रणीत व्याख्या		३–५०
४३ जैन तर्कशास्त्र में अनुमान विचार : ऐतिहासिक एवं समीक्षात्मक अध्ययन । डॉ० दरबारीलाल जैन कोटिया		१६–००
४४ जैन दर्शन । महेन्द्र कुमार जैन		१५–००
४५ जैन दार्शनिक साहित्य के विकास की रूपरेखा । दलसुखभाई । हिन्दी		०–५०
४६ जैन धर्म-दर्शन । डॉ० मोहनलाल मेहता		१०–००
४७ जैन न्याय । कैलाशचन्द्र शास्त्री । हिन्दी		१६–००
४८ जैनन्यायखण्डखाद्यम् । आचार्य यशोविजयसूरि कृत । बदरीनाथ शुक्ल कृत विमर्शाख्य हिन्दी व्याख्या सहित		१०–००
४९ जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह । आचार्य जिनविजय सम्पादित ।	प्रथम भाग	१०–००
५० जैन शिलालेख संग्रह । विजयमूर्ति संगृहीत ।	१–५ भाग	३०–००
५१ जैन सम्प्रदाय शिक्षा । पालचन्द्र विरचित । हिन्दी		१५–००
५२ जैन साहित्य का बृहद् इतिहास ।	१–६ भाग	१००–००
५३ जैनेन्द्रमहावृत्तिः । आचार्यदेवनन्दिप्रणीत		१८–००
५४ जैनेन्द्रसिद्धान्तकोशः । जिनसेनवर्णी ।	१–४ भाग	२१०–००
५५ ज्ञानपञ्चमीकथा । महेश्वरसूरि विरचित		७–२५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५६ ज्ञानार्णवः। (योगप्रदीप) शुभचन्द्राचार्य विरचित। पन्नालाल बाकलीवाल कृत हिन्दी टीका सहित　१२-००

५७ णायकुमारचरिउ। अनु० हीरालाल जैन　१८-००

५८ तत्त्वार्थवार्तिक (राजवार्तिक)। अकलङ्कदेव।.हिन्दीसारसहित। द्वि०भाग २०-००

५९ तत्त्वार्थसूत्र। फूलचन्द्र कृत हिन्दी　५-००

६० तत्त्वार्थसूत्र। उमास्वामि। विवेचन सहित। भाषा टीका। पं० सुखलाल संघवी　१०-००

६१ तत्त्वार्थाधिगमसूत्रम्। उमास्वामिकृत मूलसूत्र संस्कृत टीका। खूबचन्द्र कृत हिन्दी टीका सहित　६-००

६२ तिलोयपण्णत्ति का गणित। प्रो० लक्ष्मीचन्द्र जैन　३-००

६३ दक्षिण भारत में जैन धर्म। पं० कैलाशचन्द्र　७-००

६४ दर्शन और चिन्तन। सुखलाल संघवी　७-००

६५ दिग्विजयमहाकाव्यम्। मेघविजयोपाध्याय विरचित　८-००

६६ देवगढ़ की जैन कला। डॉ० भगवानचन्द्र जैन　३५-००

६७ द्वादशारनयचक्रम्। श्रीमल्लवादिसूरिकृत। सिंहसूरिप्रणीत व्याख्या सहित　१६-००

६८ द्विसंधानमहाकाव्य। सम्पा० प्रो० खुशालचन्द्र गोरावाला　२५-००

६९ धर्माभ्युदयः। संस्कृत-हिन्दी। अनुवादक—पन्नालाल जैन　३०-००

७० धर्मशर्माभ्युदय। (हिन्दी) अनु० पं० पन्नालाल जैन　७-००

७१ नन्दिसूत्रचूर्णि। नन्दीसुत्तं सिरि देववायग विरइयं। सिरि जिगदासगणि महत्तर विरइयास चुण्णी सहित। मुनि पुण्यविजय सम्पादित　१०-००

७२ नन्दिसूत्रटीकावृत्तिः। नन्दिसूत्रम्-देववाचक विरचित। चन्द्राचार्य कृत दुर्गपद व्याख्या—अज्ञात कर्तृक विषमपदपर्याय-हरिभद्रसूरि कृत वृत्ति सहित　१५-००

७३ नयचक्र। माइल्ल धवल। अनु० कैलाशचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री　२०-००

७४ न्यायदीपिका। अभिनवधर्मभूषणयति कृत　७-००

७५ न्यायविनिश्चयः। अकलङ्कदेवकृत। वादिराजकृतविवरणसहित। १-२ भाग　५०-००

७६ न्यायावतारः। सिद्धसेनविरचित। शान्त्याचार्य प्रणीत वार्तिक वृत्ति। दलसुख मालवणिया कृत हिन्दी टीका सहित　१६-५०

७७ न्यायावतारः। सिद्धर्षिगणि कृत संस्कृत टीका का हिन्दी भाषानुवाद　५-००

७८ पउमचरिउ। (पद्मचरित) स्वयम्भूदेव विरचित। विद्याधर-अयोध्याकाण्ड। हिन्दी अनुवाद सहित।　१-५ भाग　२५-००

७९ पउमचरियं। विमलसूरि विरइयं। हिन्दी आनुवाद सहित।　१-२ भाग　४०-००

८० पञ्चसंग्रहः। संस्कृत व्याख्या, प्राकृतवृत्ति, हिन्दीटीका सहित। हीरालालजैन　३५-००

८१ पञ्चस्तोत्रसंग्रह। संस्कृत व्याख्या-हिन्दी पद्यानुवाद-अन्वयार्थ-भावार्थ सहित　३-००

८२ पञ्चास्तिकाय। कुन्दकुन्दाचार्य कृत। 'समयव्याख्या' 'तात्पर्यवृत्ति' नामक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत टीका तथा हेमराज पाण्डेय कृत 'बालबोधिनी' भाषा टीका के आधार पर मोहनलाल शास्त्री कृत हिन्दी अनुवाद सहित ७-००

८३ **पञ्चास्तिकाय-सार** । अनुवादक—ए० चक्रवर्ती ३०-००

८४ **पद्मपुराण (जैन)** । रविषेण कृत । हिन्दी टीका सहित । १-३ भाग ७२-००

८५ **परमात्मप्रकाश-योगसार** । योगेन्दुदेव कृत । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित ९-००

८६ **पाइअसद्दमहण्णवो** । हरगोविन्ददास कृत ३०-००

८७ **पासनाहचरीऊ** । पासणाह चरीउ—आपरिय सिरि पउम कित्ति विरइउ । सम्पा० प्रफुल्लकुमार मोदी । हिन्दी अनुवाद-कोष-टिप्पणी सहित २५-००

८८ **पुराणसारसंग्रह** । दामनन्दि विरचित । हिन्दी टीका सहित । १-२ भाग १०-००

८९ **पुरातन जैनवाक्यसूची** । विस्तृत प्रस्तावना सहित १७-००

९० **पुरुषार्थसिद्ध्युपाय** । अमृतचन्द्रसूरि कृत । नाथूराम प्रेमी कृत हिन्दी टीका ३-२५

९१ **प्रबन्धकोषः** । राजशेखरसूरिविरचित ६-५०

९२ **प्रबन्धचिन्तामणिः** । मेरुतुङ्गविरचित ६-५०

९३ **प्रमाणमीमांसा** । संस्कृत मूल एवं आंग्लानुवाद सहित । सत्कारि मुखर्जी १५-००

९४ **प्रवचनसार** । कुन्दकुन्दाचार्य कृत । अमृतचन्द्राचार्य–जयसेनाचार्यविरचितः संस्कृत व्याख्या—बालबोध हिन्दी टीका, आंग्लानुवाद सहित १५-००

९५ **प्रशमरतिप्रकरणम्** । उमास्वातिविरचित । हरिभद्रसूरि कृत संस्कृत व्याख्या-राजकुमारशास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित ६-००

९६ **प्राकृतप्रवेशिका** । कोमलचन्द जैन ६-५०

९६क **प्राकृत व्याकरण** । हिन्दी । श्री मधुसूदन प्रसाद मिश्र [वि. रा. ३२] ७-००

९७ **प्राकृतसर्वस्व** । मार्कण्डेय विरचित । सम्पा० कृष्णचन्द्र आचार्य २०-००

९८ **प्राकृत साहित्य का इतिहास** । डॉ० जगदीशचन्द्र जैन । वेद से लेकर प्राचीनतम शिलालेख, नाटक, कथाग्रन्थ आदि के व्यापक समीक्षण एवं समालोचन के साथ हिन्दी में अपने विषय का प्रथम ग्रन्थ [वि. रा. ४१] ३०-००

९९ **बृहद् द्रव्यसंग्रहः** । नेमिचन्द्र सिद्धान्तिदेव विरचित । ब्रह्मदेव कृत वृत्ति, जवाहर शास्त्री कृत हिन्दी टीका सहित ५-५०

१०० **बौद्ध और जैन आगमों में नारी जीवन** । डॉ० कोमलचन्द्र जैन १५-००

१०१ **भट्टारक सम्प्रदाय** । वी० पी० जोहरापुरकर सम्पादित ८-००

१०२ **भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथा काव्य** । देवेन्द्रकुमार शास्त्री २५-००

१०३ **भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ** । सम्पादकीय । १-३ भाग ३०-००

१०४ **भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान** । डॉ० हीरालाल जैन १०-००

१०५ **भोजचरित्र** । राजवल्लभकृत । आंग्ल प्रस्तावना, नोट्स परिशिष्ट सहित । सम्पा० डॉ० वी० सी० एच० छाबड़ा–एस० शङ्करनारायणन् ८-००

१०६ **मदनपराजयः** । नागदेव विरचित १२-००

१०७ **मयणपराजयचरिउ** । हरिदेव कृत । हिन्दी टीका सहित ८-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०८ **महापुराण** । (आदिपुराण) १–२ भाग २०–००

१०९ **महापुराण** । (उत्तरपुराण) पन्नालाल जैन सम्पादित १०–००

११० **महाबन्धः** । भूतबलिभट्टारकविरचित । हिन्दी टीका सहित । १–७ भाग १४०–००

१११ **महामात्य वस्तुपाल का साहित्य मण्डल और संस्कृत साहित्य में उसकी देन** । डॉ० भोगीलाल जे० सान्देसरा ४–००

११२ **महाबीर वाणी** । डॉ० भगवानदास तिवारी १८–००

११३ **मेरी जीवन गाथा** । गणेशप्रसाद वर्णी प्रथम भाग ८–००

११४ **यशस्तिलक का सांस्कृतिक अध्ययन** । डॉ० गोकुलचन्द्र जैन २०–००

११५ **योगसारप्राभृत** । अनु० जुगुलकिशोर मुख्तार १५–००

११६ **रत्नकरण्ड श्रावकाचार** । समन्तभद्रस्वामिविरचित ८–००

११७ **रामचन्द्रचरितपुराणम्** । सम्पा० डॉ० आर० सी० हीरमेठ ४०–००

११८ **रामविजयकाव्य** । अनु० टी० एस० शामराव ४५–००

११९ **वड्ढमाणचरिउ** । अनु० डॉ० रामकुमार जैन २७–००

१२० **वर्धमानचरितम्** । सम्पा० बी० एस० सन्नैया ७–००

१२१ **वर्धमान पुराण** । सम्पा० टी० एस० शामराव ४५–००

१२२ **वीरजिणिंदचरिउ** । अनु० हीरालाल जैन १०–००

१२३ **वीरवर्धमानचरित** । अनु०—पं० हीरालाल शास्त्री १९–००

१२४ **संस्कृत काव्य के विकास में जैन कवियों का योगदान** । नेमिचन्द्र शास्त्री ३०–००

१२५ **सत्यशासन-परीक्षा** । सम्पा० गोकुलचन्द्र जैन १०–००

१२६ **समयसार** । श्री गणेशप्रसाद वर्णी १२–००

११७ **समयसार** । सम्पा० प्रो० ए० चक्रवर्ती १५–००

१२८ **समाधितन्त्र-इष्टोपदेश** । हिन्दी टीका सहित ४–००

१२९ **समीचीन धर्मशास्त्र** । समन्तभद्राचार्यविरचित रत्नकरण्ड उपासकाध्ययन । युगलकिशोर मुख्तार कृत हिंन्दी टीका सहित ३–००

१३० **सर्वार्थसिद्धिः** । हिन्दी अनुवाद सहित ३०–००

१३१ **सिरिवालचरिउ** । अनु० डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन १२–००

१३२ **सुवर्णभूमि में कालकाचार्य** । डॉ० उमाकान्त शाह १–००

१३३ **स्तुति विद्या** । भद्राचार्य विरचित । हिन्दी टीका सहित १–७५

१३४ **स्याद्वादमंजरी** । मल्लिषेण विरचित । हेमचन्द्रसूरि निर्मित अन्ययोग-व्यवच्छेद–द्वात्रिंशिकास्तवन टीका सहित । सम्पा० ए० बी० ध्रुव २५–००

१३५ **स्याद्वादमञ्जरी** । मल्लिषेण कृत । हेमचन्द्रसूरि निर्मित अन्ययोगव्यच्छेद-द्वात्रिंशिकास्तवन टीका सहित । सम्पा० जगदीशचन्द्र जैन १०–००

१३६ **हिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास** । कामताप्रसाद जैन २–९०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१३७ **हिन्दी जैन साहित्य परिशीलन**। नेमिचन्द्रशास्त्री। १–२ भाग १०–००

१३८ **हेमचन्द्राचार्य जीवनचरित्र**। (सचित्र) अनुवादक—कस्तूरमल बाँठिया
[मानव-समाज, विशेषतः जैन समाज की आत्मा के कितने निकट रहकर, किस प्रकार से उसके हित में उन्होंने अपना जीवन अर्पित कर दिया यह ग्रन्थ पढ़कर ही अंशतः जाना जा सकता है। ऐसे सिद्ध महापुरुष के प्रति समुचित सम्मान प्रकट न करने का ऋण इसे पढ़कर भी दूर किया जाय तो उचित होगा।] [वि. रा. १११] ७–५०

समालोचनात्मक-इतिहास-ग्रन्थाः

१ **अक्षर अमर रहें**। निबन्ध-संग्रह। श्री वाचस्पति गैरोला
[यह निबन्ध-संग्रह संस्कृत हिन्दी के सामान्य विद्यार्थियों तथा शोधकार्यरत स्नातकों के लिये पुरातत्त्व, इतिहास, साहित्य, शोध और कला की दृष्टि से से विशेष उपयोगी है।] [वि. रा. १९] ५–००

२ **अग्निपुराण का काव्यशास्त्रीय भाग**। रामलाल वर्मा शास्त्री ७–००

३ **अनुसन्धानपद्धतिः**। डॉ० भागीरथप्रसाद त्रिपाठी ३–००

४ **अपभ्रंश-साहित्य : परम्परा और प्रवृत्तियाँ**। डॉ० राजवंशसहाय 'हीरा'
[इस पुस्तक में अपभ्रंश सम्बन्धी समस्त अध्ययन का समावेश करने का प्रयास किया गया है। यह रचना सामान्य पाठकों की दृष्टि से लिखी गयी है। अद्यावधि किये गये प्रयासों का आकलन इसमें हुआ है।] [वि० रा० १३६] ३–००

५ **अप्पयदीक्षित**। डॉ० नरेन्द्रनाथ शर्मा ४–००

६ **अम्बिकादत्तव्यास की रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन**।
डॉ० कृष्णकुमार विद्यालङ्कार ३०–००

७ **अभिज्ञानशाकुन्तल : एक अध्ययन**। श्रीकाशीनाथ द्विवेदी [वि. रा. १२७] ५–००

८ **अभिनव का रस-विवेचन**। नगीनादास पारेख ३०–००

९ **अर्थविज्ञान ओर व्याकरण दर्शन**। डॉ० कपिलदेव द्विवेदी १५–००

१० **अर्वाचीनं मनोविज्ञानम्**। मामराजदत्तकपिलविरचितम् १२–००

११ **अलङ्कार-मीमांसा**। डॉ० राजवंशसहाय 'हीरा' [वि. रा. १३३] ५–००

१२ **अलङ्कारशास्त्र की परम्परा**। डॉ० राजवंशसहाय 'हीरा'
[इस ग्रन्थ में अद्यावधि उपलब्ध सामग्री के आधार पर भारतीय काव्यशास्त्र की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है और प्रत्येक आचार्यों के ग्रन्थों का पूर्ण परिचय भी दिया गया है।] [चौ. रा. १३] १०–००

१३ **अलङ्कारानुशीलन**। डॉ० राजवंशसहाय 'हीरा' [चौ. रा. १२]
[अलंकारों का ऐतिहासिक अनुशीलन तथा इनसे सम्बन्धित सभी शास्त्रीय विवादों का एकत्र समावेश प्रस्तुत करनेवाला हिन्दी में यह प्रथम ग्रन्थ है। इसमें लगभग ११० अलंकारों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूमिका में—काव्य में अलंकारों का स्थान, अन्य भारतीय काव्यशास्त्रीय सम्प्रदायों से उनका सम्बन्ध तथा संस्कृत के सभी प्रसिद्ध अलंकारिकों के एतद्विषयक मतों का सार आदि महत्त्वपूर्ण विषय संगृहीत हैं। सरल एवं सरस भाषा-शैली में लिखा यह अलंकारों के विषय में अभिनव प्रामाणिक ग्रन्थ है।] २५–००

१४ अवन्तिकुमारियाँ। श्री देवदत्त शास्त्री [वि. रा. ३८] ३–००

१५ असामान्य मनोविज्ञान। डॉ० रामकुमार राय [वि. रा. २७] १२–००

१६ आचार्य आनन्दवर्द्धन। डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी २२–००

१७ आचार्य क्षेमेन्द्र। डॉ० मनोहरलाल गौड़ ४–००

१८ आचार्य दण्डी एवं संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास दर्शन। जयशंकर त्रिपाठी ३०–००

१९ आचार्य भरत। डॉ० शिवकरण शर्मा १०–००

२० आचार्य मम्मट। श्री ढुण्ढिराज गोपाल सप्रे ६–००

२१ आचार्य मम्मट और काव्यप्रकाश। डॉ० राजकिशोर सिंह १०–५०

२२ आचार्य राजशेखर। डॉ० श्यामावर्मा ४–००

२३ आचार्य विज्ञानभिक्षु और भारतीय दर्शन में उनका स्थान। डॉ० सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव २०–००

२४ आचार्य सायण और माधव। पं० बलदेव उपाध्याय १०–००

२५ आचार्य हेमचन्द्राचार्य और उनका शब्दानुशासन : एक अध्ययन। डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री [वि. रा. ६२] २०–००

२६ आदिपुराण में प्रतिपादित भारत। डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री १२–००

२७ आर्य संस्कृति। आचार्य बल्देव उपाध्याय ८–००

२८ उद्योतकर का न्यायवार्तिक : एक अध्ययन। डॉ० दयाशंकरशास्त्री ४०–००

२९ ऐतिहासिक उपन्यासों में कल्पना और सत्य। बी० एम० चिन्तामणि [वि. रा. १८] ३–५०

३० औचित्य विमर्श। राममूर्ति त्रिपाठी ८–००

३१ औचित्य सम्प्रदाय का हिन्दी-काव्यशास्त्र पर प्रभाव (प्रत्यक्ष तथा परोक्ष)। डॉ० चन्द्रहंस पाठक। [वि. रा. ११०]
[प्राचीन और नवीन उभयविध विचारकों में औचित्य-मत के प्रभाव की चर्चा करने के हेतु इसमें व्यापक भूमिका और सन्दर्भों का उपयोग किया गया है। इसके लेखन में अथक श्रम, अध्यवसाय और असामान्य प्रतिभा का प्रयोग पद-पद देखने को मिलता है। अधिकारी विद्वानों के निर्णायक विचारों से समन्वित, उत्तम साज-सज्जा-मुद्रण आवरण आदि से युक्त यह ग्रन्थ सर्वथा संग्रहणीय है] ३०–००

३१क ऋग्वेद चयनिका। डॉ० सिद्धनाथ शुक्ल २०–००

३२ कविभारति-कुसुमाञ्जली। (सम्पादकीय) २१–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३३ **कवियों की लोकदृष्टि।** (संस्कृत साहित्य के कुछ रससिद्ध कवियों के चिरन्तन साहित्य का परिमन्थन) श्री शिवशंकर त्रिपाठी [त्रि० रा० ११७] १०-००

३४ **कविराज-अभिनन्दन ग्रन्थ।** (म० म० गोपीनाथ कविराज)। सम्पादक— डॉ० बाबूराम सक्सेना, डॉ० गौरीनाथ शास्त्री, डॉ० वी० राघवन आदि १५०-००

३५ **कविवर डॉ० रामकुमार वर्मा और उनका काव्य।** प्रो० दशरथ राज [वि. रा. ९६] ४-००

३६ **कविसमय मीमांसा।** डॉ० विष्णुस्वरूप ९-००

३७ **कालिदास (महाकवि कालिदास)।** देव पुरस्कार से पुरस्कृत। डॉ० रमाशङ्कर तिवारी [वि. रा. ४१] २०-००

३८ **कालिदास।** वासुदेव विष्णु मिराशी १५-००

३९ **कालिदास : एक अनुशीलन।** पं० देवदत्तशास्त्री [वि. रा. ४७] ५-००

४० **कालिदास काव्ये शब्दपरिपाक।** डॉ० नित्यानन्द ५०-००

४१ **कालिदास और मेघदूत।** डॉ० जयकिशन प्रसाद २-५०

४२ **कालिदास और भवभूति के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन।** डॉ० सुरेन्द्रदेव शास्त्री २५-००

४३ **कालिदास का भारत।** डॉ० भगवतशरण उपाध्याय। १-२ भाग १६-००

४४ **कालिदास की कला और संस्कृति।** डॉ० देवीदत्त शर्मा २५-००

४५ **कालिदास की लालित्य-योजना।** डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी १२-००

४६ **कालिदास के सुभाषित।** डॉ० भगवतशरण उपाध्याय ७-००

४७ **कालिदास कोश।** प्रो० एस० सी० बनर्जी। (आंग्लभाषा में) ३०-००

४८ **कालिदास दर्शन।** डॉ० शिवप्रसाद भारद्वाज। प्रथम भाग ४०-००

४९ **कालिदास : मानवशिल्पी महाकविः।** डॉ० रेवाप्रसाद द्विवेदी ५-००

५० **काव्य-चिन्ता।** डॉ० रमाशङ्कर तिवारी। [वि. रा. ५७] ६-००

५१ **काव्याङ्गनिर्णय।** जङ्गबहादुर मिश्र 'रञ्जन' [वि. रा. १३] यंत्रस्थ

५२ **काव्यात्म-मीमांसा।** डॉ० जयमन्त मिश्र
[काव्यात्म सम्बन्धी विचारों का आलोचनात्मक ढंग से शोधपूर्ण एवं विश्लेषण करके रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति तथा औचित्य तत्त्वों का विश्लेषणात्मक स्वरूप निर्देश, ऐतिहासिक क्रम से साङ्गोपाङ्ग विवेचन तथा उनके तात्त्विक रहस्यों का समुद्घाटन किया गया है। अन्त के परिशिष्टों में काव्य सम्बन्धी कतिपय अन्य विषयों का विचार किया गया है।] [वि. रा. ७२] २०-००

५३ **काशिकावृत्तिवैयाकरणसिद्धान्तकौमुद्यो : तुलनात्मक अध्ययनम्।** डॉ० महेशदत्त शर्मा २२-००

५४ **काश्मीर शैवदर्शन और कामायनी।** श्री भँवरलाल जोशी [चौ. रा. ६] २५-००

५५ **कृष्णभक्ति काव्य में सखीभाव।** श्री शरणविहारी गोस्वामी
[गोपीतत्त्व और सखीतत्त्व पर गम्भीर विचार, उपास्यतत्त्व का विस्तृत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विवेचन तथा सखी-सम्प्रदाय की उपासना-पद्धति का संयोजन आदि इस ग्रन्थ के प्रमुख प्रतिपाद्य विषय हैं। सखीभाव-विषयक हिन्दी-साहित्य की सामग्री का परिचय एवं समीक्षा, रस-परिपाटी का विवेचन, लगभग ५० वैष्णवसम्प्रदायाचार्यों के सदुपदेशों का सचित्र वर्णन तथा कवियों और काव्यों का परिचय समीक्षण आदि अत्यन्त सरल भाषा और शैली में विवेचित हैं। यह ग्रन्थ अत्यन्त रसपूर्ण और उपादेय है।] [वि. रा. १०४] ३५-००

५६ **क्षेमेन्द्र और उनका समीक्षा सिद्धान्त**। डॉ० शिवशेखर मिश्र १०-००

५७ **गद्यकाव्यकार बाण**। प्रो० चुन्नीलाल शुक्ल ४-००

५८ **गोस्वामी तुलसीदास**। आचार्य श्री सीताराम चतुर्वेदी [वि. रा. ९] ४-००

५९ **चम्पूकाव्य का आलोचनात्मक एवं ऐतिहासिक अध्ययन**। डॉ० छविनाथ त्रिपाठी
[इसमें चम्पू-काव्य का स्थान-निर्धारण, उसकी सर्वथोपयुक्त परिभाषा, गद्य-पद्य-मिश्रित काव्यों के विकास का ऐतिहासिक एवं खोजपूर्ण विवरण, २४५ चम्पू-काव्यों का सविवरण आलोचनात्मक परिचय, वर्ण्य वस्तु और चम्पू-काव्यों के मूल स्रोतों का अन्वेषण करके उनका वर्गीकरण आदि उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की गई हैं।] [वि. रा. ८३] १५-००

६० **चम्पूरामायण का साहित्यिक परिशीलन**। डॉ० कु० करुणा श्रीवास्तव १३-००

६१ **चित्र और चिन्तन**। श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी
[इस पुस्तक में चित्र : जीवन के दैनिक अनुभवों के हैं, चिन्तन : सामयिक परिस्थितियों, समस्या और और नवनिर्माण के हैं। इसमें व्यक्ति, समाज और विश्व की धड़कन है। आप भी इसमें अपनी धड़कन पायेंगे और युग के प्राण-प्रवाह से एकमेव हो जायगे।] [वि. रा. ६९] ३-५०

६२ **चिन्तन के नये चरण**। श्री देवदत्त शास्त्री
[भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान, इतिहास, पुराण-उपनिषद्, नृत्य-नाटक, अभिनव ये पाँच पुस्तक के विषय-स्तम्भ हैं। इस पुस्तक के निबन्धों के सभी विषय सामान्य और व्यापक होने के साथ ही साहित्यकारों एवं अनुसन्धायकों के नित्य उपयोग के हैं। विद्यार्थियों को तो इन निबन्धों में नई दृष्टि, नई चेतना और अनुसन्धान के नये आयाम मिलेंगे।] [वि. रा. ३१] ८-००

६३ **जयदेव-आचार्य एवं नाटककार के रूप में : आलोचनात्मक अध्ययन**। डॉ० विनोदचन्द्र विद्यालङ्कार ३५-००

६४ **जातक कालीन भारतीय संस्कृति**। पं० मोहनलाल महतो 'वियोगी' ६-५०

६५ **जीवन दर्शन**। डॉ० मुंशीराम शर्मा
[जीवन क्या है? वह कैसे विकसित होता है तथा उन्नत बनता है? जीवन-पथ में कैसे-कैसे मोड़ आते हैं आदि आदि। 'जीवनदर्शन' पढ़कर आप जीवन का वास्तविक मूल्याङ्कन कर सकेंगे।] [वि. रा. १६] ३-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६६ **जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज** । डॉ० जगदीशचन्द्र जैन ।
[हर्ष, शोक, विस्मयादि नाना भाव धाराओं में अवगाहन करते हुए भारतीय समाज की जैनागमसाहित्य में प्राप्त ऐतिहासिक स्थिति का, शैली और कौशल की दृष्टि से उनका वर्णन प्राप्त करने के लिये अनुपम ही ग्रन्थ] [वि. रा. ९३] ३०-००

६७ **तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी के जन संस्कृत महाकाव्य** ।
डॉ० श्यामशङ्कर दीक्षित ३०-००

६८ **दक्षिण भारत** (आरम्भ से प्राचीन राजवंशों के पतन तक)
डॉ० बलराम श्रीवास्तव
[इस ग्रंथ का लक्ष्य दक्षिण भारत के राजनीतिक व्यक्तित्व की समीक्षा है। इसमें प्राचीन राजवंशों के उदय और अस्त की गाथा भी बड़े ही छानबीन के साथ लिखी गयी है] नवीन संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण [वि. रा. ११६] शीघ्रप्राप्य

६९ **दिनकर की उर्वशी** । डॉ० रमाशङ्कर तिवारी
['दिनकर' की नवीन काव्य कृति 'उर्वशी' के अत्यन्त सूक्ष्म परिशीलन, मार्मिक समीक्षात्मक अध्ययन, प्रौढ़ चिन्तन एवं अधिकारिक मीमांसा से संयुक्त संग्रहणीय ग्रंथ।] [वि. रा. ५२] ४-००

७० **द्वैत वेदान्त का तात्त्विक अनुशीलन** । डॉ० कृष्णकान्त चतुर्वेदी २०-००

७१ **ध्वनि सम्प्रदाय और उनके सिद्धान्त** । डॉ० भोलाशंकर व्यास २०-००

७२ **ध्वनि सिद्धान्त विरोधी सम्प्रदाय उनकी मान्यताएँ** ।
सुरेशचन्द्र पाण्डेय २५-००

७३ **नगरीय समाजशास्त्र** । श्री कौशलकुमार राय [वि. रा. ९४] १०-००

७४ **नागरिकशास्त्र** । पं० हनुमानप्रसाद शर्मा [वि. रा. ८] १-००

७५ **नाट्यकला : प्राच्य एवं पाश्चात्य** । डॉ० सुदर्शनमिश्र ३०-००

७६ **नाट्यशास्त्र की भारतीय परम्परा और दशरूपक** । धनिकवृत्ति सहित ।
डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी-पृथ्वीनाथ द्विवेदी २२-५०

७७ **नाथ सम्प्रदाय** । डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी ११-००

७८ **निबन्ध पारिजात** । डॉ० रजनीकान्त लाहिड़ी [वि. रा. १३४] ५-००

७९ **निबन्ध सौरभ** । श्रीबाबूलाल मिश्र [वि. रा. ७८] २-००

८० **न्याय-परिचय** । मूललेखक—म० म० फणिभूषण तर्कवागीश ।
हिन्दी रूपान्तरकार—डॉ० किशोरनाथ झा [वि. रा. ११८]
[विद्वान् न्यायशास्त्र का अध्ययन करते हैं किन्तु इसके अनिर्वचनीय रहस्य को कम ही विद्वान् समझ पाते हैं। विद्वान् लेखक ने गहन अध्ययन के पश्चात ऐतिहासिक, दार्शनिक तथा मनोवैज्ञानिक अध्ययन की विभिन्न विचारधाराओं पर भी यथेष्ट विचार करके यह ग्रन्थ प्रस्तुत किया है। न्यायशास्त्र के प्रामाणिक सजीव और क्रमबद्ध इतिहास के परिचय के लिये यह ग्रन्थ अद्वितीय है।] १५-००

८१ **पतञ्जलिकालीन भारत** । डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री ११-५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८२ **पथचिह्न** । श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी [वि. रा. ५] २–००

८३ **परिक्रमा** । श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी [वि. रा. ५४] यन्त्रस्थ

८४ **पल्लव इतिहास और उसकी आधार सामग्री** । डॉ० बलराम श्रीवास्तव ।
[प्रस्तुत पुस्तक के आरम्भ में दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध पल्लव राजवंश का यशस्वी इतिहास प्रस्तुत किया गया है। तदुपरान्त पल्लवों तथा उनसे सम्बन्धित अन्य राजवंशों के शताधिक अभिलेखों पर टिप्पणी तथा उनमें से महत्त्वपूर्ण अभिलेखों के ऐतिहासिक अंश का मूलपाठ तथा हिन्दी अनुवाद किया गया है। दो परिशिष्टों में क्रमशः 'पल्लव लिपि के विकास' तथा 'महावंश' के पल्लवों से सम्बन्धित अंश का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। लिपि, मुद्रा और वास्तु की रूपरेखा स्पष्ट करने के लिये अनेक चित्र और नक्शे दिये गये हैं।] [वि. रा. १२९] ८–००

८५ **पाणिनिकालीन भारतवर्ष** । (पाणिनि कृत अष्टाध्यायी का सांस्कृतिक अध्ययन) डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल [वि. सं. ५०]
[इस ग्रन्थ में महर्षि पाणिनि विरचित संस्कृत-व्याकरण के सूत्रों के आधार पर उस काल के भारतीय जीवन और संस्कृति का विस्तृत प्रामाणिक अध्ययन है। अष्टाध्यायी के कितने ही भूले हुए शब्दों की यहाँ नये अर्थों के साथ समझाने का प्रयास किया है। ऐसे ३००० शब्दों की अकारादि-सूची ग्रन्थान्त में सन्निविष्ट है] ३०–००

८६ **पाणिनी के उत्तराधिकारी** । डॉ० उदयनारायण तिवारी १५–००

८७ **पुराण कथा कौमुदी** । पं० रघुनाथदत्त बन्धु १५–००

८८ **पुराण की लोकभारती** । डॉ० जयशङ्कर त्रिपाठी ।
[इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने धार्मिक रूढ़ियों तथा पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर पुराणसाहित्य का गहन अध्ययन कर पुराण की कहानियों को आज के युग के धरातल पर रख कर परखने की चेष्टा की है।] [वि० रा० १३२] २–००

८९ **पुराणगत वेद विषयक सामग्री का समीक्षात्मक अध्ययन** । रामशंकर भट्टाचार्य २०–००

९० **पुरुषार्थ** । भारतरत्न डॉ० भगवानदास । शोधपूर्ण द्वितीय संस्करण
[मनीषी लेखक के आध्यात्मिक एवं चिंतन का सार इस ग्रन्थ में आज के मानव के लिये सर्वथोपयुक्त शैली में उपनिबद्ध है। इससे मानव-मात्र को श्रेयःसम्पादन के लिए यथार्थ दिशा एवं प्रेरणा प्राप्त होती है।] [वि. रा. १०१] २०–००

९१ **प्रकृति और काव्य** । (संस्कृत-साहित्य) रघुवंश २०–००

९२ **प्रतिभा-दर्शन (भाषा-तत्त्वशास्त्र)** । आचार्य हरिशंकर जोशी
[भाषा-तत्त्वशास्त्र के इस ग्रन्थ में भारतीय भाषाओं के क्रमिक युगों के प्रामाणिक विकासों के साथ-साथ अर्वाचीन भाषाओं तक के भाषातत्त्वों का विशद विवेचन तीन बड़े भागों में किया गया है। इसकी भाषा प्राञ्जल और धारावाही है। प्रत्येक विषय को सुगम बनाने के लिये स्थान-स्थान पर चित्र और मानचित्र भी दिये गये हैं] [वि. रा. ७१] ३०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

९३ **प्रबोध चन्द्रोदय और उसकी हिन्दी परम्परा।** डॉ॰ सरोज १५–००

९४ **प्रयोगवादी काव्यधारा** (तथोक्त नई कविता)। डॉ॰ रमाशंकर तिवारी
[प्रस्तुत ग्रन्थ में 'नई कविता' कही जानेवाली प्रयोगवादी काव्यधारा का तटस्थ एवं पूर्वग्रह-विमुक्त, विस्तृत एवं प्रामाणिक विवेचन प्रथम वार प्रस्तुत किया गया है। इससे प्रयोगवादी धारा को समझने तथा उसके प्रति समुचित एवं सन्तुलित न्याय बरतने की सम्भावनाएँ परिपुष्ट होंगी।] [वि. रा. ७०] २०–००

९५ **प्राकृत भाषाएँ और भारतीय संस्कृति में उनका अवदान।**
एस॰ एम॰ कत्रे ६–००

९६ **प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास।**
डॉ॰ नेमिचन्द्र शास्त्री २५–००

९७ **प्राकृत विमर्श।** डॉ॰ सरयूप्रसाद अग्रवाल १५–००

९८ **प्राकृत साहित्य का इतिहास।** डॉ॰ जगदीशचन्द्र जैन
[वेद से लेकर प्राचीनतम शिलालेख, प्राचीन नाटक, कथाग्रन्थ आदि के व्यापक समीक्षण और समालोचनापूर्वक अपने विषय का यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य में प्रथम अवतरित हुआ है।] [वि. रा. ४२] ३०–००

९९ **प्राच्यभारतीयम् ऋतुविज्ञानम्।** (शोधप्रबन्धः) डॉ॰ घुनीराम त्रिपाठी १८–००

१०० **प्राचीन भारत में अपराध और दण्ड।** डॉ॰ हरिहरनाथ त्रिपाठी
[प्रस्तुत पुस्तक में समाजशास्त्र, विधि, न्यायपालिका एवं प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के सम्बन्ध में वैदिक काल से लेकर निबन्ध ग्रन्थों तक की सामग्री एक स्थान पर वैज्ञानिक विधि से प्रस्तुत की गई है] [वि. रा. ६८] ७–००

२०१ **प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन।** डॉ॰ वासुदेव उपाध्याय २०–००

२०२ **प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन।** डॉ॰ रायगोविन्दचन्द [वि. रा. ३४] १६–००

२०३ **प्राचीन भारतीय मूर्ति-विज्ञान।** डॉ॰ वासुदेव उपाध्याय
[इसमें प्रतिमानिर्माण के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तर, धातु एवं मण्मूर्तियों का क्रमबद्ध ऐतिहासिक विवेचन के साथ-२ ब्राह्मण, बौद्ध तथा जैन देव कुल का सविस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। मिश्रित देव-प्रतिमा तथा ब्राह्मणधर्म के गौड़ देवताओं का एवं प्रतिमा सम्बन्धी तालमान का प्रामाणिक रूप में उल्लेख है। प्रामाणिक तथा ऐतिहासिक रीति से देव मूर्ति के विवरण के लिए यह ग्रन्थ पठनीय है] [चौ. रा. १०] ३५–००

२०४ **प्राचीन भारतीय लिपिमाला।** डॉ॰ गौरीशंकर हीराचन्द ओझा १००–००

२०५ **प्राचीन भारतीय वैयाकरणों के ध्वन्यात्मक विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन।** सिद्धेश्वर वर्मा २०–००

२०६ **प्राचीन भारतीय साहित्य की सांस्कृतिक भूमिका।** रामजी उपाध्याय ४०–००

२०७ **प्रातिशाख्यों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का आलोचनात्मक अध्ययन।** डॉ॰ इन्द्रा २५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०८ **बघेलखण्ड के संस्कृत काव्य** । डॉ०राजीवलोचन अग्निहोत्री [वि.रा.१४५] २५-००
१०९ **बाणभट्ट का आदान-प्रदान** । अमरनाथ पाण्डेय १५-००
११० **बाणभट्ट का साहित्यिक अनुशीलन** । अमरनाथ पाण्डेय ४०-००
१११ **बाणभट्ट की आत्मकथा** । हजारीप्रसाद द्विवेदी ८-५०
११२ **बुन्देलखण्ड की प्राचीनता** । श्री वागीश शास्त्री ७-५०
११३ **बौद्धन्याय** । एफ० टी० शेर्बात्स्की । हिन्दी अनुवाद । डॉ० रामकुमार राय [ग्रन्थ दो भागों मे है । प्र० भाग में भारतीय न्यायशास्त्र तथा उसके मध्य एशिया में प्रचार-प्रसार का विवेचन करने के बाद लेखक ने दिङ्नाग के प्रामाण्यवाद तथा प्रत्यक्ष आदि का अध्ययन प्रस्तुत किया है ।]
[वि. रा. १२४] प्रथम भाग ३५-००
११४ **ब्रह्मसूत्रों के वैष्णव-भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन** ।
डॉ० रामकृष्ण आचार्य १०-००
११५ **भक्ति का विकास** । डॉ० मुन्शीराम शर्मा । नवीन संशोधित संस्करण [परमपुरुषार्थरूप में प्राप्य 'भगवत्' और 'भक्ति' तत्त्व के विषय में जितना कुछ जानना आवश्यक है वह सब इस कौशल से इस ग्रन्थ में उपनिबद्ध है कि प्रत्येक वर्ग, वर्ण एवं स्तर के मानव इसे पढ़कर तुष्ट होंगे एवं उन्हें आत्म-कल्याण का सर्वसम्मत मार्ग अनायास सुलभ होगा ।] [वि. रा. १५] ५०-००
११६ **भरत और भारतीय नाट्यकला** । डॉ० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित ४५-००
११७ **भवभूति और उनकी नाट्यकला** । डॉ० अयोध्याप्रसाद सिंह २०-००
११८ **भवभूति ग्रन्थावली** । अनु० रामप्रताप त्रिपाठी ४०-००
११९ **भारत और एशिया के अन्य देश** । श्रीमती सुदर्शना सिंघल [दक्षिण-पूर्व तथा उत्तर-पूर्व एशिया के देशों के साथ हमारा सांस्कृतिक संपर्क, लिपि, भाषा, साहित्य, धर्म, दर्शन, राजनीति, कला आदि सभी महत्त्वपूर्ण स्तरोंपर विद्यमान है । इन देशों के धार्मिक विकास में भारत के प्रभूत योग-दान के कारण इस क्षेत्र को विद्वानों ने बृहत् भारत का नाम दिया है । स्वतन्त्र भारत के लिये इन पड़ोसी देशों की संस्कृति और इतिहास के अध्ययन की महती आवश्यकता है । इसी आवश्यकता की पूर्ति इस पुस्तक में की गयी है ।]
[वि० रा० १३९] १५-००
[वि. रा. ७] १-५०
१२० **भारत का भूगोल** । श्रीरामस्वरूप
१२१ **भारत में प्रतीक पूजा का आरम्भ और विकास** । विहारीलाल वर्मा ११-००
१२२ **भारत की आधुनिक आर्यभाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण अनुवाद** ।
यन्त्रस्थ
श्री गोविन्द झा
१२३ **भारतस्य सांस्कृतिकनिधिः** । डॉ० रामजी उपाध्याय (संस्कृत) १५-००
[वि. रा. ६] २-००
१२४ **भारतीय इतिहास** । श्रीरामस्वरूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२५ **भारतीय इतिहास के स्रोत, सिक्के।** (ई० जे० रैपसन के 'इण्डियन कॉएन्स' का हिन्दी अनुवाद) अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय
[रैपसन का प्रस्तुत ग्रन्थ भारतीय मुद्राशास्त्र के क्षेत्र में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। इसके लेखक कुछ उन आरम्भिक पाश्चात्य इतिहासकारों में एक थे जिन्होंने वस्तुतः भारतीय इतिहास के अध्ययन-अनुसन्धान को यह वैज्ञानिक रूप प्रदान किया जो आज हमें उपलब्ध हैं। अनुवाद में मूल ग्रन्थ के फलक ज्यों-के-त्यों छापे गये हैं जिससे इसमें कोई भी कमी नहीं रह गई है।] [वि. रा. १००] १६–००

१२६ **भारतीय इतिहास परिचय।** डॉ० राजबली पाण्डेय [वि. रा. ५८] १३–००

१२७ **भारतीय काव्यशास्त्र के प्रतिनिधि-सिद्धान्त।** डॉ० राजवंशसहाय 'हीरा'
[ग्रन्थ में रस, ध्वनि एवं अलंकार को प्रतिनिधि-सिद्धान्त मान कर उन्हीं का विवेचन किया गया है। काव्य के स्वरूप, कारण, हेतु एवं भेद, शब्दशक्ति, ध्वनि, रस, गुण एवं दोषों का वर्णन प्रमुख है। दूसरे खण्ड में अलङ्कारों का विश्लेषण, विशेषतः ऐतिहासिक एवं सैद्धान्तिक दृष्टि से किया गया है। शब्द-शक्तियों के वर्णन में शास्त्रार्थ वाले स्थानों पर तथा अभिधा, लक्षणा, व्यंजना के विषय में विस्तृत एवं निर्भ्रान्त विवेचन है। संस्कृत के मूल ग्रन्थोंके उद्धरण प्रमाणस्वरूप उपन्यस्त हैं। ग्रन्थ अपने में पूर्ण है।] [वि. रा. ११३] २०–००

१२८ **भारतीय दर्शन में चेतना का स्वरूप।** डॉ० श्रीकृष्ण सक्सेना
[डॉ० सक्सेना की Nature of Conciousness in Hindu Philosophy नामक अंग्रेजी पुस्तक भारतीय दर्शन शास्त्र के अनुरागियों में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी है; उसी महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का हिन्दी रूपान्तर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया गया है। वस्तुतः स्थावर जङ्गमात्मक इस विश्व में चेतना का अस्तित्व, उसका स्वरूप तथा भिन्न-भिन्न प्रकाश, दार्शनिक और वैज्ञानिक दोनों के ही सामने बहुत सी समस्याएँ रखते हैं; डॉ० सक्सेना ने अपने इस शोध ग्रन्थ में बड़े ही सुन्दर और व्यवस्थित ढङ्ग से उसी विचार-परम्परा का विवेचन प्रस्तुत किया है। राष्ट्रभाषा प्रेमी भारतीय दर्शन के अनुरागी विद्वान् इससे अधिकाधिक लाभान्वित होंगे।] [वि. रा. १२३] १५–००

१२९ **भारतीय दर्शन में प्रामाण्यवाद।** डॉ० शारदा गाँधी ५०–००

१३० **भारतीय धर्मशास्त्र में शूद्रों की स्थिति।** डॉ० निरूपण विद्यालङ्कार २५–००

१३१ **भारतीय पुरालिपिशास्त्र।** मङ्गलनाथ सिंह २५–००

१३२ **भारतीय प्रज्ञा।** (मॉनियर विलियम्स कृत 'इण्डियन विज़डम' का हिन्दी अनुवाद) अनुवादक—डॉ० रामकुमार राय [वि. रा. ९२]
[पुस्तक में हिन्दुओं के धार्मिक, दार्शनिक और नैतिक विचारों तथा सिद्धान्तों के उदाहरणों का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत के प्रमुख विभागों का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करते हुए भारत की अतीत तथा वर्तमान नैतिक और बौद्धिक स्थिति का भी विवरण दिया गया है] ३५–००

२३३ **भारतीय भाषा विज्ञान** । पं० किशोरीदास वाजपेयी [वि. रा. २३] ८–००

२३४ **भारतीय संस्कृति और साधना** । म० म० गोपीनाथ कविराज १–२ भाग ४२–००

२३५ **भारतीय वाङ्मय में श्रीराधा** । पं० बलदेव उपाध्याय १०–५०

२३६ **भारतीय विज्ञान के कर्णधार** । श्रीराजेन्द्रद्विवेदी तथा पं० ओमदत्तशास्त्री ३०–००

२३७ **भारतीयं वृत्तम्** । 'इण्डियाज पास्ट' का संस्कृतानुवाद । अनुवादक—वी० एस० वेंकटराघवाचार्य १९–००

२३८ **भारतीय संस्कृति** । सातवलेकर । अनुवादक—श्रुतिशील शर्मा ६–००

२३९ **भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान** । डॉ० हीरालाल जैन १०–००

२४० **भारतीय साहित्य** । उमेशचन्द्र पाण्डेय १८–००

२४१ **भारतीय साहित्य की रूपरेखा** । डॉ० भोलाशङ्कर व्यास [वेदों से लेकर अब तक के समस्त भारतीय साहित्य—वैदिक, संस्कृत, पालि-प्राकृत तथा अपभ्रंश साहित्य की रूपरेखा के अलावा भारत की सभी आधुनिक भाषाओं—हिन्दी, उर्दू, बँगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, आदि के प्राचीन तथा अद्यतन साहित्य की गतिविधि का सुन्दर परिचय इसी एक ग्रन्थ से प्राप्त हो जाता है] [वि. रा. ५३] १०–००

२४२ **भारतीय साहित्यशास्त्र** । गणेश त्र्यम्बक देशपाण्डे १२–५०

२४३ **भारतीय साहित्यशास्त्र और काव्यालङ्कार** । डॉ० भोलाशङ्कर व्यास [पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के गंभीर अध्ययन के साथ ही भारतीय साहित्यशास्त्र के मूल ग्रन्थों का ठोस परिज्ञान इस ग्रन्थ में प्रतिपदलक्षित होता है । भरत से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तक तथा अरस्तू से इलियट तक सभी भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्यशास्त्रियों के प्रासंगिक मतों को कुशलतापूर्वक आत्मसात् कर प्रस्तुत किया गया है ।] [वि. रा. ८९] प्रथम भाग १०–००

२४४ **भारवि-काव्य में अर्थान्तरन्यास** । उमेशप्रसाद रस्तोगी [प्रस्तुत ग्रन्थ में भारवि के जन्मकाल, स्थान तथा काव्य का परिचय देते हुए प्रवाहपूर्ण भाषा तथा मार्मिक शैली में उनके अर्थान्तरन्याससम्बन्धी काव्य, कवित्व तथा प्रतिभा का समुचित विवेचन तथा यथार्थ विश्लेषण किया गया है ।] [वि. रा. ८२] ८–००

२४५ **भाषा विश्लेषण** । डॉ० मोतीलाल गुप्त । [चौ. रा. १७] १५–००

२४६ **भाषाशास्त्र (वाग्विज्ञान)** । आचार्य सीताराम चतुर्वेदी [भाषा-शास्त्र के अन्य प्रचलित ग्रन्थों से इस ग्रन्थ में तीन मुख्य विशेषताएँ हैं–१. विदेशी भाषा-वैज्ञानिकों के उन मतों का युक्ति युक्त तर्कों के आधार पर खण्डन करके नवीन तथा पूर्णतः मौलिक सिद्धान्तों की स्थापना की गई है । २. ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर भाषाओं का विवेचन, वर्गीकरण तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परीक्षण किया गया है। ३. भाषा और मन का घनिष्ठ सम्बन्ध स्पष्ट करके मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भाषा के विभिन्न स्वरूपों का सोदाहरण विवरण दिया गया है।] [वि. रा. १२२] ३५–००

१४७ **मधुपर्क**। श्री देवीरत्न अवस्थी 'करील'
[ब्रजभाषा के ललित पद्यों में कृष्ण-चरित वर्णन के माध्यम से यह काव्य बड़े कौशल से रचा गया है] [वि. रा. ११५] १०–००

१४८ **मध्यकालीन साहित्य में अवतारवाद**। डॉ० कपिलदेव पाण्डेय।
भू० ले०—डॉ० हजारीप्रसादद्विवेदी। [वि. रा. ६०] ४०–००

१४९ **मध्यभारतीय भाषा चयन**। डॉ० वीरमणिप्रसाद उपाध्याय [वि. रा. १२५] ५–००

१५० **मध्यकालीन संस्कृत नाटक**। डॉ० रामजी उपाध्याय। (पुरस्कृत) २५–००

१५१ **मराठी का भक्ति-साहित्य**। प्रो० भी० गो० देशपाण्डे
[मराठी के भक्ति-साहित्य के विभिन्न काव्यरूपों के मूल स्रोत और विकास का मनोवैज्ञानिक ढंग से हिन्दी में अत्यन्त प्रामाणिक एवं सटीक विवेचन किया गया है।] [वि. रा. २०] साधारण संस्करण १०–०० राज संस्करण १२–००

१५२ **महर्षि वेदव्यास : एक ऐतिहासिक व सांस्कृतिक पर्यालोचन**।
पं० उमाशंकर दीक्षित [वि. रा. ११९] ४–५०

१५३ **महाकवि अश्वघोष और उनका काव्य**। डॉ० हरिदत्त शास्त्री ५–७५

१५४ **महाकविः कालिदासः**। डॉ० रामजी उपाध्याय (संस्कृत) १०–००

१५५ **महाकवि कालिदास**। डॉ० रमाशङ्कर तिवारी (देव पुरस्कार से पुरस्कृत) [वि. रा. ४१] २०–००

१५६ **महाकवि भवभूति**। डॉ० गङ्गासागर राय [वि. रा. ७९] ७–००

१५७ **महाकवि भवभूति और उनका उत्तररामचरित**। कृष्णकान्त त्रिपाठी २–७५

१५८ **महाकवि भवभूति : व्यक्तित्व एवं कृतित्व**। डॉ० विमल गेरा ३५–००

१५९ **महाकवि भास : एक अध्ययन**। आचार्य बलदेव उपाध्याय [वि. रा. ७३] ५–००

१६० **महाकवि माघ**। डॉ० मनमोहनलाल जगन्नाथ शर्मा २०–००

१६१ **महाकवि शूद्रक**। आचार्य रमाशङ्कर तिवारी [वि. रा. १०८] २०–००

१६२ **महाकवियों की अमर रचनाएँ**। श्री चक्रधरशर्मा [वि. रा. ३] ३–००

१६३ **महाभारत में लोककल्याण की राजकीय योजनाएँ**। के० एन० मिश्र २०–००

१६४ **महिमभट्ट**। डॉ० ब्रजमोहन चतुर्वेदी ३२–००

१६५ **मार्कण्डेय पुराण : एक सांस्कृतिक अध्ययन**। डॉ०वासुदेवशरण अग्रवाल १२–००

१६६ **मानसोल्लास (सोमेश्वरकृत) : एक सांस्कृतिक अध्ययन**।
डॉ० शिवशेखर मिश्र [वि. रा. ९९] ३०–००

१६७ **मृच्छकटिक**। (हिन्दी) डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री ६–५०

१६८ **यूरोप और वहाँ के संग्रहालय**। डॉ० सतीशचन्द्र काला ५–००

१६९ **रसगङ्गाधर : एक समीक्षात्मक अध्ययन**। कु० चिन्मयी माहेश्वरी २५–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१७० **रससिद्धान्तः** । डॉ० नगेन्द्रप्रणीतः । अनु० अमीरचन्द्र शास्त्री । संस्कृत १५-००
१७१ **रस सिद्धान्त** । डॉ० नगेन्द्र ३०-००
१७२ **रूपककार वत्सराज** । डॉ० लक्ष्मणनारायण शुक्ल ४०-००
१७३ **लौकिक संस्कृत साहित्य** । (Classical Sanskrit Literature by A. B. Keith का हिन्दी अनुवाद) अनुवादक—श्रीचारुचन्द्रशास्त्री [वि. रा. ५५] १०-००
१७४ **लौकिक संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास** । हिन्दी रूपान्तर । मूल लेखक—डॉ० गौरीशङ्कर शास्त्री [वि. रा. ११४] १०-००
१७५ **वाराणसी वैभव** । पं० कुबेरनाथ शुक्ल ३५-००
१७६ **वाग्विज्ञान** । (भाषाशास्त्र) । पं० श्री सीताराम चतुर्वेदी [वि. रा. १२२] ३५-००
१७७ **विक्रमादित्य [सम्वत्-प्रवर्तक]** । डॉ० राजबली पाण्डेय [वि. रा. २५] १२-००
१७८ **विविधार्थ** । भारतरत्न डॉ० भगवानदास [वि. रा. ९०] ७-५०
१७९ **विष्णुपुराण का भारत** । डॉ० सर्वानन्द पाठक [चौ. रा. २] २५-००
१८० **विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान** । डॉ० सी० जी० युङ्ग । अरविन्द बसावडा [वि. रा. ५९] २-००
१८१ **वेदकालीन समाज** । डॉ० शिवदत्त शर्मा [ग्रन्थ का पतिपाद्य विषय है—वेदों के समय में समाज की व्यवस्था और उसकी सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक एवं कला और मनोरञ्जन इत्यादि से सम्बन्धित स्थितियाँ क्या थीं ? प्रत्येक स्थिति या आचार सप्रमाण निरूपित है ।] [वि. रा. १०७] ३०-००
१८२ **वेद-पुष्पाञ्जलि** । सत्यकाम विद्यालङ्कार १४-००
१८३ **वेणीसंहार की शास्त्रीय समीक्षा** । डॉ० शान्ति जैन ३५-००
१८४ **वैदिक देवता** । सुमन शर्मा १०-००
१८५ **वैदिक युग के भारतीय आभूषण** । डॉ० रायगोविन्दचन्द्र [वि. रा. ८४] २०-००
१८६ **वैदिक योगसूत्र** । श्री हरिशङ्कर जोशी । [वेद-ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद्-पुराणादि में विकीर्ण तथा व्याप्त उस प्राचीन योगदर्शन का चूडान्त विवेचन] [चौ. रा. ३] २५-००
१८७ **वैदिक वाङ्मय : एक अनुशीलन** । डॉ० व्रजबिहारी चौबे २०-००
१८८ **वैदिक वाङ्मय का इतिहास** । श्री रमाकान्त शास्त्री [वि. रा. १३७] ५-००
१८९ **वैदिक साहित्य की रूपरेखा** । प्रो० हंसराज अग्रवाल [वि. रा. ८७] २-००
१९० **वैदिक साहित्य की रूपरेखा** । जोशी एवं खण्डेलवाल १०-००
१९१ **श्रीमन्महादेवशास्त्रि अभिनन्दनग्रन्थ** । सं० म० म० मथुराप्रसाद दीक्षित १५-००
१९२ **शृंगाररस का शास्त्रीय विवेचन** । डॉ० इन्द्रपाल सिंह । [प्रस्तुत ग्रन्थ में आचार्य भरत के नाट्यशास्त्र से आरम्भ कर भानुदत्त की रसमञ्जरी से सम्बद्ध अंशों का आकलन करते हुए शृङ्गार रस से सम्बन्धित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिद्धांतों का समीक्षात्मक एकत्रीकरण भी किया गया है। काम और शृङ्गार के व्युत्पत्तिपरक अर्थ के अनन्तर उनकी सर्वव्यापकता और अन्योन्याश्रयता का अनूठा विवेचन इस ग्रन्थ की प्रमुख विशेषता है] [चौ. रा. ४] १०-००

१९३ **शिवपुराण में शैवदर्शन तत्त्व** । आचार्य भारतीय २५-००

१९४ **श्री शङ्कराचार्य** । पं० बलदेव उपाध्याय १५-००

१९५ **संस्कृत आलोचना** । पं० बलदेव उपाध्याय ५-५०

१९६ **संस्कृतकविजीवितम्** । मल्लादि सूर्यनारायण शास्त्री कृत। प्रथम भाग ४-५०

१९७ **संस्कृत-कविदर्शन** । डॉ० भोलाशङ्कर व्यास

[साहित्यिकों को बहुत दिनों से संस्कृत कवियों पर हिन्दी में सैद्धान्तिक, व्यावहारिक और समाजशास्त्रीय आलोचना का अभाव खटकता था। डॉ० व्यास ने इस अभाव की पूर्ति कर दी है। शास्त्री, आचार्य तथा बी० ए०, एम० ए० और साहित्यरत्न की परीक्षाओं में निबन्ध और इतिहास के लिये यह पुस्तक अधिक उपादेय है। द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण] [वि. रा. ४] १०-००

१९८ **संस्कृत कविता में रोमाण्टिक प्रवृत्ति** । डॉ० हरिश्चन्द्र वर्मा २०-००

१९९ **संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन** । डॉ० भोलाशङ्कर व्यास १०-००

२०० **संस्कृत काव्यकार** । डॉ० हरिदत्त शास्त्री १५-००

२०१ **संस्कृत काव्यधारा** । राहुल सांकृत्यायन २०-००

२०२ **संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास** । पी० वी० काणे। अनु० इन्द्रचन्द्रशास्त्री १५-००

२०३ **संस्कृत काव्य के विकास में जैन कवियों का योगदान** । डॉ०नेमिचन्द्र ३०-००

२०४ **संस्कृत के महाकवि और काव्य** । रामजी उपाध्याय, डॉ० रामगोपाल मिश्र ८-००

२०५ **संस्कृत के नाट्य सिद्धान्त** । डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी। [वि० रा० १२८]

[प्रस्तुत प्रबन्ध में विषय विभाजन इस प्रकार है--१. रूपक और उसके भेद-प्रभेद, २. अर्थप्रकृति, सन्धि और सन्ध्यङ्ग, ३. नायक-नायिका भेद एवं अलंकार, ४. वृत्ति और अभिनय तथा ५. रस-भेद। यह ग्रन्थ संस्कृत, हिन्दी, अंगरेजी के छात्रों, अध्यापकों तथा साहित्य प्रेमियों के लिये समान रूप से उपयोगी है।] १२-००

२०६ **व्यञ्जना : सिद्धि और परम्परा** । डॉ० कृष्णकुमार शर्मा

[प्रस्तुत निबन्ध ग्रन्थ में प्रमुख चार चरण हैं—व्यञ्जना-सिद्धि, व्यञ्जना-प्रत्याख्यान, व्यञ्जना-प्रतिष्ठा और व्यञ्जना-स्वरूप तथा भेद। हिन्दी में व्यञ्जना-वृत्ति पर इस प्रकार की कोई पुस्तक नहीं है। इसमें जो कुछ कहा गया है, वह मूल ग्रन्थों के आधार पर ही है। सर्वत्र मूल अंश का उल्लेख पाद-टिप्पणी में कर दिया गया है] [वि. रा. १४३] १०-००

२०७ **व्यावहारिक मनोविज्ञान** । डॉ० रामकुमार राय [वि. रा. ६४] १०-००

२०८ **व्यावहारिक मनोविज्ञान की रूपरेखा** । डॉ० रामकुमारराय [वि. रा. ६५] ७-५०

२०९ **संस्कृत के विद्वान् और पण्डित** । रामचन्द्र मालवीय २-२५

२१० **संस्कृत के सन्देश काव्य** । डॉ० रामकुमार आचार्य २४-००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२११ **संस्कृत गीतिकाव्य का विकास** । डॉ० परमानन्द शास्त्री १८–००
२१२ **संस्कृत नाटक** । ए० बी० कीथ । अनुवादक—डॉ० उदयभानु सिंह २०–००
२१३ **संस्कृत नाटककार** । कान्तिकिशोर भरतिया ४–५०
२१४ **संस्कृत नाटक एवं नाटककार** । डॉ० विश्वनाथ भट्टाचार्य । आंग्लानुवाद ५०–००
२१५ **संस्कृत नाटक समीक्षा** । इन्द्रपाल सिंह 'इन्द्र' ४–००
२१६ **संस्कृत नाटकालोचन (प्रश्नोत्तर रूप में)** । चुन्नीलाल शुक्ल ५–००
२१७ **संस्कृत नाटकों में समाज चित्रण** । चित्रा शर्मा १६–००
२१८ **संस्कृत नाटक समीक्षा** । इन्द्रपाल सिंह 'इन्द्र' १५–००
२१९ **संस्कृत नाट्यकला** । रामलखन शुक्ल
२२० **संस्कृत पत्रकारिता का इतिहास** । डॉ० रामगोपाल मिश्र ५०–००
२२१ **संस्कृत भाषा** । मूललेखक—टी० बरो । रूपान्तरकार–डॉ० भोलाशङ्करव्यास [इस पुस्तक में अद्यतन गवेषणाओं को आत्मसात् करते हुए प्राचीन भारत-योरोपीय भाषा, संस्कृत तथा तत्संबद्ध भाषाओं का अधिकारिक तुलनात्मक अनुशीलन प्रस्तुत किया गया है ।] [वि. रा. ८१] ३५–००
२२२ **संस्कृत-भाषा-विज्ञानम्** । आचार्य रामाधीन चतुर्वेदी [वि. स. १०४] ७–५०
२२३ **संस्कृत भाषा-विज्ञान** । डॉ० राजकिशोर सिंह १०–००
२२४ **संस्कृत महाकाव्य की परम्परा** । डॉ० केशवराव मुसलगाँवकर [इस ग्रंथ के पूर्वार्ध में काव्यों के सिद्धान्तोंका विवेचन करते हुये उत्तरकालीन महाकाव्यों को कृत्रिम रूप देनेवाले कारणों का उल्लेख करके रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति तथा औचित्य का विश्लेषणात्मक विवेचन करते हुये यह सिद्ध कर दिया है कि वस्तुतः काव्य की आत्मा क्या है । ग्रन्थ के उत्तरार्ध में २६ महाकाव्यों के कथानक, रसभावाभिव्यक्ति, वस्तुवर्णन, व्युत्पत्ति, अलंकार, छन्द, भाषा आदि का सुविस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । इस प्रकार यह ग्रन्थ छात्र, विद्वान् तथा संस्कृत साहित्य के जिज्ञासुओं के लिये परम उपयोगी एवं संग्राह्य है । [चौ. रा. ८] २५–००
२२५ **संस्कृत-वाङ्मय परिचय** । पं० मधूसूदनप्रसाद मिश्र [वि. स. १३] ३–००
२२६ **संस्कृत वाङ्मय का विवेचनात्मक इतिहास** । डॉ० सूर्यकान्त २५–००
२२७ **संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास** । डॉ० सत्यनारायणपाण्डेय १०–००
२२८ **संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास** । डॉ० रामजी उपाध्याय १२–००
२२९ **संस्कृत शास्त्रों का इतिहास** । आचार्य बलदेव उपाध्याय २०–००
२३० **संस्कृत साहित्य का इतिहास** । (बृहत् संस्करण) श्रीवाचस्पति गैरोला [वि. रा. २८] ३५–००
२३१ **संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास** । श्रीवाचस्पतिशास्त्री [वि.रा.२९] शीघ्रप्राप्य
२३२ **संस्कृत साहित्य का इतिहास** । आर्थर मैकडॉनल । अनुवादक—चारुचन्द्र शास्त्री । [वि. रा. ४८] प्रथम भाग १०–००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२३३ **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** (वैदिक साहित्य की रूपरेखा सहित)।
श्री हंसराज अग्रवाल [वि. रा. ८६] १०–००

२३४ **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** पं० बलदेव उपाध्याय। १–२ भाग ४४–००

२३५ **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** सेठ कन्हैयालाल पोद्दार २४–००

२३६ **संस्कृत साहित्य का इतिहास।** (प्रश्नोत्तर में) डॉ० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना ५–००

२३७ **संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास।** कृष्णचैतन्य।
अनु०–विनयकुमार [वि. रा. ७७] २५–००

२३८ **संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास।** प्रश्नोत्तर रूप में।
डॉ० रमाकान्त त्रिपाठी [गोरखपुर के बी० ए० पाठ्यानुसार] [वि. रा. १४४] २–००

२३९ **संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास।** डॉ० बाबूराम त्रिपाठी १२–००

२४० **संस्कृत साहित्य की प्रवृत्तियाँ।** जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल ७–५०

२४१ **संस्कृत साहित्य की रूपरेखा।** चन्द्रशेखर पाण्डेय ८–७५

२४२ **संस्कृत साहित्य चिन्तन।** डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री २०–००

२४३ **संस्कृत साहित्य में एकांकी रूपक।** डॉ० बीरबल शर्मा १४–००

२४४ **संस्कृत साहित्य में नीतिकथा का उद्‌गम एवं विकास।**
डॉ० प्रभाकर नारायण कवठेकर
[पंचतन्त्र के पूर्व भारतीय नीतिकथा का उद्‌गम किन परिस्थितियों में हुआ, उसका वेदकालीन रूप क्या रहा होगा, जातक में लोककथा का आदान, उसके प्रसार के कारण विदेशों में उसका निर्गमन तथा महाभारत में नीतिकथा का राजनीतिक प्रज्ञा के निदर्शन के लिए प्रयोग आदि तथ्यों की गवेषणा इस प्रबन्ध की मुख्य विशेषता है। परिशिष्ट में सम्पूर्ण विश्व के नीति-कथा-साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।] [चौ. रा. ७] २५–००

२४५ **संस्कृत साहित्य में शब्दालंकार।** डॉ० रुद्रदेव त्रिपाठी ४०–००

२४६ **संस्कृत साहित्य में मौलिकता एवं अनुहरण।** डॉ० उमेशप्रसाद रस्तोगी
[प्रस्तुत प्रबन्ध में 'मौलिकता और अनुहरण' की दृष्टि से संस्कृत साहित्य के विशिष्ट स्थलों का अध्ययन करते हुए संस्कृत काव्यपाठकों के सन्मुख मौलिकता और अनुहरण विषयक नई वस्तु प्रस्तुत की गई है। भाषा-शैली आदि सभी विषयानुरूप हैं।] [वि. रा. ९१] १०–००

२४७ **संस्कृत साहित्य में सादृश्यमूलक अलङ्कारों का विकास।**
ब्रह्मानन्द शर्मा २०–००

२४८ **संस्कृतसाहित्यविमर्शः।** द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री १६–००

२४९ **संस्कृतसाहित्येतिहासः।** (संस्कृत) आचार्य रामचन्द्र मिश्र [वि. स. ४९] १०–००

२५० **संस्कृत सुकवि समीक्षा।** आचार्य बलदेव उपाध्याय। नवीन संस्करण
[विक्रमपूर्व पंचम शती से लेकर वाल्मीकि, व्यास, पाणिनि, वररुचि, कालिदास, अश्वघोष, भर्तृमेण्ठ, भारवि, भवभूति, दण्डी, बाण–आदि लगभग ३०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कवि तथा कवयित्रियों के रूप तथा स्वरूप एवं 'शंकराचार्य का आलोचनात्मक विवरण' एक सौ से अधिक पृष्ठों में दिया गया है। ग्रन्थ का परिशिष्ट–कवि-प्रशस्तयः–कविविषय का प्राचीन आलोचनामयी सूक्तियों का एकत्र संग्रह है जो पहिली बार इस रूप में प्रस्तुत किया गया है।] [वि. रा. ६३] ४०–००

२५१ **संस्कृति का ऐतिहासिक एवं संरचनात्मक परिचय।**
डॉ० देवीदत्त शर्मा २०–००

२५२ **सत्यशोधनम्।** (गाँन्धी जी की आत्मकथा का संस्कृत में अनुवाद)
अनुवादक—पं० होसकेरे नागप्प शास्त्री २५–००

२५३ **सदाचार सोपान।** पं० रामवालक शास्त्री [वि. रा. २] ०–५०

२५४ **सब धर्मों की बुनियादी एकता।** डॉ० भगवानदास [वि. रा. ३६] २०–००

२५५ **समदर्शी आचार्य हरिभद्र।** व्याख्याता—सुखलाल संघवी ३–००

२५६ **समन्वय।** डॉ० भगवानदास। परिवर्द्धित संस्करण ७–५०

२५७ **समीक्षाशास्त्र।** आचार्य सीताराम चतुर्वेदी २१–००

२५८ **सर्वदेशवृत्तान्तसंग्रहः अथवा अकबरनामा।** म० म० महेश ठाकुर।
सम्पा० डॉ० सुभद्र झा २५–००

२५९ **सावित्री-सत्यवान्।** पं० राजनारायण शुक्ल [वि. रा. २४] २–००

२६० **साहित्य और सिद्धान्त।** प्रो० श्यामलाकान्त वर्मा [वि. रा. १७] यन्त्रस्थ

२६१ **सांस्कृतिक और साहित्यिक निबन्ध।** डॉ० वेदकुमारी एवं डॉ० रामप्रसाद १०–००

२६२ **साहित्य-शास्त्र-सार।** श्री हंसराज अग्रवाल, श्रुतिकान्तजी [वि. रा. १०३] ४–५०

२६३ **साहित्य शास्त्रीय तत्त्वों का आधुनिक समालोचनात्मक अध्ययन।**
पं० मधुसूदन शास्त्री।
[प्रस्तुत ग्रन्थ में मुख्यतः तीन पदार्थों का विवेचन है—साहित्य, उसके तत्त्व और उसका आलोचन। प्राचीन आचार्यों ने काव्य का लक्षण किया है—"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्"। इस लक्षण का विश्लेषण सूक्ष्म दृष्टि से किया जाय तो अलंकार आदि–साहित्य के नौ तत्त्व प्राप्त होंगे। इस पुस्तक में उन नौ पदार्थों का क्रमशः आलोचन किया गया है। प्रसङ्गवश अन्य तत्वों का भी आलोचन इसमें है।] [वि. रा. १२१] १२–५०

२६४ **साहित्यानुशासनम्।** आचार्य सीताराम चतुर्वेदी
[चतुर्वेदी जी भाषाशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् माने जाते हैं। इनकी शताधिक मौलिक रचना से राष्ट्रभाषा समृद्ध हो चुकी है। इस ग्रन्थ में इन्होंने समस्त साहित्यिक रूपों और उपरूपों का स्पष्ट और पर्याप्त परिचय दिया है। यह ग्रंथ सभी साहित्यसमीक्षकों, साहित्य प्रेमियों और साहित्य सर्जकों को समुचित सहयोग प्रदान करेगा] [चौ. रा. ११] ३५–००

२६५ **साहित्यालोक।** डॉ० राजवंशसहाय 'हीरा'।
[इस पुस्तक में काव्य का स्वरूप, काव्य के रूप (महाकाव्य, खण्डकाव्य,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुक्तक) उपन्यास, नाटक, कहानी, आलोचना, निबन्ध, अलंकार, शब्द-शक्ति, रस, गुण, दोष एवं छन्दों का वर्णन किया गया है। उच्च कक्षा के छात्रों एवं सामान्य पाठकों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ है।] [चौ. रा. १] ७–५०

२६६ **सोमेश्वरकृत-मानसोल्लास : एक सांस्कृतिक अध्ययन।** शिवशेखर [चालुक्य कुलोत्पन्न महाराज सोमेश्वर विरचित धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ मानसोल्लास के परिशीलन माध्यम से तत्कालीन संस्कृति एवं रीति-नीति का सुस्पष्ट परिचायक ग्रन्थ।] [वि. रा. ९९] ३०–००

२६७ **सौन्दरानन्द : साहित्यिक एवं दार्शनिक गवेषणा।** ब्रजमोहन पाण्डेय [महाकवि अश्वघोष विरचित 'सौन्दरनन्द महाकाव्य' पर आधारित-यह ग्रंथ पटना विश्वविद्यालय की पालि एम. ए. परीक्षा के लिये प्रस्तुत अधिनिबन्ध का परिवर्द्धित रूप है। इसमें ग्रंथकार के जीवनवृत्त, कर्तृत्व, काव्य-कथानक, भाव-पक्ष, कलापक्ष तथा बौद्ध-धर्मदर्शन, चरित्र-चित्रण, प्रकृति-चित्रण एवं वस्तु-वर्णन आदि महत्त्वपूर्ण विषयोंपर प्रकाश डाला गया है। अध्यापक, छात्र तथा बौद्ध-धर्म के जिज्ञासु विद्वानों के लिये यह ग्रंथ अधिक उपयोगी है।] [चौ. रा.१४] १५–००

२६८ **स्मृति के हस्ताक्षर।** देवदत्त शास्त्री [वि. रा. ५६] ५–००

२६९ **स्मृतियाँ और कृतियाँ।** श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी [वि. रा. १०२] ५–००

२७० **स्वतन्त्र-कलाशास्त्र।** डॉ० श्री कान्तिचन्द्र पाण्डेय। [कला को विचारों की कसौटी में कस देने पर जो ज्ञान की चिनगारियाँ प्रस्फुटित हुई हैं उन्हीं का अध्ययन इसमें प्रस्तुत किया गया है।] [चौ. रा. १]
प्रथम भाग : भारतीय ५०–०० द्वितीय भाग : पाश्चात्य ५०–००

२७१ **हमारे आधुनिक कवि और उनकी कविताएँ।** श्रीव्यथितहृदय [वि.रा.११] ४–५०

२७२ **हिन्दी और मराठी का निर्गुण सन्तकाव्य।** डॉ० प्रभाकर माचवे [इस ग्रन्थ में दक्षिण और उत्तर की भाषाओं के आरम्भिक भक्ति-साहित्य के साम्य और विभेद पर सामाजिक, ऐतिहासिक तथा साहित्यशास्त्रविषयक मान्यताओं के परिपार्श्व में प्रामाणिक अध्ययन तथा १२वीं से १५वीं सदी के भारतीय वाङ्मय का एक रेखाचित्र प्रस्तुत किया गया है। यह लेखक के १० वर्षों से अधिक के परिश्रम का निचोड़ है।] [वि. रा. ४९] २०–००

२७३ **हिन्दी काव्य की सामाजिक भूमिका।** शम्भुनाथ सिंह [वि. रा. १०५] १०–००

२७४ **हिन्दी के पौराणिक नाटक।** डॉ० देवर्षि सनाढ्य शास्त्री [वि. रा. ३५] १५–००

२७५ **हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों में अर्थ-परिवर्तन।** डॉ० केशवराम पाल ३०–००

२७६ **हिन्दुओं की प्रबुद्ध रचनाएँ।** थि० गोल्डस्टकर। अनु० श्रीचारुचन्द्र शास्त्री ४–००

२७७ **हिन्दू संस्कार।** (सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन) डॉ० राजबली पाण्डेय ३०–००

२७८ **हेमचन्द्राचार्य जीवनचरित।** (सचित्र) अनुवादक—कस्तूरमल बाँठिया ७–५०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुस्तकें मँगवाने के नियम

१. डाकखाने से वी० पी० नियमानुसार ३ दिन के अन्दर छुड़ा लेनी चाहिये अन्यथा वापस हो जायगी। वी० पी० वापस आने से उसकी सारी क्षति तथा खर्चे ग्राहक को देना होगा।

२. जो ग्राहक, पुस्तकें अधिक वजन की होने से, रेल्वे पार्सल से मँगवाना चाहें उनको अपने समीप के रेल्वे स्टेशन अथवा रेल्वे लाइन का नाम भी अवश्य लिखना चाहिये और कम से कम चौथाई मूल्य आर्डर के साथ पेशगी अवश्य भेजना चाहिये, जो वी० पी० के मूल्य में कम कर दिया जाता है।

३. पुस्तकें ग्राहकों की जिम्मेदारी पर भेजी जाती है। हमारे यहाँ से पुस्तकें भेजने के बाद रास्ते की जोखिम का जिम्मेदार कार्यालय नहीं है।

४. प्रकाशकों के मूल्य-परिवर्तन के अनुसार पुस्तकों के मूल्य जो घटे-बढ़े होते हैं, वे ग्राहकों को बिना सूचना दिये ही माल भेजते समय चार्ज किये जाते हैं। पुस्तकें भेजने का कुल खर्च—डाकखर्च, रेलभाड़ा आदि ग्राहकों के जिम्मे होगा।

५. रेलवे रसीद पर लिखे पार्सल का वजन जाँच-परख कर ही पार्सल छुड़ावें अन्यथा पार्सल में कोई भी गड़बड़ी के लिये हमारा कोई उत्तरदायित्व न होगा।

६. वी० पी० भेजने में यदि किसी पुस्तक के मूल्य इत्यादि में अथवा और किसी प्रकार की भूल हुई हो तो भी कृपया वी० पी० छुड़ा लेवें और बीजक संख्या तथा दिनांक लिखकर भेजने की कृपा करें, भूल सुधार कर दी जायगी। वी० पी० वापस न करें अन्यथा क्षति होगी।

७. बीस रुपये से अधिक मूल्य की पुस्तकें मँगवाने वाले ग्राहकों को चतुर्थांश मूल्य पेशगी के रूप में भेजना चाहिये।

८. नोट, टिकट, चेक, पोस्टल आर्डर आदि रजिस्ट्री से भेजना चाहिये।

९. वैधानिक कार्यों के लिये वाराणसी कोर्ट मान्य होगा।

निवेदन

आशा है आप प्रस्तुत सूचीपत्र का भलीभाँति अवलोकन कर चुके हैं। इस सूचीपत्र के अतिरिक्त हमारे यहाँ से भारतवर्ष के समस्त विश्वविद्यालयों एवं शिक्षा-संस्थानों की परीक्षाओं में निर्धारित परीक्षापाठ्यक्रम के अनुसार संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी एवं आयुर्वेद साहित्य की सभी पुस्तकें उपलब्ध होंगी। कृपया एक बार सेवा का अवसर प्रदान कर हमें अनुगृहीत करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

PRICELIST

तमसो मा ज्योतिर्गमय

चौखम्बा विद्याभवन

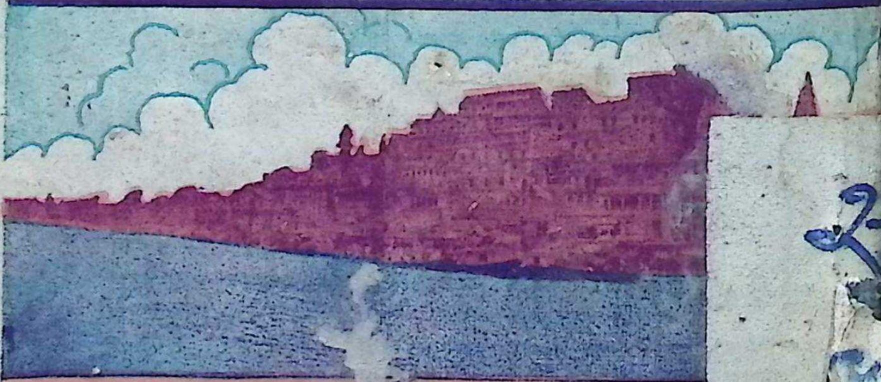

CHOWKHAMBA VIDYABH

P.B.NO.69, VARANASI-221

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu